

प्रीति शेनॉय

‘अगर कोई कोड है, तो शेनॉय ने उसे क्रैक कर लिया है’—द हिंदू

सब सितारों का खेल है

अनुवाद: उर्मिला गुप्ता



२७

प्रीति शेनॉय

‘अगर कोई कोड है, तो शेनॉय ने उसे क्रेक कर लिया है’ –द हिंदू

सब सितारों का खेल है

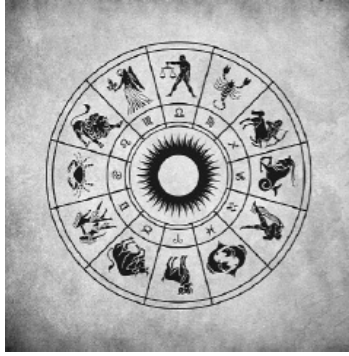
अनुवाद: उर्मिला गुप्ता



W

सब सितारों का खेल है

सब सितारों का खेल है



प्रीति शेनॉय

अनुवाद
उर्मिला गुप्ता



W

westland publications ltd

61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095

93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002

www.westlandbooks.in

First published in English as It's All in the Planets by westland ltd 2016

First published in Hindi as Sab Sitaron Ka Khel Hai by westland publications ltd, in association with Yatra Books, 2017

Copyright © Preeti Shenoy 2016

All rights reserved

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

Preeti Shenoy asserts the moral right to be identified as the author of this work.

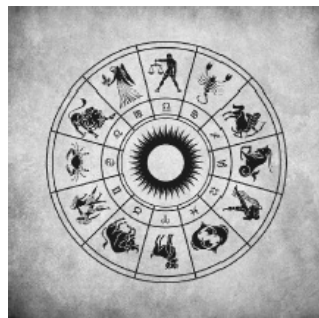
ISBN: 978-93-86224-87-3

This book is sold subject to the condition that it shall not by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, circulated, and no reproduction in any form, in whole or in part (except for brief quotations in critical articles or reviews) may be made without written permission of the publishers.

जेबी और फिगी,
और उनकी जादुई कहानियां

मुझे किस्मत से डर नहीं (तुम मेरी तकदीर हो प्रिय)
—ई.ई. कर्मिंग्स

आज रात मैं दुखी पंक्तियां लिख सकता हूँ।
मैं उसे प्यार करता था, और कभी-कभी वो भी मुझे चाहती थी।
—पाब्लो नरूदा



सिंह , 23 जुलाई से 22 अगस्त के बीच पैदा हुए, राशि मंडल का पांचवां ज्योतिषिय नंबर। सिंह शेर का प्रतिनिधित्व करता है। आत्मविश्वासी और निश्चयी, हाज़िरजवाब और मोहक, सिंह अक्सर गलतियां कर बैठते हैं। जो अपना दिल इन्हें देते हैं, उन्हें ये अपने सिर पर बैठाकर रखते हैं, और उनकी खुशी के लिए धरती आसमान एक कर सकते हैं। ये अपने साथी के लिए बहुत वफादार होते हैं। ये बहुत संतुलित और यथार्थवादी होते हैं। अतीत में गोते लगाना सिंह राशि वालों की प्रवृत्ति नहीं होती। ये प्रशंसा और सराहे जाना चाहते हैं। सिंह राशि वालों को पसंद नहीं करना मुश्किल होता है। सिंह राशि वाले दो प्रकार के होते हैं। वे शांत और विश्वस्त भी हो सकते हैं, या भड़कीले और घमंडी भी। लेकिन उनका दिल खरा होता है, और अगर आपका कोई सिंह राशि वाला दोस्त है, तो शायद ये दोस्ती जिंदगी भर भी चल सकती है।

धनु, 22 नवंबर से 21 दिसंबर के बीच पैदा हुए, राशि मंडल का नौवां ज्योतिषिय नंबर। धनु आधे-इंसान और आधे-घोड़े धनुर्धर का प्रतिनिधित्व करता है। वे हमेशा अपने मन की सुनते हैं और कभी-कभी अपनी बात के लिए इतने मुखर हो जाते हैं कि ये सामने वाले के मुंह पर तमाचे की तरह पड़ती है। धनु राशिवाले अपने इस गुण को जानते भी नहीं हैं। अगर उन्हें पता चले कि आपको बुरा लगा है तो वो बुरी तरह से डर भी जाते हैं। हालांकि उनकी ईमानदारी में कोई छल-कपट नहीं है, उनमें बचपना है, उनका उत्साह आपको अपने साथ खींच लेता है। आपको जोश पसंद है? तो धनु राशि वालों के साथ रहिए। उन्हें घूमना पसंद है, एक जगह बैठे रहना उन्हें उबाता है, वे पैदाइशी अन्वेषक हैं। प्यारे, नरमदिल, मस्ती पसंद, वे बेहतरीन मेजबान होते हैं। धनु राशि वाले भरोसेमंद दोस्त होते हैं।

विषय-सूची

- [1 अनिकेत](#)
- [2 निधि](#)
- [3 अनिकेत](#)
- [4 निधि](#)
- [5 अनिकेत](#)
- [6 निधि](#)
- [7 अनिकेत](#)
- [8 निधि](#)
- [9 अनिकेत](#)
- [10 निधि](#)
- [11 अनिकेत](#)
- [12 निधि](#)
- [13 अनिकेत](#)
- [14 निधि](#)
- [15 अनिकेत](#)
- [16 निधि](#)
- [17 अनिकेत](#)
- [18 निधि](#)
- [19 अनिकेत](#)

[20 निधि](#)

[21 अनिकेत](#)

[22 निधि](#)

[23 अनिकेत](#)

[24 अनिकेत](#)

[25 निधि](#)

[26 अनिकेत](#)

[27 निधि](#)

[28 अनिकेत](#)

[29 निधि](#)

[30 अनिकेत](#)

[31 निधि](#)

[32 अनिकेत](#)

[33 निधि](#)

[आभार](#)

[लेखक परिचय](#)



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

जिसे आप अरसे से जानते हैं, उससे कुछ विवाद हो सकता है। आप ऊर्जा में कमी महसूस करेंगे, और ये उसका कारण हो सकता है। सकारात्मक रहिए। जो जरूरी हो उसी पर अपना ध्यान केंद्रित रखिए।

1

अनिकेत

ट्रेन चलने के बाद ही मुझे अहसास हो पाया कि मैं कितनी जोर से बात कर रहा था। तब तक मुझे बात करते हुए कम से कम पंद्रह मिनट हो चुके थे, और मैं सुब्बु से अपने जीने-मरने के मसले पर आधी बात कर चुका था। लेकिन मेरे सहायात्री ये नहीं जानते थे और वो मुझे गुस्से से घूर रहे थे। कमबख्त! मुझे बहुत ही बेवकूफाना महसूस हुआ और मैंने अपनी आवाज धीमी कर ली।

‘नहीं। मैं सही नहीं हूँ। तुम मुझे शांत रहने को कैसे कह सकते हो? उसने कहा है उसे इस बारे में सोचने के लिए समय चाहिए। तुम जानते भी हो इसका मतलब क्या है? तुम कैसे जान सकते हो? तुम तो कभी किसी रिलेशनशिप में रहे नहीं, तो फिर तुम कैसे समझ सकते हो।’

सुब्बु की जगह कोई और होता तो अब तक फोन पटककर मुझे भाड़ में जाने को बोल चुका होता। लेकिन सुब्बु? वह मुझे बहुत प्यार करता है। सुब्बु, मेरा पायलट, मेरा रिलेशनशिप फिलॉसफर, मेरा गाइड और अब तो मेरा थेरेपिस्ट भी, बड़े इत्मीनान से तृषा के साथ हुए मेरे मसले को सुन रहा था। और मेरी आखरी लाइन तो हद पार कर चुकी थी। मुझे उसे सुधारने की कोशिश करनी थी।

‘आई एम सॉरी, ब्रो। मुझे वो नहीं कहना चाहिए था। मुझे अफसोस है,’ मैंने कहा।

मुझे वो बात नहीं कहनी चाहिए थी। लेकिन मैं तृषा के लेटेस्ट मिसाइल से बहुत परेशान और टूटा हुआ था।

बंगलौर कैंटोंमेंट स्टेशन जाते हुए मैंने रास्ते में ऑटो में वो मेल पढ़ी थी।

अनि,

मैं तुम्हें सच में डम्प नहीं कर रही हूँ (खैर, अभी तो नहीं! अरे मजाक कर रही हूँ!)। प्लीज घबरा मत जाना और इस मेल को वो मत मान लेना। लेकिन मुझे अपने रिलेशनशिप के बारे में सोचने के लिए कुछ समय चाहिए।

सच में। तुम मुझे सांस लेने की भी जगह नहीं देते। तुम एक मेल भेजते हो, फिर मैसेज से उसके बारे में पता करने लगते हो, फिर तीन लिंक्स भी भेज देते हो, और इससे पहले कि मुझे वो देखने का टाइम भी मिले, इतने में तुम फोन ही खड़का देते हो। अगर मैं फोन न उठाऊं तो वाट्सअप पर धड़ाधड़ पंद्रह मैसेज सरका देते हो।

तुमसे अलग भी मेरी लाइफ है। मुझे अपनी शूटिंग पर समय चाहिए होता है। मैं तुम्हारे मेल का तुरंत जवाब नहीं दे सकती। और मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि विश्वा सिर्फ एक दोस्त है। फिर भी तुम उसे बीच में ले आते हो। तुमने उसे वो मैसेज भेजा ही क्यों कि वो मुझे घर कब छोड़ने वाला है? उसका क्या मतलब था?

अनि, मैं जानती हूँ कि तुम मुझे प्यार करते हो। और मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ। लेकिन प्लीज समझने की कोशिश करो कि तुम मुझे ऐसे बांध नहीं सकते। मुझे तुम्हें हर बात बताने की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए। मैं तुम पर ऐसी कोई पाबंदी नहीं लगाती, है न?

मैं आज लेह जा रही हूँ। पूरी टीम मेरे साथ सफर कर रही है—और हां, विश्वा भी वहां होगा। अगर मैं तुम्हें मैसेज नहीं कर पाऊं तो प्लीज चिंता मत करना। मैं बता रही हूँ वहां इंटरनेट का नेटवर्क मिलना बहुत मुश्किल होता है। मैं दो सप्ताह में तुम्हारे पास आ जाऊंगी। इससे हम दोनों को सोचने के लिए समय मिल जाएगा।

प्लीज इसे समझने की कोशिश करना और ज्यादा शराब मत पीना।

वर्क आउट करो—और वजन कम करो। कम से कम कोशिश तो करो। सताईस साल ऐसे मोटे पेट के लिए कोई उम्र नहीं होती—पेट को पतला ही होना चाहिए। अगर तुम अभी से ध्यान नहीं दोगे, तो तुम जल्दी ही मोटे रोली-पोली-अनि बन जाओगे। हाहा।

खूब प्यार।
तृष

इससे उसका मतलब क्या था? उसे क्या सोचने के लिए समय चाहिए था? वो ऐसा कैसे कर सकती है? वो भी तब, जब मैं चेन्नई अपने माता-पिता को हमारे रिश्ते के बारे में बताने के लिए जा रहा हूँ। यही तो हमारे बीच तय हुआ था। और अब उसने ये पैतरा चल दिया।

मैं उसे कभी इतने लिंक्स नहीं भेजता। मैंने बस उसे एक एनामॉर्फिक स्कल्पचर और दो कॉमिक्स ही भेजे थे। बताओ वो मजेदार कैसे नहीं हो सकते? और वैसे भी एक कॉमिक्स पढ़ने में टाइम ही कितना लगता है? और उससे इसका क्या मतलब था कि मैं उसे फोन करता हूँ, ढेर से मैसेज भेज देता हूँ? मुझे लगता है कि कोई भी इंसान ये चिंता करेगा कि उसकी गर्लफ्रेंड घर कब पहुंची—खासकर तब जब वो विश्वा और उसके गैंग के इंडियट अनजान लोगों के साथ ड्रिंक कर रही हो। और तृषा ये तो भूल ही गई कि वो उस दिन कितना नशे में थी, वो तो खड़ी तक नहीं हो पा रही थी। मैं उसे लेने के लिए पहले येलाहंका गया और फिर उसे उसके घर इंदिरानगर छोड़ा। मैं साला पचपन किलोमीटर गाड़ी चलाकर गया सिर्फ इसलिए कि वो सेफ रहे। और उसे तो वो याद भी नहीं।

ये तो बहुत ज्यादा था।

मैं अपने ख्यालों और उसकी मेल में इतना खोया हुआ था कि मुझे तो पता भी नहीं चला कि कब ऑटो कैंटोमेंट स्टेशन पहुंच गया था। ऑटो वाले ने कहा कि मुझे मीटर में आए चार्ज का डेढ़ गुणा देना होगा, क्योंकि अब तक सुबह के सात नहीं बजे थे। ये बंगलौर के ऑटो वालों का अलिखित नियम है। मैंने उससे कोई मोलभाव नहीं किया। मैंने तीन सौ रुपये निकाले और उसे चेंज रखने को कहा। आमतौर पर, जब मैं शताब्दी लेता हूँ तो ट्रेन का इंतजार करते हुए एक कप कॉफी पीता हूँ। आज मुझे उसमें भी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

मैंने सुब्बु को तृषा की ईमेल के बारे में बताने के लिए फोन किया था, लेकिन अभी कुछ ज्यादा ही जल्दी थी, और वो सुबह आठ बजे से पहले सोकर नहीं उठता था। मैंने तीन बार कोशिश की, लेकिन वहां से कोई जवाब नहीं आया। लेकिन जब ट्रेन आई और मैं उसमें चढ़ गया, एग्जीक्यूटिव क्लास का सुकून महसूस करते हुए, उसमें तीन की बजाय सिर्फ दो सीटें आपस में जुड़ी होती हैं। मैं बस बैठा ही था कि सुब्बु का फोन आ गया और मैंने दिल का गुबार उसके सामने उड़ेल दिया। उसने तसल्ली से मेरी बात सुनी, वो तृष-मसले पर सुबह जल्दी उठा देने से झुंझलाया नहीं था। अब अक्सर तृष-मसला उठने लगा था।

और अब मेरी बात चैन से सुनने के बदले मैं सुब्बु पर बरस गया था। लेकिन वो बहुत भला था, और इसे दिल से नहीं लगाने वाला था।

‘नो प्रोब्लम। देख, ब्रो—तुमने मुझे बस एक बग रिपोर्ट दी है, जिसमें तुम्हें लगता है कि तुम सिस्टम तृषा के बारे में सब जानते हो, लेकिन तुम नहीं जानते हो!’

इतनी परेशानी में भी उसकी कही बात पर नहीं हंसना बहुत मुश्किल था। ये सुब्बु ही था जो ऐसा टेकी समाधान दे सकता था, वो भी तब जब मैं उसे बता रहा था कि मेरा रिलेशनशिप स्टेटस खतरे में था। बात ये है कि मैंने इस रिश्ते में अपनी जिंदगी के डेढ़ साल इनवेस्ट कर दिए थे। देखा जाए तो दो, अगर आप उन छह महीनों को भी जोड़ लें जो मैंने तृषा को प्रपोज करने में

लगाए थे।

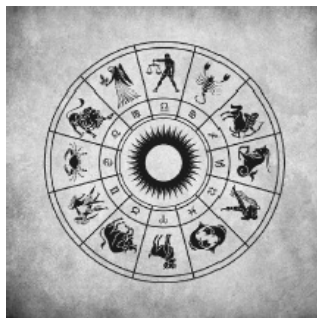
‘नहीं, ऐसा नहीं है। मैंने तुम्हें बिल्कुल सही रिपोर्ट दी है। लेकिन हमें मानना पड़ेगा कि वास्तव में हमारे पास 101 असफलताएं हैं। मैंने वही किया जो तुमने मुझसे करने को कहा था, लेकिन मेरे हर काम को उसने गलत समझ लिया। काश मैं उस स्टूपिड ऑफिस ट्रिप पर न जाकर उसे पैराग्लाइडिंग के लिए ले जाता, या जो वह चाहती। शिट।’

‘डियर अनिकेत, हमें जो अब संभालना है वो मैड गर्लफ्रेंड बग है। हमें वास्तव में चीजें ठीक करने के लिए पहले इसी पर काम करना होगा। और यह असफलता नहीं है। ये एक्सपेरिमेंट है। अब हम जानते हैं कि क्या चलेगा और क्या नहीं। मुझे थोड़ा समय दो। मैं तुम्हें दोबारा फोन करता हूं। अभी क्लाइंट की कॉल आने वाली है,’ उसने कहकर फोन काट दिया।

दरअसल सुब्बु भी एक लड़की को दिलो-जान से चाहता था। वह पूरे चार साल तक बस उस लड़की को देखता रहा था, बिना अपने दिल का हाल बताए। लड़की को कभी भी उसके मन की बात पता ही नहीं चल पाई। चार साल लंबी एक-तरफा प्रेम कहानी का बड़ा दर्दनाक अंत हुआ, जब वह लड़की अपने माता-पिता के पसंद किए एनआरआई लड़के से शादी करके अमेरिका चली गई। उससे सुब्बु के दिल को इतना गहरा धक्का पहुंचा कि अब वो चाहता था कि मेरी और तृषा की कहानी का ऐसा अंत न हो। वास्तव में उसने ही मुझे तृषा से बात आगे बढ़ाने के लिए उकसाया था। क्योंकि वह इससे शुरू से जुड़ा रहा था—उसके लिए तृषा और मेरा रिश्ता उसका प्रोजेक्ट था—तो अब जल्दी से मेरे लिए मामला ‘फिक्स’ कर देना चाहता था। सुब्बु ऐसा ही था। मिस्टर भरोसेमंद। मैं जानता था कि क्लाइंट से बात खत्म होते ही वह मुझे फोन करेगा।

मैं अपनी सीट पर पीछे झुक गया, बटन दबाकर उसे पीछे को सरकाया और आह भरते हुए अपनी टांगों को सीधा किया। शताब्दी एक्सप्रेस इंडियन रेलवे की बेहतरीन रेलों में से थी। मैंने द टाइम्स ऑफ इंडिया उठाया और उसे खोलने ही वाला था कि अपने बगल से ही एक लड़की की आवाज सुनाई दी। वह अटेंडेंट से पूछ रही थी, ‘क्या आपके पास द हिंदू नहीं है?’

तब मेरा ध्यान उसकी तरफ गया।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

किसी नए प्रोजेक्ट का इंचार्ज बनना अच्छा रहेगा। अगर सिंगल हैं तो रिलेशनशिप से दूर रहें। आपके जीवन में कोई नया इंसान आ सकता है। खांसी या जुकाम पर तुरंत ध्यान दें क्योंकि बीमार पड़ने की आशंका है। यात्रा का संयोग बन रहा है।

2

निधि

लड़का दिखने में अच्छा था। शायद जरा सा भारी, लेकिन जरा सा ही। वह लंबा था, और शायद पांच दिनों से शेविंग नहीं की थी। अगर वह कुछ वजन कम कर ले और अपने कपड़ों पर थोड़ा ध्यान दे, तो यकीनन वो आकर्षक दिखाई देगा। शिट, मैं कह क्या रही हूँ—मनोज की तुलना में ये लड़का सच में आकर्षक था। मनोज कपड़े ठीक तरह से पहनता था, लेकिन फिर भी अच्छा दिखता नहीं था। ये लड़का कम से कम जंच तो रहा था, हालांकि मुझे मानना पड़ेगा कि यह पैरों

तक लंबी टीशर्ट और घुटनों तक के शॉर्ट्स और खर चप्पलों के अलावा कुछ ढंग का पहन सकता था। वह ऐसा दिख रहा था मानो अभी बिस्तर से उठकर आया हो। और उसकी बातों से लग रहा था कि उसकी गर्लफ्रेंड ने उसे डम्प कर दिया था। हालांकि मुझे लग रहा था कि वह ओवररिएक्ट कर रहा था। ये कहना मुश्किल था कि वास्तव में यह इतना ही परेशान था। वैसे भी ऐसे लड़के मिलना मुश्किल होता है, जो इतनी शिद्दत से किसी की परवाह करें। ये तो सच में कर रहा था। मैं सोच रही थी कि इसकी गर्लफ्रेंड दिखती कैसी होगी? उनकी रिलेशनशिप कैसी होगी? वो पैराग्लाइडिंग पर जाना चाहती थी, लेकिन उसे ऑफिस ट्रिप पर जाना था? क्या कोई इस बात के लिए ब्रेकअप करेगा?

अटेंडेंट न्यूजपेपर ले आया और उसने मुझे पानी की बोतल के साथ द टाइम्स ऑफ इंडिया पकड़ाया। मैं हमेशा द हिंदू पढ़ती हूँ, तो मैंने उससे उसके लिए पूछा।

‘जी, मैडम,’ उसने कहते हुए मुझे द हिंदू की कॉपी पकड़ा दी। साथ बैठा लड़का अब मुझे देख रहा था। वह थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था और मुझे देखकर मुस्कुराया।

मैं भी मुस्कुरा दी।

‘सारी शायद मैं ज्यादा जोर से बोल रहा था। मैं ऐसा करना नहीं चाहता था,’ उसने कहा।

‘कोई बात नहीं, तुम शायद अपनी गर्लफ्रेंड को लेकर परेशान हो,’ मैंने कहा। नॉर्मली मैं किसी की निजी बातों में यूँ नहीं घुसती, लेकिन इस लड़के में कुछ बात थी, न जाने क्यों मैं उसकी पीठ सहलाकर उसे कहना चाहती थी कि सब ठीक हो जाएगा। मुझे नहीं लगता कि मनोज को ये बात अच्छी लगती। वैसे भी मैं अभी मनोज के बारे में नहीं सोचना चाहती थी, लेकिन फिर भी न जाने क्यों किसी लड़के से बात करते हुए मैं मन ही मन तौलती थी कि मनोज की इस पर क्या प्रतिक्रिया होती।

बंद करो—मनोज तुम्हारा मालिक नहीं है, हालांकि वो बर्ताव तो ऐसे ही करता है। धत्—तुम्हारी तो अभी उससे शादी भी नहीं हुई है।

‘हां—मेरी गर्लफ्रेंड का कहना है कि उसे स्पेस चाहिए,’ उसने कहा।

मैं हंसी।

‘इसमें हंसने की क्या बात है?’ उसने पूछा।

‘मैंने भी अपने मंगेतर से यही कहा है! वैसे मेरा नाम निधि है।’

‘हाय, निधि, तुमसे मिलकर अच्छा लगा। अनिकेत,’ उसने कहते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

उसका हैंडशेक मजबूत था: एक विश्वस्त और भावुक आदमी तरह। आदमी के औरत से हाथ मिलाने के तरीके से बहुत कुछ जाना जा सकता है। उसकी पकड़ न तो हड्डियों को कड़कड़ाने वाली थी, जैसा कि ज्यादातर आदमी करते हैं और न ही कमजोर, नाजुक सी। ऐसे आदमी भरोसे के लायक होते हैं। मैं उसे पसंद करने लगी थी! वो भी तब जब मैं उससे ठीक तरह से मिली भी नहीं थी, न ही मैं उसके बारे में कुछ जानती थी। फिर भी मैं हैरान थी कि मैंने उसे वो बता दिया था, जो मैं अपने करीबी दोस्तों तक को नहीं बता सकती थी कि मैंने अपने मंगेतर को कह दिया था कि मुझे कुछ समय चाहिए। सफर की यही तो खास बात होती है। आप अनजान लोगों से भी काफी घुलमिल जाते हो। ये एक अजीब सा भरोसा होता है। गुमनामी की यही तो खास बात है—हर कोई अजनबी है और उनसे दोबारा मिलने का भी कोई मौका नहीं

होता—ये वही रोमांच है जिसकी आप अपने हर सफर में उम्मीद करते हो। शायद वो भी ऐसा ही महसूस कर रहा था।

‘तुम क्या करती हो, निधि? और अब जब हम एक ही मंजिल की तरफ जा रहे हैं, तो क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम्हारा चेन्नई से क्या कनेक्शन है?’ उसने पूछा। अब वह मुझे देख रहा था, उसकी आंखों में एक ईमानदारी थी। मैं समझ गई थी कि उसे भरोसेमंद समझने का मेरा अनुमान सही था। आप आंखों से समझ सकते हैं।

‘मेरे डैड चेन्नई में रहते हैं और मैं उनके पास कुछ समय बिताने जा रही हूँ। चेन्नई मेरा होमटाउन है,’ मैंने जवाब दिया। अक्सर मैं अनजान लोगों से सचेत रहती हूँ और अपने बारे में इतनी डिटेल्स नहीं बताती। लेकिन ये कुछ अलग था। या तो उसमें कुछ बातथी या ट्रेन का सफर अपना असर दिखाने लगा था।

‘ओह, अब समझा। और तुम्हारी मां? वो कहां रहती हैं?’

‘मेरी मां नहीं रहीं,’ मैंने कहा।

‘आई एम सो सॉरी,’ उसने कहा, और फिर कुछ पल खामोशी रही।

‘ये बहुत पहले की बात है। तब मैं पंद्रह साल की थी। वैसे, अब मेरी सौतेली मां है,’ मैंने कहा, और मैं उसके चेहरे पर राहत देख सकती थी। अक्सर मेरी मां के नहीं होने की बात सुनकर लोगों के चेहरे पर यही भाव आते थे।

‘वैसे तुमने मेरे पहले सवाल का जवाब नहीं दिया,’ उसने कहा।

‘क्या सवाल था?’

‘मतलब तुम काम क्या करती हो?’

‘ओह—वो। मैं बंगलौर में एक स्टूडियो में पॉट्री सिखाती हूँ।’

‘ये तो बहुत दिलचस्प और अनोखा है। नाइस।’

‘तो मैं मान सकती हूँ कि तुम्हारा काम गैर दिलचस्प और आम है?’ मैंने पलटकर कहा और वह हंस दिया।

‘मैं उसे गैर दिलचस्प तो नहीं कह सकता, लेकिन हां, बिल्कुल आम है। मैं एक टेकी हूँ।’

‘हम्म बंगलौर में हर दूसरा आदमी टेकी ही है। और तुम्हारी कंपनी क्या करती है? तुम काम कहां करते हो?’ अब सवाल दागने की बारी मेरी थी। हैरानी की बात थी कि हमारे बीच में इतनी सहजता से बातें होने लगी थीं।

बहुत बढ़िया, निधि—रिजर्व नेचर के हिसाब से तुम्हारा प्रदर्शन बेहतरीन है।

‘मैं कनेक्ट टेक्नोलॉजी में काम करता हूँ।’

‘और कनेक्ट क्या करता है? सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट?’

‘वैल, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट तो नहीं। हम टेलीकॉम ऑपरेटर्स को ग्लोबल बिजनेस सपोर्ट सिस्टम प्रोवाइड कराते हैं। इस फील्ड में हम अगुआ हैं और मुझे लगता है कि हम इकलौती कंपनी हैं, जो ऐसी सर्विस दे रहे हैं। फ्रॉन्ट मैनेजमेंट, एसेट एश्योरेंस, कैपेसिटी मैनेजमेंट रूट ऑप्टिमाइजेशन, पार्टनर सैटलमेंट और कॉस्ट मैनेजमेंट तक हम अपने कस्टमर्स को सब उपलब्ध कराते हैं,’ उसने कहा।

गॉड, ये तो सुनने में ही कितना बोरिंग लग रहा है। कोई ऐसा काम कैसे करना चाहता होगा? मैंने सिर हिलाया और दिलचस्पी दिखाने की कोशिश की।

अटेंडेंट अब नाश्ता परोस रहे थे, तो हमने अपनी सीटें सीधी करके अपने सामने ट्रे टेबल खोल लीं। हम दोनों ने ही वेजिटेरियन मील चुना। ट्रे में थर्मस लास्क के साथ गर्म पानी, एक कप, मिल्क पाउडर, टी बैग, शुगर और खाने का पैकेट था। मेरे पैकेट में खरा-बाथ था, कर्नाटक का खास नाश्ता, और ये मुझे बहुत पसंद था। उसे भी शायद अपना खाना पसंद आया था। मैंने ध्यान दिया था कि उसने ट्रे में अपना सामान कितने करीने से रखा था, और वह मुंह बंद करके खा रहा था। कपड़ों के मामले में वो जितना लापरवाह था, खाने के मामले में उतना ही शिष्ट।

हमने खामोशी से अपना खाना खत्म किया, और फिर गर्म पानी और टी बैग से अपनी चाय तैयार की। हम चाय पीकर अटेंडेंट का ट्रे ले जाने के लिए इंतजार करने लगे।

‘और तुम्हारा मंगेतर क्या करता है?’ उसने पूछा।

‘वो तुम्हारी तरह टेकी है। मल्टीनेशनल में काम करता है,’ मैंने जवाब दिया।

‘आह, समझा। तुम्हारी फील्ड से एकदम अलग, है न?’

‘तुम कह सकते हो।’

‘तो तुम बच्चों के साथ काम करती हो या बड़ों के? और ये पॉट्री कोर्स कितने समय का होता है? इसके बारे में कुछ बताओ,’ उसने कहा।

ऐसा लग रहा था कि उसे वाकई में दिलचस्पी थी; वो सिर्फ मुझसे बात करने या समय काटने के लिए ही ऐसा नहीं कर रहा था। जब लोग ऐसा करते हैं तो मुझे बहुत चिढ़ होती है। ऐसे लोगों से निबटने के लिए मैं अपने हाथ में किताब तैयार रखती हूं। वैसे भी किताबें ऐसे लोगों से ज्यादा दिलचस्प होती हैं।

‘हमारे पास कई कोर्स हैं। हमारे पास बच्चों के लिए भी प्रोग्राम है और बड़ों के लिए भी।’

‘और ये बड़े लोग इसे यूं ही कुछ करने के लिए करते हैं या इसे आगे भी जारी रखते हैं?’

‘देखो, ये हर आदमी पर निर्भर करता है। हम कॉर्पोरेट वर्कशॉप करते हैं, बच्चों की पार्टियां अरेंज करते हैं, और फिर हमारे पास आठ सप्ताह का पूरा कोर्स भी है। और ये बेसिक कोर्स है। एक बार आपका बेसिक कोर्स पूरा हो जाए, तो आप एडवांस कोर्स के लिए भी जा सकते हैं, अगर आप चाहें तो। हमारे पास ग्लेजिंग, पॉटर’स व्हील फाउंडेशन कोर्स और ‘ब्रिंग क्ले टू लाइफ’ भी है, जिसमें कलाकृतियां बनाई जाती हैं। और हां, तुम्हारे सवाल का जवाब है कि ज्यादातर लोग इसे कुछ नया करने के नजरिए से ही शुरू करते हैं, लेकिन बाद में जब उन्हें इसमें मजा आने लगता है तो वो लौट आते हैं।’

‘वाह! मैं तो जानता भी नहीं था कि इसमें इतने सारे विकल्प होते हैं। मैंने तो पॉटर व्हील भी नहीं देखा—सिवाय फिल्मों के—और कभी क्ले को छुआ भी नहीं। जब तुम पॉटर व्हील कह रही थीं, तो मुझे घोस्ट का डेमी मूर याद आ रहा था,’ उसने कहा।

‘हाहा—ओ हां, वो सेन्शुअल है। तुम्हें एक बार जरूर ट्राई करना चाहिए! क्ले के साथ काम करना एक किस्म की थैरेपी है। क्ले मिट्टी जमीन से बनी है, जो हर चीज का स्रोत है। प्राचीन सभ्यता में—वो हर काम के लिए मिट्टी का इस्तेमाल करते थे, अपने बर्तन बनाने से लेकर गहने बनाने तक में। हर चीज की शुरुआत इसी से होती है। ये बहुत सुकून देने वाली होती है।’

मेरे लिए इतनी बात करना सामान्य नहीं था लेकिन उसने मुझसे उसके बारे में सवाल पूछा था, जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद था। मैं उसे बताना चाहती थी कि पॉट्री इतनी खास क्यों थी।

‘मुझे लगता है कि तुमने मुझे राजी कर लिया है। मैं सच में कभी एक बार ट्राई करना

चाहूंगा,' उसने कहा।

'हमारे पास बहुत खूबसूरत रूफटॉप स्टूडियो है, जहां बहुत से प्लांट और टेरोकोटा स्टाफ भी है। कभी भी आ जाना। मंडे को हमारा स्टूडियो बंद रहता है, लेकिन वीकेंड के साथ हर दिन खुलता है,' मैंने कहा।

उसने मुझसे स्टूडियो का नाम और उसकी लोकेशन पूछी।

'उसका नाम मिट्टी है, और वह एचएसआर के लेआउट में है।'

'ओह! ये तो मेरे घर के बाजू में ही है,' उसने बताया कि वह बेलंदूर में रहता है।

'फिर तो स्टूडियो तुम्हारे घर से सिर्फ पांच-छह मिनट दूर पड़ेगा। और ट्रैफिक ज्यादा रहा तो बीस मिनट,' मैंने कहा और वह हंस दिया।

जब आप बंगलौर जैसे शहर में रहते हों, तो आप अपनी मंजिल की दूरी को टाइम के हिसाब से नापते हैं, जो ट्रैफिक की हालत पर निर्भर करता है। वास्तविक दूरी को जानना किसी काम नहीं आता, वो बस गूगल मैप के लिए ही बेस्ट है।

उसका मोबाइल बजा। मैंने रिंगटोन पहचान ली। यह एविसी की वेटिंग फॉर लव थी।

'एक्सक्यूज मी, मुझे ये कॉल लेनी होगी, और इस बार प्रॉमिस मैं जोर से बात नहीं करूंगा,' उसने कहा।

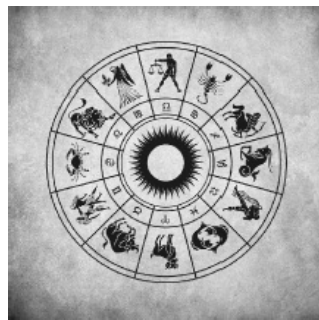
'प्लीज ले लीजिए,' मैंने उसे कहा और वह मुस्कुरा दिया, वह फोन को लेकर कुछ शर्मिंदा था।

'ब्रो, मैं अभी बात नहीं कर सकता,' मैंने उसे कहते हुए सुना। फिर कुछ पल खामोशी रही, फिर, 'बात में बताता हूं। मैं किसी के साथ हूं।'

और फिर खामोशी।

'मैं बाद में फोन करूंगा,' वह वाकई में फुसफुसा रहा था और फिर मेरी तरफ माफी भरी नजरों से देखा।

साढ़े पांच घंटे बाद, जब हम आखिरकार चेन्नई पहुंचे, तो मुझे अजीब लगा कि पहली बार ट्रेन के सफर में मुझे अपनी किताब खोलने का मौका नहीं मिला था।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

जो आप नहीं करना चाहते हैं, उसे करने से बचें। अपनों से नजदीकी प्राथमिकता रहेगी। नए काम, नई शुरुआत के लिए अच्छा समय। आपके जीवन में असीम संभावनाएं हैं। दुनिया आपका कैनवास है। बढ़ो और रंग दो!

3

अनिकेत

सफर के दो घंटे बाद सुब्बु का फोन आया। तब तक निधि और मैं पुराने दोस्तों जैसे बात करने लगे थे। इस लड़की से बात करना बहुत आसान था। यह न तो रौब जमाने वाली थी, न तृष जैसी प्यारी। हालांकि मैं तृष को दो सालों से जानता था, लेकिन फिर भी उससे कुछ कहने से पहले दो बार सोचता था। मैं नहीं कह सकता था कि मेरी किस बात से नाराज होकर वह मुंह बना लेगी। उसके ऐसा करने से मुझे नफरत है। वह मुंह बनाकर फौरन मुझे खारिज कर देती है। मैं नहीं

जानता कि वह ऐसा जानबूझकर करती है या ये उसकी आदत है। लेकिन मैंने इस पर ध्यान दिया है। मैं उसकी हर बात पर ध्यान देता हूँ।

उससे अलग, निधि के साथ मैं एकदम सहज था। वह यकीनन स्मार्ट है। उसके बात करने के तरीके से मैं कह सकता हूँ कि वह बहुत किताबें पढ़ती है। और उसकी गोद में एक खुली हुई किताब भी उलटी रखी थी।

‘एक्सक्यूज मी, मुझे ये कॉल लेनी होगी, और इस बार प्रॉमिस मैं जोर से बात नहीं करूँगा,’ फोन बजने पर मैंने उससे कहा, स्क्रीन पर सुब्बु का नाम दिख रहा था। उसने मुस्कुरा कर कहा ले लीजिए।

‘ब्रो, मैं अभी बात नहीं कर सकता,’ मैंने सुब्बु से कहा।

‘क्या हुआ? कुछ देर पहले तो तुम बात कर सकते थे। अब तुम शांत हो गए हो?’

‘बाद में बताता हूँ। मैं किसी के साथ हूँ।’

‘अभी से? अब से मत कहना कि तुमने ब्राउजर चेंज कर लिया? आईई से फायरफॉक्स पहुंच गए, है न? तृष से इतनी जल्दी पीछा छुड़ा लिया? कुछ तो दिल रखो—उसने तुम्हें अभी तक छोड़ा नहीं है,’ उसने कहा और मैं मुस्कुरा दिया।

‘मैं बाद में फोन करता हूँ,’ मैंने फुसफुसाते हुए फोन काट दिया। मैंने ध्यान दिया कि निधि मुस्कुरा रही थी।

‘इट्स ओके। अगर तुम्हें अपने दोस्त से बात करनी है तो मैं म्यूजिक सुन सकती हूँ,’ उसने कहा।

‘एक मिनट रुको। तुम्हें कैसे पता कि मैं अपने दोस्त से बात कर रहा था?’

‘ये वही था न जिससे तुम पहले भी बात कर रहे थे, है न?’

‘हां। लेकिन तुम्हें ये कैसे पता?’ मैं हैरान था कि वह अनुमान लगाने में कितनी तेज थी, जबकि मैंने सुब्बु से ऐसा कुछ नहीं कहा था जिससे उसे हिंट मिलता कि मैं किसी लड़के से बात कर रहा था।

‘अनुमान लगाना इतना मुश्किल भी नहीं था। मैं अपने आसपास देखती हूँ, चीजों पर ध्यान देती हूँ।’ वह फिर से मुस्कुरा दी। जब वह मुस्कुराती है तो उसकी आंखों में एक चमक आ जाती है और वह बहुत प्यारी दिखती है। वह ऐसी लड़की थी जिसे मेरे माता-पिता जरूर पसंद करते। तृष जैसी नहीं। यकीनन उन्हें तृष पसंद नहीं आने वाली थी। उनके हिसाब से वह बहुत गैर पारंपरिक थी। लेकिन मुझे उन्हें मनाना था। हालांकि उससे पहले मुझे उसका शूटिंग से लौट आने का इंतजार करना था।

मैंने अपना फोन चैक किया कि उसकी तरफ से कोई और मैसेज या मेल न आया हो, लेकिन कुछ नहीं था। तो मैंने बाकी का सफर निधि से बात करते हुए काटा। वह अपने काम को लेकर बहुत उत्साहित थी और मैंने मन ही मन तय कर लिया था कि टीम-बिल्डिंग एक्टिविटी के लिए एचआर हैड को पोर्ट्री कोर्स का सुझाव दूंगा। टीम की आउटिंग अब अक्सर दोहराव ही लगने लगी थी; वो अक्सर एडवेंचर या नेचर रिजोर्ट जाया करते, जहां हम रॉक क्लाइम्बिंग और रस्सी पर चलने की कोशिश करते। मैं उन सबसे पक चुका था। पोर्ट्री के बारे में जानना दिलचस्प हो सकता था।

ट्रेन का घंटों का सफर यूं ही गुजर गया, और हम मानों झट से चेन्नई पहुंच गए। मैंने उससे

पूछा कि वो घर कैसे जाएगी और उसने बताया कि उसके पापा उसे लेने आएंगे।

‘ओके, बाय! फिर मिलते हैं,’ मैंने कहा। कितना अजीब था कि मैं उससे तभी मिला था, लेकिन ऐसे लग रहा था मानो हम पुराने दोस्त हों।

‘बाय! और अपनी गर्लफ्रेंड की चिंता मत करना। सब ठीक हो जाएगा,’ उसने कहा।

‘हम्म, लगता तो है,’ मैंने ऊपर से उसका सूटकेस उतरवाने में मदद करते हुए कहा।

‘थैंक्स,’ वह मुस्कुराई।

मैंने ध्यान दिया कि वह सीट पर अपनी किताब भूल गई थी, जो मैंने उठा ली। वो डेल कार्नेज की हाउ टू विन फ्रेंड्स एंड इनफ्लूयेंस पीपल थी। दिलचस्प। मुझे जरा भी नहीं लगा था कि उसे इसमें से किसी टिप्स की जरूरत थी। वो तो बात करते ही दिलों को जीत लेती होगी।

मैं उसके पीछे गया, लेकिन जैसे ही वह मुझे दिखी, वह अपने पापा की तरफ दौड़कर उनके गले लग रही थी।

कुछ पल मैं बस खड़ा होकर उन्हें देख रहा था। अब वह किसी औरत के गले लग रही थी, जो शायद उसकी सौतेली मां होंगी। वह मेरी तरफ मुड़ी और बाय के लिए हाथ हिलाया, और फिर वह उन लोगों के साथ अपने रास्ते चली गई।

चेन्नई की गर्मी और चिपचिपे पन का अहसास मुझे तब हुआ जब मैं कंधे पर अपना बैग टांगकर ऑटोरिक्शा स्टैंड की तरफ बढ़ रहा था। अनीशा घर पर थी, और जब मैंने घंटी बजाई तो उसने ही दरवाजा खोला था।

‘हाय,’ उसने इतने जोश से मुझे हाय बोला, जैसे कोई छोटी बहन ही बोल सकती है।

‘हाय। आज कॉलेज नहीं गई?’ मैंने पूछा।

‘किसी एंट्रेंस टेस्ट का एग्जाम सेंटर हमारा कॉलेज है, तो आज हमें छुट्टी मिल गई,’ उसने कहा।

‘ओह, बढ़िया है,’ मैंने कहा।

‘अनि! तुम कब आए? मुझे तो लगा था कि तुम कल आने वाले हो,’ मॉम ने रसोई से बाहर आते हुए पूछा, वह एप्रन से हाथ पोंछ रही थीं।

‘आप कैसी मां हो? आपको ये भी नहीं पता कि आपका इकलौता बेटा कब आ रहा है?’ मैंने नकली नाराजगी दिखाते हुए कहा, हालांकि उनका चेहरा मुझे देखकर खिल उठा था।

‘मैंने उन्हें बताया था कि तुम आज आ रहे हो, लेकिन मेरी बात तो वो सुनती ही नहीं,’ अनीशा ने टांग अड़ाई।

‘अच्छा है तुम आ गए, कन्ना। मैं आज तुम्हारा फेवरेट वेज पुलाव बना रही हूं,’ उन्होंने कहा।

‘हम्म, यम्मी, मॉम आप बेस्ट हो,’ कहते हुए मैं ऊपर के बेडरूम में अपना बैग रखने गया, जो कभी मेरा ही कमरा था, लेकिन अब वह गेस्ट बेडरूम बन चुका था।

मुझे इस घर से प्यार है। मेरी मॉम ने एक खूबसूरत सा गार्डन बना रखा है। वहां वह सब्जियां भी उगाती हैं। वैसे भी चेन्नई की कॉलोनी बेसंत नगर इलियट बीच के नजदीक पड़ती है, जिससे मेरी कुछ खुशनुमा यादें जुड़ी हैं। डैड ने अपने रिटायरमेंट से कुछ समय पहले ये जगह खरीदी थी, और तभी से हम यहां रहने लगे थे।

डैड अपने बेडरूम में थे और उन्होंने मुझे बुलाया। उन्होंने पूछा कि मैं कितने समय के लिए

आया था।

‘तीन दिन, डैड। मुझे मंडे से वापस काम पर जाना है,’ मैंने कहा। घर आना सच में अच्छा अहसास होता है, भले ही मेरे पास खुद का कमरा तक नहीं था और मैं अपने ही घर में मेहमान था। मेरा फ्लैट बेलंदुर में था—हां, किराये का—लेकिन जब भी बात ‘घर’ की आती है, तो मेरे मन में यह चेन्नई वाला घर ही आता है।

लंच के बाद उन्होंने वापस से मेरी शादी का टॉपिक छेड़ दिया। इस पर हम पहले भी कई बार बात कर चुके थे और मैं हमेशा प्रार्थना करता था कि वो इस मामले पर बात न करें। लेकिन वो कहां मानने वाले थे।

‘कन्ना तुम जानते हो कस्तुरी अक्का अपने कजिन की बेटी की बात कर रहे थे। उसका नाम प्रियंका है,’ माँ ने कहा। मैं अंदर ही अंदर कसमसाया। दरअसल चिल्लाया। लेकिन सामने बस मैं आह ही भर सका। मैं जानता था कि अब बातें कहां से कहां पहुंच सकती थीं।

‘मां, मैं अभी शादी नहीं करना चाहता,’ मैंने कहा।

‘मैं नहीं कह रही कि सीधा शादी ही कर लो। मैं तो बस उससे मिलने को कह रही हूं,’ माँ ने कहा।

‘शादी-करवाने-पर-तूली-पड़ी-मां को लंच के साथ कौन सी वाइन पिलाई जाए। मैंने ब्रिटिश लहजे में कहा। अनीशा खिलखिलाई। मुझे-तंग-मत-करो वाली वाइन, उसने मेरे लहजे की नकल करते हुए कहा।

‘क्या?’ माँ ने पूछा।

‘कुछ नहीं, मां, आप नहीं समझोगी,’ अनीशा ने कहा और मैं मुस्कुरा दिया।

डैड ने कहा, ‘अनि हर चीज का समय और जगह होती है। अब तुम्हें अपने लिए लड़की देखनी शुरू कर देनी चाहिए, तुम सत्ताइस साल के हो। कुछ भी सैट होने में टाइम तो लगेगा ही न। तीस साल तक तुम्हें सैटल हो जाना चाहिए।’

इंडियन पैरेंट्स की प्रोब्लम क्या है? सबके सब अपने बच्चों को ‘सैटल’ देखना चाहते हैं। जैसे हम कोई कैमिकल हों, जिसे किसी एक्सपेरिमेंट के लिए टेस्ट ट्यूब में डाला गया हो और अब वो चाहते हैं कि हम नीचे तली में जाकर सैट हो जाएं।

‘डैड, मैं पहले से ही सैटल हूं। थैंक्यू वैरी मच।’

‘तुम्हारे दिमाग में कोई है? अगर है तो हमें बता दो, और तुम्हारी मां और मैं रिश्ते की तैयारी शुरू कर देंगे,’ उन्होंने कहा।

‘है कोई, डैड,’ अनीशा चहकी। मैंने उसे चुप कराने के लिए घूरा, लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। मैं पहले इस बारे में तृषा से बात करना चाहता था, फिर मम्मी-पापा से। लेकिन अब अनीषा ने सब उगल दिया। अब मैं सिर्फ एक ही काम कर सकता था। तृषा के होने को ही नकार दूं। मां-पापा को कुछ पता नहीं चलेगा।

‘नहीं, कोई नहीं है,’ मैंने तुरंत अपनी बहन को टेबल के नीचे से पैर मारते हुए कहा।

‘देखो, हम बहुत खुली सोच के हैं। अगर कोई है तो तुम हमें बेझिझक बता सकते हो,’ माँ ने कहा।

हां सही है। इतनी खुली सोच के कि तुम बेटे को अपनी शादी का फैसला तक नहीं करने दे रहे।

‘नहीं, माँम, कोई नहीं है,’ मैंने कहा।

‘फिर अनीशा ने ऐसा क्यों कहा?’ माँम ऐसे हार मानने वाली नहीं थीं।

‘अनीशा तो कुछ भी बोलती रहती है,’ मैंने कहा, मैं उसके चेहरे पर आती नाराजगी को देख सकता था। वह कुछ कहने ही वाली थी कि मैंने उसे घूरा तो वह चुप हो गई।

‘देखो, तुम अभी नहीं करना चाहते, लेकिन उम्र होने पर हम सभी को कोई न कोई चाहिए होता है,’ डैड ने कहा।

‘किसलिए?’ मैंने पूछा।

‘ये कैसा सवाल है?’

‘आपने कहा कि उम्र होने पर हम सभी को कोई न कोई चाहिए होता है। मैं ऐसा नहीं मानता। मेरे दोस्त हैं, परिवार है, कैरियर है। मैं घूमना चाहता हूँ, दुनिया देखना चाहता हूँ। शादी आपको बांध देती है।’

‘शादी से तुम कैसे बंध जाओगे? अगर तुम्हारे डैड और मैंने भी ऐसा ही सोचा होता, तो तुम और अनीशा पैदा ही नहीं होते।’ माँ का लहजा सख्त हो चला था।

मैं हंसा। और अनीशा मुस्कुरा दी।

‘मैंने तो पैदा होने के लिए नहीं कहा था, कहा था क्या? मैं पैदा हुआ क्योंकि आप लोग मुझे पैदा करना चाहते थे। बशर्ते कि हम एक्सीडेंटली न हो गए हों,’ मैंने कहा।

माँम ने हाथ बढ़ाकर मेरे सिर पर चपत लगा दी। ‘बेशर्म बच्चे। यही सिखाया है मैंने तुम्हें? कितनी बकवास करने लगे हो तुम? क्या अपने पैरेंट्स से ऐसे बात करते हैं?’ अब वो पूरी तरह से माँ के रूप में आ गई थीं।

सालों के अनुभव से मैं जानता था कि ऐसे में उनसे बहस करना सही नहीं होना था। थोड़ी ही देर में उनके आँसू निकल जाने वाले थे।

थोड़ी देर बाद आखिरकार वह खुद ही शांत हो गई।

‘अनिकेत, हम बस तुम्हें उस लड़की से मिलने को कह रहे हैं। तुम्हें अभी जवाब देने की जरूरत नहीं है, पता है न। और तुम उससे घर से बाहर मिल लेना, उसे बाहर कॉफी के लिए ले जाओ और उससे बातें करो,’ डैड ने कहा।

आखिरकार, खीझ और कुछ जवाब नहीं होने की वजह से मैंने प्रियंका से मिलने के लिए हाँ कह दिया, ऐसी लड़की से जिसके बारे में अब से पंद्रह मिनट पहले मैं कुछ जानता भी नहीं था।

जैसे ही लंच खत्म हुआ और हम माँम-डैड की नजरों से दूर हुए, तो अनीशा ने मुझे मेरे कमरे में घेर लिया। ‘तो तृष के साथ क्या हुआ, हाँ? कोई परेशानी?’ उसने पूछा। उसने बिना घुमाए हुए सही निशाने पर वार किया था, जैसे कोई भाई-बहन ही कर सकते हैं।

‘कुछ भी तो नहीं,’ मैंने कहकर उसे टालने की कोशिश की। लेकिन वह टस से मस नहीं हुई।

‘बोलो भी, मैं तुम्हारा चेहरा देखकर बता सकती हूँ। क्या तुम लोगों का ब्रेकअप वगैरह कुछ हुआ है?’ उसने पूछा।

‘बिल्कुल नहीं।’ मैंने तुरंत जवाब दिया, मेरा लहजा थोड़ा सुरक्षात्मक था।

‘फिर? क्या उसने ऐसा कहा कि उसे कुछ टाइम चाहिए?’ अनीशा अपने बड़े भाई की लव स्टोरी की तह तक पहुँचने के लिए बेचैन थी। साथ ही वो चालाक भी थी। यह खतरनाक संयोजन होता है।

‘हां,’ मैंने आखिरकार हार मानते हुए कहा।

‘आह—देखा, सब ऐसा ही कहते हैं। फिर एक ईमेल आएगा “सॉरी बेबी ये ठीक नहीं है, शायद हम दोनों एक साथ नहीं, वगैरह वगैरह”। अगर तुम लकी रहे तो ईमेल मिलेगा, नहीं तो एक टैक्स्ट पर भी बात खत्म की जा सकती है।’

‘क्या? ये क्या बात कर रही हो तुम? तृष और मेरा ब्रेकअप नहीं हुआ है!’

‘ठीक है—वैसे सारे ब्रेकअप की शुरुआत ऐसे ही होती है,’ उसने कहा।

मैंने उसके बाल पकड़ लिए और वह मदद के लिए चिल्लाने लगी।

‘तुम्हारी लव स्टोरी में क्या चल रहा है?’ मैंने उससे पूछा।

‘अगर तुम्हारे ऑफिस में कोई सताइस साल का हॉट लड़का हो तो बताना। इन छोटे-छोटे लड़कों से मैं तंग आ गई हूं। इम्मैच्योर, उल्लू, गधे,’ उसने कहा।

‘क्या? दफा हो जाओ यहां से। तुम मेरे किसी दोस्त के साथ डेटिंग नहीं करोगी,’ मैंने तुरंत विरोध किया।

‘हाहाहा, रिलैक्स, मैं बस मजाक कर रही हूं। कुछ नहीं है,’ उसने कहा।

मैंने उसे थोड़ा कुरेदा, तो पता चला कि उसका संजय से ब्रेकअप हो गया था, जिसे वह ग्यारहवीं क्लास से चाहती थी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे, और बाद में विजुअल कम्प्यूनिकेशन के लिए वह विमंस कॉलेज गई और संजय इंजीनियरिंग के लिए मणिपाल गया। मैं जानता था कि वे कुछ समय टच में रहे, जैसे वो उसकी शिकायत किया करती थी। अब वह बहुत हताश लग रही थी।

‘मतलब वो कैसा इंसान होगा जो फेसबुक पर एक लड़की को किस करने वाली फोटो पोस्ट करने के बाद, मेरे पूछने पर सफाई देगा?’ अनीशा ने पूछा।

‘सिर्फ पागल। ठरकी। तुम्हें उससे बेहतर मिलेगा। वो लड़का वैसे भी बेवकूफ था,’ मैंने कहा और आगे बढ़कर उसे गले लगा लिया। मैं संजय से नाराज था—लेकिन वो मुझे कभी भी पसंद नहीं था। मैंने अनीशा को समझाने की कोशिश की थी, लेकिन उसने ध्यान ही नहीं दिया।

‘हां, मुझे तुम्हारी बात सुननी चाहिए थी,’ वह कहते हुए मेरे गले लग गई।

हमने कुछ देर मेरे काम के बारे में बात की, फिर उसके कॉलेज उसकी फ्यूचर प्लानिंग की। फिर सीढ़ियों से पापा की आवाज सुनाई दी।

‘अनि, मैंने प्रियंका के घरवालों से बात कर ली। मैंने उन्हें बता दिया कि तुम कल नुनगमबक्कम में ताज में उससे मिलोगे। तुम चाहो तो गाड़ी ले जाना,’ उन्होंने कहा।

‘वाह—इतनी जल्दी,’ मैंने अनीशा से कहा।

‘जाओ उससे मिलो। बहुत प्यारी है। और स्मार्ट भी,’ अनीशा ने जवाब दिया।

‘तुम्हें कैसे पता?’ मैंने पूछा।

‘मैं पिछले सप्ताह जीएसबी सभा में मॉम के साथ उससे मिली थी,’ उसने दांत दिखाए।

तब मुझे अपने परिवार की चाल समझ आई। वो सब साथ मिले हुए थे। अब बचने का कोई रास्ता नहीं था। मुझे इसी बात से चिढ़ हो रही थी कि मैं एक लड़की से सिर्फ उसे न कहने के लिए मिलने जाने वाला था, लेकिन मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता था।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आप खुद को ऐसे हालात में फंसा पाएंगे, जो आपके नियंत्रण में नहीं होगा। ग्रह ऐसे बन रहे हैं, जो आपको कुछ करने के लिए मजबूर करेंगे। पुराना रिश्ता बोझ लगने लग सकता है। नया रिश्ता खिलेगा और आप उसमें खुद को सहज पाएंगे।

4

निधि

स्टेशन से घर वापसी के रास्ते में तारा बातें करती रही थीं। लेकिनफिर, तारा तो हमेशा ही बातें करती हैं। डैड आगे ड्राइवर के साथवाली सीट पर बैठे थे, और मैं और तारा पीछे। मणि, हमारा ड्राइवर, गाड़ी चला रहा था, क्योंकि डैड को गाड़ी चलाना पसंद नहीं था।मणि मेरे बचपन से ही हमारे साथ था। माँम की डैथ के बाद मणिही मुझे स्कूल से घर लाया था। मुझे याद है कि घर आने परवो कैसे फूट-फूटकर रोया था, जबकि मैं पिछली सीट पर बुत बनेबैठी थी।

‘तो अब तुम्हारा और मनोज का क्या चल रहा है—शादी की डेट फाइनल हुई या नहीं?’ तारा ने पूछा।

डैड ने भी पीछे मुड़कर पूछा, ‘हां, तुम लोगों ने क्या फैसला किया है?’

‘वह जल्दी शादी करना चाहता है। लेकिन पता नहीं क्यों, मैं तैयार नहीं हूं,’ मैंने जवाब दिया।

‘क्यों, शादी जल्दी करने में क्या परेशानी है?’ तारा ने पूछा।

तारा उन लोगों में से हैं जो निश्चित तौर पर जानते हैं कि उन्हें क्या चाहिए। जब वह मेरे डैड से मिली थीं, तो तुरंत ही वह समझ गई थीं कि यही वो आदमी है, जिसके साथ उन्हें जिंदगी बितानी है। तब वह उनकी कंपनी में मिड-लेवल मैनेजर थीं, और उन्हें इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ा था कि वह विधुर थे या उनकी एक बड़ी बेटी थी। मेरी मां को गुजरे तब तक सात साल हो चुके थे, और कॉलेज के लिए घर से दूर जाने के बाद मेरे पापा घर में काफी अकेले रह गए थे। उन्होंने मेरे डैड का पीछा किया और वह भी उनसे प्यार कर बैठे। कम से कम, मुझे तो ऐसा ही लगा। मुझे इसमें कुछ बुरा नहीं लगा, मेरी भी उनसे अच्छी बनती थी। और मैं देख सकती थी कि उनके साथ मेरे डैड कितने खुश थे। मैं शादी को लेकर काफी रोमांचित थी, जो सादा सा समारोह था। वह काफी युवा थीं—तब मैं बाईस साल की थी और वह छत्तीस—तो मैंने उन्हें उनके नाम से ही पुकारा। उन्हें भी पसंद था कि मैं उनका नाम लूं।

इन सालों में तारा और मेरे बीच एक रिश्ता सा बन गया। मेरे डैड ने हमारा घर बेच दिया, जिसमें वो मेरी माँ के साथ रहते थे, और अपने व तारा के लिए दूसरा फ्लैट लिया। शुरू में मुझे थोड़ा बुरा लगा, लेकिन फिर ये उनका निजी मामला था। तारा ने मामले को बहुत समझदारी से संभाला। वह जोर देती रहीं कि ये मेरे डैड का आइडिया था, और ये भी कि उनका फ्लैट मेरा भी घर होगा। हालांकि मैं उस समय कॉलेज में थी, और घर पर रहती भी नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्होंने घर की डेकोरेशन में मुझे जोड़े रखा। तारा ऐसी ही थीं, और इससे हम एक-दूसरे के और करीब आ गए।

सालों में तारा से मेरा रिश्ता और मजबूत ही हुआ। सौतेली मां से ज्यादा वो मेरे लिए दोस्त हैं, ऐसी दोस्त जिस पर मैं भरोसा कर सकती थी। तो पिछले कुछ सप्ताह से मेरे मन में जो चल रहा था, वो मैं उन्हें आराम से बता सकती थी। दरअसल, मैं उनसे इस पर चर्चा करना चाहती थी।

‘मुझे नहीं लगता कि मनोज मेरे लिए सही इंसान है, तारा।’

‘क्या?’ डैड और तारा ने एक साथ कहा।

मैंने हां में सिर हिलाया। ‘मैं तय नहीं कर पा रही। मुझे लगता है, तारा, दुनिया में तुम ही इकलौती इंसान हो, जिसे पता था कि उसे किससे शादी करनी है।’

‘ये सही नहीं है। मुझे भी पता था कि मुझे इससे शादी करनी है,’ डैड ने कहा।

‘हां—आप दोनों ही हैं जो शादी के इतने साल बाद भी एक-दूसरे को प्यार कर सकते हैं,’ मैंने कहा।

‘लाइफ ब्यूटीफुल होती है अगर आपके पास एक सहारा देने वाला साथी होता है; नहीं तो यह जहन्नम बन सकती है। तो अगर शादी के बारे में तुम्हारे मन में कुछ दूसरा ख्याल आ रहा है, तो उस पर ठीक से विचार कर लो, उसे परखो। जल्दी में कोई फैसला मत करो, किसी के भी

दवाब में मत आओ।’

सच में, मैं अपने पापा को बहुत प्यार करती हूं। वह बहुत ही अच्छे अभिभावक हैं।

‘मैं उनसे सहमत हूं। लेकिन हम वाइन के साथ इस पर बात करेंगे,’ तारा ने कहा, और मैं मुस्कुरा दी। तारा जानती हैं कि कब क्या कहना है।

घर पहुंचकर मैंने उनसे कहा कि मैं कुछ देर आराम करना चाहती हूं। फ्लैट में घुसते ही पाइन की मोहक महक आ रही थी। तारा ने घर को बहुत करीने से सजाया था। हर छोटी चीज पर उसकी नजर थी, और उसकी पीले रंग से रंगी एक दीवार जिस पर कई ब्लैक एंड वाइट फोटो के बड़े-बड़े फ्रेम लगे थे, जिनमें मॉम और मैं, डैड और मॉम और बहुत सी वो यादें सहेजी हुई थीं, जिनका हिस्सा वो नहीं थीं। बहुत समय पहले, जब वो ये सब सेट कर रही थीं, तब मैंने पूछा था कि वो ये सब यादें अपनी दीवार पर क्यों लगाना चाहती थीं—यह उनका और पापा का घर था; ये पुरानी यादें उनकी नई जिंदगी में दखल नहीं देंगी, वो जिंदगी जो वो मेरे पापा के साथ शुरू करने वाली थीं? उनके जवाब से मैं हैरान रह गई थी। ‘नहीं, निधि—यह उनके जीवन का हिस्सा है, और मैं इसका सम्मान करना चाहती हूं,’ उन्होंने कहा था। मेरी आंखें भर आई थीं, और मैंने तुरंत अपना मुंह मोड़ लिया था।

तारा उन खास महिलाओं में से थीं जिनमें प्यार की असीम क्षमता होती है, और मेरे डैड सच में खुशकिस्मत थे कि वो उन्हें मिलीं।

डिनर के समय मैंने देखा कि तारा ने आलीशान तरीके से सजी मेज पर, स्वादिष्ट खाना परोसा था। काले रंग का मेजपोश, जिस पर खूबसूरत फूलों का डिजाइन था। मेज के बीच रखे फूलदान में क्लेमाटिस और ऑर्किड के फूल सजे थे। वह सुनहरी बॉर्डर वाली सफेद प्लेटें और ब्रास के चाकू-छुरी इस्तेमाल करती थीं। नेक्किन अच्छी तरह से तहाकर प्लेटों पर रखे हुए थे, और उनके ऊपर क्रिस्टल के छोटे-छोटे वास रखे थे, जिनमें गुलाब का एक फूल रखा था। वहां ब्रास के लंबे कैंडलस्टिक और स्वरोस्की के हैंड-कट क्रिस्टल वाइन गिलास रखे थे, जो ऊपर लटके झूमर की रोशनी से झिलमिला रहे थे।

‘वाह, तारा—तुम कमाल की हो। ये एकदम किसी मैग्जीन से निकला सीन लग रहा है!’ मैं अपनी खुशी छिपा नहीं सकती थी।

‘पिछले महीने हमने शिकागो से आए मेहमानों के लिए ऑफिशियल डिनर आयोजित किया था, और उन्होंने भी इस सबकी बहुत तारीफ की थी,’ डैड ने अपने दोनों हाथों से उनके कंधे दबाते हुए कहा। उन्होंने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर डैड की बांह छुई और प्यार भरी नजरों से उन्हें देखा। वो नजरों का मिलना मुश्किल से पल भर का था, लेकिन इससे काफी कुछ पता चल रहा था। उनका प्यार और अटूट रिश्ता समझने में कोई गलती नहीं हो सकती थी।

और मैं जानती हूं कि मनोज के साथ अपने रिश्ते में यही कमी मुझे खलती है। यकीनन, यह गहराई। यही मुझे नहीं मिलता।

एक बार हम डिनर के लिए बैठे, और वाइन का आधा गिलास खत्म होते-होते मैंने तय किया कि अब मुझे मनोज के बारे में बात करनी ही होगी।

‘डैड, तारा—मुझे एक सवाल पूछना है। क्या आप लोगों को लगता है कि आप दोनों के बीच का प्यार, समझ क्या इन सालों में जरा भी कम या फीकी हुई है? कभी भी?’ सवाल पूछने के साथ ही मैं जवाब भी जानती थी, वो दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए।

‘नहीं, कभी भी नहीं। मैं खुशकिस्मत हूँ कि तारा मेरी जिंदगी में आई। मैं तुम्हारी मां से भी प्यार करता था, लेकिन वो अलग था,’ डैड ने कहा।

मैं ये जानती थी। डैड मॉम के साथ कभी इतने भावुक नहीं रहे थे। उनकी शादी अरेंज्ड थी। और हालांकि उनमें कभी कोई बड़ी लड़ाई या असहमति नहीं रही थी, लेकिन वो कभी भी एक-दूसरे को अपना बेस्ट देने के लिए प्रेरित नहीं कर पाए। शादी में रहने के लिए उन्होंने समझौते किए, एडजस्टमेंट किए, वैसे ही जैसे दूसरे लोग करते हैं। लेकिन तारा के साथ, मेरे डैड पूरी तरह एक अलग इंसान थे। मैं उनमें ये बदलाव देख सकती थी कि वे पहले कैसे थे, और इन कुछ सालों में क्या हो गए थे। मैंने मॉम के साथ कभी उन्हें यूँ उत्साहित नहीं देखा था।

‘मैं इन्हें पाकर खुद को खुशकिस्मत समझती हूँ। तुम्हारे डैड से मिलने से पहले मैं कुछेक बुरे संबंधों से गुजरी थी,’ तारा ने कहा।

‘मुझे लगता है कि यही मनोज और मेरे रिश्ते में कमी है। वह अच्छा लड़का है। मुझसे बहुत प्यार भी करता है। लेकिन पता नहीं क्यों हमारी जम नहीं पाती। आप मेरा मतलब समझ रहे हैं न?’ मैंने पूछा।

‘जम नहीं रही, मतलब क्या निधि? क्या तुम कहना चाहती हो कि वो तुम्हें समझता नहीं है?’ डैड ने पूछा।

‘वो सारी अच्छी बातें कहता है, डैड। लेकिन वो चीजों के लिए मेरे जैसा उत्साहित नहीं है।’

‘उसका तुम्हारी पसंद की चीजों पर उत्साहित होना जरूरी तो नहीं है, निधि,’ तारा ने नरमाई से कहा।

‘जानती हूँ—लेकिन जब मैं अपने बनाए किसी नए स्कल्पचर की बात करती हूँ या उसे सेंटर की कोई मजेदार बात बताती हूँ—जैसे, किसी स्टूडेंट ने कितना शानदार पीस बनाया—तो वह मेरी तरह खुश नहीं होता, और सबसे ज्यादा जरूरी वो ये भी नहीं समझ पाता कि वो मेरे लिए इतना जरूरी क्यों है।’

‘क्योंकि वह अपने काम के लिए भी यूँ उत्साहित नहीं होता। वह नंबर-क्रंचर है जो रोज आंकड़ों और तथ्यों से उलझता है। तुम क्रिएटिव फिल्ड में हो। तुम विचारों पर काम करती हो। तुम्हारा काम उससे बहुत अलग है। तुम साहसी हो, निधि। वह प्रैक्टिकल टाइप का है।’

‘ओह, डैड—आपको तो मेरी साइड होना चाहिए था। न कि उसका बचाव करते हुए मेरी गलती निकालना।’

‘मैं उसका बचाव नहीं कर रहा हूँ, निधि। मैं तो बस फैक्ट्स बता रहा हूँ। बस इसलिए कि किसी की रुचियां तुम्हारे जैसी नहीं हैं, तो इसका ये मतलब नहीं है कि तुम्हारा रिश्ता बढ़िया नहीं हो सकता। मेरा और तारा का उदाहरण लो। उसे दूसरे टीवी प्रोग्राम पसंद हैं, जो मैं नहीं देखता। उसे स्पोर्ट्स चैनल से नफरत है। वह दूसरी तरह की किताबें पढ़ती है। और इसलिए हमारा रिश्ता इतना कमाल है। हम एक-दूसरे से सीखते हैं, और एक-दूसरे की आगे बढ़ने में मदद करते हैं। तुम्हारी मॉम के साथ, हालांकि हम एक जैसे ही काम करते थे, लेकिन ये बात नहीं थी,’ डैड ने कहा।

वह एक प्रैक्टिकल इंसान हैं। और इतने ईमानदार कि कभी-कभी रूखे लग सकते हैं। मुझे खुशी है कि उन्होंने इतनी सफाई से अपनी बात रखी थी।

‘निधि, रुचियों की वजह से शक नहीं किया जा सकता। वैसे, तुम बतीस साल की हो। और

ये स्वाभाविक है कि तुम अपनी आजाद जिंदगी छोड़ने के डर से घबरा रही हो। मुझे लगता है कि बीस के दशक में तुम्हारे विचारों में थोड़ा ज्यादा लचीलापन होगा। मैं जानती हूँ कि बीस के दशक में मैं भी मनमौजी थी, लेकिन आज मैं खुश हूँ कि शुक्र है तब मैंने कोई बड़ा कदम नहीं उठाया। और आखिरकार, जब मैं तुम्हारे पापा से मिली, तब तक मैं पूरी तरह से निश्चित थी। अगर तुम अभी मनोज के बारे में पूरी तरह से निश्चित नहीं हो, तो मुझे लगता है कि तुम्हें थोड़ा समय लेना चाहिए,’ तारा ने कहा।

तारा और डैड, दोनों ने मुझे समझदारी की सलाह दी थी। मैंने तय किया कि इस पर मुझे और सोचना होगा। डिनर खत्म करके मैं उन्हें गुडनाइट कहकर अपने कमरे में आ गई।

मेरा फोन बजा और मैंने देखा कि मेरे फेसबुक के इनबॉक्स में एक मैसेज आया था। मैं हैरान रह गई कि वो मैसेज अनिकेत का था।

‘हाय, मैं अनि। जो तुम्हें ट्रेन में मिला था, गर्लफ्रेंड की प्रॉब्लम वाला। पता है तुम्हारी किताब मेरे पास है। मैं तुम्हें देने के लिए ट्रेन से उतरा था, लेकिन तब तक तुम अपने पेरेंट्स के पास पहुंच गई थीं।’

उसने मुझे इतनी आसानी से कैसे ढूँढ़ लिया।

‘हाय, तुमने मुझे कैसे ढूँढ़ लिया?’ मैंने टाइप किया।

‘मेरे पास एक जादुई छड़ी है। मैंने उससे कहा और उसने मुझे तुम्हारे पेज पर पहुंचा दिया। उस गुगल सर्च कहते हैं, उस पर मैंने उस जगह का नाम डाला, जहां तुमने बताया था कि तुम काम करती थीं।’

‘हा हा—चालाक या चालू? समझ नहीं आ रहा कि तुम्हें किस कैटेगरी में रखूं।’

‘मैं तुम पर छोड़ता हूँ! चालाक चालू या चालू चालाक कैसा रहेगा?’

और इससे पहले कि मैं जवाब दे पाती, उसने जोड़ा:

‘साफ चालाक या साफ चालू भी हो सकता है। खैर, वो तो हम समझ लेंगे, है न?’

‘ओह, जरूर। तुम्हारी गर्लफ्रेंड का मैसेज आया क्या? मेरी भविष्यवाणी है कि वो तुम्हें माफ कर देगी।’

उसने तब जवाब देना बंद कर दिया, और मुझे लगा कि शायद मैं अपनी लिमिट से आगे बढ़ गई थी। क्या मैंने दुखती रग पर हाथ रख दिया था? मुझे थोड़ी समझदारी दिखाते हुए इस मामले को यूँ उठाना नहीं चाहिए था। मैं तो उस लड़के को जानती भी नहीं हूँ और ये मेरा काम नहीं है।

लेकिन उसका जवाब पांच मिनट बाद आया।

‘सॉरी—मेरी बहन मुझसे बात कर रही थी। और—ऐसा कुछ नहीं है। यहां कोई माफी वाली बात नहीं है। बस हम कुछ खराब समय से गुजर रहे हैं।’

मैंने तुरंत जवाब दिया।

‘उम्मीद है कि सब ठीक हो जाएगा।’

पंद्रह मिनट बाद, उसने फिर से जवाब दिया।

‘मुझे भी उम्मीद है।’

और कुछ पल बाद:

‘लेकिन मैं कल किसी और लड़की को “देखने” जा रहा हूँ। घरवाले जोर दे रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी को धोखा दे रहा हूँ।’

चार सैकंड बाद:

‘ओह—लेकिन क्या तुम अपने घरवालों को अपनी गर्लफ्रेंड के बारे में नहीं बता सकते?’

तीन सैकंड बाद:

‘नहीं बता सकता। वो नहीं समझेंगे। मैं खुद भी तो नहीं समझ पा रहा। मैं तो ये भी नहीं जानता कि अभी मेरा स्टेटस क्या है।’

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं। मुझे दुनिया में सबसे समझदार पेरेंट्स मिले थे। ये मेरी खुशकिस्मती है। ज्यादातर पेरेंट्स अपने बच्चों पर बड़े होते ही शादी का दबाव डालने लगते हैं, और उनके लिए मैच-मैकिंग का काम शुरू कर देते हैं। यहां तक कि बच्चों को इसका अहसास होने से पहले ही वे उनकी शादी करा देते हैं। ऐसा मेरे भी कुछ दोस्तों के साथ हुआ था; अब वे खुश हैं, उनकी शादी को तीन या चार साल हो रहे हैं, और उनमें से एक का तो बच्चा भी है। शायद अनिकेत के पेरेंट्स भी ऐसे ही होंगे।

तो मैंने टाइप किया।

‘ओह नहीं।’

एक सैकंड बाद:

‘ओह हां। एफएमएल (फ* माईलाइफ)।’ और फिर उसने एक सैड स्माइली एड कर दी।

मैंने भी सैड स्माइली दी।

इन इमोजी से कितना कुछ जताया जा सकता है। मैं वास्तव में उसकी असमंजसता को समझ सकती थी। पता नहीं क्यों, मैं इसे सहारा देकर कहना चाहती थी कि सब ठीक हो जाएगा। मैं उसकी गर्लफ्रेंड वाली समस्या सुलझाना चाहती थी। मैं उसके लिए सबकुछ सही कर देना चाहती थी।

और ये तब जब मैं उससे अभी कुछ घंटे पहले ही मिली थी, पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसे हमेशा से जानती थी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

सितारे आज किसी साहसिक कार्य की तैयारी में हैं! आपका मूड मनमौजी रहेगा। क्षमता से ज्यादा के वादे से सावधान रहना। कोई प्रिय किसी तरह नुकसान पहुंचा सकता है।

5

अनिकेत

जिसने भी यह 'अरेंज्ड मैरिज' और 'लड़की देखने' का रिवाज शुरू किया था, उसे गोली मार देनी चाहिए। वैसे भी छब्बीस साल की औरत भला 'लड़की' कैसे हो सकती है? और मैं 'लड़का' कहां से हुआ? कोई मुझे खत्म कर दे। मैं यह नहीं करना चाहता। लेकिन मेरे मम्मी-पापा को लगता है कि मेरा मन बदल जाएगा।

मैंने ड्राइव न करने का फैसला करके नुनगमबक्कम में ताज कोरोमेंडल जाने के लिए कैब ले

ली, वहां हम साढ़े तीन बजे मिलने वाले थे।

लेट मत होना—मुझे वेट करने से चिढ़ है, उसने मैसेज भेजा था। अब तक हमारी बात सिर्फ टैक्स्ट मैसेज पर ही हुई थी। मैंने उसकी फेसबुक प्रोफाइल देखकर, उसे फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी थी। उसने भी रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली थी। वह अच्छी ही दिख रही थी—शायद दस में से सात। बेशक, अगर मैं सिर्फ लुक की ही बात करूं तो मेरी तृष परफेक्ट टैन थी। मैं सोच रहा था कि क्या औरतें भी अपने दोस्तों में ऐसी रेटिंग की बात करती होंगी। क्या वो भी लड़कों को ऐसे ही ग्रेड देती होंगी, जैसे लड़के उन्हें? वो किस नजरिए पर ग्रेड देती होंगी? यकीनन पेनिस साइज पर तो नहीं—इसका तो मुझे यकीन था।

बेसंत नगर से नुनगमबक्कम का सफर लंबा था, तो मैंने सुब्बु को फोन करने का निर्णय लिया। उसने पहली घंटी पर ही फोन उठा लिया।

‘डूड! क्या कर रहे हो? फोन हाथ में लेकर घंटी बजने का ही इंतजार कर रहे थे क्या?’

‘हाहा। नहीं मैं डेंटिस्ट के यहां था और ईमेल चैक करने वाला था, तभी यह बज गया। और क्या चल रहा है?’

‘तुम डेंटिस्ट के यहां क्यों गए हो?’

‘मेरी अकल दाढ़ परेशान कर रही है। उसे ही दिखाने आया था। तुम बताओ, तृष की कोई अपडेट।’

‘उसकी तरफ से कुछ नहीं आया, और साला अब मैं प्रियंका से मिलने जा रहा हूं।’

‘वो जो तुम्हें ट्रेन में मिली थी, वही न? उसके साथ कोई चक्कर चलाओ। तृष को डम्प कर दो। तृष ऐसा वायरस है जो फिक्स नहीं हो सकता।’

‘नहीं, नहीं—वो प्रियंका नहीं है। वो निधि है। ये तो वो लड़की है, जिससे मेरे मां-बाप मुझे मिलवाना चाहते हैं।’

‘वाह—तुम तो बहुत तेज निकले, दोस्त। यहां मैं एक लड़की को पटाने की कोशिश कर रहा हूं और तुम तीन-तीन को लेकर घूम रहे हो? तुम हो क्या? फास्टट्रेक वॉच? तुम मेरे भी गुरु बन जाओ।’

‘रुको, रुको। मैं किसी को लेकर नहीं घूम रहा हूं। मैं बस तृष के वापस आने का इंतजार कर रहा हूं। मुझे बताओ कि क्या औरतें भी आदमियों को रेटिंग देती हैं?’

‘रेटिंग? जरूर देती होंगी!’

‘सच में? तुम्हें कैसे पता?’

‘वो जरूर रेटिंग देती होंगी। मुझे लगता है वो हमारी तोंद देखकर रेटिंग देती होंगी। यार, तुम यहां हार जाओगे। मैं तुमसे ज्यादा फिट हूं। तुम्हें अपनी तोंद कुछ कम करनी होगी।’

‘नहीं, मुझे नहीं लगता कि वो तोंद पर ध्यान देती होंगी। यकीनन वो बट चैक करती होंगी। या तो वो या सैलेरी।’

‘हा, हा, हां। वो तो जरूर देखती होंगी। वैसे, गुडलक। इस लड़की को इम्प्रेस कर लो। उससे अपने लिए हां करवा लो। उसे अपना दीवाना बना दो। फिर ये तृष को बता दो। देखना वो भागकर तुम्हारे पास आ जाएगी। ये भी सिस्टम से एरर हटाने का अच्छा तरीका है।’

सुब्बु हमेशा सोल्युशन निकाल ही देता है और मेरी लव लाइफ की प्रॉब्लम सुलझाने में भी वो पीछे नहीं हटने वाला था।

एक मिनट के लिए तो मैं भी इस सोल्युशन पर गंभीरता से सोचने लगा। मैं किसी भी कीमत पर तृष के साथ सब ठीक कर लेना चाहता था। उससे बात किए हुए अब चौबीस घंटे हो चुके थे।

‘मेरी तो उससे बात भी नहीं हो पाई है, यार,’ मैंने आह भरी।

‘कोई बात नहीं, दोस्त, हो जाएगी। और रिलैक्स। इस प्रियंका के साथ मजे करो। मुझे बताना कि सब कैसा रहा,’ कहकर उसने फोन काट दिया।

नुनगमबक्कम हाई रोड पर बहुत ट्रैफिक था और मुझे उसे मैसेज करना पड़ा कि मैं बीस मिनट लेट हूँ।

‘कोई बात नहीं। मैं इंतजार कर रही हूँ,’ उसका मैसेज आया और मैं इस ‘डेट’ को कोस रहा था। मुझे महिलाओं को इंतजार कराने से चिढ़ थी और वो भी तब जब उसने पहले ही मैसेज कर दिया था कि प्लीज देर से मत आना।

जब मैं पहुंचा तब प्रियंका कोल्ड कॉफी पीती हुई फोन में बिजी थी। वह अपनी फेसबुक प्रोफाइल पिक्चर से कुछ ज्यादा भरे बदन की दिख रही थी। उसका चेहरा भी कुछ अलग दिख रहा था। वह देखने में बुरी नहीं थी। उसने कोई लंबी सी लाइट-ग्रे ड्रेस पहन रखी थी, जो जमीन को छू रही थी।

‘हाय, आई एम सो सॉरी, ट्रैफिक जबरदस्त था। मैं अनिकेत हूँ,’ मैंने उससे कहा।

‘हां, मैं जानती हूँ,’ उसने मुस्कराकर अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। वेटर मेरा ऑर्डर लेने आ गया था, मैंने उसे बिना क्रीम या शुगर की कोल्ड कॉफी लाने को कहा।

‘ये सब मेरे लिए बहुत अजीब है,’ मैंने कह ही दिया।

‘क्यों?’ अब वह मुझे घूर रही थी और उसने अपनी नजरें मुझ पर गढ़ा दीं। उसके ऐसे देखने से मैं कुछ नर्वस और असहज हो रहा था।

‘वैल—तुम जानती हो... क्योंकि...यह मेरी कमाई का जरिया नहीं है,’ मैंने कहा। मैं उसके हंसने की उम्मीद कर रहा था लेकिन वो तो मुस्कराई भी नहीं।

‘मैं जानती हूँ। तुम एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हो,’ उसने कहा।

‘हाहा। ये तो मैंने अपने मां-बाप को बताया है। उन्हें मेरा असली काम नहीं पता है,’ मैंने कहा। पता नहीं क्यों मैं उसके इतने सीरियस नेचर से कुछ चिढ़ रहा था।

‘ओह, तो असली काम क्या है,’ उसने कुछ सीधा बैठते हुए पूछा, अब उसकी दिलचस्पी बढ़ गई थी।

वेटर कॉफी देने आ गया था और मैं उसके वहां से जाने का इंतजार करने लगा। फिर मैंने आवाज धीमी करके कहा, ‘मैं बैचलर पार्टी में कपड़े उतारने वाला डांस करता हूँ।’

‘उम्मम, दिलचस्प। क्या तुम्हारा कोई बिजनेस कार्ड भी है?’ उसने पूछा।

क्या? मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि उसने मेरी बात मान ली थी। मेरी बॉडी तो किसी भी तरह मॉडल जैसी नहीं थी। क्या उसे दिखाई नहीं देता? या वो भी मजाक कर रही है?

‘ऐसे बिजनेस में आपके पास कार्ड नहीं होता। इसकी चर्चाएं बस मुंह-जुबानी फैलती हैं,’ मैंने कहा।

‘और तुम करते क्या हो? फुल मॉन्टी?’ उसे तो इसके बारे में बहुत जानकारी है।

मैं सोच रहा था कि क्या जवाब दूं।

‘यह मनी पर निर्भर होता है, और भीड़ पर भी। मुझे बड़ी उम्र की औरतें पसंद हैं,’ कहते हुए

मैं खुद पर ही हैरान था। ये सब बकवास मुझे सूझ कैसे रही थी? मुझे कुछ नहीं पता था, लेकिन मैं अब रुक नहीं सकता था।

‘वाह, ये तो बहुत मजेदार है,’ उसने कहा और मैं खुश था कि चलो उसने कोई रिएक्शन तो दिया।

‘किस तरह की महिलाएं कपड़े उतारने वाले मर्दों को बुलाती हैं?’ उसने पूछा।

‘बहुत अमीर। वो उन्हें अपनी किटी पार्टी के लिए बुलाती हैं। उनके पास पैसा तो बहुत होता है लेकिन उनके पति उन्हें समय नहीं देते और वे किसी भी मर्द की अटेंशन पाकर खुश हो जाती हैं। भले ही उन्हें उसकी कीमत अदा करनी पड़े। उन्हें खुश करना बहुत आसान होता है,’ मैंने कहा। और फिर मैं खुद ही अपनी बनाई कहानी पर खिलखिलाकर हंसने लगा।

वह भी मेरी हंसी में शामिल हो गई थी और हमारे बीच जमी बर्फ चटक गई।

‘मेरा भी एक सीक्रेट है,’ उसने कहा।

‘क्या?’ मैंने पूछा। मैं शर्त लगा सकता था कि उसकी कहानी मेरी कहानी की टक्कर की नहीं हो सकती थी।

‘मैं तुमसे शादी करना नहीं चाहती। मैं ये सब सिर्फ अपने मां-बाप को खुश करने के लिए कर रही हूं। मेरा एक बॉयफ्रेंड है। वह बंगाली है, और मेरे मां-बाप को इस बारे में कुछ नहीं पता है। हम उन्हें जल्दी ही इस बारे में बताने वाले हैं।’

‘ओह। ये तो बहुत बढ़िया है,’ मैंने कहा।

‘क्यों?’ उसने पूछा।

‘मेरा भी ऐसा ही मामला है। मेरी भी एक गर्लफ्रेंड है और मैं भी जल्दी ही अपने माता-पिता को इस बारे में बताने वाला हूं। मुझे भी तुमसे मिलने के लिए जबरदस्ती भेजा गया है।’

‘तो—ठीक ही है सब सही हो गया। हम यहां एक घंटा बिताते हैं, और फिर तुम अपने घरवालों से कह देना कि मैं तुम्हें पसंद नहीं आई। और मैं भी ऐसा ही करूंगी,’ उसने कहा।

‘हम्म ये ठीक रहेगा,’ मैंने कहा और मेरी आवाज में राहत साफ झलक रही थी।

‘क्या तुम ज्योतिषशास्त्र में भरोसा करते हो?’ उसने अचानक पूछा।

‘पता नहीं। मैंने इस बारे में ज्यादा सोचा नहीं। लेकिन ये बड़ा ही अजीब है कि ब्रह्मांड में कहीं भी बैठे कोई तारे आपकी जिंदगी को नियंत्रित कर सकते हैं, तुम्हें नहीं लगता?’

‘नहीं, मुझे लगता है हम सबकी एक नियति है। खासकर जीवनसाथी चुनने के मामले में। मेरे बॉयफ्रेंड की आंटी—एक जानी-मानी ज्योतिषी हैं। उनके कुछ सेलिब्रिटी क्लाइंट हैं। दरअसल वह कुछ अखबारों के लिए राशिफल भी लिखती हैं।’

‘ओह, सच में? उनका नाम क्या है?’

‘शायद तुमने उन्हें पढ़ा हो—दर्शिता सेन।’

‘ओह, हां। कमाल है! तृष—मेरी गर्लफ्रेंड—हमेशा उनकी भविष्यवाणी पढ़ती है। वह इन राशि-वाशी को बहुत मानती है। मैं उतना नहीं मानता। सिर्फ बारह टाइप के ही इंसान कैसे हो सकते हैं?’

‘तुम जानकर हैरान रह जाओगे। वास्तव में जन्म के हिसाब से तीन सौ पैंसठ किस्म के इंसान होते हैं। ज्योतिष शास्त्र एक तो खगोल विद्या पर आधारित है, जो विशुद्ध विज्ञान है, दूसरा इसमें गणित है, और तीसरा अनुमान, जो पूरी तरह से “वैज्ञानिक” तो नहीं है,’ वह हर पॉइंट पर

अपनी उंगली उठाकर एक प्रोफेसर की तरह बात समझा रही थी। 'बहुत सारे ऐसे ज्योतिषी हैं जो लोगों को कम जानकारी होने का फायदा उठाते हैं, और चालबाज तो सिर्फ पैसे के लिए ही इस क्षेत्र में आते हैं। लेकिन जब कोई जानकार आदमी अपनी गणना से अनुमान लगाता है तो आप उसकी सटीकता से हैरान रह जाते हैं। पता है मेरे बॉयफ्रेंड, शोमो की आंटी ने कहा था कि उसकी शादी एक साउथ इंडियन लड़की से होगी, और उसका नाम पी से शुरू होगा। ये तो मेरे और शोमो के मिलने से बहुत पहले की बात है,' उसने कहा।

'वाह—ये तो कमाल है। और प्रभावशाली भी। मैं चाहता हूं कि वो मेरी जन्मपत्री भी देखें। देखें वो मेरे बारे में क्या बताएंगीं। क्या तुम मेरे लिए ये करवा सकती हो?' मैंने पूछा।

'वैल—पता नहीं। वह दोस्तों के लिए फ्री में रीडिंग करती हैं।'

'तुम्हारा मतलब मैं दोस्त नहीं हूं? कम ऑन!'

'हाहा, क्या तुम हमारे लिए स्ट्रिप शो करोगे? बस मेरे और मेरे दोस्तों के लिए। फिर मैं कोशिश कर सकती हूं।'

मैंने ये फंदा खुद ही तो अपने गले में डाला था। अब मैं कैसे मना कर सकता था? तो मन ही मन खुद को लताड़ते हुए भी मैंने हां कर दी। फिर मैंने बिल मंगवाया और उसने बिल शेयर करने पर जोर दिया, तो बस अपना-अपना बिल चुकाकर हम वहां से चल दिए।

वह अपनी गाड़ी से आई थी और गाड़ी में जाते हुए उसने हाथ हिलाकर विदा ली।

घर वापस जाने के लिए कैब में बैठते ही मैंने सुब्बु को फोन मिलाया।

'स्ट्रिप शो के लिए तैयार हो जा यार, तू और मैं परफॉर्म करने वाले हैं। तुम अपना प्लैट टमी भी दिखा सकते हो,' मैंने उससे कहा।

'क्या? क्या तुमने दिन में ही चढ़ा ली? या तुम कुछ स्मोकिंग वगैरह कर रहे हो?' उसने पूछा।

फिर मैंने पूरी डिटेल से प्रियंका की कहानी उसे सुना दी, और कहानी खत्म होने तक हम दोनों ठहाके लगाकर इतना हंस रहे थे कि हमसे बोला तक नहीं जा रहा था।

'यकीन नहीं होता कि तुमने अरेंज मैरिज के लिए होने वाली मीटिंग को एक स्ट्रीप शो में बदल दिया।'

'ओये ये सही नहीं है। स्ट्रीप शो का बस वादा किया है!' मैंने कहा।

और हम इस ख्याल पर ही खिलखिला दिए।

फोन काटते ही मैंने तुरंत तृष की मेल चैक करने के लिए इनबॉक्स देखा।

हां! आखिरकार। शायद उसे इंटरनेट मिल ही गया था। फिर उसने मुझे वाट्सअप पर मैसेज क्यों नहीं भेजा? मैंने वाट्सअप चैक किया तो देखा कि वह पांच मिनट पहले ही वाट्सअप पर एक्टिव थी। मैं सोच रहा था कि अगर उसे मेल करने का टाइम मिल सकता था तो मैसेज का क्यों नहीं।

फिर मैंने उसकी मेल पढ़नी शुरू की और मेरा दिल डूबने लगा।

डियर अनि,

उम्मीद है कि तुम मजे कर रहे होंगे।

मुझे सोचने के लिए कुछ समय चाहिए था और अब लगता है वो जरूरी था। मैं जानती हूं कि पिछले कुछ समय से हममें कुछ तनाव रहा है। मैं भी उसी बारे में सोच रही थी। और शायद

तुम्हें ये सुनना बुरा लगे लेकिन मैं अपने मन की बात तुम्हें साफ-साफ बताने वाली हूं। इसी तरह से हम अपने रिश्ते में ईमानदारी ला सकते हैं।

कुछ चीजें हैं जो मुझे परेशान करती हैं। तुम्हारा वजन—इससे मुझे बहुत परेशानी है। मुझे फिट लड़के पसंद हैं। तुम्हें तो अपनी बढ़ती तौल की चिंता ही नहीं है। तुम सिर्फ सताईस साल के हो अनि। अगर सताईस में तुम्हारा ये हाल है तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि तुम चालीस में कैसे दिखोगे।

मुझे इस बात से भी चिढ़ है कि हर बार बात की शुरुआत मैं ही करती हूं। जो लिंक तुम मुझे भेजते हो वो मेरी नजरों में बातचीत की शुरुआत नहीं माने जा सकते। मैं तुम्हारे बारे में सुनना चाहती हूं—तुमने क्या किया, तुम्हारा दिन कैसे गुजरा। मैं अपना दिन तुम्हारे साथ साझा करना चाहती हूं।

मैं नहीं चाहती कि तुम बस बैठकर मेरी चिंता करते रहो, या यही सोचते रहो कि मैं घर कैसे पहुंचूंगी। मुझे अपने दोस्तों की कद्र है और सच में मुझे उनके साथ बहुत मजा आता है। और हां, वो मुझे घर भी छोड़ देते हैं। तो प्लीज ऐसे बॉडीगार्ड जैसा बॉयफ्रेंड बनने की कोशिश मत करो।

अगर हमें अपने रिश्ते को आगे बढ़ाना है तो मैं चाहती हूं कि तुम कुछ बातों में बदलाव लाओ। लिस्ट नीचे है:

1. वजन कम करो।
2. थोड़ा ज्यादा बातें करो, न कि सवाल-जवाब।
3. जब मैं तुम्हारे बिना बाहर जाती हूं तो मुझ पर निगरानी मत रखो।
4. जो चीजें तुम्हें अच्छी लगती हैं, उनके लिंक मुझे मत भेजो। मुझे वो बोरिंग लगते हैं (सॉरी!)
5. मेरे लिए गिफ्ट्स लाओ! दूसरों के बॉयफ्रेंड्स भी ऐसा करते हैं।
6. मुझे सरप्राइज दो।
7. कुछ हॉबी का काम करो। कोडिंग के अलावा तुम और करते क्या हो?
8. वीकेंड्स पर कुछ मजेदार काम करो बजाय कि हर बार मैं तुम्हारे घर आऊं, हम पीत्सा ऑर्डर करें और सिर्फ सैक्स। मैं इस सबसे ऊब गई हूं।
9. प्लीज चीजों के बारे में ज्यादा मत सोचो। खुद को और चीजों को ढीला छोड़ो।
10. जैसी मैं हूं मुझे वैसे ही एक्सेप्ट करो। प्लीज।

अनि—उम्मीद है कि मेरे इस तरह साफ-साफ कहने से तुम्हें दुख नहीं होगा। छह महीने बाद इस लिस्ट को फिर से देखेंगे। तुम क्या कहते हो? अगर तुम भी मुझमें कुछ बदलना चाहते हो तो प्लीज अपनी लिस्ट मुझे भेज दो, प्रोमिस मैं उस पर काम करने की कोशिश करूंगी।

लेह बहुत सुंदर है। मैं कुछ फोटो साथ में अटैच कर रही हूं। मुझे यहां बहुत मजा आ रहा है। अपना ख्याल रखना, हेल्दी चीजें खाना और जो मैंने कहा उस पर सोचना।

बाय,

तुष

मैंने एक बार फिर से ईमेल पढ़ी। मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि उसे मुझसे इतनी शिकायतें

थीं। ये वो थी! जो हमेशा कहती थी कि मेरे साथ घर पर रहने और पीत्सा ऑर्डर करने से कभी उसका मन नहीं भरता। ठीक है, मैं मानता हूँ कि मुझे भी यह बहुत पसंद था। लेकिन फिर भी।

और मुझे तो पता भी नहीं था कि जो लिंक मैं उसे भेज रहा था, वो उसे बोरिंग लगते थे। कुछ नया जानने में किसी की दिलचस्पी कैसे नहीं हो सकती? और मैं कौन सा उसे प्रोग्रामिंग से जुड़े लिंक भेजता था। मैं तो उसे मजेदार चीजें ही भेजता था।

फिर मुझे समझ आया। मजे की बारे में हम दोनों की सोच एक जैसी नहीं थी। मैं कितना मूर्ख था कि ये बात पहले नहीं समझ पाया? मैंने उसकी भेजी हुई तस्वीरें देखीं। उन सबमें विश्व और दूसरे कुछ दोस्त भी थे। उन्हें देखकर लग रहा था कि वह बहुत मजे कर रही थी।

घर पहुंचने तक मेरा मन पूरी तरह खराब हो गया था। ऐसा लग रहा था मानो मैं टनों मलबे के नीचे दब गया हूँ। मेरे पैरेंट्स बड़ी बेसब्री से प्रियंका के साथ हुई बातचीत जानने का इंतजार कर रहे थे।

‘डैड, बात कुछ जमी नहीं,’ मैंने कहा।

‘क्यों? जमी नहीं से तुम्हारा क्या मतलब है?’ मॉम ने पूछा।

‘उसमें क्या कमी है? तुम्हें क्या चाहिए? करीना कैफ?’ डैड ने पूछा।

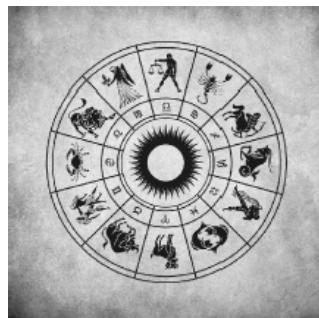
‘कैटरीना कैफ, डैड। और करीना कपूर,’ अनीशा ने उनकी गलती सुधारी।

‘ओके, ओके। यहां बात वो नहीं है। तुम्हें कैसी लड़की चाहिए, अनि?’ डैड ने पूछा।

‘मैं नहीं जानता, डैड। मुझे लगता था ये सब चीजें पहले से ही तय होती हैं। शादी उसी से होती है, जिसके साथ होनी लिखी होती है,’ मैंने कहा।

मैं थक गया हूँ। कमरे में जाकर मैं काफी देर तक पलंग पर पड़ा रहा, और दिन भर की घटनाओं के बारे में सोचने लगा।

फिर मैंने फोन उठाया, फेसबुक मैसेंजर खोला, और निधि को टैक्स्ट किया।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

कोई नई जिम्मेदारी आज आपको मिल सकती है। उसे हां कर देना। ये आपको अपने दिल के करीब पहुंचा सकती है। किसी प्रिय के साथ कुछ गलतफहमी हो सकती है। सचेत रहना और चीजों को बिगड़ने मत देना। शुभ रंग: पीला और संतरी।

6

निधि

अपने घर वापस लौटने की एक अच्छी बात है कि आपको अपने पुराने दोस्तों से मिलने का मौका मिलता है। चेन्नई में मेरे बहुत सारे दोस्त हैं, बहुत-बहुत पुराने, मेरे बचपन के दिनों के भी। चेन्नई के बेस्ट कॉन्वेंट गर्ल्स स्कूल में पढ़ने के दौरान हमने ऐसी-ऐसी शैतानियां की थीं कि उनके बारे में अगर हमारी ननों को पता चलता तो वो अपना सिर पकड़ लेतीं। लेकिन खुशकिस्मती से हम कभी भी पकड़े नहीं गए थे। हमारा पुराना गुप अभी भी संपर्क में था, और जब भी चेन्नई से

कोई बाहर रहने वाला वापस लौटता तो तुरंत सभी लोग एक्टिव हो जाते, और कहीं न कहीं लंच या कॉफी का प्रोग्राम बन जाता।

आज प्रिया, सुजाता, मैरी और मैं लंच पर मिलने वाले थे। मैरी की शादी इक्कीस साल की उम्र में एक हिंदू लड़के से हुई थी, उसके मां-बाप की मर्जी के खिलाफ। अब उसका तलाक हो चुका था और अपनी आठ साल की बेटी को अकेले पाल रही थी। प्रिया का भी तलाक हो चुका था, और वह एक दूसरे लड़के के साथ रिलेशनशिप में थी; वो दोनों जल्द ही शादी करने वाले थे। सुजाता ही अकेली ऐसी थी, जिसे हम 'हैपिली मैरिड' कह सकते थे। उसके दो बच्चे थे, एक बेटा और एक बेटी।

'तो, बताओ सुज, तुम्हारे इस "सफल" वैवाहिक जीवन का राज क्या है? हम चारों में एक तुम ही हो जिसकी पिव्चर परफेक्ट फैमिली है।' मैरी ने हवा में हाथ हिलाते हुए कहा। उसकी आवाज में शायद थोड़ी कड़वाहट भी झलक रही थी।

'ओहो, छोड़ो भी, शादी में टिके रहना या दो बच्चे पैदा करने को "सफलता" नहीं कहा जा सकता। हां, मुझे शहरी विकास मंत्रालय की कमर्शियल बिल्डिंग कॉम्प्लेक्स का डिजाइन बनाने के लिए अवॉर्ड दिया गया था। इसे जरूर "सफलता" की श्रेणी में रखा जा सकता है,' सुजाता ने जवाब दिया।

ओह, तो मैरी ये पूछ रही थी, मैंने सोचा, लेकिन कुछ कहा नहीं।

'हमें तुम पर गर्व है! खूब आगे बढ़ो,' मैरी ने कहा। और तभी जोड़ा, 'हम सब ब्रेक-अप के दौर से गुजर रहे हैं। हम चारों को देखो,' उसने कहा। फिर मेरी तरफ इशारा किया। 'इसको किसी से सगाई करने में भी सालों लग रहे हैं। हममें से दो पहले ही अलग होकर शादी की कसमों से तौबा कर चुके हैं। बस एक ही शादीशुदा है और औरतों के संपूर्ण होने की कसौटी "दो बच्चे पैदा करना" भी पास कर चुकी है।'

'हां—पता नहीं क्यों समाज सोचता है कि अगर आप शादीशुदा हैं, और बच्चे हैं तो और सारी समस्याएं तो जादू से गायब हो जाएंगी। क्या बकवास सोच है,' सुजाता ने कहा।

'ओह, कोई प्रॉब्लम है क्या? तुम खुश नहीं हो?' प्रिया ने पूछा।

'हां, लगता तो है। पल भर के लिए मैं "मैं" बन जाती हूं। फिर मुझे अपना परिवार याद आ जाता है,' सुजाता ने कहा और हम सब हंस दिए।

वो सब जानना चाहते थे कि मैं शादी कब करने वाली थी। पता नहीं क्यों लेकिन मनोज को लेकर अपनी चिंता मैं उनके साथ साझा नहीं करना चाहती थी। उसके लिए मेरे पास तारा थी। तो मैंने उनसे कह दिया कि अभी तक कुछ तय नहीं हुआ है और जब वो समय आएगा मैं उन्हें खुद बता दूंगी। हमने अपने काम के बारे में बात की और अपने स्कूल के दिनों को याद किया। हमने उन यादों और पागलपन को फिर से जिया। उसके बाद हमने एक फिल्म देखने का प्लान बनाया, एक हिंदी फिल्म, सिर्फ इसलिए:

1. यही इकलौती फिल्म थी जिसका टिकट हमें तब मिल पाया था।
2. फिल्म के हीरो की बॉडी कमाल की थी।

हमेशा की तरह हाजिरजवाब वाले कमेंट कर रहे थे और खी-खी करके हंस रहे थे। ऐसा लग

रहा था कि स्कूल के दिन फिर से लौट आए थे।

जब मैं घर वापस आई तो तारा और मेरे पापा किसी डिनर के लिए जा चुके थे। तारा ने मुझे एक मैसेज भी किया था कि अगर मैं बोर हो रही हूँ तो उनके पास जा सकती हूँ। एक पल मैंने उस बारे में सोचा लेकिन फिर इस ख्याल से खारिज कर दिया कि वो हाई-प्रोफाइल पेज-थ्री टाइप पार्टी होगी, और उसके लिए मुझे पूरी तरह तैयार होना होगा। पूरा दिन बाहर रहने के बाद अब मेरा मन इस सबमें पड़ने का नहीं था। तो मैंने बाहर जाने की बजाय अपना ब्लॉग अपडेट करने का सोचा।

मैंने ब्लॉग पर कभी अपना वास्तविक नाम नहीं बताया था। मुझे अपने विचार लिखकर उन्हें साइबर वर्ल्ड में पोस्ट करना पसंद था। अब मेरे पास ब्लॉगर्स का एक ग्रुप था, जो नियमित रूप से मेरे ब्लॉग्स पढ़ते थे, और पिछले दो सालों में बनाए इस आभासी दुनिया के संबंधों में मैं बहुत सहज महसूस करती थी। मैं उन्हें मेरे 'अनाम दोस्त' कहती थी। वे लोग ब्लॉगर्स मीट पर मिलते थे, और अक्सर मुझसे भी वहां आने को कहते थे क्योंकि वे जानना चाहते थे कि ए पॉट ऑफ क्ले डैट होल्ड्स गोल्ड को लिखने वाला कौन है।

मैंने ब्लॉग अपने पॉटरी प्रोजेक्ट्स के बारे में लिखना शुरू किया था। फिर मैंने जाना कि मैं और भी बहुत कुछ कहना चाहती थी। वो ज्यादातर ख्याल और विचार थे, तो शुरू करने के तीन महीने बाद मैंने इसका नाम द पॉट ऑफ क्ले से बदलकर ए पॉट ऑफ क्ले डैट होल्ड्स गोल्ड रख दिया। इस नए नाम में लोगों को आकर्षित करने की ज्यादा क्षमता थी। महीने दर महीने, पाठकों की संख्या लगातार बढ़ती रही और अब तक मेरे कई नियमित पाठक बन चुके थे।

पिछली बार ब्लॉग अपडेट किए लगभग एक महीना हो चुका था। इसके लिए मैं औपचारिक रूप से माफी नहीं मांगकर, कुछ रचनात्मक लिखना चाहती थी। तो मैंने शुरू किया:

ए पॉट ऑफ क्ले डैट होल्ड्स गोल्ड

हाय। आप लोगों से आज काफी दिनों बाद मुलाकात हो रही है। ऐसा इसलिए कि मुझे एक साइबर-बिबर ने किडनैप कर लिया था। अब इससे पहले कि आप लोग हैरान-परेशान होकर गूगल करें कि ये साइबर-बिबर आखिर है क्या बला, मैं खुद आपको इसके बारे में बता देती हूँ। वो लंबे, आकर्षक, करिश्माई लड़के होते हैं, जो ब्लॉग लिखने वाली महिलाओं पर नज़र रखते हैं। अगर आप लगातार ब्लॉग लिखते हैं, तो ये आपको किडनैप कर याद दिलाते हैं कि जिंदगी में आपका कोई लक्ष्य होना चाहिए। ये आपको बताते हैं कि ब्लॉग से आपका कुछ नहीं होने वाला। फिर वो जानबूझकर आपके इंटरनेट की स्पीड स्लो कर देते हैं, ताकि आपको कुछ भी पोस्ट करने में दिक्कत हो। फिर, और मजे के लिए, ये आपकी जिंदगी में कुछ कठिनाइयां पैदा करते हैं, खासकर आपके संबंधों में, और जब आपको पूरी तरह हताश देखते हैं, तो आपकी उलझन कम करने की कोशिश करते हैं।

(ठीक है, ठीक है, मानती हूँ ये सब मेरी मनगढ़ंत कहानी थी। लेकिन फिर भी लगता है कि ये खुद को बहुत बिजी बताने से तो बेहतर था। जो मैं सच में थी। लेकिन इतना भी नहीं कि ब्लॉग न लिख पाऊँ। ये तो माफी के भी लायक नहीं है। लेकिन आप लोग बहुत अच्छे हो, और मुझे माफ भी कर दोगे, है न? मैं वादा करती हूँ कि अब किसी साइबर-बीबर की बातों में नहीं आऊंगी। अब

मेरे पास साइबर-बीबर से बचने का प्लान भी है, जो आपको किडनैप होने, ध्यान भटकने और लापरवाही के नुकसान से बचाता है।)

तभी मेरे फेसबुक मैसेंजर पर एक मैसेज आया।

अनिकेत का।

‘हाय, तुम क्या कर रही हो?’ उसने पूछा।

‘अपनी ब्लॉग पोस्ट पूरी कर रही हूँ।’

‘वाह, तुम ब्लॉग भी लिखती हो?’

‘हां—अभी मेरी पोस्ट अधूरी है।’

‘बढ़िया है! मुझे भी अपने ब्लॉग का लिंक सेंड करना।’ तो मैंने उसे लिंक भेजा और वापस अपनी पोस्ट लिखनी शुरू की।

आज मैंने अपनी स्कूल की दोस्तों के साथ बढ़िया सा लंच किया; और खूब मजे भी। फिर हमने एक हिंदी फिल्म देखी, जो एक शादीशुदा महिला के खुद की पहचान तलाशने के बारे में थी। इसने मुझे सोचने पर मजबूर किया।

जब बात संबंधों की आती है, तो हममें से कितने लोग उसके बारे में निश्चित हो पाते हैं? जिस इंसान से हमारी शादी होने वाली है, उसके बारे में हम निश्चित कैसे हो सकते हैं? बहुत सारी चीजें बदल सकती हैं। जिस इंसान से हम शादी कर रहे हैं, वो भी बदल सकता है, हम भी बदल सकते हैं। जिंदगी में कुछ भी निश्चित नहीं है, और संबंधों में तो और भी ज्यादा। उनमें हमेशा अनिश्चितता बनी रहती है।

और फिर भी, हम सब (हममें से अधिकांश) शादी करना चाहते हैं। हम एक खुशहाल जिंदगी जीना चाहते हैं। अपने आसपास हम हर समय किसी न किसी संबंध को टूटते हुए देखते हैं। और हम कहते हैं, ‘नहीं, लेकिन हम अलग हैं। ये हमारे साथ नहीं हो सकता।’

क्या ये अजीब नहीं है?

हम सच्चे प्यार की तलाश में लगे रहते हैं। और ये छलावा लगता है। लेकिन फिर भी हम ढूंढ़ते रहते हैं, उम्मीद करते रहते हैं। अगर ये पागलपन नहीं है, तो क्या है?

अपने लिखे से संतुष्ट होकर मैंने पब्लिश का बटन दबा दिया। फिर मुझे अनिकेत का मैसेज याद आया और मैंने उसे मैसेज भेजा।

‘तुम अभी फ्री हो?’ मैंने टाइप किया।

उसका जवाब लगभग दस मिनट बाद आया।

‘हां! मैं तुम्हारी पिछले ब्लॉग पढ़ रहा था। तुम तो बहुत बढ़िया लिखती हो! तुम्हारा लिखा हुआ मुझे बहुत पसंद आया,’ उसने तारीफ की।

‘हा, हा। उम्म... ठीकठाक। उतना भी अच्छा नहीं।’

मैं अभी भी तारीफ को सहजता से नहीं ले पाती थी। तारा ने कई बार कहा था कि एक

सिंपल से थैंक्यू से काम चल जाता है। और कि अगर मुझे ही अपने लेखन पर भरोसा नहीं होगा, तो कोई भी मुझ पर भरोसा नहीं करेगा। सिर्फ तारा ही थी, जो जानती थी कि एक दिन मैं अपना नॉवल लिखना चाहती थी। अपने इस सपने के बारे में मैंने अपने पापा को भी नहीं बताया था। वो सोचते थे कि पॉटरी सिखाने में ही मैं खुश थी, और बस फ्रीलांस के लिए कुछ लिख लेती थी।

मेरा फ्रीलांस काम ज्यादातर टेक्नीकल राइटिंग का था, जहां मैं अक्सर उबाऊ से मैनुअल्स और गाइड्स के लिए राइटिंग, एडिटिंग और प्रूफिंग किया करती थी। कभी-कभी मैं वेबसाइट्स के लिए भी लिखती थी। तारा को भी एक रात खूब पीने के बाद मैंने अपने लेखक बनने के सपने के बारे में बताया था। उन्होंने हां में सिर हिलाया और मुझे कुछ काम की सलाह भी दी। उन्होंने मुझे अपने सपने पर दृढ़ रहने की सलाह दी। कि वो हमेशा मेरे साथ रहेंगी और मेरा लिखा पढ़कर उन्हें खुशी होगी। तब मैंने उन्हें अपना ब्लॉग दिखाया था, और अब वो भी मेरी नियमित पाठक थीं। वह उस पर कमेंट भी करती थीं, उनका अकाउंट 'स्टारी नाइट' नाम से था, जो उनके नाम तारा का ही प्रतीक था। हम छत पर, तारों भरे आसमान के नीचे बैठे थे, तब मैंने उन्हें अपना ब्लॉग दिखाया था। उन्होंने तुरंत आईपैड लेकर उसे बड़े ध्यान से पढ़ना शुरू कर दिया था। तभी उन्होंने एक मेल आईडी बनाई और मेरी कई पोस्ट पर कमेंट भी किया, और तब से मुझे अपनी हर पोस्ट पर उनके दिलचस्प, सटीक कमेंट्स का इंतजार रहता है।

'तुम मजाक कर रही हो? तुम सिर्फ "ठीक-ठाक" नहीं लिखती हो। तुम कमाल का लिखती हो!' अनिकेत ने टाइप किया।

तो इस पर मुझे थैंक यू कहना पड़ा।

'पता है रिलेशनशिप पर तुम्हारे विचारों से मैं काफी सहमत हूं।'

'सच में?'

'हां! पूरी तरह। मैं इन्हें इतनी अच्छी तरह जता नहीं सकता था। लेकिन फिर मैं तुम्हारी तरह राइटर भी तो नहीं हूं।'

'हाहा... एक बार फिर से शुक्रिया! और आज तुम्हारा दिन कैसे गुजरा? क्या तुम उस लड़की से मिले—जिससे तुम्हारे पैरेंट्स को मिलने को कहा था?'

'ओ, हां—और सब कितना पागलपन भरा रहा। मैंने उसके बॉयफ्रेंड की आंठ से अपना राशिफल पढ़वाने के बदले में एक स्ट्रीप शो का वादा कर दिया। और उससे भी बढ़कर मेरी गर्लफ्रेंड ने मुझे एक अल्टीमेटम लिस्ट भी थमा दी। और अगर मैंने लिस्ट में लिखी सारी बातें पूरी नहीं कीं, तो मुझे लगता है वह मुझे छोड़ देगी।'

'क्या? एक स्ट्रीप-शो! क्या तुम मजाक कर रहे हो?'

'नहीं! मैं बिल्कुल सीरियस हूं! मैं और मेरा दोस्त इस पर हंस भी रहे थे!'

'हे भगवान। इसमें कोई हैरानी नहीं कि तुम्हारी गर्लफ्रेंड तुममें काफी सारे बदलाव चाहती है।'

'ओह नहीं, नहीं। ये दोनों एक बातें नहीं हैं। ये एक लंबी कहानी है।'

'मैं सुनना चाहती हूं।'

'चैट पर सुनाना बहुत मुश्किल होगा। तुम चेन्नई में कहां रहती हो?'

'बोट क्लब रोड।'

'मैं बेसंत नगर में रहता हूं। हम इलियट बीच पर मिल सकते हैं? बीच पर ही लंच कर लेंगे।'

वहां से समुद्र का नजारा बेहतरीन है और उनका मेन्यु भी बेस्ट माना जाता है।’

मुझे हां कहने में बस एक पल लगा। मुझे इलियट बीच गए हुए एक जमाना बीत गया था। मैं वहां अपने पहले प्यार के साथ गई थी। वहां जाकर मजा आएगा। और वैसे भी, मैं उसकी कहानी भी सुनना चाहती थी।

‘पक्का। कल 12.30 बजे?’ मैंने टाइप किया।

‘मुझे अपना नंबर दो—जिससे कोर्डिनेट करना आसान होगा,’ उसने कहा।

‘ये तो बड़ी होशियारी है,’ मैंने टाइप किया और फिर डिलीट कर दिया। मुझे नहीं लगता कि अनिकेत मेरे साथ फ्लर्ट कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह अपनी लाइफ में उलझा हुआ था और मुझसे मिलकर कुछ समाधान चाहता था।

तो मैंने उसे अपना नंबर दे दिया।

जैसे ही मैंने उसे अपना नंबर दिया तभी मेरा फोन बज गया। मैं घबराहट से लगभग उछल पड़ी। मुझे लगा अनिकेत का फोन होगा, लेकिन फोन मनोज का था।

‘हे बेब—बस तुम्हारा हालचाल पूछने के लिए फोन किया था,’ उसने गुनगुनाते से कहा।

‘ओह, हाय,’ मैंने कहा।

‘क्या तुम... उम्म... काम कर रही हो या कुछ और?’

‘मैं... वो... हां। अभी एक असाइनमेंट पूरा किया है। उसकी डेडलाइन कल की है।’

‘हा, डेडलाइन। मुझे अच्छा लगता है कि तुम इसे कितना सीरियस लेती हो।’

‘तुम कहना क्या चाहते हो, मनोज?’

‘मतलब, ऐसा तो नहीं है कि तुम टाइम मैगजीन या इंडिया टूडे के लिए लिख रही हो, है न? ये सब सिर्फ वेबसाइट के लिए है। और ये तुम्हारी मेन जॉब भी नहीं है। यही तो मैं कहना चाहता हूं।’

‘इस सबका डेडलाइन से क्या मतलब है? डेडलाइन मतलब आपको तय की गई तारीख तक काम देना है। मुझे लगता है कि यही प्रोफेशनलिज्म है। फिर चाहे मैं टाइम के लिए लिख रही हूं या तुम्हारी नजरों में किसी और नामी मैगजीन के लिए।’

‘ओह-ओह-ओह। शांत गदाधारी भीम, शांत। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता था। मैंने तो बस तुम्हें आई लव यू कहने के लिए फोन किया था, ओके?’

‘ओके।’

मेरा मन उससे और बात करने का नहीं था। उसकी इस बात से भी मुझे काफी समय से चिढ़ होने लगी थी। जो चीज मेरे लिए इंपोर्टेंट थीं, वो उसके लिए कुछ मायने नहीं रखती थी। मैं महसूस कर सकती थी कि हमारे बीच में शुरुआती दिनों की समझ अब कम होने लगी थी। लेकिन ये शायद एक साल से ज्यादा समय तक रिश्ते में बंधे रहने का नतीजा था? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। शायद मुझे तारा से इसके बारे में और ज्यादा बात करनी चाहिए। ये मसला सच में मुझे परेशान कर रहा था, लेकिन अभी के लिए मैंने इसे दरकिनार करने का निर्णय लिया।

अगली सुबह आंख खुलने पर अनिकेत का वॉट्सअप मैसेज दिखाई दिया।

‘हाय—हम आज मिल रहे हैं न?’ उसने पूछा।

‘हां! 12.30 बजे मिलते हैं। बे बीच पर।’

‘हां, पक्का! जल्दी मिलते हैं।’

फिर मैंने उसे अपनी कॉन्टेक्ट लिस्ट में एड कर लिया और उसकी वॉट्सअप प्रोफाइल को गौर से देखा। वो सेल्फी थी—उसकी और एक लड़की की। लड़की बहुत खूबसूरत थी! वह किसी मॉडल की तरह दिखाई दे रही थी। तभी वो उसके लिए इतना पागल था, और किसी भी तरह अपनी रिलेशनशिप को बचाना चाहता था। वह उसके गले में बांहें डालकर, उसके कंधे से झूलते हुए से, मोहकता से कैमरे को देखकर मुस्कुरा रही थी। मेरी नजर लड़के से ज्यादा लड़की के चेहरे पर टिक रही थी। लड़की की तुलना में लड़का औसत था। लेकिन फिर, मैं यहां कुछ ज्यादा ही सोच रही थी। वैसे भी रिश्ते बाहरी रूप रंग पर कितने टिकते हैं? मैंने मन ही मन इस बात को अपने ब्लॉग में लिखने का फैसला किया।

जब तक मैं बीच पर पहुंची, अनिकेत वहां पहले से ही इंतजार कर रहा था। मुझे शहर के इस एरिया में आए हुए काफी समय गुजर गया था, लेकिन फिर भी ये रेस्टोरेंट ढूंढना मुश्किल नहीं था। जिस पल मैंने अंदर पैर रखा, वहां की खूबसूरती ने मुझे आकर्षित किया। जगह बेहद खूबसूरत थी! समुद्र की तरफ वाली पूरी दीवार, फर्श से छत तक शीशे की बनी थी, जिससे बेहद खूबसूरत नजारा वहां बैठने वालों को मिल रहा था। रेस्टोरेंट में सफेद रंग की थीम पर आकर्षक नारंगी और पीले रंग के छोटें थे। मैंने तुरंत ही एक नजर बड़े से रेस्टोरेंट की डेकोरेशन पर डालकर अनिकेत को देखा।

‘हाय! आने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया,’ अनिकेत ने खड़े होकर हाथ मिलाते हुए कहा।

‘हाय,’ मैंने कहा, तभी एक वेटर ने कुर्सी पीछे खींचते हुए मुझे बैठने में मदद की।

हमने पहले ड्रिंक ऑर्डर किए—हम दोनों ने बिना एल्कोहल के ड्रिंक लेने का फैसला किया, हालांकि मेरा मन मार्गरीटा ऑर्डर करने का था। मैंने जिंजर-लेमन मंगाया, और उसने आइस्ट टी।

जब वेटर चला गया, तो अनिकेत ने मुझे देखा और कहा, ‘तुम अच्छी लग रही हो, निधि।’

‘थैंक्स,’ मैंने कहा। ऐसा नहीं था कि मैंने तैयार होने के लिए कुछ खास किया था। मैंने अपनी एक पुरानी ग्रे टी-शर्ट, जिसकी फिटिंग अच्छी थी और जींस पहनी थी। मैंने कोई मेकअप नहीं लगाया था और न ही हील्स पहने थे। लेकिन जो भी हो। शायद वह विनम्रता के लिए ऐसा कह रहा हो।

‘तो, मैंने तुम्हारी और तुम्हारी गर्लफ्रेंड की फोटो देखी, और सच में वो किसी मॉडल की तरह दिखती है,’ मैंने कहा।

‘वो है! दरअसल, वो अभी शूट के लिए ही लेह गई है। उसने कई प्रिंट एड और कुछ शूट कमर्शियल के लिए भी किए हैं। वो फैशन शो भी करती है।’

‘वाह। ये तो बहुत दिलचस्प है। क्या ये उसकी मेन जॉब है?’

‘नहीं—वह मेरी कंपनी में काम करती है। वहीं हम मिले थे। चलो मैं सब कुछ शुरू से बताता हूं,’ उसने कहा।

फिर वह मुझे अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने बताया कि वो लोग कंपनी में ही मिले थे, जब वह वहां मैनेजमेंट ट्रेनी के तौर पर आई थी, ठीक कॉलेज खत्म करके। यह उसकी पहली जॉब थी।

‘और क्या वह तुम्हारे अंडर काम करती है?’

‘नहीं। वह सेल्स में है। लगभग सारे लड़के उसके पीछे पागल थे, लगातार उससे कुछ न कुछ पूछते रहते थे, उसे ज्यादा जानने की कोशिश करते थे।’

‘मैं कल्पना कर सकती हूँ! वह कमाल की दिखती है। तुम उसके करीब कैसे जा पाए?’

‘यही तो बात है। मैंने कुछ नहीं किया! वो हमेशा मुझे अच्छी लगती थी, लेकिन मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरा भी चांस लग सकता है। मेरा मतलब—मुझे देखो और उसे।’

बंदे के पांच जमीन पर थे। वह अपनी हकीकत जानता था और किसी भ्रम में नहीं था। मुझे उसकी यह बात अच्छी लगी।

‘और फिर क्या हुआ?’

‘तुम्हें मेरा दोस्त सुब्बु तो पता है न? वो जिससे मैं ट्रेन में बात कर रहा था?’

मैंने हां में सिर हिलाया।

‘वैल, उसने हमारी सैटिंग कराई। उसने उससे बाहर चलने के लिए पूछा और वह तैयार हो गई। दरअसल उसी दिन उसका अपने बॉयफ्रेंड से ब्रेकअप हुआ था।’

‘ओह—और फिर क्या हुआ?’

‘तो सुब्बु ने उसे एक फैसी सी जगह पर बुलाया। उसने मुझे बताया कि वह एक लड़की से मिलने जा रहा है, लेकिन उसके साथ उसकी फ्रेंड भी होगी, तो ये कोई डेट नहीं है। और उन्हें साथ में चलने के लिए एक लड़का चाहिए, तो मैं उसके साथ जाने को तैयार हो गया। मैंने सुब्बु की बात मान ली; मुझे जरा सा भी शक नहीं हुआ। वो एक लड़की से चार साल तक प्यार करता रहा और कभी उसे कुछ नहीं बताया। आखिरकार वो लड़की शादी करके दूर चली गई, और कभी सुब्बु के प्यार के बारे में नहीं जान पाई। तो उसकी मदद करने के लिए मैं जाने को तैयार हो गया। लेकिन ये तो बाद में पता चला कि ये सब उसका प्लान था। जब मैं वहां पहुंचा तो उसका मैसेज आया कि वह चाहता है, मैं उस लड़की के साथ डिनर करूं। ऐसा ही मैसेज उसने लड़की को भी कर दिया। तो वो हमारी पहली “डेट” थी।’

‘वाह! ये तो मजेदार है! ये बिल्कुल फिल्मी कहानी जैसी है।’

‘हां—सुब्बु फिल्मों का दीवाना है। मुझे लगता है उसने ये आइडिया भी किसी फिल्म से चुराया होगा। मैं नहीं जानता।’

‘बढ़िया है!’

‘वैसे अब हम लगभग डेढ़ साल से साथ हैं। लेकिन अब वह कुछ खींची सी लगने लगी है। मेरा मतलब—मैं तो बिल्कुल नहीं बदला हूँ। मैं बिल्कुल पहले जैसा ही हूँ। उसे ही कुछ ज्यादा चाहिए।’ उसकी आवाज में अब उदासी की झलक थी।

‘मेरे नए, भोले, खोए-खोए से दोस्त। ये प्रॉब्लम तो होनी ही थी। तुम जस के तस खड़े हो और वो आगे बढ़ना चाहती है। तुम उसकी ताल से ताल नहीं मिला पाओगे।’

‘पता है, मुझे लगता है तुम सही कह रही हो। मैंने तुम्हारे ब्लॉग पढ़े हैं। तुम्हारे पास गजब की समझ है। मुझे तुम्हारा लिखा हुआ बहुत पसंद आया। क्या मैं तुम्हें हायर कर सकता हूँ? तुम मेरी रिलेशनशिप कोच बन सकती हो।’ जब वह आगे झुककर उम्मीद से मुझे देख रहा था, तो उसकी आंखें चमक रही थीं।

‘क्या! मुझे हायर करना? तुम्हारा क्या मतलब है? मैं कोई प्रोफेशनल कोच नहीं हूँ!’

‘नहीं—लेकिन तुम वही हो जिसकी मुझे जरूरत है। मुझे लगता है कि तुम ही हो जो मेरी

मदद कर सकती हो।’

मैंने एक पल सोचा। फिर कहा, ‘ठीक है, मैं तुम्हारी रिलेशनशिप कोच बन जाऊंगी। लेकिन एक शर्त पर। मुझे कुछ भी लिखने की आजादी होनी चाहिए, अपने ब्लॉग पर। मैं तुम लोगों के नाम नहीं दूंगी, न ही दूसरी कोई डिटेल्। लेकिन लिखने की आजादी मेरी होनी चाहिए। और हां, तो हम जब भी मिलें तुम मेरे लिए डिनर और कॉफी खरीदोगे।’

‘हां! थैंक्यू!’ उसने कहा और मुझे लगा कि वो बस खुशी से आगे बढ़कर मुझे गले लगाने ही वाला था। वह बहुत खुश दिखाई दे रहा था।

फिर उसने अपना फोन निकालकर अपनी गर्लफ्रेंड की ईमेल मुझे दिखाई।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

नई शुरुआत का संकेत है। तुम आज कोई दीवार खिसकाओगे। जो पहले कभी नहीं किया वो करोगे। कोई नया रिश्ता तुम्हारी जिंदगी को अलग दिशा देने के लिए आ सकता है। सोच-समझकर अपनी राह चुनो।

7

अनिकेत

निधि बे बीच पर मुझे लगभग दस मिनट बाद पहुंची। मुझे खुशी हुई कि उसे आने में ज्यादा देर नहीं हुई थी। मैं तृष की लिस्ट लगभग दस बार पढ़ चुका था और अब तक तो वो मुझे रट भी गई थी। वो अपनी मांगों को लेकर बहुत स्पष्ट थी, तो मुझे लग रहा था कि अब इस पर मुझे ही कुछ करना होगा। मुझे तो पता भी नहीं था कि जो लिंक मैं उसे भेजता था, उससे उसे चिढ़ थी। मैं भी कितना गधा था।

और मेरी फिटनेस—इसके बारे में मैं भी पिछले कुछ समय से कुछ करने की सोच रहा था। मैं जानता था कि ये ज्यादा बीयर और आड़-कबाड़ खाने का नतीजा था। इसे मैं सच में ठीक कर सकता था।

जिस पल निधि अंदर आई, हमारी नजरें मिलीं। वह अच्छी दिख रही थी। मुझे उसकी चाल का आत्मविश्वास पसंद आया।

‘हाय! आने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया,’ मैंने खड़े होकर उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

मुझे उसके परफ्यूम की खुशबू भी अच्छी लग रही थी। तृष के परफ्यूम से वो काफी अलग था। तृष के हाथ हमेशा मुलायम होते थे, अच्छी तरह से मैनिक्चोर किए हुए। मैंने ध्यान दिया कि निधि ने अपने नाखून छोटे रखे थे और उन पर नेल पेंट भी नहीं लगाया था। उसने बस एक अंगूठी पहनी हुई थी, जिस पर चमकदार स्टोन लगा था, शायद डायमंड।

‘हाय,’ उसने कहा, तभी एक वेटर ने कुर्सी पीछे खींचते हुए उसे बैठने में मदद की।

हम दोनों ने बिना एल्कोहल के ड्रिंक ऑर्डर किए। हालांकि मेरा मन एक ग्लास बीयर के लिए मचल रहा था। लेकिन तृष के अल्टीमेटम से अपनी तोंद घटाने के चलते मैंने आइसड टी मंगाई।

देखा तृष—अब तो तुम खुश हो? मैंने कोशिश शुरू कर दी है—तुम्हारे लिए अपना पेट काट रहा हूँ।

वेटर ने हमसे खाने का ऑर्डर भी लिया। उसने गार्डन ग्रीन सलाद मंगाया और मैंने नाचोस।

फिर मैंने देखा कि निधि मेरे कुछ कहने का इंतजार कर रही थी।

‘तुम अच्छी लग रही हो, निधि,’ मैंने कहा।

‘थैंक्स,’ उसने कहा। ‘तो, मैंने तुम्हारी और तुम्हारी गर्लफ्रेंड की फोटो देखी है, और सच में वो किसी मॉडल की तरह दिखती है,’ उसने कहा।

‘वो है! दरअसल, वो अभी शूट के लिए ही लेह गई है। उसने कई प्रिंट एड और कुछ शूट कमर्शियल के लिए भी किए हैं। वो फैशन शो भी करती है,’ मैंने जवाब दिया।

‘वाह। ये तो बहुत दिलचस्प है। क्या ये उसकी मेन जॉब है?’

‘नहीं—वह मेरी कंपनी में काम करती है। वहीं हम मिले थे। चलो मैं सब कुछ शुरू से बताता हूँ,’ मैंने कहा।

फिर मैंने उसे अपनी कहानी सुनाई। कैसे हम मेरी कंपनी में ही मिले थे, जब वह वहां मैनेजमेंट ट्रेनी के तौर पर आई थी, ठीक कॉलेज खत्म करके। यह उसकी पहली जॉब थी। कैसे लगभग सारे लड़के उसके पीछे पागल थे, मैं भी, लेकिन मैं बहुत शर्मिला था, जब तक कि आगे आकर सुब्बु ने सारा मामला न संभाल लिया। निधि ध्यान से सब सुन रही थी और कई सवाल भी पूछ रही थी। मैं उसे आराम से जवाब दे रहा था। जितना मैं उससे बात कर रहा था, उतना ही उसके साथ खुद को सहज महसूस कर रहा था। वह खुले दिमाग की थी, और उसके साथ बात करना बहुत आसान था। इन दिनों तृष के साथ तो यूँ खुलकर बातें हो ही नहीं पाती थीं।

‘वैसे अब हम लगभग डेढ़ साल से साथ हैं। लेकिन अब वह कुछ खींची सी लगने लगी है। मेरा मतलब—मैं तो बिल्कुल नहीं बदला हूँ। मैं बिल्कुल पहले जैसा ही हूँ। उसे ही कुछ ज्यादा चाहिए।’

‘मेरे नए, भोले, खोए-खोए से दोस्त। ये प्रॉब्लम तो होनी ही थी। तुम जस के तस खड़े हो

और वो आगे बढ़ना चाहती है। तुम उसकी ताल से ताल नहीं मिला पाओगे।’

मैंने एक पल सोचा। ये मुझे समझ क्यों नहीं आया था? वह सही कह रही थी! और तब मुझे ख्याल आया। निधि मेरी मदद कर सकती है। उसके पास गजब की समझ है। मुझे उसके ब्लॉग में रिलेशनशिप पर लिखा हुआ बहुत पसंद आया था। और मुझे लग रहा था कि वह मुझे एक औरत के नजरिये से चीजें समझा सकती थी। तो मैंने उससे मेरी रिलेशनशिप कोच बनने के बारे में पूछा।

‘क्या! मुझे हायर करना? तुम्हारा क्या मतलब है? मैं कोई प्रोफेशनल कोच नहीं हूँ!’ उसके चेहरे पर हैरानी साफ झलक रही थी।

‘नहीं—लेकिन तुम वही हो जिसकी मुझे जरूरत है। मुझे लगता है कि तुम ही हो जो मेरी मदद कर सकती हो।’ मैंने जवाब दिया। मुझे नहीं पता था कि वो मेरे बारे में क्या सोच रही थी। मैं उसे उसकी परेशानी के लिए फीस देने को भी तैयार था, लेकिन मुझे नहीं लगता था कि वो लेगी।

फिर उसने कहा कि वह मेरी मदद करने को तैयार है लेकिन इस बारे में अपने ब्लॉग पर लिखना चाहती है। क्या अजीब रिवेस्ट है। लेकिन अगर उसे यही चाहिए था, तो यही सही। वह लिखती रहे ब्लॉग, मुझे तो बस अपनी तृष् से मतलब था। बस वो मुझे मिल जाए। निधि ने मुझे भरोसा दिलाया कि लिखते हुए वह हमारी वास्तविक पहचान उजागर नहीं करेगी।

‘हां! थैंक्यू!’ मैंने कहा। मैं बहुत खुश हो गया।

फिर मैंने अपना फोन निकालकर तृष् की ईमेल उसे दिखाई।

निधि खामोशी से उसे पढ़ने लगी।

फिर उसने मुझे देखकर कहा, ‘पता है, ये सब मुझे कितना अजीब लग रहा है। ऐसा लग रहा है कि तुम दोनों किसी नाटक के कलाकार हो, और मैं कोई डायरेक्टर, जो तुम्हें बताएगा कि तुम्हें क्या करना है। और मुझे तांक-झांक करने वाला जैसा महसूस हो रहा है। मुझे नहीं लगता कि मुझे इस मामले में पड़ना चाहिए। ये तुम्हारे और उसके बीच की बात है।’

‘कम ऑन, निधि। तुमने हां कहा है! रिलेशनशिप कोच यही तो करते हैं! यूएस में तो यह कॉमन है। तुम्हें पता है काम के सिलसिले में मैं वहां तीन महीने रहा हूँ। मेरे एक कुलीग के अपनी वाइफ से बहुत मसले थे। उसने एक रिलेशनशिप कोच हायर किया और वो उनकी जिंदगी की गाड़ी को वापस ट्रैक पर ले आया। मैं भी उसी कोच से बात कर सकता हूँ। लेकिन तुम तो जानती ही हो कि वो इंडियन साचे को नहीं समझ पाएंगे। हमारा कल्चर और नजरिया काफी अलग है। वो तो ये भी नहीं समझेंगे कि मैं प्रियंका से क्यों मिला, जबकि मैं तृष् के साथ रिलेशन में हूँ। तुम्हें ही यहां मेरी मदद करनी होगी। प्लीज अब पीछे मत हटना।’

वह एक पल खामोश रही और फिर उसने अपनी एक लट अपने कान के पीछे की। अपनी ड्रिंक का घूंट भरते हुए, वह बोली, ‘ओके, मैं तैयार हूँ। शायद ये मेरी जिंदगी का सबसे अजीब काम होगा। किसी और की लव लाइफ में शामिल होना।’

‘किसी और से तुम्हारा क्या मतलब है? मुझे तो लगा हम अब दोस्त हैं।’

‘वो तो हम हैं! तभी तो मैं यहां तुमसे मिलने आई हूँ। नहीं तो मैंने तुम्हें तभी फेसबुक पर ब्लॉक कर दिया होता, जब तुमने मुझे मैसेज किया था।’

‘वैल, मैं तो सोच रहा था कि तुम्हारी किताब तुम्हें लौटाकर मैं एक अच्छे नागरिक का कर्तव्य

निभा रहा था। जिससे याद आया, मैं यहां भी उसे लाया था,' कहते हुए मैंने उसकी किताब उसे थमा दी।

'थैंक्यू,' वह मुस्कुराई। फिर उसने कहा, 'चिंता मत करो, अनिकेत, हम दोनों इसे सुलझा लेंगे। चलो देखते हैं कि हम शुरुआत कहां से कर सकते हैं।'

आह। सच में आराम आया कि किसी ने तो इस समस्या को अपने हाथ में ले लिया। सुब्बु भी बात करने के लिए अच्छा इंसान है, लेकिन ये भी सच था कि जो लिंक्स तृष को बोर लगे थे, वो उसे बहुत पसंद थे। मुझे नहीं लगता कि वो इस बात को समझ पाएगा। मुझे लगता है कि यहां एक औरत का नजरिया मेरी ज्यादा मदद कर सकता था।

'देखो, अनिकेत, मैं साफ-साफ बातें कहूंगी। तुम्हें उन्हें मानना ही होगा। मैं एकदम खरी बात रखूंगी। मैं ऐसा नहीं करूंगी कि जो तुम सुनना चाहो वही कहूं। इससे तुम्हें कोई ऐतराज तो नहीं?' उसने पूछा।

'हां, हां। यही तो मैं चाहता हूं। अगर तुम सही बातें नहीं कहोगी तो इस सारी मेहनत का कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा। एकदम सच कहना। मैं सब संभाल लूंगा,' मैंने उसे भरोसा दिलाया।

उसने हां में सिर हिलाया और फिर गहरी सांस ली।

'मुझे लगता है,' उसने कहना शुरू किया। 'उसकी लिस्ट में पहला पॉइंट क्या है, जो वह तुमसे करवाना चाहती है?'

'वजन कम करना।'

'उससे मुझे समझ आता है कि तृष ऐसी इंसान है, जिसके लिए बाहरी सुंदरता बहुत मायने रखती है। वह यकीनन हर समय सुपर-फिट लोगों में घिरी रहती होगी। उनकी तुलना में तुम खुद को देखो। तुम्हारी हाइट क्या है? शायद कोई पांच फुट ग्यारह इंच न। तुम्हारे लिए सही वजन होगा सत्तर से अस्सी किलो। तुम अभी शायद पिचानवें किलो होंगे? मैं सही कह रही हूं न?'

वाह। उसने न सिर्फ मेरी हाइट बल्कि वजन का भी लगभग सही अनुमान लगाया था। मैं इम्प्रेस था। और मुझे अच्छा लग रहा था कि वह किसी विशेषज्ञ की तरह समस्या की जड़ से शुरुआत कर रही थी।

'तुम एकदम सही हो! तुमने मेरी हाइट और वजन का इतना सही अंदाजा कैसे लगाया?' मैंने पूछा।

'मुझे पता होना चाहिए। मैं भी एक समय पर ओवरवेट थी।'

'क्या? तुम? मैं नहीं मान सकता।' इस बात से तो मैं एकदम हैरान था।

उसने मुस्कुराकर हां में सिर हिलाया। 'हां, मैं थी। कुछ साल पहले। अब तो किसी दूसरे जन्म की बात लग रही है। फिर मैं इतना मोटे होने से थक गई और मैंने डाइटिंग शुरू कर दी, हर दिन एक्सरसाइज की, और सोलह किलो कम किया, क्या तुम यकीन कर सकते हो? ये ढाई साल में कम हो पाया। तबसे मैंने उसे बरकरार रखा। और वजन कम करने से न सिर्फ हेल्थ पर असर पड़ता है, बल्कि आप कई साल छोटे भी लगने लगते हैं। तुम मेरी उम्र बता सकते हो? या कि मैं कितने साल की दिखती हूं?' उसने पूछा।

मैंने उसे अच्छी तरह से देखा। वह लगभग पच्चीस साल की दिख रही थी। कोई भी उसे देखकर यही कह सकता था।

'तुम लगभग पच्चीस की दिखती हो, लेकिन मुझे पता है कि ये तुम्हारी सही उम्र नहीं होगी;

नहीं तो तुम मुझे अंदाजा लगाने को नहीं कहतीं। तुम कितने साल की हो?’ मैंने पूछा।

‘मैं बत्तीस साल की हूँ,’ वह मुस्कुराई।

‘क्या? हो ही नहीं सकता! तुम मुझसे पांच साल बड़ी हो! तुम सच में ऐसी नहीं लगती हो,’ मैंने कहा।

‘जानती हूँ, मैंने कई बार ये सुना है,’ उसने कहा। ‘मैं तुम्हें कुछ दिखाती हूँ,’ उसने कहते हुए अपना फोन निकाला। वह अपने फोटोज में स्कॉल करने लगी और फिर अपने ‘बिफोर एंड आफ्टर’ फोटो दिखाए।

‘वजन कम करने से पहले मैं ऐसी दिखती थी। और पता है एक ऑनलाइन पोर्टल पर मेरी कहानी भी शेयर की गई थी। मेरा एक दूसरा ब्लॉग भी था, जहां मैंने इस सफर को साझा किया था। वे उसके जरिए मेरे पास आए थे, और मुझसे इम्प्रैस होकर मेरी स्टोरी को शेयर किया था।’

मैंने उसकी ‘बिफोर’ पिक्चर देखीं। यार—वो सच में ओवरवेट थी। उसमें ये बदलाव कमाल का था, इतना बदलाव था कि ये फोटो दो अलग इंसानों के लग रहे थे। उन ‘फैट’ तस्वीरों में उसके बाल छोटे थे। उसका चेहरा भी काफी अलग था—ज्यादा भरा-भरा। उसने सुंदर ड्रेस पहनी हुई थी, लेकिन फिर भी वह आराम से ओवरसाइज नजर आ रही थी। अपनी ‘आफ्टर’ तस्वीरों में वह कमाल की दिख रही थी। उसके बाल भी पहले से बढ़ गए थे। वह दोनों फोटो में मुस्कुरा रही थी, लेकिन दूसरी तस्वीर की मुस्कान में एक गर्व महसूस किया जा सकता था।

‘ये तो कमाल है, निधि। तुमने तो मुझे प्रेरित कर दिया। बताओ मुझे, कहा से शुरू करना है?’ मैंने पूछा।

‘अनिकेत, पहली चीज है डाइट। डाइट से ही अस्सी प्रतिशत वजन कम किया जा सकता है। फिर तुम्हें एक्सरसाइज करने की जरूरत होती है। पता है, मैं कभी किसी जिम वगैरह में नहीं गई हूँ। मैंने सिर्फ वॉक करने पर ही ध्यान दिया। तुम बीस मिनट स्लो वॉकिंग से शुरू कर सकते हो। तुम्हें लगता है, तुम इतना कर पाओगे?’

‘बिल्कुल, मैं कर सकता हूँ। मैं आराम से बीस मिनट निकाल सकता हूँ।’

‘फिर ठीक है। यही से हमें शुरू करना है। मैं तुम्हें अनि कह सकती हूँ?’

‘बिल्कुल! मेरे सारे दोस्त मुझे अनि कहते हैं। मुझे और बताओ। मुझे अपनी डाइट में क्या करना होगा?’

‘हमें एल्कोहल हटानी होगी। पूरी तरह। न देर रात की पार्टी। न ड्रिंक।’

‘नहीं!’

‘हां! बिल्कुल हां। तुम वजन कम करना चाहते हो न?’

‘हां, मैं करूंगा।’

‘फिर से कहो। मुझे सुनाई नहीं दिया।’

‘हां।’

‘और जोर से।’

‘यस, मैम!’ मैंने चिल्लाते हुए उसे सैल्युट किया, मिलिट्री स्टाइल में, और वह हंस दी।

रेस्टोरेंट में बैठे लोग घूमकर हमें देखने लगे और मैं झुककर अपने खाने से खेलने लगा।

‘गुड, गुड। मुझे आदेश मानने वाले कैडेट पसंद हैं। तो हम हर सप्ताह इसे दोहराएंगे, ओके? आज पहला सप्ताह है। हम नो एल्कोहल, और बीस मिनट की वॉक से शुरू करते हैं। हम तस्वीरें

भी लेंगे।’

‘क्या? कौन सी तस्वीरें?’

‘तुम्हारी बॉडी की तस्वीर? जिससे तुम प्रोग्रेस देख सको?’

‘क्यों? उसके लिए वजन का कांटा बहुत नहीं होगा?’

‘मेरा भरोसा करो—अपनी तस्वीरों से बढ़िया प्रेरणा और कोई नहीं होती। कोई वजन का कांटा ये नहीं कर सकता। इससे तुम बहुत प्रेरित हो जाओगे। और ये एक धीमी प्रक्रिया होती है। जब तक कि तुम तस्वीर नहीं खिचोगे, तुम भूल जाओगे कि तुम पहले कैसे दिखते थे। चिंता मत करो। फोटो मैं खींच दूंगी,’ उसने कहा।

मेरे पास हां कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

जब तक हमारा खाना खत्म हुआ, हम पुराने दोस्तों की तरह बात कर रहे थे, जैसे हम हमेशा से एक-दूसरे को जानते हों। मुझे पता चला कि निधि ने बंगलौर के एक नामी कॉलेज से अपनी एमबीए पूरी की थी। फिर उसने साढ़े छह साल तक एक कॉरपोरेट जॉब भी की, जिसके सिलसिले में दो साल तक वह श्रीलंका में भी रही।

‘ये तो दिलचस्प है! तुम्हें वहां रहना अच्छा लगा?’ मैंने पूछा।

‘हां, अच्छा लगा। वहीं मुझे बौद्ध धर्म से प्यार हुआ। वहीं मैंने पॉटरी को भी जाना। मेरे घर के पास ही एक खूबसूरत सा पॉटरी प्लेस था। मैं वीकेंड पर बोर होती थी, तो मैंने पॉटरी की क्लासों में जाना शुरू कर दिया। तब मुझे पता चला कि इससे कितना सुकून मिलता है। मैं ब्रेक-अप के बुरे दौर से गुजर रही थी। मैं उसके साथ एमबीए के दिनों से थी।’

‘ओह, अब समझा। इसलिए तुम्हारी रिलेशनशिप को लेकर सोच इतनी सुलझी हुई है। हालांकि तुमने कभी इसका जिक्र अपने ब्लॉग में नहीं किया है। मैंने कई पोस्ट पढ़ी हैं।’

‘वैल, मुझे वहां अपनी निजी बातें लिखना पसंद नहीं है। मेरा ज्यादा फोकस फिलॉसफी पर है। अगर तुमने ध्यान दिया हो तो मेरी ज्यादा पोस्ट चिंतन, और सच्ची कहानियों पर हैं, जिनका नाम बदला हुआ होता है।’

‘हां, हां, मैंने ध्यान दिया था।’

‘तो, ब्रेकअप के बाद ही मैंने वजन घटाने का फैसला किया। मुझे कुछ हो गया था। मैंने खुद से पूछा कि वास्तव में मैं चाहती क्या थी। फिर मैं अपनी नौकरी छोड़कर बंगलौर आ गई। मेरे पास बचत का बड़ा भाग था, क्योंकि मेरी कॉरपोरेट जॉब में सैलरी बहुत हाई थी। और अब मैं हर वो काम कर रही हूं, जिससे मुझे खुशी मिलती है,’ वह मुस्कुराई, और उस मुस्कान में सुकून था।

वैटर बिल ले आया और निधि ने बिल शेयर करने पर जोर दिया। उसने आधा बिल देने को कहा, लेकिन मैंने अपने क्रेडिट कार्ड से पेमेंट कर दी।

रेस्टोरेंट से बाहर आते हुए मुझे अहसास हो रहा था कि मैं निधि के साथ कुछ और समय बिताना चाहता था। उसके साथ होने पर मुझे एक सुकून का अहसास हो रहा था।

‘बीच पर चलना चाहोगी?’ मैंने पूछा।

‘इस भरी दोपहर में?’

‘क्यों नहीं?’

‘मैं चेन्नई की गर्मी में खुद को तपाना नहीं चाहती!’

‘चलो न। इतना भी गर्म नहीं है। मैं तुम्हें गन्ने के जूस वाले के पास ले चलता हूँ। मैं और मेरे दोस्त अक्सर उसके ठेले पर आया करते थे। वो वहीं मोड़ पर है,’ मैंने उसके आगे चलते हुए कहा।

‘फिर किसी टाइम, अनि? बंगलौर में मिलेंगे न। मेरे स्टूडियो आना। और हमें तुम्हारी प्रोग्रेस पर भी तो नजर रखनी है, तो चलो अब अपनी शर्ट उतारो और मैं तुम्हारी तस्वीर खींच लेती हूँ। फिर मैं चली जाऊंगी,’ उसने कहा।

‘क्या? यहां?’

हम बीच की तरफ मुंह करके खड़े थे। हमारे ऊपर सूरज की तेज रोशनी पड़ रही थी। दूर से आती लहरों की आवाज सुनाई दे रही थी। हमारे पीछे कार्ल स्मिथ मैमोरियल था।

‘हां! यहां। वैसे भी हम बीच पर हैं। अब ये मत कहना कि तुम शर्मीले हो।’

मैं था। मैं उसके सामने कपड़े कैसे उतार सकता था?

‘दरअसल, मैं कुछ शर्मीला हूँ,’ मैंने माना।

‘इसमें शर्म की कोई बात नहीं है! तुम्हें इसकी आदत हो जाएगी। अपनी शर्ट उतारो और मैं एक फ्रंट और एक साइड से तुम्हारी तस्वीर ले लूंगी। जब भी हमें तस्वीर लेनी होगी, यही जींस पहनकर आना,’ उसने कहा।

मैंने जल्दी से आसपास देखा। उस समय बीच पर कोई भी नहीं था। मैंने न चाहते हुए अपनी शर्ट उतारी। मुझे बहुत अजीब लग रहा था और मैं अपने चेहरे को गर्म होता महसूस कर पा रहा था। उसने मेरे फोन से मेरी फोटो खींची। मैं कभी अपने शरीर को लेकर इतना सजग नहीं हुआ था, खासकर अपनी तोंद को लेकर। वो वाहियात थी। फिर उसने मुझे साइड में मुड़ने को कहा, और साइड से एक तस्वीर ली।

‘ओके, अब अपनी शर्ट पहन लो। इतना बुरा भी नहीं था, है न?’ उसने मेरा फोन मुझे वापस देते हुए कहा।

सब कुछ पलों में हो गया था। लेकिन फिर भी मेरी धड़कन को सामान्य होने में थोड़ा समय लगा। मैं तो उन तस्वीरों को देखना भी नहीं चाहता था।

‘तो तुम बंगलौर वापस कब आ रहे हो?’ उसने पूछा।

‘संडे शाम को। मुझे मंडे से वापस काम पर जाना है। और तुम?’

‘मैं यहां बुधवार तक हूँ। तो रोज बीस मिनट चलने का तुम्हारा वादा आज से शुरू हो रहा है न?’

‘कल? आज का तो आधा दिन निकल भी गया।’

‘नहीं, आज। डिनर के बाद जाना। मैं तुमसे पूछूंगी, ओके?’

‘ओके, मैं जाऊंगा। रिलेशनशिप कोच के तौर पर तुम काफी सख्त साबित होने वाली हो। लेकिन मैं ये करूंगा,’ मैं मुस्कुराया और वो भी मुस्कुरा दी।

मैंने उससे पूछा कि वो वापस घर कैसे जाएगी, तो उसने बताया कि वो अपनी गाड़ी से आई थी।

वापस घर आकर मैंने तृष को मैसेज किया।

‘हाय, तुम्हारा ईमेल मिला। तुम जरूर कुछ बदलाव देखोगी। दरअसल, कुछ नहीं बहुत सारे। मैं वादा करता हूँ। मैं तुम्हें शिकायत का मौका नहीं दूंगा। वजन के लिए कुछ करूंगा। और मैंने

शुरू भी कर दिया है।’

मैंने कुछ देर उसके मैसेज पढ़ने का इंतजार किया। उसका जवाब नहीं आया, मतलब वो बिजी होगी।

उसका जवाब आखिरकार छह घंटे बाद आया।

‘गुड। इसे लेकर ज्यादा पागल तो नहीं हो न? लव।’

मैंने मैसेज की आवाज सुनकर तुरंत फोन उठाया।

‘नहीं। तुम वापस कब आ रही हो?’ मैंने टाइप किया।

लेकिन वह ऑफलाइन हो गई थी और उसका कोई जवाब नहीं आया।

उस शाम बाद में, मैं इलियट बीच पर वॉक के लिए गया। चांद की रौशनी में, नंगे पैर, पानी के पास-पास, बीच पर घूमने का कुछ और ही मजा था। मैं काफी देर चलता रहा। जब आखिरकार मैंने टाइम देखा, तो अहसास हुआ कि मैं पिछले चालीस मिनट से चल रहा था।

‘सोचो—मैंने तो अपने टारगेट का डबल हासिल कर लिया,’ मैंने निधि को मैसेज किया।

उसका जवाब तुरंत आया।

‘वैल डन! मुझे अपनी ईमेल आईडी दो।’

तो मैंने उसे अपनी ईमेल आईडी भेज दी।

मैं संडे शाम बंगलौर लौट गया। जब भी मैं घर से आता हूं, मॉम हमेशा भावुक हो जाती हैं। डैड तो टीवी के सामने बैठे हुए अपना शो देखते रहे, और अनीशा अपनी फ्रेंड के साथ फिल्म देखने गई थी। तो मुझे गेट तक छोड़ने आने के लिए सिर्फ मॉम थीं।

‘अपना ध्यान रखना, कन्ना। ठीक से खाना। खूब आराम करना। और काम से घर वापस जाते समय आराम से जाना, ओके?’ जब भी हम अलग होते हैं, उनकी आंखें भर आती हैं। हर बार। मुझे यह अच्छा लगता है, मैं मुस्कुरा दिया।

‘मां, चिंता मत करो। तुम्हारा बेटा अब बड़ा हो गया है। मैं अपना ध्यान रख लूंगा,’ मैंने कहा।

‘हां, हां। लेकिन तुम अकेले हो ना।’

असल बात यह थी, अगर मेरी शादी हो गई होती, तो उन्हें यूं मेरी चिंता नहीं करनी पड़ती।

हालांकि चेन्नई में अपने घर जाना अच्छा लगता था, लेकिन वापस अपने फ्लैट में आने का भी एक अलग ही सुकून था। मैं सीधा बेड पर पसर गया, कपड़े बदलने का भी दम मुझमें नहीं था, और झट से सो गया।

मंडे मॉर्निंग तो हमेशा ही पागलपन वाली होती है, लेकिन जब मैंने अपना मेल बॉक्स खोला, तो तुरंत खुश हो गया। तृष की मेल आई थी, और वो वीकेंड तक वापस आने वाली थी। उसने छोटी सी मेल में लेह की सुंदरता का भी जिक्र किया था। उसने बताया कि फोटो खींचते वक्त उसका फोन गिर गया था, और अब वो काम नहीं कर रहा था।

मेरी आंखें एक बार फिर से इनबॉक्स को खंगाल रही थीं, और मेरे लिए उसमें एक और सरप्राइज था। निधि की मेल आई थी।

लेकिन मेरी खुशी थोड़े ही समय की थी; जब मैंने मेल खोली तो मुझे उसमें डाइट प्लान मिला और उसे सख्ती से लागू करने के निर्देश।

नाश्ते में उसने मुझे ज्यादातर ओट्स खाने की सलाह दी थी। वह चाहती थी कि मैं उठते ही कम से कम चार गिलास पानी पी लूं। ग्यारह बजे एक कप चाय और मुट्ठी भर चने। एक बजे

लंच में दो चपाती और एक कटोरा सलाद। शाम को एक ग्रीन टी और दो गेहूं के बिस्किट। रात आठ बजे से पहले डिनर। फिर अगर भूख लगे तो एक कटोरा फल।

ये तो पागलपन था। कितनी स्ट्रिक्ट डाइट थी।

मैंने उसे फोन मिलाया और उसने पहली ही घंटी पर मेरा फोन उठा लिया।

‘निधि! तुम्हारी ये डाइट मुझे मार डालेगी। मैं ये नहीं कर सकता,’ मैंने कहा।

‘देखो अनि—मैंने यही किया था। पहले कुछ दिन परेशानी होगी। फिर तुम्हारी बॉडी को इसकी आदत हो जाएगी। तुम्हें भी वजन कम करना है न?’

मुझे करना है। और मैं उसकी डाइट मानने को तैयार हो गया।

‘चीटिंग नहीं। मैं चाहती हूं कि तुम एक फूड डायरी बनाओ,’ उसने कहा।

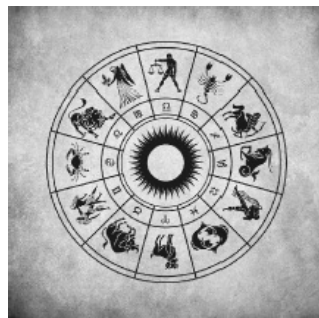
‘वो क्या है?’

‘जो भी खाओ उसे लिखो और मुझे रिपोर्ट करो, ओके?’

‘यस मैम।’

‘ये हुई न अच्छे बच्चों वाली बात!’

मुझे डाइट से चिढ़ थी, अब जब मैंने ओखली में सिर डाल ही दिया था, तो मूसल का डर तो निकालना होगा न।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आप खुद को ऐसी स्थिति में पाएंगे जहां आपका कोई नियंत्रण नहीं होगा। तारे आपका विधान रच रहे हैं। किसी नजदीकी संबंध में तनाव देखा जा सकता है। जब तक कि आप इसे सुलझाने के लिए कोई मजबूत कदम नहीं उठाते, ये और बिगड़ने ही वाला है। सोचें कि आप इसे आगे ले जाना चाहते हैं या नहीं।

8

निधि

ए पॉट ऑफ क्ले दैट होल्ड्स गोल्ड

आप देख ही सकते हो कि साइबर-बीबर प्रोटेक्शप प्लान यकीनन बेहतर काम कर रहा है। देखो मैं एक सप्ताह में ही अपना दूसरा ब्लॉग पोस्ट कर रही हूं। ग्रेट न? (प्लीज प्लीज हां ही कहना!) चेन्नई की गर्मी से तपकर मैं बस बंगलौर पहुंची ही हूं। हालांकि मैं अक्सर अपने घर को याद

करती हूँ, लेकिन वहाँ की गर्मी सच में झेलने लायक नहीं होती है। मैं एक नया पॉटरी कोर्स शुरू कर रही हूँ, और ये एकदम नये लोगों के लिए है। अगर आपकी पॉटरी में दिलचस्पी है, या आपने कभी पॉटरी में हाथ आजमाने की सोचा है लेकिन नहीं जानते कि शुरू कहाँ से करना है, यहाँ आइए। पहला सेशन बिल्कुल फ्री है, अगर आपको इसमें मजा आता है, तो आप बाकी की क्लासों के लिए दाखिला ले सकते हैं।

आपमें से बहुत से लोग मेरे दूसरे ब्लॉग पर, वजन कम करने के सफर के भी साथी रहे हैं। (जिन लोगों ने अभी मेरा ब्लॉग पढ़ना शुरू किया है, उनके लिए इस पेज के राइट साइड में दूसरे ब्लॉग का लिंक दिया गया है।)

मैं एक दोस्त की वजन घटाने में मदद कर रही हूँ, और इसने मुझे वजन और संबंधों के बारे में सोचने पर मजबूर किया।

अगर आपके साथी का वजन कुछ पाउंड्स या किलो (भारतीयों के संदर्भ में) बढ़ जाए तो क्या आप उसे प्यार करना बंद कर देंगे? जब हम किसी लंबे समय तक चलने वाले रिश्ते से जुड़ते हैं, तो उससे हम वर्तमान हालात और वास्तविकता के चलते ही जुड़ते हैं। ये हालात समय के साथ बदल सकते हैं। हम अपने प्यार को 'एडजस्ट' कर उनके साथ जीना शुरू कर देते हैं और संबंध की गाड़ी लड़खड़ाने लगती है। इस 'लड़खड़ाहट' की गति रिश्ते में हमारी शुरुआती उम्मीदों पर निर्भर करती है।

अगर आपका प्यार गहरा है, तो आप बहुत सी चीजों को नजरंदाज कर सकते हैं। अगर आप बेमेल महसूस करते हैं, तो कमियाँ आपको चिढ़ाने लगती हैं। ये भी जरूरी है कि एक रिश्ते में जुड़े दोनों लोगों के लिए प्यार की परिभाषा एक ही हो।

अगर फिटनेस एक के लिए प्राथमिकता है और दूसरे को उसकी परवाह नहीं है, तो कभी न कभी उनमें विवाद उत्पन्न हो ही जाएगा। वजन का मसला धीरे-धीरे आप पर हावी होना शुरू कर देगा। भले ही आप उसे ढोना चाहें या उतार फेंके, ये आप पर निर्भर करता है। और जब वजन हद से ज्यादा बढ़ जाए, तो हालात के विस्फोटक होने का डर भी बना रहता है!

जैसे ही मैंने अपना ब्लॉग पोस्ट किया, तभी मनोज का फोन आया, ये पूछने के लिए कि क्या मैं उसके साथ कोरमंगला में खुले किसी नए थाई रेस्टोरेंट में चलना पसंद करूंगी।

'लेकिन तुम जानते हो न कि मुझे थाई पसंद नहीं है! मैंने तुम्हें कितनी बार बताया है,' मैंने कहा।

'अरे, वहाँ दूसरी तरह का खाना भी है। मुझे लगा कि वहाँ जाना बढ़िया रहेगा। क्या तुम वहाँ साढ़े आठ बजे तक पहुंच जाओगी? मैं तुम्हें लेने आ जाता, लेकिन मैं वहाँ सीधा ऑफिस से ही पहुंचने वाला हूँ।'

'कोई बात नहीं। मैं खुद आ जाऊंगी,' मैंने कहा।

फोन रखते ही मुझे अफसोस हुआ कि मैं थाई रेस्टोरेंट में जाने के लिए हां ही क्यों कहा। हम पिछले एक महीने में दो बार थाई रेस्टोरेंट जा चुके हैं। मुझे दोनों ही अच्छे नहीं लगे थे। हालांकि मनोज ने वहाँ खूब एंजॉय किया। ये एक और बात थी जो मुझे अखरती थी। हम हमेशा वही चीजें करते थे, जो उसे पसंद थीं।

मैं रेस्टोरेंट पहुंची और उसने पहले से ही अपने नाम से टेबल रिजर्व कराई हुई थी। हॉस्टेस मुझे टेबल तक ले गई, तब तक मनोज का मैसेज आ गया था कि उसे आने में थोड़ी देर होगी।

वह आखिरकार पूरे चालीस मिनट बाद पहुंचा। मैं अपनी लगभग आधी किताब पढ़ चुकी थी और एक गिलास वाइन भी।

‘सारी, बेबी,’ उसने मेरे गाल पर किस करके, अपनी कुर्सी खींचकर बैठते हुए कहा।

‘क्या हुआ?’ मैंने पूछा।

‘मीटिंग खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। मैं तुम्हें मैसेज भी नहीं कर पाया। और तुम्हारा दिन कैसे बीता?’

‘अच्छा था—बल्कि बढ़िया था।’

‘सच में? क्या किया तुमने?’

‘मैंने अपने दो राइटिंग पीस सब्मिट किए।’

‘नाइस। ऑनलाइन मैगजीन के लिए?’

‘नहीं, ये वेब पोर्टल के लिए थे। रियल एस्टेट वेब पोर्टल।’

जैसे मैंने अपनी बात पूरी की मुझे उसके माथे पर शिकन बनती नजर आई।

‘पता है मुझे हमेशा लगता है कि तुम अपना टैलेंट बेकार कर रही हो, निधि। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारे लिए मैगजीन या अखबारों में लिखना ज्यादा बेहतर है?’

मुझे उसके कहने का अंदाज अच्छा नहीं लगा। मतलब तुम जो भी कर रही हो बेकार है वाला अंदाज।

‘क्यों इसमें बेकार क्या है? और मुझे तुमसे ये भी पूछना था कि क्या मैं तुमसे रोज पूछती हूं कि “तुमने आज क्या किया और फिर ये सलाह कि तुम्हें क्या करना चाहिए था”।’

मुझे पता है मैं चिढ़ गई थी। लेकिन मुझे उसकी बात सच में अच्छी नहीं लगी थी और ऐसा भी नहीं था कि उसने वह बात पहली बार कही हो।

मनोज के मुताबिक सिर्फ अखबार या मैगजीन में लिखने की ही कद्र थी। बाकी सबको वह ‘लिखना’ नहीं मानता था।

‘हे—नाराज होने की जरूरत नहीं है। मैं बस सुझाव दे रहा था,’ उसने तुरंत कदम वापस खींचे, वह समझ गया था कि मैं नाराज थी। लेकिन मैं इतनी आसानी से मानने वाली नहीं थी।

‘बस सुझाव के लिए बहुत शुक्रिया मनोज।’

मेरी आवाज में ताना साफ झलक रहा था।

ताने के बारे में कुछ ऐसा था कि वह अचानक से बिना किसी चेतावनी के मेरी आवाज में आ झलकता था। और फिर इससे सामान्य चल रही बातों की दिशा पूरी तरह बदल जाती थी।

मनोज ने कुछ पल कुछ नहीं कहा। वहां असहज सी खामोशी थी। वेटर ने आकर पूछा कि क्या हम ऑर्डर देना चाहेंगे।

मैंने मनोज से कहा कि उसे जो भी खाना ही मंगा ले, और मुझे सिर्फ सलाद लेना था।

नाराज होने के बाद मैं खाना खा ही नहीं सकती थी। उस पर बात करने की कोई जरूरत नहीं थी। मेरी राइटिंग को लेकर मैं सच में बहुत भावुक थी। उस पर कमेंट करने वाले लोग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं थे। मनोज ये अच्छे से जानता था, लेकिन फिर भी वह हमेशा अपनी हद पार करता था।

मैं किस किस्म की किताबें पढ़ती हूं, उस पर भी वह जजमेंटल रहता था। मनोज जैसे लोग समझते थे कि सिर्फ साहित्यिक किस्म की किताबें ही पढ़ी जानी चाहिए। भले ही उन्हें सोफी

किनसेला या जेम्स पैटरसन की किताबें अच्छी लगती हों, लेकिन वे कभी इसे स्वीकारेंगे नहीं। जब मैंने मनोज से उसकी पसंदीदा किताब के बारे में पूछा, तो उसने कहा मार्शल प्राउस्ट की इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम और होमर की ओडेसी।

मैंने उसे मेरी सोफी किनसेला की किताब को घूरते हुए देख, जल्दी से उसे बैग में रख दिया। इससे पहले कि वो उस पर भी कुछ कमेंट कर पाता।

मनोज अब खामोशी तोड़ने की कोशिश कर रहा था। वह उन डॉक्यूमेंटरी सीरिज की बातें कर रहा था, जो उसने देखी थीं। वह सोचता था कि मुझे भी वो देखनी चाहिए।

‘ये चीजें आपको एक दौर के इतिहास और राजनीति की बातें बताती हैं। ये इम्पोर्टेंट होती हैं,’ उसने कहा।

‘क्यों इम्पोर्टेंट हैं?’ मैंने धीमे से उकसाया।

‘वैल—इससे... उह... चीजों के बारे में जानकारी होना जरूरी होता है। इससे हमारे पास बात करने के लिए अच्छे पॉइंट होते हैं।’

मैंने कुछ नहीं कहा। मनोज ने पहले भी मुझे कोई डॉक्यूमेंटरी सीरिज देखने को कहा था, और वो हमने साथ में देखने की कोशिश की थी। पहले ही एपीसोड में मेरे सो जाने से वो बिल्कुल डर गया था। मेरे पास बचाव के लिए पॉइंट था कि मैं किसी आउटस्टेशन ट्रिप से वापस आई थी और सुबह साढ़े चार बजे की उठी हुई थी। लेकिन मनोज के मुताबिक उसकी बताई किसी ‘इंटेलेक्चुअल’ सीरिज को देखते हुए सो जाना बहुत बड़ा गुनाह था।

‘तुम्हें क्या देखना पसंद है?’ उसने मुझसे पूछा था।

‘डेस्परेट हाउसवाइव्स अच्छा है,’ मैं कहकर, उसे चिढ़ता देख हंस रही थी। मैं मजाक कर रही थी—मैंने उसका कभी एक एपिसोड भी नहीं देखा था—लेकिन ये देखकर मजा आ रहा था कि उसके लिए ये सब कितना जरूरी था और मेरे ऐसा नहीं करने से उसे कितनी चिढ़ थी।

वेटर हमारा खाना ले आया और मनोज अपनी डिश देखकर खुश हो गया। उसने किंग्स रोल मंगवाया था, जिसमें होममेड सॉस के साथ राइस पेपर पर बहुत सी सब्जियां, तोफू और तुलसी से रोल बनाया गया था।

‘मुझे लगता है ये हमारे मसाला डोसा का थाई संस्करण है,’ मैंने कहा।

‘प्लीज, ये ऐसा बिल्कुल नहीं है,’ उसने अपना हिस्सा खाते हुए कहा। उसने पूछा कि क्या मैं भी चखना चाहूंगी, लेकिन मैंने मना कर दिया। अब तक मैं अपनी वाइन में डूब चुकी थी।

खाते हुए, मनोज ने रुककर कहा कि उसने बेस्ट बात लास्ट में बताने के लिए रखी थी, और उसके पास मुझे बताने के लिए एक बड़ी न्यूज थी।

‘क्या? मुझे अभी बताओ,’ मैंने जानना चाहा। मुझे ऐसे सस्पेंस पसंद नहीं थे।

‘इंतजार करो,’ उसने अपना रोल खत्म करते हुए कहा। एक-एक पल जब वह तसल्ली से अपना कौर चबा रहा था, और अपना खाना निगल रहा था, मुझे बड़ा भारी पड़ रहा था।

आखिरकार वह सीधा होकर बैठा, नैपकीन से अपना मुंह पोंछा और मुझे देखा।

‘सोचो क्या,’ उसने कहा और मुस्कुराया। ‘मुझे नहीं पता। नई जॉब?’ मैंने पूछा। कोई काम से जुड़ी खबर ही उसे खुशी दे सकती थी।

‘नई जॉब नहीं, बल्कि नया प्रोजेक्ट। मैं एक साल के लिए हस्टन, टैक्सास जाने वाला हूं। मुझे दो महीने में निकलना होगा। ये बहुत बड़ा प्रोजेक्ट है और मैं इसे करने वाला हूं। और एक

बार ये हो जाने के बाद मेरा रोल यकीनन बदल जाएगा। मतलब मेरे हैड ऑफ द डिविजन बनने के भी चांस होंगे। ऐसा हुआ तो इसे हासिल करने वाला मैं कंपनी में सबसे छोटा इंसान होऊंगा। तो चलने के लिए तैयार हो जाओ, बेबी—हम अमेरिका घूमने जाने वाले हैं।’

मैं हैरान थी। मेरा एक मन उसके लिए बहुत खुश था। ये सच में बहुत बड़ी खबर थी। लेकिन उसने कैसे मान लिया कि मैं भी उसके साथ जाना चाहूंगी? उसने तो मुझसे एक बार पूछा तक नहीं। उसने खुद ही सोच लिया कि मैं भी उसके साथ जाने के लिए उछल पड़ूंगी।

‘ये तो बहुत बढ़िया है, मनोज। मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ,’ मैंने कहा।

‘हां!’ उसने कहा और हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ पकड़ लिया। ‘तुम जानती हो, वो हमें अपार्टमेंट और वहां रहने का हर सामान देंगे। तुम्हें सब बहुत पसंद आएगा।’ उसकी आंखें खुशी से चमक रही थीं।

मैं समझ नहीं पा रही थी कि अभी उसे कैसे बताऊं। मुझे इस बारे में सोचने के लिए कुछ समय चाहिए था। मैं इतनी आसानी से नहीं जा सकती थी। मेरी पॉटरी का क्या होगा? वो कैसे सोच सकता है कि मैं यूँ सब छोड़कर चली जाऊंगी? मैंने इसी के लिए अपनी कॉरपोरेट जॉब तक छोड़ दी थी। अपने मन का काम करने के लिए। अब मैं खुश हूँ। मुझे बड़ी सी टैरेस वाला अपना वन-बेडरूम अपार्टमेंट बहुत पसंद है। मुझे यहां की अपनी जिंदगी पसंद है। मुझे पॉटरी से प्यार है। ये सब छोड़कर उसके साथ अमेरिका बसने जाना?

उसने मेरी खामोशी शायद समझ ली।

‘देखो, हम एक महीने में शादी कर लेंगे। मेरे जाने से पहले। वैसे भी हम छोटे स्तर पर शादी करने वाले थे। इस पर तो हम दोनों की पसंद एक ही है। हम बस कुछ चुनिंदा मेहमानों को बुलाएंगे,’ उसने कहा।

ये तो सब बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था। शादी? एक महीने में? कभी नहीं। मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ। अभी नहीं। इतनी जल्दी नहीं।

‘मनोज,’ मैंने कहा।

उसने मुझे प्यार और अपनेपन से देखा, ‘हां, बेबी?’ उसने कहा।

‘मैं इतनी जल्दी शादी नहीं करना चाहती। और मैं यहां से जाना भी नहीं चाहती,’ मैंने शांति से कहा।

उसे मेरी बात समझने में कुछ पल लगे।

उसने बात करना बंद कर दिया। वहां खामोशी थी। मैं दूसरी मेजों से आती छूरी-कांटों और धीमी खुसफुसाहटों की आवाजें सुन सकती थी।

‘लेकिन... लेकिन मैंने सोचा कि तुम खुश हो जाओगी। आखिरकार, तुम वहां से भी लिख सकती हो,’ उसने कहा।

‘और मेरी पॉटरी?’

‘आह—वहां पर हॉबी के लिए और भी बहुत सी चीजें होंगी। मुझे यकीन है कि टाइम पास करने के लिए तुम कुछ न कुछ ढूंढ़ ही लोगी,’ उसने कहा।

‘मनोज मैं पॉटरी बस टाइम पास करने के लिए नहीं करती हूँ। इसके मेरे लिए बहुत मायने हैं। मुझे नहीं लगता कि तुम कभी इसे समझ पाओगे। ये कुछ ऐसा है, जिससे मुझे प्रेरणा मिलती है। मुझे इस बारे में सोचने के लिए समय चाहिए। तुम मेरी जिंदगी का फैसला नहीं कर सकते।’

‘हां, हां, बेबी। बिल्कुल तुम सोचने का समय लो,’ उसने कहा।
मैंने कुछ नहीं कहा।

और बाकी का समय रेस्टोरेंट और उसके साथ कार में वापस आते वक्त भी मैं चुप ही रही।
उसने गाड़ी में कोई क्लासिकल म्यूजिक चलाया था, लेकिन मेरा ध्यान सुनने में नहीं था।

आखिरकार, घर पहुंचने पर मैंने उसे थैंक्स कहा और बिना पीछे मुड़कर देखे, अपने
अपार्टमेंट की सीढ़ियां चढ़ गई।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

आज अच्छी चीजें हो सकती हैं। रोमांस का अवसर है। कोई दोस्त मददगार होगा।
किसी प्रतिबद्धता से बचें और ऐसा कोई वादा न करें जो पूरा करना मुश्किल हो।

9

अनिकेत

हम कैफेटेरिया में थे, जब सुब्बु मेरे कंधों पर से झांक-झांककर देखने की कोशिश करने लगा कि मैं एक छोटी सी डायरी में क्या लिख रहा था। मैंने जल्दी से डायरी बंद कर ली। मुझे उसका यूं ताक-झांक करना या पूछताछ करना बिल्कुल पसंद नहीं था।

‘यार, आखिर तुम ये लिख क्या रहे हो? कोई नया प्रोजेक्ट आइडिया है क्या?’ उसने पूछा।

‘नहीं, कविता,’ मैंने कहा।

‘क्या? तुम कवि कब से बन गए? मतलब, मुझे पता है कि तुम्हें तृष की याद आ रही है,

लेकिन ऐसे में शायर ही बन गए? तुम्हें हो क्या गया है?’ वो ऐसे हंस रहा था मानो ये दुनिया की सबसे फनी बात हो।

‘क्यों? क्या तुम सोचते हो कि मैं कविता नहीं लिख सकता?’

ये सुनकर वह फिर से ठहाका लगाने लगा, और फिर बोला, ‘तो मेरे शेक्सपीयर, जरा पढ़कर तो सुनाओ।’

‘उम्म... तो अर्ज किया है,’ मैंने कहा। फिर मैं डायरी में से पढ़ने का दिखावा करने लगा:

‘गुलाब हैं लाल,
और बनफशा हैं नीले
सुब्बु है पागल,
और पेंच हैं उसके ढीले।’

‘वाह, क्या कमाल की कविता लिखी है, यार। इसे अभी तृष को भेज दो, और वो फौरन लेह से अगली फ्लाइट लेकर तुम्हारी बांहों में आ गिरेगी। और वो थोड़ी हाथापाई भी कर देगी,’ वो फिर से हंस रहा था।

मेरा मजाक का कोई मूड नहीं था।

‘क्या तुमने सुबह नाइट्स ऑक्साइड सूंघ ली है? या कुछ नशा-वशा कर लिया है?’

‘जिंदगी का नशा है, दोस्त, जिंदगी का। मैंने छुट्टियों के लिए एक शानदार जगह ढूंढी है, कोह-समुई। चलोगे क्या?’

‘कब?’

‘कभी भी! चलो प्लान बनाते हैं, और निकल पड़ते हैं।’

छुट्टियों का आइडिया तो लुभावना था। हाथ में बीयर लेकर घंटों बीच पर लेटे रहना, कुछ नहीं करना, और दिन यूं ही ढल जाए। और तभी अगला ख्याल निधि के माथा चढ़ाने का आया, जो बीयर के ख्याल को ही सिरे से नकार देने वाली थी, ये कहते हुए, ‘कैलोरी, कैलोरी। अनि, बीयर नहीं चलेगी, तुम्हें फिट होना है न।’

इससे मुझे वापस अपनी किताब का ध्यान आया, और इस सचाई का भी कि मैं सताइस साल की उम्र में ही ओवरवेट था।

आह भरते हुए मैंने डायरी खोल ली और सुब्बु को अपनी फूड डायरी दिखाई।

सुबह 7 बजे: मिंट टी और तीन गिलास पानी।

सुबह 8.30 बजे: ओट्स दलिया, एक बाउल तरबूज, बिना चीनी की चाय।

11 बजे: आधा संतरा और ग्रीन टी।

12.30 बजे: चावल, आधा कटोरा पतली दाल, बिना तेल की एक सब्जी, रायता (वसारहित दही का)।

मैंने बस इतना ही खाया था। बीच-बीच में मुझे एक कप कॉफी और एक पैकेट लेज की बड़ी तलब उठती रही थी। लेकिन जैसे ही मुझे ख्याल आया कि अगर ये खाया तो लिखना पड़ेगा, तो मैंने खुद को रोक लिया। फूड डायरी यकीनन मुझे खाने से दूर रहने में मदद कर रही थी, क्योंकि अगर निधि की डाइट का मैंने सख्ती से पालन नहीं किया तो वह नाराज होगी, जो मैं बिल्कुल नहीं चाहता था।

‘फूड डायरी! ओह तो ये है। वाह तुमने तो कमाल कर दिया!’ सुब्बु ने कहा।

फिर उसने आंखें सिकोड़ते हुए शक से पूछा, 'तुम झूठ बोल रहे हो न? क्या तुमने सुबह से इतना ही खाया है?'

'हां! मैंने यही खाया है। नहीं, मैं झूठ नहीं बोल रहा। और वैसे भी चीटिंग करने का क्या फायदा होगा?!'

'डायटिशियन कौन है? क्या तुमने ऑनलाइन वेटलॉस प्रोग्राम जॉइन किया है?'

'नहीं, नहीं। वो लड़की याद है जो मुझे ट्रेन में मिली थी? निधि? बाद में पता चला कि उसने बड़ी मेहनत से अपना वजन कम किया था। तो मैंने उससे मदद मांगी। अब मैं उसके निर्देश मान रहा हूं।'

'बढ़िया है! तुमने कोर प्रोसेसर ही बदल दिया? तृष आउट, निधि इन? वाह तुमने तो बड़े आराम से ये बदलाव किया, मान गए यार।'

'यार! ये सब तृष को वापस पाने के लिए ही हो रहा है। उसने मुझे बदलाव की एक लंबी सी लिस्ट थमाई है।'

'और फूड डायरी रखना उसकी सबसे पहली मांग है, है न?'

'नहीं! उसकी लिस्ट में पहला काम है वजन कम करना।'

'तो ये तुम उसके लिए कर रहे हो या अपने लिए?'

'उसके लिए। वह चाहती है कि मैं वजन कम करूं, मैं उसे खुश देखना चाहता हूं।'

सुब्बु ने अपना सिर हिलाया। 'देखो, दोस्त, इसका फायदा तभी होगा, जब तुम ये अपने लिए करोगे। अगर तुम ये उसके लिए करोगे तो आखिर में निराशा ही हाथ लगेगी।'

'वाह, इतनी गहरी बात। ये कहां से मारी?'

'इन दिनों मैं सेनेका को पढ़ रहा हूं,' उसने दांत निकाले।

जिस आदमी का जीरो रिलेशनशिप का रिकॉर्ड रहा हो, उस लिहाज से सुब्बु का नजरिया काफी बेहतर था।

'पता है, तुम सही कह रहे हो। मुझे ये अपने लिए ही करना चाहिए,' मैंने कहा, और उसने हां में सिर हिलाया।

लेकिन फिर भी मैं जानता था कि अगर तृष ने वो मेल नहीं लिखी होती, तो मैं ऐसा कुछ करने की कभी सोचता भी नहीं। मेरे मन की शिकायती आवाज ने कई बार मुझे एक्सरसाइज करने को कहा था, लेकिन अपने बहानों से मैंने उसका मुंह बंद कर दिया था। तो मैं खुश था कि तृष की वजह से ही सही, ये मसला मेरी जरूरी कामों की लिस्ट में तो आया। अब बात आर-पार की है, और जब निधि भी इसमें शामिल है, तो मैं पीछे कदम खींचने की सोच भी नहीं सकता।

'तृष कब वापस आ रही है?' सुब्बु ने पूछा।

'आज रात! वह दोपहर में दिल्ली पहुंच जाएगी और वहां से देर शाम की बंगलौर की फ्लाइट ले लेगी।'

'तो तुम हमेशा की तरह उसे एयरपोर्ट से लेने जाने वाले हो?'

'क्या तुम्हें रिलेशनशिप के अनलिखे नियम नहीं पता है?'

'क्या?'

'गुड बॉयफ्रेंड हमेशा अपनी गर्लफ्रेंड को लेने एयरपोर्ट जाते हैं।'

'गुड बॉयफ्रेंड डिपार्टमेंट में अनिकेत को मिलते हैं दस बटा दस। अब अपने रिवॉर्ड पॉइंट को

अपने लॉयल्टी कार्ड में जोड़ लो,' सुब्बु ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

वह जो चाहे, कहे, मैं पक्का तृष को लेने जाने वाला था। मैंने हमेशा ये किया था।

उस शाम मैं समय से पहले ही कैपगोडा एयरपोर्ट पहुंच गया। मैंने हट्टी कापी से चाय पी और टाइम चैक करने के लिए अराइवल बोर्ड पर नजर डाली। लगभग तीस मिनट का इंतजार बड़ा बोरिंग होने वाला था। बंगलौर के ट्रैफिक और मौसम के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। जब आप सोचो कि आज भीड़ नहीं होगी, तभी सड़कें बिल्कुल ठसाठस मिल सकती हैं। सुबह भी कभी दोपहर जितनी गर्म होती है, तो कभी शाम अचानक आई बारिश से हल्की ठंडी हो जाती है। बंगलौर में रहने से मैं उन चीजों का आदी होने लगा था, जो मेरे बस में नहीं थीं।

मैंने बड़ी लगन से लिखी अपनी फूड डायरी की कुछ तस्वीरें लेने का फैसला किया, और उन्हें निधि को भेजा।

उसने तुरंत मुझे फोन किया।

'हाय! ये तो बढ़िया है!' उसने कहा।

उसकी आवाज के जोश पर मैं मुस्कुरा दिया।

'थैंक्यू। था तो मुश्किल, लेकिन मैंने वैसा ही किया जैसा तुमने कहा था। मैं गुड बॉय जो ठहरा।'

एयरपोर्ट पर चल रहे निर्माण कार्य की वजह से उसकी आवाज साफ सुनाई नहीं दे रही थी।

'जो तुम अब कर रहे हो, उसमें मैं एक और चीज जोड़ना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि तुम एक्सरसाइज बढ़ा दो। क्या तुम बीस मिनट और ज्यादा चल पाओगे?'

'क्या? पहले से ही जो बीस मिनट मैं चल रहा हूं, उसके अलावा?'

'हां।'

'मुझे चलना बहुत बोर लगता है, निधि। कुछ तो रहम करो, प्लीज। मैं किसी तरह बीस मिनट तो निभा लेता हूं,' मैंने कहा।

'तो फिर हमें तुम्हारे लिए कोई और एक्टिविटी ढूंढनी होगी। साइक्लिंग? क्या तुम्हें साइकिल चलाना पसंद है?'

'हां! दरअसल, मेरे पास साइकिल है भी। मैंने डिकेथलॉन से ली थी, जो अब मेरे फ्लैट की बालकनी में बेकार पड़ी है। मैं उससे एक-दो बार अपने ऑफिस गया था, लेकिन फिर इतनी दिक्कतें हुई कि मैंने उससे जाने का ख्याल ही छोड़ दिया। खराब सड़कें, धूल, ट्रैफिक। ऑफिस पहुंचने से पहले ही मेरी हालत खराब हो जाती थी। तो मैंने उसे घर पर रख दिया।'

'ओके, फिर मैं चाहती हूं कि तुम पांच किलोमीटर साइकिल चलाया करो। क्या ये तुम कर पाओगे?' उसने पूछा।

'ठीक है, डन। मैं शुरू कर दूंगा,' मैंने कहा।

'ये पीछे शोर क्या आ रहा है? तुम कहीं बाहर पब-क्वब में हो?' निधि ने पूछा।

'नहीं, नहीं, मैं तृष का इंतजार कर रहा हूं। वह आज आने वाली है, मैं एयरपोर्ट पर हूं,' मैंने कहा।

'ओह, फिर तो मुझे तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करना चाहिए। बाय, मजे करो,' उसने कहते ही फोन काट दिया, इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाता।

मैं उससे और कुछ देर बात करना चाहता था। मैंने सोचा कि हम मेरी डाइट पर बात कर

सकते थे। अब मुझे उससे दोबारा बात करने तक इंतजार करना होगा। या शायद मैं उसे मौसेज कर सकता हूँ।

लेकिन आंखों के कोने से मैं पैसेंजर्स को बाहर आते देख सकता था।

मेरी आंखें तेजी से भीड़ को खंगालने लगीं। मैं बाहर आते यात्रियों के बैगेज टैग्स देख रहा था। मेरी साइड बहुत से ड्राइवर प्लैकार्ड लिए खड़े थे। मुझे भी तृष के लिए प्लैकार्ड बनाना चाहिए था। उस पर आई लव यू लिखते हुए। वह यकीनन उसे देखकर खुश होती। काश मैंने पहले इस बारे में सोचा होता।

फिर वो मुझे दिख गई। मेरी तृष। उसे देखकर मैं ठगा सा खड़ा रह गया। उसने टाइट लैडर पैट्स, और चमकीला ब्राउन हॉल्टर नेक का टॉप पहन रखा था। उसके कंधे पर लैडर का बैग लापरवाही से लटका हुआ था। वह अपने साथ चल रहे लड़के से बात करते हुए हंस रही थी, और अपने बालों को पीछे झटक रही थी। जब उस लड़के ने हंसते हुए तृष के कंधे को थपथपाया तो मेरे अंदर जलन की एक लहर दौड़ गई। मैं उसे जानता था, वो विश्व था। हरामी। वो उसके साथ काफी समय गुजार चुका था, अब मेरी बारी थी। उसने हल्के से तृष के गाल पर किस किया, गुडबाय वाला। तृष भी उससे गले मिली और वह अपने रास्ते बढ़ गया। यही सही है, हरामी—दफा हो जाओ।

मैं उसका मेरी तरफ देखने का इंतजार कर रहा था, भीड़ को खंगालते हुए उसकी आंखें मेरी आंखों से टकराईं और उसने मेरी तरफ हाथ हिलाया। मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा। मुझे लग रहा था उसे अपनी तरफ आता देख, मेरे कदम अपनी जगह जम गए थे। मेरी तृष कितनी कमाल की दिखती थी। बेख्याली में ही मैं बैरीकेड के आखिर की तरफ बढ़ा, जहां मैं और तृष मिल सकते थे।

‘अनि!’ कहते हुए उसने खुद को लगभग मेरी बांहों में उछाल दिया और मैंने उसे उठाए हुए ही बांहों में भर लिया।

उसमें से वही हमेशा वाली महक आ रही थी। एमएंडएस ऑटोग्राफ , मैं इस परफ्यूम को कहीं भी पहचान सकता था।

‘तृष—मैंने तुम्हें बहुत मिस किया, बेबी! तुमने भी मुझे याद किया था?’ मैंने कहा।

‘हम्म—अनि किसी को भी याद करने का टाइम ही कहां था?’

‘थोड़ा तो झूठ बोल देतीं। कम से कम यही कह देतीं कि तुमने मेरे बारे में सोचा। इतना सच बोलने की भी कोई जरूरत नहीं है।’

‘क्या ऐसा कहना था? मुझे तुम्हारी बहुत याद आई, अनि। मैं बहुत थक गई हूँ, मुझे जल्दी से घर पहुंचना है।’

‘तुम्हारे या मेरे?’ मैं मुस्कुरा रहा था।

‘तुम्हारे? मैंने अपने पैरेंट्स को नहीं बताया कि मेरी फ्लाइट आज आ रही है। उन्हें पता है कि मैं कल सुबह आने वाली हूँ। तो हम साथ में समय बिता सकते हैं।’ उसके चेहरे पर शरारती मुस्कान थी। मैं ये सुनने के लिए मरा जा रहा था।

मैं जानता था कि तृष को खुश करने के लिए मैं जो कर रहा था, वो सब मायने रखता था। मैं उसकी हर ख्वाहिश को पूरा करूंगा। मैं चाहता हूँ कि उसे मुझ पर गर्व हो। मेरी तृष है ही ऐसी।

मैं वापसी के रास्ते मैं उससे बातें करना चाहता था, लेकिन वह गाड़ी में बैठते ही सो गई।

बेलंदूर वापसी की ड्राइव लगभग एक घंटे की थी। मैं शुक्र मना रहा था कि रात के उस समय कोई ट्रैफिक नहीं था।

मैं उसे सोते हुए देख रहा था, उसका मुंह हल्का सा खुला था, बाल पीछे पड़े थे। उसके चेहरे से आंखें हटा पाना मेरे लिए मुश्किल था। उसे अपने पास पा मैं खुद को दुनिया का सबसे खुशकिस्मत इंसान समझ रहा था।

मैं अपने आईपॉड में डाले गए लव सॉन्स सुन रहा था, जिनमें अविची के गाने भी शामिल थे। मैंने ये गाने वापसी के रास्ते में उसके साथ सुनने की योजना बनाई थी, लेकिन अब जब वह सो रही थी, तो मैं इन्हें अकेले ही सुन रहा था। घर पहुंचकर मैंने गाड़ी पार्किंग में खड़ी की और धीमे से जगाया।

उसने उठकर अपनी बॉडी स्ट्रेच की। वह इतनी खूबसूरत लग रही थी कि मैं बस अपनी नजरें हटा ही नहीं पा रहा था।

‘क्या?’ वह मुस्कुराई। मैं मुस्कुराया। मेरा दिल खुश था।

ऊपर जाने पर उसने कहा कि वो नहाना चाहती है। मेरे घर पर एक-दो टीशर्ट, शॉर्ट्स और एक टूथब्रश हमेशा रखा होता था। अपनी अलमारी में उसका सामान देखना मुझे अच्छा लगता था।

वह जल्दी से नहाने घुस गई, और मैंने दो गिलासों में वाइट वाइन डाली। (क्या मैं उसे ‘सरप्राइज’ देने वाली डिमांड को पूरा करने की कोशिश कर रहा था? तृष, मैं कर रहा हूँ न?) मैंने 2012 सॉविग्नन ब्लांक को चुना था, क्योंकि वाइन स्टोर वाले ने बताया था कि ये बेस्ट थी। ‘सर, कई कस्टमर बार-बार यही लेकर जाते हैं, बहुत बढ़िया वाइन है ये,’ उसने कहा था। मुझे उम्मीद थी कि वो सही कह रहा होगा।

जब वह बाहर निकली तो दो गिलास वाइन के साथ एक कैंडल जली हुई देखी।

‘ओह, अनि,’ कहते हुए वह मेरे गले लग गई। मैंने गहरी सांस ली, मुझे तो अभी से नशा होने लगा था। ये उसका नशा था।

उसे भी इसका अहसास था, वह मुस्कुराई। ‘एक्शन के लिए तैयार हो, है न?’ उसने कहा, और मैं शरमा गया।

मेरे गद्दे पर रखे बड़े से कुशन का सहारा लेकर बैठते हुए उसने अपनी वाइन का घूंट भरा।

मैंने जॉन लेजेंड का ऑल ऑफ मी चलाया।

मैंने सारे स्लो लव सॉन्ग प्ले लिस्ट में डाल रखे थे। म्यूजिक और तृष का चमकता चेहरा, दोनों ही मूड को बना रहे थे। यही जन्नत थी। अगर मुझे बाकी की सारी जिंदगी यूं ही तृष के सामने बैठकर, वाइन पीते हुए, इस अहसास के साथ गुजारनी पड़े तो मैं कभी कुछ और नहीं मांगूंगा।

‘तृष—आई लव यू,’ मैंने उसे देखते हुए कहा।

‘हूँ?’ ऐसा लगा जैसे वो किसी गहरी सोच से जागी हो।

‘तुम बहुत खूबसूरत हो,’ मैंने कहा और वह मुस्कुराई, और मुझे अपने पास गद्दे पर आकर बैठने का इशारा किया।

इसी का तो मुझे इंतजार था। पल भर में ही अपना गिलास मेज पर रखकर मैं उसके पास चला गया।

मैंने उसे चूमना शुरू कर दिया और उसने भी अपने अंदाज से मुझे दीवाना बना दिया।

मैंने धीरे से उसके हाथ से वाइन का गिलास लेते हुए अपना हाथ उसकी टी-शर्ट में डाल दिया। उसने ब्रा नहीं पहनी थी और मैं उसके निप्पल को ठीक वैसे ही सहलाने लगा जैसे वो चाहती थी। उसने आह भरते हुए मुझे और जोर से चूमा और मेरे सिर को सहलाते हुए अपनी ओर खींचने लगी।

फिर उसके हाथ मेरी पीठ से होते हुए मेरे बट तक पहुंच, उन्हें दबा रहे थे। मैं गहरी सांस लेते हुए उसके कानों को चूम रहा था।

उसने अपनी पीठ मोड़ते हुए अपनी टीशर्ट उतार दी।

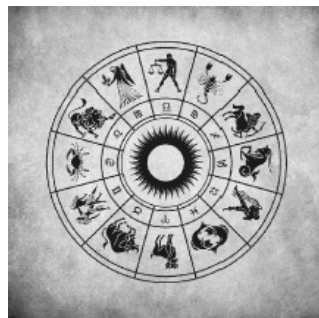
फिर हम धीरे-धीरे, प्यार करने लगे, और इस बीच मैं सिर्फ कॉन्डम पहनने के लिए रुका। तृष कराहते हुए कह रही थी कि उसे बहुत मजा आ रहा है, कि वो मुझे बहुत प्यार करती है।

‘फिर से कहो,’ मैंने उससे कहा।

‘लव यू, अनि,’ उसने कहा।

प्लेलिस्ट पर अब वन रिपब्लिक का काउंटिंग स्टार्स बज रहा था। हम गद्दे पर साथ-साथ लेटे थे और फ्लोर से छत तक बनी फ्रेंच विंडो से दिखते आसमान में झिलमिलाते तारे देख रहे थे।

बहुत से तारे झिलमिला रहे थे, और चांद की मद्धम रौशनी में मैंने खुद से वादा किया कि इस औरत का खुश करने के लिए मैं कुछ कर गुजरूंगा।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आपका कोई प्रिय आपसे दूर जा सकता है। या हो सकता है कि आप दिल की ख्वाहिश को लेकर दुविधा में हों। ध्यान करो, और अपने अंदर के बच्चे से बात करो। घूमने जाओ। अपने दिल की आवाज सुनो। जवाब आपको खुद मिल जाएगा।

10

निधि

घर पहुंचकर मैंने अपनी हील्स उतार फेंकी। कितना आराम मिला था। मैं नंगे पैर ही फ्रिज तक चलकर ठंडे पानी की बोतल निकालकर सोफे पर ढह गई।

मनोज ऐसे कैसे मुझ पर बम गिरा सकता है? मैं उसके लिए खुश हूं। सच में। लेकिन वह हम दोनों के लिए फैसला नहीं कर सकता। वह तो यह भी नहीं समझता कि पॉटरी के मेरे लिए क्या मायने हैं। मनोज के यूं अमेरिका जाने के फरमान के साथ ही वीर से जुड़ी हर याद मानो फिर से

ताजा हो उठी। उसके साथ भी चीजें तभी बिगड़ी थीं, जब वह अमेरिका शिफ्ट हो गया था।

वीर के साथ गुजारे हुए छह साल—और बाद में क्या बचा सिर्फ यादें। जब कोई रिश्ता खत्म होता है, तो यादें कहां चली जाती हैं? कभी-कभी वे घंटों की हुई बातों में दबकर, संरक्षित रह जाती हैं। कभी वे फोटो में कैद हो, हार्ड ड्राइव में पड़ी रह जाती हैं। वे एक-दूसरे को दिए हुए तोहफों, परफ्यूम और प्यार के गीतों में भी कसकती हैं। और कभी-कभी वे आपके दिल की गहराइयों में उतर जाती हैं, और ठीक ऐसे समय में उछलकर हाजिर होती हैं, जब आपको उनकी कोई उम्मीद नहीं होती है, और आपकी रूढ़ पर कब्जा कर आपको एक बार फिर से बेबसी के उस पुराने समय में पहुंचा देती हैं।

अब तो यह किसी दूसरे जन्म की बात लगती है। वीर एमबीए के दिनों में मेरी ही क्लास में था, और हम दोनों में काफी बनने लगी थी। फिर वह नौकरी के लिए अमेरिका चला गया, और मैं श्रीलंका। जब वह मुझसे मिलने श्रीलंका आया तो उसके आने की तैयारी में की गई मेरी हर कोशिश उसे बेकार लगी। वो बौद्ध मंदिर, बीच, टर्टल फार्म, हिक्कादुआ की सैर, मेंग्रोव के नीचे से गुजरती बोट की सवारी... किसी भी चीज से उसे खुशी नहीं मिल रही थी। अभी वापस सोचने पर अहसास हो रहा है कि वह हर समय बस शिकायतें ही करे जा रहा था, और बार-बार उसकी तुलना द ग्रेट अमेरिका से कर रहा था। कितना बचपना था? उसे अमेरिका से प्यार हो गया था, और वो भी, मनोज की ही तरह, वहां मुझे अपने साथ ले जाना चाहता था।

हालांकि मुझे न्यूयॉर्क जाना अच्छा लगा था, लेकिन मुझे उसके छोटे से अपार्टमेंट से चिढ़ हो रही थी। श्रीलंका में मेरा घर—खुला-खुला, हवादार और रौशनी वाला था—मुझे जन्नत जैसा महसूस हो रहा था। ये दिलचस्प है कि किसी जगह से आपका लगाव किस कद्र आपके रिश्ते को प्रभावित करता है।

उसे शहर की रौशनी, चमक-धमक, नाइट क्लब, पब पसंद थे; जबकि मैं ऑर्गेनिक फॉर्म, बीच, मंदिर और प्रकृति में समय बिताना चाहती थी। उसे पब जाना पसंद था। मैं काउच पर उससे लिपटकर नेटफ्लिक्स देखना पसंद करती थी। वह मुझसे पूछता कि अगर यही सब करना था तो न्यूयॉर्क आने का क्या फायदा। तो एक दिन मैं उसे खींचकर मॉडर्न आर्ट म्यूजियम में ले गई। ये न्यूयॉर्क की उन कुछेक जगहों में से थी, जो मुझे पसंद थी, लेकिन उसे सख्त चिढ़ थी। साल्वोडोर डाली के काम को लेकर हुई हम दोनों के बीच की एक बहस मुझे आज भी याद है। मैं हैरानी से पेड़ पर लिपटी घड़ियों वाली पेंटिंग देख रही थी, और वह 'अतियथार्थवादी कला' का मजाक बना रहा था, उसका मानना था कि ये तो कोई भी कर सकता है। मैंने उससे कहा कि ये आर्ट पोलॉक की मॉडर्न आर्ट से अलग है। और वह पोलॉक-बोलॉक कहकर हंसने लगा। मैंने गुस्से से मुंह फेर लिया, और बाकी समय उससे बात नहीं की। कितना फनी था कि सालों बाद भी आपको वो बातें याद रह जाती थीं, जो देखा जाए तो बचकानी ही होती हैं।

मेरे श्रीलंका वापस आने पर, हम दोनों ही अपने-अपने कामों में बिजी हो गए थे। दोनों ही अपना कैरियर बनाने में जुटे थे। हमारी स्काइप कॉल्स, इंस्टेंट मैसेज और ईमेल लगातार कम होने लगे थे। धीरे-धीरे हम मानने लगे थे कि हमारे रिश्ते में अब दम नहीं रहा था। लेकिन फिर भी आखरी कदम उठाने में हमें एक साल लगा। और मुझे लगता है कि रिश्ता खत्म होने से हम दोनों ने ही शायद चैन की सांस ली थी।

ब्रेकअप के कई महीनों बाद, एक शाम बंगलौर में मैं अचानक ही बहुत उदास हो गई और

मैंने सुबकते हुए तारा को फोन किया। मैं नहीं जानती थी कि मुझे क्यों रोना आ रहा था। अजीब सा दुख था, कुछ चले जाने का। मैं शायद उसके जाने का दुख मना रही थी, जो कभी था ही नहीं। मैं एक आभासी रिश्ते का शोक मना रही थी। मैंने तारा से कहा कि मुझे मां की बहुत याद आ रही थी (सच में आ भी रही थी), और मैं फफककर रो पड़ी। तारा ने कहा कि वो पांच घंटों में मेरे पास पहुंच जाएंगी। उन्होंने तुरंत मणि, हमारे भरोसेमंद, वफादार ड्राइवर को फोन किया, और रात के साढ़े बारह बजे वो मेरे पास बंगलौर अपार्टमेंट में थीं। पापा बिजनेस के सिलसिले में कहीं बाहर गए हुए थे। जब तक तारा आई, मैं थोड़ा संभल चुकी थी। तारा के आने से मैं बहुत खुश थी—कैसे वो अपना सब काम छोड़कर, सिर्फ मेरा साथ देने के लिए यहां आई थीं। मैंने उन्हें बताया कि अचानक पुरानी यादें उठ जाने से मैं उदास हो गई, और बस खुद को संभाल नहीं पाई। मैंने रोते हुए उसे बताया कि कैसे वीर के साथ गुजारे हुए पुराने दिन याद आ रहे थे, और तारा ने मुझे गले से लगाकर मुझे सहारा दिया।

और अब मनोज की इस खबर से वो सारी यादें वापस मेरे सामने आ खड़ी हो गई थीं। मेरा मन तारा से अभी बात करने का कर रहा था। हालांकि मैंने रेस्टोरेंट में वाइन पी ली थी, लेकिन फिर भी मैंने लिविंग रूम की कैबिनेट में रखी कैनेडियन कास्क का नीट शॉट अपने लिए बना लिया। आमतौर पर मैं इतना नहीं पीती, लेकिन आज मुझे सच में पीने की जरूरत महसूस हो रही थी।

मैं अपने लेदर की आराम कुर्सी में, पैर मोड़कर बैठ गई और विस्की के घूंट भरने लगी। वहीं बैठे-बैठे मैंने तारा को फोन मिलाया।

‘हेल्लो, सनशाइन। और सब कैसा चल रहा है?’ उसकी आवाज सुनकर ही मेरी आधी तकलीफ कम हो जाती थी।

‘हाय, तारा। कुछ भी ठीक नहीं है।’

‘क्यों? क्या हुआ?’

‘ऐसा लग रहा है कि वीर वाली कहानी फिर से दोहराई जा रही है,’ मैंने आह भरी।

‘ओह नो। क्यों?’

‘मनोज ने बताया कि वो यूएस शिफ्ट होने वाला है, और वो चाहता है कि मैं भी उसके साथ चलूं। वो एक महीने में शादी करना चाहता है।’

‘और?’

‘और क्या? मैं तैयार नहीं हूं, तारा। जब तक आप तैयार न हों, तब तक शादी कैसे कर सकते हो?’

वो कुछ देर खामोशी में मेरी बात समझने की कोशिश कर रही थीं।

फिर उन्होंने कहा, ‘हां, नहीं कर सकते। उसके लिए तुम्हें पूरी तरह से तैयार होना होता है। तुम्हारे अंदर शादी करने का उत्साह होना चाहिए। वो तुम्हारी जिंदगी की सबसे जरूरी चीज होनी चाहिए। मैं जानती हूं, क्योंकि तुम्हारे डैड से शादी के समय मैंने ऐसा महसूस किया था। तब मैं तुमसे थोड़ी बड़ी थी, और जिंदगी में कभी भी किसी दूसरी चीज के लिए मैं इतनी निश्चित नहीं थी। मेरे अंदर एक जोश था। ऐसा लग रहा था अपनी पूरी जिंदगी मैं बेहोश रही थी, और तुम्हारे डैड के साथ बने इस संबंध ने मुझमें नई जान डाल दी थी। निधि शादी से पहले तुम्हें भी ऐसा ही महसूस होना चाहिए। नहीं तो कुछ साल बाद सब खत्म होने लगता है। मैंने कई शादियों को

टूटते हुए देखा है। मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ।'

'हां, मैं जानती थी तारा, तुम मेरी बात समझोगी।'

'तो, तुम क्या करने वाली हो?'

'मैं नहीं जानती। मैंने उससे सोचने का समय मांगा है।'

'और उसने क्या कहा?'

'उसने हां कहा, लेकिन उसे उम्मीद है कि मैं अपना मन बदल लूंगी। पता है वो शादी को लेकर कितना उत्साहित है। मेरे लिए उसका प्यार सच्चा और गहरा है।'

'निधि डार्लिंग, मैं जानती हूँ। लेकिन ये सवाल तुम्हें खुद से पूछना है कि क्या तुम भी उसको ऐसे ही प्यार करती हो?'

मैं कुछ पल खामोश रही। तारा के सवाल के लिए मैं बिल्कुल तैयार नहीं थी।

अब तक मैं सोचती आई थी कि मनोज के लिए मेरे प्यार पर सवाल नहीं उठाए जा सकते। लेकिन अब मैं तय नहीं कर पा रही थी कि क्या मैं सच में उसे इतना प्यार करती थी, क्यों मेरे दिल में शादी के नाम पर शहनाई नहीं बज रही थी? क्या मैं संबंध बनाने से डरने लगी थी? या वीर के अनुभव ने मेरा आत्मविश्वास हिला दिया था?

'हैल्लो, तुम सुन रही हो न निधि?' तारा ने पूछा।

'हां। मैं तुम्हारी बात को सोच रही थी। तुम सही कह रही हो, मुझे खुद से ही ये सवाल पूछना होगा। मैं उसे प्यार करती हूँ। या कम से कम मैं ऐसा सोचती तो हूँ। लेकिन ये शादी की बात मुझे डरा रही थी।'

'फिर कुछ इंतजार करो। जल्दबाजी में फैसला मत करो। अगर वो सच में तुम्हें चाहता है, तो इंतजार करेगा। इस रिश्ते को थोड़ा समय दो।'

'अगर हम अलग हो गए तो, जैसा वीर के मामले में हुए था?'

'तो क्या? कम से कम तुम्हें पता होगा कि तुमने उससे शादी करके कोई गलती तो नहीं की। और हां, तुम्हें याद रखना चाहिए कि वीर वाला दौर तुम्हारी जिंदगी का अलग समय था। तुम बहुत छोटी थीं, कैरियर बनाने में बिजी थीं। अब तुम पर वैसा प्रेशर नहीं है। तुमने तय कर लिया है कि तुम्हें क्या करना है। अब तुम्हारे पास खुद के लिए टाइम है। और जब दो लोग आपस में प्यार करते हैं, तो वो समय निकाल ही लेते हैं। इसे अपने रिश्ते की अग्नि परीक्षा समझो। उसे कह दो कि वो चला जाए और तुम जाने के लिए तैयार होने तक यहीं रहोगी।'

मैंने उनसे कहा कि मैं ऐसा ही करूंगी, और फोन काटकर अपनी कुर्सी में आगे-पीछे झूलने लगी, इसी बारे में सोचते हुए।

तारा से बात करने पर हमेशा चीजों को समझने का एक नजरिया मिलता था। मुझे लगता है कि ऐसी औरत को अपनी जिंदगी में पाना डैड के लिए जैकपॉट था। और अजीब बात ये है कि यही बात तारा भी मेरे डैड के बारे में महसूस करती थी। वो दोनों एक-दूसरे को पाकर खुद को खुशकिस्मत महसूस करते थे।

फिर मैंने अनिकेत का मैसेज देखा।

'कल से साईक्लिंग शुरू कर दूंगा। पांच किलोमीटर रोज।'

मैंने जवाब दिया, 'ग्रेट। बढ़िया जा रहे हो। और डाइट भी याद रखना।'

मेरा मैसेज देखकर वह तुरंत ऑनलाइन आ गया।

‘यस, मैम। और पता है मैं क्या सोच रहा था?’

‘क्या?’

‘मैं तुम्हारे पॉटरी स्टूडियो आकर एक बार उसमें हाथ आजमाना चाहता हूँ।’

‘तुम्हें आना चाहिए! ये तुम्हारी नई हॉबी हो सकती है। तुम्हारी लिस्ट की एक और फरमाइश।’

‘हां! मैं भी यही सोच रहा था। मैं तृष को सरप्राइज देना चाहता हूँ।’

‘ओके। आकर डेमो क्लास लो। एक बार करके देख लो, फिर सोच लेना कि तुम्हें आगे करना है या नहीं।’

‘मैं आऊंगा। अब जाना होगा। तृष बुला रही है।’

‘ओह! वो तुम्हारे साथ है?’

‘हां! यहीं है। बाय!’

मैं अनिकेत को डाइट के लिए यूं सीरियस देखकर सच में हैरान थी। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वो इतनी ईमानदारी से रूल फॉलो करेगा। वो रोज अपनी फूड डायरी लिखता, तस्वीर खींचता और मुझे भेजता। उसने मुझे ये भी बताया था कि वो रोज पांच किलोमीटर तक साइकिल चला रहा था। मैं खुश हूँ कि वह इतनी लगन से काम कर रहा था। अगर वह ऐसा ही करता रहा, तो मुझे यकीन है कि वह एक महीने में दो किलो वजन कम कर लेगा। इससे उसे प्रेरणा मिलेगी। अपने अनुभव से मैं जानती हूँ कि असली चुनौती होती है उस पर कायम रहना। एक बार उसके शरीर को एक्सरसाइज की आदत हो जाएगी, तो मुझे उसका रूटीन थोड़ा बदलना होगा। लेकिन अभी के लिए हम ठीक कर रहे थे।

बुधवार को सुबह साढ़े सात बजे अनिकेत का फोन देखकर मैं हैरान थी।

‘हाय! पता है, मैं कोरमंगला तक साइकिल चलाकर आया हूँ।’

‘वाह! तुम जानते हो न कि मैं कोरमंगला में रहती हूँ?’

‘सच में?’

‘हां।’

‘कोरमंगला में कहां?’

‘रहेजा रेजिडेंसी।’

‘ओह! मैं जानता हूँ वह कहां है। दरअसल मैं उसके पास वाली गली में ही हूँ। मैंने आज दूसरा रूट लेने का तय किया था, तो अब वापस लौटने से पहले कुछ पल सुस्ता रहा था।’

उसे घर बुलाने में मुझे जरा भी झिझक नहीं हुई। ‘नाइस! आओ मेरे साथ एक कॉफी हो जाए,’ मैंने कहा और उसे अपना अपार्टमेंट और ब्लॉक नंबर दिया।

वह पांच मिनट में ही आ गया था, और मेन गेट से सिक्योरिटी गार्ड का फोन आया कि कोई अनिकेत मुझसे मिलने आया था। मैंने उसे अंदर भेजने को कहा। ऐसी गेट वाली सोसाइटी में रहने का फायदा यही था कि पहले मेन गेट और फिर अपार्टमेंट ब्लॉक पर चैकिंग होती थी। मैं जानती थी कि अब दूसरा फोन बिल्डिंग सिक्योरिटी से आएगा, और मैंने उनसे भी वही कहा।

अनिकेत ने घंटी बजाई, और मैंने दरवाजा खोला तो उसे गोल गले की नीली टीशर्ट और शॉर्ट पहने, पसीने में पूरा तर देखा। उसकी साइकिल का हेलमेट उसके हाथ में था। उसने नी-पैड भी पहने हुए थे।

‘हाय,’ उसने कुछ शरमाते हुए कहा। वह किसी छोटे बच्चे की तरह लग रहा था।

‘आओ-आओ, वैलकम,’ मैंने उसे अंदर बुलाते हुए कहा।

‘वाह—कितनी सुंदर जगह है! तुमने इसे बहुत अच्छे से रखा है, निधि!’ उसने आसपास देखते हुए कहा।

मेरे अपार्टमेंट में आते ही सबसे पहली नजर खूबसूरत लाल दीवार पर रुकती है, जिस पर मैंने शानदार ब्लैक एंड वाइट पेंटिंग्स लगाई हुई थीं। यहां आने वाले दूसरे लोगों की तरह, अनिकेत भी इससे इम्प्रेस लग रहा था। मैंने इस जगह को बहुत प्यार और रख-रखाव से सजाया था। वाइट लैडर का एक आरामदायक सोफा-कम-बैड भी वहां रखा था, जिस पर दीवार से मैच करते हुए लाल कुशन थे। श्रीलंका से खरीदे गए कुछ छोटे-छोटे सामान थे। क्रीम कलर का कपड़ा चढ़ी दो शीशम की कुर्सियां थीं। मेरे पूरे लीविंग रूम की थीम क्रीम ही थी, जिस पर चमकदार पीले और लाल रंग के छींटें थे। और इसके बीच में वो लाल दीवार कमरे को खूबसूरत आकर्षण प्रदान करती थी। अनिकेत बड़े मन से हर चीज को देख रहा था, मैंने उससे कहा कि मैं कॉफी लेकर आती हूं।

‘मैं बहुत बढ़िया साउथ इंडियन फिल्टर कॉफी बनाती हूं,’ मैंने कहा।

‘बिल्कुल, आई लव कॉफी,’ उसने कहा और फिर लीविंग रूम में रखे सिंगिंग बाउल के बारे में पूछा।

‘ये मैं मैक्लॉड गंज से लाई थी,’ मैंने कहा। वह लकड़ी की छोटी सी मुंगरी उठाकर बाउल के घेरे पर बजाने लगा। मैंने उसे कॉफी दी और उसके हाथ बाउल ले लिया।

‘इसे ऐसे नहीं करना चाहिए, मैं तुम्हें दिखाती हूं,’ मैंने कहा। हम दोनों बैठ गए, वह सोफे पर और मैं लकड़ी की कुर्सी पर। फिर मैं मुंगरी बाउल के बाहरी किनारे पर घुमाने लगी। एक खूबसूरत ध्वनि उससे निकलने लगी, और मैंने एक लय में उसे घुमाना शुरू किया। बाउल के घेरे पर घूमते हुए, बिना उससे मुंगरी टकराए। उसकी लय धीरे-धीरे बढ़ रही थी, और एक जादुई आवाज पूरे अपार्टमेंट में छा गई। उसका प्रभाव जादुई था।

हम शांति से बैठे उसे सुन रहे थे, और आखिरकार जब मैंने अपना हाथ रोका, तो कुछ पल हम दोनों ही कुछ कहने की हालत में नहीं थे। जैसे हम दोनों ही समझ रहे थे कि कुछ भी कहने से ये अनुभव बर्बाद हो जाएगा।

कुछ पल खामोश रहने के बाद, उसने कहा, ‘वाह’। लगभग फुसफुसाते हुए, जैसे उसके शब्द बाहर आने से झिझक रहे थे।

‘तुम्हारी कॉफी, अनिकेत,’ मैंने उसे याद दिलाया, और वह मुस्कुरा दिया।

‘बहुत बढ़िया!’ उसने घूंट भरके मुझे देखते हुए कहा।

मैंने उसे अपार्टमेंट से बाहर का नजारा दिखाया, और उसने मेरे घर और मेरी पसंद की तारीफ की।

फिर उसने समय देखकर कहा कि उसे वापस बेलंदूर साइकिल चलाकर जाना है और फिर तैयार होकर ऑफिस के लिए निकलना है, तो अब उसे जाना होगा।

‘हां, ठीक है। और अपनी डाइट का याद रखना। और पता है, मुझे तो तुम्हारी बॉडी में कुछ फर्क भी नजर आ रहा है,’ मैंने कहा।

‘छोड़ो भी, निधि, तुम बस ऐसे ही कह रही हो। अभी तो दो सप्ताह भी नहीं हुए?’

‘सच में, फर्क दिख रहा है। मैं तुम्हें खुश करने के लिए नहीं कह रही। क्या तुम्हें खुद महसूस नहीं हो रहा?’

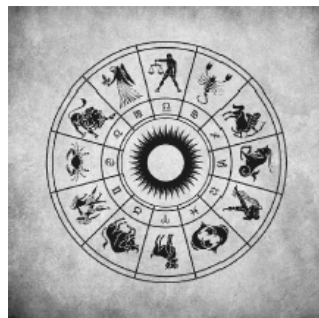
‘नहीं! मुझे तो पहले जैसा ही लग रहा है!’

‘ठीक है, दो सप्ताह और इंतजार करो। और पानी खूब पीते रहो।’

‘बिल्कुल, मैम,’ उसने कहा और मिलिट्री सैल्युट करते हुए खिलखिला दिया।

उसके जाने के बाद मैंने सोचा कि वो तृष को खुश करने के लिए कितनी कोशिशें कर रहा है। वो सच में अच्छा बॉयफ्रेंड है। इससे पता चलता है कि वो उसके पीछे पूरी तरह पागल है। काश वो भी उसकी मेहनत की तारीफ करे, और उस पर ध्यान दे।

बाद में, जब मैं अपना आर्टिकल, टेक कंपनी के न्यूजलैटर के लिए, लिखने बैठी तो मेरे मन में तूफान उठा हुआ था। रिश्ते। ये सच में बड़े अजीब होते हैं। जब भी आपको लगता है कि वो आपकी पकड़ में हैं, तभी वो आपको सरप्राइज करते हैं। आप उन पर कभी काबू नहीं पा सकते। और इनसे बहुत से भाव जुड़े होते हैं। किसी भी रिश्ते में आप जो भी करते हैं, वो इस पर निर्भर होता है कि आप सामने वाले से कितना प्यार करते हैं।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

नई चीजें करना आपके लिए फायदेमंद होगा। अनपेक्षित घटनाएं आपको सोचने पर मजबूर करेगी। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें। जल्दबाजी में ऐसा कुछ ना करें जिस पर बाद में पछताना पड़े। जल्दबाजी के फैसले नुकसानदायक साबित होते हैं।

11

अनिकेत

तृष और मैं शांति, संतुष्टि से एक-दूसरे के साथ लेटे थे। वो बहुत सुंदर लग रही थी, मैं कसम खा सकता हूं कि उसमें एक किस्म का तेज था। कुछ देर सांस लेने के बाद, तृष ने पूछा कि क्या मैं हॉट चॉकलेट लेना पसंद करूंगा।

‘थैक्स बेबी, बिल्कुल लूंगा,’ मैंने कहा, और वो बड़ी शान से बिस्तर से निकली, अपनी टीशर्ट पहनी, जिसमें उसके बट बमुश्किल ही छिप रहे थे।

मन ही मन तृष की तारीफ करते हुए मैंने आह भरी।

उसकी फिगर कितनी कमाल की थी। जरा भी मांस कहीं ज्यादा नहीं था। गॉड—वो किसी गुड़िया की तरह कमाल की थी।

अचानक ही, न चाहते हुए भी, मेरी नजरें अपने शरीर पर गई—और पेट पर चढ़ते मांस ने मुझे निराश कर दिया। उसके लिए यकीनन फिट लड़का ही होना चाहिए।

मैंने अपना फोन उठाकर निधि को टैक्स्ट किया। मैंने उसे बताया कि मैं कल से साइकिल चलाने की सोच रहा हूं और मैं एक बार पॉटरी में भी हाथ आजमाना चाहूंगा। उसने मुझे अपने स्टूडियो में आने को कहा।

तृष दो मग हॉट चॉकलेट लेकर आ गई थी।

‘ये तुम्हारे लिए,’ उसने कहते हुए एक मग मुझे पकड़ाया।

मुझे अपनी फूड डायरी की याद आई। हॉट चॉकलेट के इस मग में बहुत सी कैलोरी होगी और निधि यकीनन इसे पीने की इजाजत नहीं देगी। लेकिन तृष ने इसे इतने मन से बनाया था, और मैं इसे मना करके उसे नाराज नहीं कर सकता था।

‘हे, थैंक्स बेबी,’ कहकर मैंने मग लेने के लिए फोन परे रख दिया।

फिर मग को साइड टेबल पर रख, मैं तृष का चेहरा सहलाने लगा। मैंने उसकी आंखों में देखकर कहा, ‘देखो, मैं तुम्हारी लिस्ट की हर बात पूरी करूंगा, डार्लिंग तृष। मैं तुम्हें खुश कर दूंगा, प्रॉमिस।’

उसने मुझसे हटते हुए कहा, ‘वो तो देखेंगे, खुद पता चल जाएगा, है न?’

क्या? उसका मतलब क्या था?

‘तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?’ मैंने उससे पूछा।

‘वो तो समय बताएगा, अनि,’ उसने कहा और दूसरी तरफ मुड़ गई।

आउच। जब वो मुझे ऐसे खारिज कर देती थी, तो बहुत तकलीफ होती थी। फिर मैंने तय किया कि मैं उसे करके दिखाऊंगा। मैं उसे खुश देखना चाहता था। बहुत खुश। और उसके लिए जो बनेगा, मैं करूंगा।

अगली सुबह मैंने तृष को उसके घर छोड़ दिया। पहले भी जब हमने ऐसा किया था, तब भी हमारा रूटीन वही था। मुझे उसे जल्दी से उसके अपार्टमेंट गेट पर छोड़कर निकल जाना होता था, जिससे उसके पेरेंट्स मुझे देख न पाएं। वह हमेशा फोन करके पता कर लेती थी कि वे लोग कहां थे। यकीनन वो उन्हें बताती थी कि वो एयरपोर्ट से वापसी के रास्ते में थी। वह जानबूझकर ऐसा टाइम चुनती थी, जब उसके पापा वॉक के लिए बाहर गए हों और मॉम रसोई में खाना बना रही हों। अब तक तो हम कभी पकड़े नहीं गए थे। वैसे तो ये रिस्क था, लेकिन वो इसे ‘कैलकुलेटेड रिस्क’ कहती थी।

उसे उसके घर छोड़कर, वापस आने पर मैंने साइकिल लेकर निकलने का सोचा। चेहरे को छूती सुबह की ठंडक बहुत सुहानी लगने लगी थी। अगले कुछ दिन, मैं धीरे-धीरे अपनी दूरी बढ़ाता रहा, और एक सुबह आगरा लेक से भी आगे निकल गया। इससे पहले कि मैं जान पाता मैं कोरमंगला के रास्ते पर था। निधि ये जानकर जरूर खुश होगी कि मैं पांच किलोमीटर से ज्यादा की दूरी तय करने लगा था।

इतनी दूर आने पर अब मैं थक गया था। मेरे पैर थकान से कांप रहे थे। मैं थोड़ा पानी पीने

के लिए रुका, जो मैं अपने साथ बैगपैक में लेकर निकला था। मैंने हेल्मेट उतारकर पसीना पोंछा।

मैंने फोन निकालकर, कुछ हौसलाअफजाई के लिए निधि को फोन किया। ताकि उसे अपने आज की उपलब्धि के बारे में बता सकूं। मुझे उससे कुछ अच्छी बात सुननी थी, वैसे भी मुझे अभी साइकिल चलाकर वापस बेलंदूर भी तो लौटना था।

निधि की रिंगटोन बहुत अच्छी थी। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। वो टेलर स्विट का ब्लैक स्पेस था।

निधि ने फोन उठाया। मैंने उसे बताया कि मैं साइकिल चलाकर कोरमंगला पहुंच गया था; तब हमें पता चला कि जहां से मैं फोन कर रहा था, वो वहीं नजदीक में रहती थी, और उसने मुझे कॉफी पीने के लिए बुला लिया।

मैंने उसे मेरी पीठ थपथपाने के लिए फोन किया था; मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि वो मुझे यूं बुला लेगी। लेकिन अब जब उसने मुझे बुला लिया था, तो कॉफी के कप को मैं मना नहीं कर सकता था। मैंने उससे कहा कि मैं जल्दी ही वहां पहुंच जाऊंगा, और पांच मिनट में ही मैं उसके घर में था।

उसका अपार्टमेंट जैसे मैजिक था! उसने इंटीरियर की थीम लाल और सफेद रखी थी। उसने मुझे सिंगिंग बाउल भी दिखाया—उसके बजाने का तरीका भी मुझे बहुत अच्छा लगा। उन कुछ पलों में एक शांति, सुकून का अहसास मुझ पर हावी हो गया था, मैं तो ये भी भूल गया था कि मैं कहा था।

फिर मुझे याद आया कि अभी मुझे साइकिल चलाकर बेलंदूर पहुंचना था, तो मैं जाने के लिए उठ गया। अगर मुझे टाइम पर ऑफिस पहुंचना था, तो जल्दी से घर पहुंचकर, नहाकर भागना था। मेरे पैर अब दुख रहे थे, और साइकिल चलाने से छाती भी भारी महसूस हो रही थी। शायद उस दिन मैंने बारह किलोमीटर तक चलाई थी। मेहनत से मेरा चेहरा लाल हो गया था। नहाने और तैयार होने के बाद भी लालिमा कम नहीं हुई थी।

ऑफिस पहुंचने पर सुब्बू ने मुझ पर फब्ती कसी। 'पिछली रात की मेहनत दिखाई दे रही है, यार। तुम बूढ़े होते जा रहे हो। अभी तक तुम्हारी सांस वापस नहीं आई है। जरा खुद को देखो तो,' वो हंसा।

मैंने उसे बताया कि ये दस किलोमीटर साइकिल चलाने का नतीजा है, लेकिन शायद उसे यकीन नहीं हो रहा था।

काम में डूबकर समय का पता ही नहीं चला, और जब काम से सिर उठाया तो दोपहर हो गई थी। मैं कॉफी मशीन की तरफ गया, तो तृष की झलक देखने को मिली। स्मार्ट, टाइट वाइट शर्ट और ब्लैक पैंट में वो बहुत सेक्सी लग रही थी। तृष को ऑफिस में देखने के लिए मुझे थोड़ा बाहर की तरफ आना पड़ता था। उसे देखकर कभी तो यकीन ही नहीं होता था कि ये वही लड़की थी, जो पिछली रात मेरे नीचे आह भर रही थी, और कह रही थी कि वो मुझे प्यार करती थी। मैं अक्सर काम के समय उसके आसपास नहीं जाता था, वैसे भी उसका डिपार्टमेंट चौथी मंजिल पर था और मेरा सातवीं पर। लेकिन आज वह मीटिंग के सिलसिले में मेरे ही फ्लोर पर आई थी। हमारी नजरें मिलीं और हम दूर से ही मुस्कुरा दिए। हमने तय किया था कि ऑफिस में हम महज कुलीग ही रहेंगे।

‘अनि, ये किसी और का नहीं हमारा मामला है। और मैं काम पर प्रोफेशनल रहना चाहती हूँ। वैसे भी मेरी मॉडलिंग की वजह से लोग मुझे डम्ब समझते हैं। मैं नहीं चाहती कि लोग कहें कि मेरा ध्यान काम पर नहीं, बल्कि तुमसे रोमांस पर है,’ उसने कहा था। मैंने कहा ठीक है, जिसमें उसे खुशी मिले।

तृष उस दिन जल्दी निकल रही थी। उसका बॉस छुट्टी पर था, और वो ऐसे में आराम का मौका छोड़ना नहीं चाहती थी। मैंने उससे पूछा कि क्या वो वीकेंड पर फिल्म देखने चलेगी।

‘कौन सी?’ उसने पूछा।

तृष फिल्म के मामले में बहुत चूजी थी। उसे हिंदी फिल्में पसंद नहीं थीं, और हॉलीवुड फिल्मों के मामले में भी वो पहले आईएमडीबी की रेटिंग देखकर तय करती थी।

‘कोई सी भी, जो तुम्हें पसंद हो, बेबी,’ मैंने उससे कहा।

‘तो तुमने अभी तक कुछ फिक्स नहीं किया है?’

‘ऐसे तो नहीं—लेकिन मैं तुम्हारे साथ घूमना चाहता हूँ।’

उसने आह भरी।

‘मेरी मॉडलिंग असाइनमेंट है,’ उसने कुछ ठहरकर कहा।

‘ओह! मुझे लगा कि लेह ट्रिप की थकान के बाद तुम इस वीकेंड काम नहीं करने वाली?’

‘हम्म, लेकिन ये बड़ा ब्रांड है। दो दिन का काम है और पैसे भी अच्छे दे रहे हैं। काम भी आसान है। मैं मना नहीं कर सकती।’

‘हम्म, ये तो है,’ मैंने कहा, हालांकि मैं निराश था। मैं उसके साथ समय बिताना चाहता था। लेकिन शायद मैं उसकी जगह होता, तो मैं भी यही करता। और वैसे भी ऐसा नहीं था कि ये कोई ‘लास्ट वीकेंड’ था।

तो अब जब तृष के साथ कोई प्लान नहीं था, तो मैंने निधि को मैसेज करके अपना नाम पॉटरी क्लास में लिखवा लिया, जो इसी वीकेंड से शुरू होने वाली थी। मुझे डेमो क्लास तो लेनी ही चाहिए।

‘क्या मुझे कुछ लेकर आना होगा?’ मैंने पूछा।

‘बस खुद को और सीखने की इच्छा,’ उसने जवाब दिया।

पॉटरी क्लास एचएसआर लेआउट की रिहायशी बिल्डिंग की छत पर थी; ऊपर जाने के लिए वहां एक पुराने फैशन की सीढ़ियां लगी थीं। मैंने एक बार में दो-दो सीढ़ियों को पार किया। पहले माले पर एक कुत्ता लेटा हुआ था, लेकिन वो मिलनसार लग रहा था। जब मैं दबे पांव उसके पास से गुजरा, तो उसने मुझे आंख खोलकर देखा भी नहीं। तीसरे माले पर पहुंचने पर, उनके आलीशान स्टूडियो को देखकर मैं हैरान था। वहां एक आउटडोर और एक इनडोर एरिया था। आउटडोर एरिया में मिट्टी के गमलों में बहुत से पौधे लगे थे। वहां बैठने के लिए लकड़ी की नीची कुर्सियां और और बिना पॉलिश की मेज थीं। जहां भी आप देखो, हर कोने और कोठर में, पॉटरी का खूबसूरत पीस रखे थे। स्टूडियो भी अपने आप में काफी बड़ा था और वहां टेराकोटा का फर्श था। वहां इलेक्ट्रिक पावर के मिनी पॉटर व्हील वाले व्यक्तिगत स्टेशन भी थे। दीवार पर बनी अलमारियों में बहुत से प्रोजेक्ट्स को करीने से सजाया गया था।

वहां पहले से ही पांच और लोग मौजूद थे, मुझे देखते ही निधि ने हाथ हिलाया और गले मिलकर मेरा स्वागत किया।

‘हाय! बहुत अच्छा लगा तुम यहां आए। आओ और बैठो,’ उसने कहा।

दूसरे लोगों के साथ मुझे थोड़ा अजीब लग रहा था। वहां सिर्फ और एक आदमी था, जो शायद अपने चालीसवें दशक में रहा होगा; बाकी सारी महिलाएं ही थीं। उनमें से दो शायद पचासवें दशक या साठवें दशक में होंगी, एक बीसेक साल की लड़की, और एक अन्य महिला लगभग पैंतीस से ऊपर की होगी। निधि ने हम सभी से अपना परिचय देने को कहा और हमने दिया। निधि ने हरेक से पूछा कि उस क्लास से उनकी क्या उम्मीदें हैं और वो ये वर्कशॉप क्यों लेना चाहते हैं। उसका लोगों के साथ बात करने का अपना एक तरीका था, और वो बड़े आराम से सबको सहज बना लेती थी। परिचय खत्म होते-होते हम एक-दूसरे के लिए अजनबी नहीं रह गए थे। मुझे पता चला कि वो पैंतीस के आसपास वाली महिला के बच्चों ने गर्मियों की छुट्टी में वर्कशॉप ली थी, और उसे उनका बनाया हुआ सामान बहुत अच्छा लगा। चालीस वाले आदमी की नौकरी छूट गई थी, और उसे हाल ही में दिल का दौरा पड़ा था, तो उसे आराम करने की सलाह दी गई थी। दोनों महिलाएं रिटायर थीं और कुछ ‘दिलचस्प व रचनात्मक’ करना चाहती थीं। बीस साल वाली लड़की कर्नाटक चित्रकला परिषद में आर्ट स्टूडेंट थी, और उसे उम्मीद थी कि ये सीखने से वह कुछ एक्स्ट्रा ग्रेड्स हासिल कर पाएगी; साथ ही उसे स्कल्पचर और पॉटरी में दिलचस्पी भी थी। फिर आई मेरी बारी। मैंने उन्हें असली वजह तो नहीं बताई—कि मेरी आकर्षक मॉडल गर्लफ्रेंड को लगता है कि मैं बोरिंग हूं और वो मुझे कोई हॉबी क्लास जॉइन कराना चाहती है। बल्कि मैंने उन्हें बताया कि मैं निधि से ट्रेन में मिला था, और उनसे बात करके लगा कि मुझे भी इसमें हाथ आजमाना चाहिए।

‘हम्म, ये भी अच्छा कारण हो सकता है,’ निधि ने कहा, और मुझे देखकर मुस्कुराते हुए उसकी आंखें चमक रही थीं।

‘तो अब जब आप एक-दूसरे को जान गए हैं, तो अब आपका परिचय क्ले से भी करवा दिया जाए,’ कहकर निधि ने क्ले का बड़ा सा ढेर उस टेबल के बीच में रख दिया, जहां हम सब बैठे थे। ‘क्ले के साथ काम करने से आपके हाथ नम होने चाहिए, और उसके लिए आपको समय-समय पर हाथों पर मॉइस्चराइजर लगाना होगा,’ कहकर उसने मॉइस्चराइजिंग क्रीम दी, और कहा कि क्रीम लगाने में कंजूसी मत करना। हमें एक-एक मैट भी दी गई, जो हमारा ‘वर्क एरिया’ था। क्ले के ढेर से हमें एक टुकड़ा काटने को कहा गया, उसके लिए हमें आपस में बंधे हुए दो वुडन ब्लॉक का इस्तेमाल करना था। उसके किनारे तेज थे और निधि ने हमें बताया कि उसका इस्तेमाल कैसे करना था।

फिर उसने हमें क्ले को गूंथकर उसे नरम बनाने को कहा।

वो लिजलिजी महसूस हो रही थी। मॉइस्चराइजिंग क्रीम ने मेरे हाथों को पहले ही चिकना कर दिया था और ऐसे मैं क्ले को पकड़ने से एक अजीब सी सनसनी हो रही थी। उस अहसास की आदत होने में मुझे कुछ पल लगे, और एक बार जब मैंने उसे संभाल लिया, तो मुझे उसमें मजा आने लगा। निधि सही कह रही थी कि क्ले में एक जादुई थैरेपी होती है। ये सच में सुकून देती है।

फिर उसने हमें बताया कि वो हमें कुछ शुरुआती तकनीक सिखाएगी—जो बहुत आसान होगी, उसने भरोसा दिलाया—और उसका इस्तेमाल करते हुए हमें कोई ऐसा प्रोजेक्ट बनाना है, जिसे हम घर ले जा सकें।

उसने सलाह दी कि हम सभी को एक एक-एक पशु बनाना चाहिए। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि कौन सा पशु, और यही दिक्कत दूसरे लोगों के सामने भी थी। तो निधि ने हमें सुझाया कि हम एक चक्कर स्टूडियो का लगाए और दूसरों की बनाई चीजें देखकर कोई आइडिया लें। मुझे एक छोटी सी व्हेल पसंद आई, जो वहीं एक अलमारी पर रखी थी। ये सभी दूसरे स्टूडेंट्स की बनाई हुई कृतियां थीं, जो फायर्ड होकर घर जाने का इंतजार कर रही थी, या सूखने के लिए रखी हुई थीं। मैंने वापस टेबल पर आकर निधि को बताया कि मैं व्हेल बनाऊंगा। दूसरे लोगों ने कछुआ, गेंडा और हाथी को चुना। लड़की ने पूछा कि क्या वो प्लांट होल्डर बना सकती थी, लेकिन निधि ने समझाया कि चूंकि यह पहली क्लास है, तो उसे बेसिक टेक्नीक सीखने पर ही ध्यान देना चाहिए, इसलिए किसी छोटे प्रोजेक्ट से शुरू करना ही सही होगा।

निधि कमाल की टीचर है। उसने बहुत ही तरतीब से तकनीक समझाई और करके भी दिखाया—क्ले को पिंच करना, फ्लैट करना, जोड़ना, कॉइल तकनीक, स्लैब तकनीक, क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। उसने हमारी मदद की, प्यार से हमारी गलतियां सुधारीं, और दो घंटे खत्म होने पर हममें से किसी को भी अपनी बनाई कृति को देख भरोसा ही नहीं हुआ कि वो हमने बनाई थी। हरेक की कृति शानदार थी! उसने हमें बताया कि हमें उसके सूखने के लिए एक दिन इंतजार करना होगा। इसके सूखने के बाद वो उसे फायर करने के लिए किल्न (आंच) में रख देगी, और फिर हम उसे घर लेकर जा सकते थे।

‘हम इस डायरेक्ट फायर क्यों नहीं कर सकते?’ आदमी ने पूछा।

‘क्योंकि क्ले सूखने पर जरा सिकुड़ती है। पानी वाष्प बनकर उड़ जाता है। फायरिंग में भी थोड़ी सिकुड़न होती है। अगर ये ठीक से न सूखे और आप इसे फायर कर दें, तो क्रेक पड़ने का डर रहता है।’

‘तो हमें फायर करने का सही समय कैसे पता चलेगा?’ दो रिटायर्ड महिलाओं में से एक ने पूछा।

‘ये आप अनुभव से सीख जाओगे,’ निधि ने कहा।

फिर उसने हमें बताया कि ये डेमो क्लास थी। उसने हमें समझाया कि बाकी के कोर्स में क्या सिखाया जाएगा, कौन से प्रोजेक्ट हमें करने होंगे, और हम इससे क्या उम्मीदें रख सकते हैं। उसने कहा कि हममें से जो भी पूरा कोर्स करना चाहे, वो फीस भरके रजिस्टर करवा सकता है। बिना किसी अपवाद के, हम सभी सीखना चाहते थे, तो हम सबने ही रजिस्टर करा लिया।

अब मेरे मन में निधि के लिए एक नया सम्मान है। वह सच में कमाल की है—बेमिसाल टीचर और अपने काम से प्यार करने वाली। उसे वास्तव में क्ले और अपनी बनाई हुई चीजों से प्यार है। और अब उसने अपना जादू हम पर भी चला दिया था। निधि ने हमें बताया कि हमारा प्रोजेक्ट दो दिन में तैयार हो जाएगा, और अगर हम चाहें तो उन्हें बीच में आकर ले जा सकते हैं। नहीं तो हमें अगली क्लास तक इंतजार करना होगा।

दूसरों के जाने के बाद, वह मेरी तरफ देखकर मुस्कुराई। ‘तुमने बहुत अच्छा काम किया, अनि! तुम सीखने में तेज हो। तुम्हारी बनाई व्हेल मुझे बहुत अच्छी लगी।’

‘थैंक्स। मुझे हमेशा समुद्री जीवों के प्रति एक लगाव रहा है।’

‘ये तो बहुत अच्छी बात है। पता है, तुम एक पूरी सी-थीम पर प्रोजेक्ट कर सकते हो।’

‘हम्म, अभी तो बस आइडिया है! मुझे इस पर अभी और सोचना होगा। एक कॉफी पीने

चलें?’

‘काश मैं चल पाती, अनि, लेकिन पंद्रह मिनट में अगला बैच शुरू होने वाला है। वीकेंड मेरे लिए बिजी डे होते हैं।’

‘ओह, हां! मैं भूल गया था। फिर कभी?’

‘पक्का,’ कहकर वह दूसरी क्लास की तैयारी में लग गई।

मैंने घर आकर अपनी बाकी की शाम ब्रेकिंग बैड देखकर बिताई, हालांकि मैं पहले भी उसकी पूरी सीरिज देख चुका था।

पूरा संडे भी मुझे अकेले ही बिताना पड़ा। रात ग्यारह बजे तक तृष की कोई खबर नहीं मिली, और फिर भी उसने बस मेरे मैसेज का नपा-तुला जवाब ही दिया था। जब मैंने पूछा कि क्या कल हम ऑफिस जाने से पहले मिल सकते हैं, तो उसने बताया कि उसे शहर के दूसरे छोर पर क्लाइंट से मिलने जाना है, और वो तीन बजे से पहले ऑफिस भी नहीं पहुंच पाएगी।

‘ठीक है, तो यही सही। हमारे पास एक-दूसरे के साथ बिताने के लिए कोई समय नहीं है,’ मैं टाइप करना चाहता था। लेकिन मैंने नहीं किया। मैं मांग करने वाला, शिकायती बॉयफ्रेंड नहीं कहलाना चाहता था।

मां का भी फोन आया था और वो तसल्ली से मेरे काम, खाने आदि के बारे में पूछ रही थीं। उन्होंने बताया कि अनीशा दस दिन के कॉलेज ट्रिप पर गई थी, तो उन्होंने और डैड ने भी मुकम्बिका, उडुपी तीर्थ पर जाने की योजना बना ली है। वो उसके आसपास के कुछ मंदिरों में भी जाने वाले थे।

‘अच्छा है। आप और डैड तो वैसे भी कहीं नहीं जाते। आपको घूमना चाहिए,’ मैंने उन्हें प्रोत्साहित किया।

‘तुम अपने डैड को तो जानते हो न। उन्हें सिर्फ तीर्थ पर जाने में ही दिलचस्पी होती है,’ उन्होंने कहा।

‘मां, वैष्णों देवी जाने की योजना बनाओ। मेरे कई दोस्त वहां गए हुए हैं। वो बहुत सुंदर जगह है। और अगर आप प्लान बनाओ, तो मैं और अनीशा भी आपके साथ चल पड़ेंगे,’ मैंने कहा।

इस ख्याल से ही वो खुश हो गई। ‘ये तो बहुत अच्छा आइडिया है, अनि। हम चारों को साथ में बाहर गए हुए काफी समय हो गया है। मैं तुम्हारे डैड से बात करूंगी,’ उन्होंने कहा।

मंगलवार दोपहर को, निधि ने फोन करके बताया कि व्हेल तैयार थी और मैं जब भी चाहूं उसे स्टूडियो से ले जा सकता हूं।

‘मैंने उन लोगों से कह दिया और वो उसे पैक करके रख देंगे, तुम आकर ले जाना,’ उसने कहा।

‘तुम वहां नहीं होंगी?’ मैंने उससे पूछा।

‘नहीं, मंगलवार को मेरी मिट्टी से छुट्टी होती है,’ उसने कहा।

मैं व्हेल को देखने के लिए बेताब था, तो लंच टाइम में मैं जल्दी से एचएसआर की तरफ चला गया। बिना ट्रैफिक के वहां पहुंचने में महज छह मिनट लगे। वहां के अटेंडेंट ने मुझे मेरा पैकेट दिया, और मैं बहुत खुश हो गया। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि वो मैंने बनाया था। उन्होंने उसे पैक भी सुंदर तरीके से किया था, हैंडमेड पेपर के कवर में।

ये तृष के लिए अच्छा सरप्राइज होगा। मैंने उसे सुब्बु को दिखाया, और वो भी उससे इम्प्रेस था। 'वाह—ये हुई न बात! और यार—साइकिल, पॉटरी—तुम तो एक नए इंसान बन गए हो। सिस्टम अपग्रेड। मुझे ये पसंद आया!' उसने कहा।

अगले दिन मैंने तृष को मैसेज करके उसे मेरे साथ लंच करने को कहा। हमारे ऑफिस के पास ही एक बढ़िया साउथ इंडियन रेस्टोरेंट था, उसने कहा कि वो मुझे वहां मिलेगी। सुब्बु ने मुझे चिढ़ाया कि वो भी साथ आना चाहता है। मैंने उससे कहा कि अगर उसने ऐसा किया तो उसकी शादी की पहली रात पर मैं उसके बिस्तर के नीचे छिप जाऊंगा, और जैसे ही वो एक्शन के लिए तैयार होगा, मैं जोर से चिल्लाकर उन्हें डरा दूंगा। वह खिलखिलाकर हंसने लगा।

जब तक मैं रेस्टोरेंट पहुंचा तृष पहले ही वहां पहुंच चुकी थी।

'अनि, तुम्हें इतनी देर क्यों लगी?' उसने पूछा।

'मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूं,' मैंने कहा और बड़े गर्व से पैकेट निकालकर उसके हाथ में पकड़ाया।

'ऊह, सरप्राइज! वाह,' कहकर वो पैकेट खोलने लगी। मैंने उसे उसकी वास्तविक पैकिंग के भी ऊपर अखबार के कई परतों से पैक कर दिया था। वह एक-एक कर अखबार हटाने लगी। उसके रोमांच को देखना अच्छा लग रहा था।

फिर उसने आखरी परत हटाई।

'ऊह—यह क्या है? मिट्टी की व्हेल?' वह हैरानी से उसे देख रही थी।

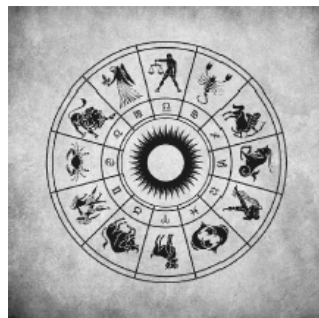
'हां,' मैं मुस्कुराया, और इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, वह जोर से हंसने लगी। 'पता है, अनि, ये क्यूट लिटिल व्हेल-तुम्हारे जैसी लग रही है! मैं इसे अनि-व्हेल कहूंगी,' वह कहकर मेरी तोंद थपथपाने लगी।

मैं खामोश था। उसने तो मुझे ये बताने का भी मौका नहीं दिया था कि ये मैंने खास उसके लिए बनाई थी। क्या वह सरप्राइज, या कोशिश, या सोच, या मेरी भावनाओं की कद्र नहीं कर सकती थी? उसकी हंसी मुझ पर पत्थरों की तरह बरस रही थी। बस उसके मुंह से इतना ही निकल पाया था कि मैं व्हेल की तरह दिखता हूं? अनि-व्हेल? मानता हूं कि मेरा वजन कुछ बढ़ गया था, लेकिन मैं कहीं से व्हेल की कैटेगरी का नहीं था। और, ओके, मैं इस बात को आगे नहीं बढ़ाने वाला था; लेकिन इससे तकलीफ हो रही थी कि उसने ये भी पूछना जरूरी नहीं समझा कि मैं ये उसके लिए क्यों लाया या इसे चुनने का कोई तो कारण होगा।

अब वह अपने ही मजाक पर जोर-जोर से हंसे जा रही थी। उसकी हंसी मेरा मजाक बना रही थी। उसकी हंसी बता रही थी कि मैं कितना बड़ा इडियट था।

मैं बस वहां चेहरे पर नकली मुस्कान चिपकाए हुए बैठा था। बिना हिले। अपनी जगह जमे हुए। मैंने अपना मुंह कुछ कहने के लिए खोला। उसे बताने के लिए कि ये मैंने उसके लिए बनाई थी। खुद अपने हाथों से। और क्या इसके उसके लिए कोई मायने नहीं थे?

मैं बहुत कुछ कहना चाहता था। लेकिन मेरे मुंह से कोई शब्द नहीं निकला।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आप, जोशीले धनु, हमेशा अपने लिए राह खोज ही लेते हो। आज, अपनी जबान पर लगाम रखना। अगर आपने अपने दिल की बात कह दी तो कुछ गलतफहमी हो सकती है। बात छिपाए रखना आपका स्वभाव नहीं है, लेकिन एहतियात रखने की सलाह दी जा रही है। कभी-कभी आपको आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे लेना पड़ता है।

12

निधि

ए पॉट ऑफ क्ले दैट होल्ड्स गोल्ड

तो, हमने नई पॉटरी क्लास शुरू कर दी। नया बैच शुरू करना हमेशा ही मजेदार होता है। ये बड़े लोगों के लिए है। इसमें हर उम्र, भिन्न पृष्ठभूमि के लोग थे। ये अनोखा ग्रुप है। उनमें से शायद किसी ने भी इससे पहले कभी क्ले को छुआ नहीं था।

हमने बेसिक से शुरू किया। क्लास में सभी ने पहले क्ले को पकड़ा, फिर उससे खेला, उसे गूंथा, महसूस किया। क्ले पकड़ने के बाद उनके चेहरों पर खिल आई मासूम मुस्कान को आपको देखना चाहिए था। पॉटरी की यही बात तो खास है। फिर मैंने उन्हें बेसिक तकनीक, जैसे क्ले को सम करना, जोड़ा, घटाना आदि सिखाया। एक बार जब उन्हें ये आ गया तो हम उससे कृति बनाने की ओर बढ़े, और आखिर में उसमें कुछ बारीकी भी जोड़ी।

चूंकि यह एक डेमो क्लास थी, तो हमने आसान चीज बनाने से शुरू किया। हरेक स्टूडेंट ने क्ले से पहले कोई पशु बनाने का फैसला किया, उसे बनाने में मैंने भी उनकी मदद की। जब वो अपने काम से संतुष्ट हो गए तो, हमने उनका पीस सूखने के बाद किल्न में रख दिया, और उनके पास घर ले जाने के लिए उनकी बनाई कृति तैयार थी। कितना मजेदार है न?

और, मेरे लिए, तो वहां किसी दोस्त का आना और भी मजेदार हो जाता है। आपको याद है न मैंने बताया था कि मैं किसी की वजन कम करने में मदद कर रही हूं? वेल, वो भी वहां क्लास लेने आया था।

और क्लास खत्म होने पर वहां कई खुश चेहरे, दो कछुए, एक व्हेल, एक गेंडा और एक हाथी था। मेरे लिए—मेरे स्टूडेंट के चेहरों की खुशी और उनके बनाए हुई कृति का गर्व—अनमोल है।

मैंने पोस्ट खत्म की और टाइम देखकर हैरान रह गई। टाइम कहां उड़ गया था? मैं कसम खा सकती हूं कि मुझे लैपटॉप पर बैठे अभी सिर्फ दस मिनट ही हुए थे। लेकिन मेरे पास रखी घड़ी बता रही थी कि दो घंटे गुजर गए थे। और मेरे पास इसकी कोई सफाई नहीं थी। कोई भी नहीं। ब्लॉग पोस्ट के अलावा मैंने कुछ नहीं लिखा था। मुझे अभी दो आर्टिकल लिखकर सब्मिट करने थे। दो दिन बाद की मेरी डैडलाइन थी। तब तक मैं बस इंटरनेट ब्राउज करके चक्र बैलेंसिंग और जीवनसाथी बनाम आत्मीय मित्र विषय पर मैटर पढ़ने लगी। ये टॉपिक मुझे अच्छा लगा।

जो आर्टिकल मैं पढ़ रही थी, उसमें लिखा था हम अपनी जिंदगी में ऐसे लोगों से मिलते हैं, जिनका हमारा आत्मीय मित्र बनना तय होता है। हम ऐसे भी लोगों से मिलते हैं जिन्हें हम जीवनसाथी के रूप में चुनते हैं। हमारी शादी भले ही उन चुने हुए जीवनसाथी से हो जाए, बच्चे भी हो जाएं और उनके साथ हमारा परिवार भी बन जाए। लेकिन कहीं गहरे हमें महसूस होता है कि उनके साथ हमारा आध्यात्मिक संपर्क नहीं बन पाया। आत्मीय मित्र के साथ आपके शरीर का रोम-रोम खिल उठता है। आप एकदम जान जाते हो कि वह इंसान आपका आत्मीय मित्र है, मानो आप कब के बिछुड़े हुए थे। आप दोनों में बहुत कुछ समान होता है।

इसके बारे में मैंने कभी पहले नहीं सोचा था। मैं सोच रही थी कि मैं मनोज को जीवनसाथी मान सकती हूं या आत्मीय मित्र। वह यकीनन आत्मीय मित्र नहीं था। शुरुआती दिनों में, जब मैं मनोज से मिली थी, वह बहुत दिलचस्प था। हम साथ में खुश रहते थे। लेकिन अब, आधा समय तो वह मेरी बात समझ ही नहीं पाता था। इसके बावजूद, मैं अभी तक निश्चित थी कि वह मेरा जीवनसाथी था; लेकिन उसके अमेरिका जाने की घोषणा ने सचाई से मेरा सामना करा ही दिया।

मैं इसी बारे में सोच रही थी। मैं अमेरिका नहीं जाना चाहती थी। बेहतर यही था कि मैं मनोज को बता दूं कि मैं अमेरिका नहीं जा रही हूं और कि मुझे अभी शादी नहीं करनी है। मैंने उसे मैसेज किया, और उसका मैसेज आया कि वह शाम को मुझसे मिलना चाहता है। उसने मुझे अपने अपार्टमेंट पर आने को कहा, जिससे हम बात कर सकें।

पिछली बार जब हम उसके अपार्टमेंट पर मिले थे, हमारी मुलाकात एक बड़ी सी लड़ाई पर खत्म हुई थी। वो भी किसी बचकानी सी बात पर। हम इस बात पर लड़ रहे थे कि हम शाम को कहां जाने वाले थे। वो फिर से किसी थाई रेस्टोरेंट में जाना चाहता था, और मुझे ज्यूरी जाना था, जहां बॉलीवुड नाइट आयोजित थी।

‘दुनिया में कौन वो गाने सुनता है, निधि? क्या तुम जानबूझकर मुझे चिढ़ा रही हो?’ उसने गुस्से से पूछा।

‘मैं ऐसा क्यों करूंगी, मनोज? और हमेशा बाहर जाने का फैसला तुम ही क्यों करोगे?’ मैं भी अड़ गई थी।

वहां से चीजें तेजी से बिगड़ गईं। लड़ाई की यही तो बात होती है। ये शुरू एक चीज से होती है और, इससे पहले कि आप कुछ कर पाओ, इसमें बहुत से ऐसे मसले भी आ जुड़ते हैं, जो इससे जुड़े नहीं होते थे। उसने ऐसी ही कई बातें बोल दीं, जैसे मेरा लाइफ में कोई फोकस ही नहीं था, मैं एम्बिशियस नहीं थी और मैंने अपना कितना अच्छा कैरियर छोड़ दिया था।

‘तुम्हारा मतलब एम्बिशियस वो ही है जो अपने कैरियर से चिपका रहे? अपनी खुशी का क्या?’

‘उसका क्या?’ उसने पूछा।

‘देखो, मनोज, मैं अपने दिल की बात सुनती हूं। मैंने कॉर्पोरेट ऑर्गेनाइजेशन के लिए काम किया है। मैं भी उस घुड़दौड़ में शामिल हुई हूं। उससे मुझे खुशी नहीं मिली। अब, मैं वो चीजें करती हूं, जिससे मुझे खुशी मिले।’

‘घर बैठकर लिखने से, और फिर कुछ बेवकूफ लोगों को पॉटरी सिखाने से, जिनके पास करने के लिए कोई काम नहीं है?’ उसने कहा।

उस पॉइंट पर मैं जाने के लिए खड़ी हो गई।

उसने मेरी बांह पकड़कर रोकने की कोशिश की। उसने उसे जोर से मोड़ दिया। मैंने उसे अपना हाथ छोड़ने को कहा।

उसने पकड़ और बढ़ाते हुए, उसे और मोड़ा और फिर दर्द से मैं कराह दी।

तब उसने मेरा हाथ छोड़ा।

उस घटना से उबरने में मुझे एक सप्ताह लगा था। मेरी बांह पर नील पड़ गया था।

हर रोज उसने माफी मांगी और मेरे लिए फूल भेजे। उसने कहा कि वो अपने किए पर बहुत शर्मिंदा था और कि उसे पता ही नहीं चला उसे क्या हो गया था। एक सप्ताह बाद मैं नरम पड़ गई।

उस घटना को अब तीन महीने हो गए थे, और उसके बाद हम कभी उसके अपार्टमेंट में नहीं मिले थे। और अब उसके वहां बुलाने से मैं एक बार फिर से असहज हो गई थी। मुझे ‘बैठकर बात करेंगे’ वाली टोन पसंद नहीं आई थी। हालांकि उसकी गुजारिश में एक पॉइंट था। वह अपनी तरफ से चीजों को संभालने की कोशिश कर रहा था, और वाकई मैं इसका समाधान सिर्फ बातों से ही निकल सकता था। तो मैं कैसे ऐसे एकतरफा सोचते हुए उससे कह सकती थी कि मुझे वहां नहीं मिलना था?

मैंने उसे फोन लगाया तो वह मीटिंग में था। उसका फोन थोड़ी देर बाद आया।

‘हां, बेबी, तुमने फोन किया था? सॉरी, मैं मीटिंग में था,’ उसने कहा।

‘मनोज, हम रेस्टोरेंट में या मेरे घर पर क्यों नहीं मिल लेते?’

‘वैल, मैं तुम्हारे लिए कुछ अपने हाथों से पकाना चाहता हूँ। मैंने सारा सामान खरीद लिया है। और मेरे पास बढ़िया वाइन भी है। और वैसे भी बात करने के लिए शोर भरे रेस्टोरेंट से ज्यादा बेहतर घर होता है। और वैसे भी रेस्टोरेंट के मामले में हम थाई और नॉन थाई को लेकर झगड़ते रहते हैं, है न?’

वो हमेशा ऐसे ही करता था कि आपके पास सहमत होने के अलावा और कोई रास्ता नहीं होता। फिर उसने पूछा कि क्या वो मुझे लेने आए, तो मैंने कहा कि मैं खुद आ जाऊंगी।

मेरा एक मन कुछ भी करके वहां नहीं जाना चाहता था। इसका कारण शायद पिछली बार की यादें रही होंगी। दूसरा मन ऐसी बचकानी बातें सोचने से रोक रहा था। बस आराम से जाओ और अच्छा समय बिताओ।

मैंने उसके घर जाने के लिए कैब ली, क्योंकि मुझे पता था कि वापसी में पीने के बाद मैं अपनी गाड़ी नहीं चला पाऊंगी। मनोज हारालुर रोड पर एक आलीशान रिहायशी कॉलोनी में रहता था, जहां कतार में सिर्फ घर ही घर थे। उसके घर जाने में बीस मिनट लगने वाले थे। बंगलौर के ट्रैफिक से गुजरती कैब में बैठते ही मैं अपने कानों में हेडफोन लगाकर म्यूजिक सुनने लगी। उसकी बिल्डिंग एंट्रेंस पर उतरकर मुझे अपना नाम लिखना पड़ा, फिर उन्होंने मुझे अंदर जाने दिया। उसके घर तक पहुंचकर मैंने बैल बजाई।

उसने दरवाजा खोलते ही गुलाब के बुके के साथ मेरा स्वागत किया। वो मेरे पसंदीदा थे।

‘हा! थैंक्स। लेकिन मैं तुम्हारे घर आई हूँ। मुझे तुम्हारे लिए कुछ लेकर आना चाहिए था,’ मैंने हैरान होते हुए कहा।

‘इससे क्या फर्क पड़ता है? तुम्हारा घर, मेरा घर। लेकिन खूबसूरती का स्वागत होना फूलों से ही चाहिए,’ कहते हुए उसने घुटने के बल बैठकर मेरे हाथ को चूमा। मेरे चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान खिल गई।

वैसे तो उसका अपार्टमेंट हमेशा ही साफ रहता था, लेकिन आज उसने खासतौर पर कैंडल्स जलाई थीं। लाइट मध्दम थी। सेंटर टेबल पर आइस बकेट में वाइन की बोतल रखी थी।

पूरा अपार्टमेंट शानदार खुशबू से महक रहा था।

‘ये क्या महक है?’ मैंने सूंघते हुए कहा।

उसने कोने में लगे इनफ्यूजर की तरफ इशारा किया। वो सेरामिक का एक खूबसूरत पीस था, जिसमें गुंथे हुए पैटर्न के बीच एक छोटी सी कैंडल जल रही थी, जिससे निकलती परछाई दीवार पर एक आकर्षक पैटर्न बना रही थी।

‘सेक्रेड सैंडलवुड फ्रेगरेंस ऑयल। मैंने पाया कि इसकी खुशबू मुझे रिलैक्स कर देती है,’ उसने कहा।

‘उम्म, बढ़िया है,’ मैंने कहा।

उसने पहले से ही म्यूजिक चला रखा था, जो सॉफ्ट पियानो इंस्ट्रूमेंट था। मैंने देखा कि मनोज ने काफी मेहनत की थी। और न चाहते हुए भी मुझे मानना पड़ेगा कि उसकी इन सारी कोशिशों से मैं सच में इम्प्रेस थी। ये सच में हमारे रेस्टोरेंट की मुलाकातों से अलग था, जहां वो अक्सर देर से आता था, और अपने काम की वजह से कुछ बंटा-बंटा सा महसूस होता था।

मैं अपने सैंडल उतारकर सोफे पर बैठ गई और अपने पैर सेंटर टेबल पर रख लिए। उसका

सोफा इतना नरम था कि आप उसमें बैठों और उसके गद्दों में ही कहीं गुम हो जाओ।

‘तुम खूबसूरत लग रही हो, निधि,’ उसने कहते हुए मेरे हाथ में वाइन दी।

‘थैंक्यू,’ मैं मुस्कुरा दी। मैंने एक फिट स्लीवलैस, ऑफ-वाइट शिफॉन ड्रेस पहन रखी थी, और बालों को फिश-टेल चोटी में बनाया था, जो मेरे आमतौर पर तैयार होने से कुछ अलग था। ज्यादा समय मैं बाल खुले छोड़ना पसंद करती थी, या फिर पॉटरी स्टूडियो में हमेशा पोनीटेल बनाकर छोड़ती थी। आज मैंने मैकअप भी लगाया था, जैसे मस्कारा, आई-लाइनर, लिपस्टिक। मैं खुश थी कि उसने ध्यान दिया था।

‘ये 1995 विंटेज क्लोस दु मार्किस वाइन है,’ मेरे घूंट भरते ही उसने बताया।

‘आह, ये बहुत बढ़िया है, मनोज,’ मैंने कहा।

‘मैंने कहा था न यहां मिलना बढ़िया रहेगा। कभी-कभी तो मुझ पर भरोसा किया करो,’ उसने कहा।

‘मैंने कब तुम पर भरोसा नहीं किया?’

‘यही, यूएस जाने वाली बात पर। तुम एक बार ट्राई क्यों नहीं करतीं? उस पर इतनी जिद क्यों करना?’

वो सीधा मुद्दे पर आ गया था। मैंने सोचा था कि पहले हम दूसरी चीजों पर बात करेंगे।

‘तुम जानते हो क्यों। मेरे लिए मेरी पॉटरी बहुत मायने रखती है।’

‘मैं जानता हूं। मैं तुमसे वो छोड़ने के लिए नहीं कह रहा।’

‘तुम छोड़ने को नहीं कह रहे, इससे क्या मतलब है? मैं यूएस से अपनी क्लास कैसे चालू रखूंगी? स्काइप से? और, मैं वहां पूरा दिन क्या करूंगी?’ मैं सच में नहीं समझ पा रही थी कि नहीं छोड़ने देने से उसका क्या मतलब था।

‘इसलिए तो मैं जाने से पहले शादी करने को कह रहा हूं। अगर हमारी शादी हो जाती है, तो मेरी बीवी होने के तौर पर तुम्हें कुछ खास सुविधाएं मिलेंगी।’

‘कम ऑन, मनोज। तुम एच1 वीजा पर तो नहीं जाने वाले हो न?’

‘नहीं, एल1।’

‘तो मेरे लिए वहां काम करना इम्पॉसिबल होगा। तुम इस बारे में क्या बात करोगे?’

‘देखो, निधि, हम इस पर काम कर सकते हैं। मुझे जल्दी ही एच1 वीजा भी मिल जाएगा। फिर ग्रीन कार्ड।’

‘मनोज—इसमें सालों लग जाते हैं।’

‘जब तक हम कोशिश नहीं करेंगे, हमें कैसे पता चलेगा? तुम इतनी निराशा वाली बातें क्यों कर रही हो?’

‘क्योंकि तुम्हारे पास कोई एक्शन प्लान भी नहीं है। तुम बस हवा में ही बातें कर रहे हो।’

‘ये हवा में बातें करना कैसे हुआ? मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं, डैम इट।’

उसकी आवाज अब तक काफी ऊंची हो गई थी। इससे मैं सतर्क हो गई। ये ठीक नहीं हो रहा था। मुझे उसके माथे की नस फड़कती हुई दिखाई दे रही थी। मैं थोड़ा संभलकर बैठ गई। मैंने मेज से अपने पैर भी नीचे कर लिए।

मैं चुप थी। शायद उसने मेरी असहजता को भांप लिया था।

‘देखो, निधि—क्या तुम्हारे पास कोई बेहतर समाधान है?’

‘मनोज, मैं अपना पॉटरी स्टूडियो नहीं छोड़ सकती। वह मेरे लिए बहुत मायने रखता है।’

‘लेकिन तुम ये तो मानोगी कि उससे तुम्हारी कोई कमाई नहीं होती है, है न? मेरे असाइनमेंट में बड़ा मुनाफा है। हम वहां एक अच्छा लाइफस्टाइल मेंटेन कर सकते हैं।’

‘मनोज, मेरे लिए पैसा कभी बड़ा मसला नहीं रहा है। अगर ऐसा होता, तो क्या मैं अपनी कॉरपोरेट जॉब छोड़ती? हम कितनी बार यही बात करेंगे?’

तभी मेरे फोन से मैसेज की आवाज आई; अनिकेत का मैसेज था।

‘हे, तुम क्या कर रही हो? क्या मैं कुछ बीयर ले सकता हूं?’

‘एक्चुली, नहीं। इससे सारे किए कराए पर पानी फिर जाएगा। लेकिन अगर फिर भी तुम्हें लेनी पड़े, तो हमें आगे और मेहनत करनी होगी!’ मैंने जवाब दिया।

‘वो कौन है?’ मनोज ने पूछा।

‘एक दोस्त,’ मैंने जवाब दिया।

‘मैं उसे जानता हूं?’ उसने जोर दिया।

‘नहीं—इससे मैं अभी हाल ही में मिली हूं। वो मेरी पॉटरी क्लास में आया था। और अब मैं उसकी फिटनेस कोच भी हूं।’

‘नया काम, निधि?’ उसने पूछा। वह अब अपने लिए वाइन का दूसरा गिलास बना रहा था और उसने मुझे अपनी ठोड़ी उठाकर घूरा। मुझे उसकी आवाज में कुछ जलन महसूस हुई।

‘हां, नया काम,’ मैंने नजरें मिलाते हुए कहा।

माहौल बदल गया था। अब हमारे बीच तनाव था।

‘क्या मैं पूछ सकता हूं कि तुम किसी की फिटनेस कोच कैसे बन सकती हो?’

‘बात ये है कि मैंने अपना सोलह किलो वजन कम किया है। तुम जानते हो कि मैं हमेशा से ऐसी नहीं थी।’

‘ओह हां, तुमने अपनी वजन घटाने की कहानी सुनाई थी। लेकिन कोच? वो लड़का करता क्या है? और पूरी दुनिया में उसे तुम ही मिलीं कोच बनाने को? क्या उसे अपनी मदद के लिए किसी प्रोफेशनल को नहीं देखना चाहिए था?’ उसने सिर हिलाते हुए कहा।

‘मनोज, तुम हमेशा मेरी हर बात को नकार क्यों देते हो?’

‘मैं कैसे नकार रहा हूं? मैंने तुमसे एक लॉजिकल सवाल पूछा है।’

‘हर बात का लॉजिक नहीं होता, मनोज। वो मेरा दोस्त है। मैं उसकी मदद कर रही हूं, बस इतना ही। इसका बतगंड़ मत बनाओ।’

‘मैं—बतगंड़ मैं बना रहा हूं? कम ऑन, निधि। तुम उसका इतना बचाव क्यों कर रही हो?’

‘मैं नहीं कर रही।’

‘तुम कर रही हो।’

‘तुम उसे बीच में लेकर आए हो।’

‘मुझे किसी ने मैसेज नहीं किया।’

‘तो मुझे मैसेज किया तो क्या हुआ? इससे तुम्हें क्या मतलब?’

‘ओह—तो ये बात है, है न? मेरा तुमसे ये पूछना गलत है कि किसका मैसेज है। क्या तुम कह रही हो कि ये परेशानी है?’

अब मैं नाराज हो चुकी थी।

‘देखो, वापस मुद्दे पर आते हैं। मैं यूएस नहीं जा रही हूं। बस।’

‘तुम बहुत जिद्दी हो, निधि। तुम्हें बस अपने काम से मतलब है।’

‘यही बात मैं तुम्हारे लिए भी कह सकती हूं, मनोज। कि तुम मेरी खुशी को समझते ही नहीं हो। तुम्हारे लिए मेरे प्यार को समझना कितना मुश्किल है। क्या तुम कभी भी स्टूडियो आए हो ये देखने के लिए कि मैं वहां क्या करती हूं?’

‘मैं गे नहीं हूं?’

‘क्या?’

‘अक्सर गे आदमियों की ही पॉटरी, आर्ट या ऐसे कामों में दिलचस्पी होती है।’

‘बकवास। देखो, मैं जा रही हूं। मैं तुमसे तब बात करूंगी, जब तुम्हारा दिमाग ठिकाने पर होगा।’

मैं खड़ी हो गई।

अचानक ही वो उछला और उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।

‘मत जाओ, निधि। प्लीज। मैंने पीत्सा बनाया है।’

मैं जरा ठिठकी। मेरी बांह पर दबाव अब बढ़ रहा था। उसकी उंगलियां मेरे मांस में गढ़ रही थीं।

‘मनोज। प्लीज अपना हाथ हटाओ,’ मैंने कहा, और उसने पकड़ और मजबूत कर ली।

‘प्लीज रुक जाओ, चलो बात करते हैं,’ उसने कहा।

‘दुख रहा है। अपना हाथ हटाओ।’ मुझे पता ही नहीं चला कि कब मेरी आवाज तेज हो गई थी, या उसमें घबराहट आ गई थी।

उसने हाथ छोड़ दिया। मैंने चैन की सांस ली।

मैं लड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन अब तक मुझे तेज गुस्सा आ गया था। वो एक बार फिर से मेरा हाथ मरोड़ चुका था। मुझे ये बिल्कुल पसंद नहीं था।

‘आई एम सॉरी, ओके? मैं ऐसे तुम्हारा हाथ मरोड़ना नहीं चाहता था। ये बस हो गया... कि... तुमने मुझे गुस्सा दिला दिया।’ वह परेशान और असहाय दिख रहा था।

लेकिन मुझमें उसे संभालने की हिम्मत नहीं थी। हमने बाकी का खाना खामोशी से खत्म किया।

परेशानी में मैं पीत्सा का मजा नहीं ले सकती थी।

उसने बात करने की कोशिश की, लेकिन मेरे जवाब सिर्फ नप-तुले ही थे।

‘क्या तुम देख सकते हो? तुम्हें ये निशान दिखाई दे रहा है?’ मैंने उसे अपनी बांह दिखाई।

‘निधि, बेबी—आई एम सो सॉरी। मैं बता रहा हूं कि कभी-कभी तुमसे बात करना बहुत मुश्किल हो जाता है। तुम सुनती ही नहीं हो। कोई तर्क, कोई पॉइंट तुम समझना ही नहीं चाहतीं। तुम बस वही करती हो, जो करना चाहती हो। तुम जानती हो न कि शादी में कुछ एडजस्टमेंट करने पड़ते हैं।’

‘तो फिर तुम वो एडजस्टमेंट क्यों नहीं करते?’ मैंने कहा, और इससे पहले कि वो कोई जवाब दे पाता, मैं वहां से उठी और अपना बैग उठाकर दरवाजे की तरफ बढ़ गई। वह अपना सिर हिलाता हुआ मुझे जाते देख रहा था।

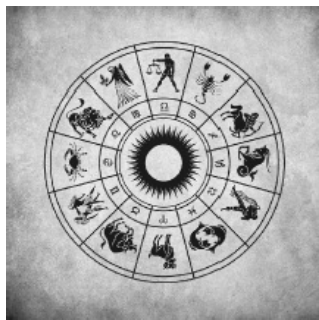
वो मुझे छोड़ने तक नहीं आया। अब मैं तेज-तेज चल रही थी, मेरे सिर में उसकी कही बातें

ही घूम रही थीं। उसका एकमात्र मकसद बस जैसे-तैसे शादी करना, और मुझे अपने साथ यूएस ले जाना ही था। उसे किसी और बात के लिए समझा पाना नामुमकिन था, वो आपकी बात समझने की हालत में ही नहीं था।

मैं अब मेन रोड पर पहुंच गई थी। मैंने अपने फोन में एप खोलकर कैब के लिए चैक किया। कोई भी कैब आसपास में नहीं थी। मैंने दूसरा टैक्सी एप चैक किया। फिर से नाउम्मीदी। इन एप्स को हो क्या गया था? मैंने अपना फोन रिस्टार्ट करके फिर से चैक किया।

मैं जानती थी कि शायद शारजापुर मेन रोड पर मुझे कोई ऑटो मिल जाए, लेकिन हारालुर रोड से वहां तक पहुंचने के लिए काफी चलना पड़ता। अगर दिन का समय होता तो मैं आराम से वहां तक चली जाती। लेकिन रात के इस समय, जब वहां लाइटें भी नहीं जली होतीं, तो मेरे लिए वहां तक चलकर जाना सुरक्षित नहीं होता।

बेवकूफ मनोज। ये तो तय था कि मैं किसी भी कीमत पर दोबारा उसके घर नहीं जाने वाली थी। उसने मेरे पीछे आना भी जरूरी नहीं समझा। साला। मैंने टाइम देखा, आधी रात बीत चुकी थी। पता नहीं जरूरत के समय ये टैक्सी भी कहां चली जाती हैं? मैंने बार-बार एप्स को रिफ्रेश किया। लगभग आधे घंटे बाद भी वहां आसपास कोई कैब नहीं थी। हर जाते मिनट के साथ मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। मुझे किसी भी तरह घर पहुंचना था। मैं थक चुकी थी और अब वाइन भी अपना असर दिखा रही थी। भाड़ में जाए। मैं अब फंस चुकी थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

किसी दोस्त को आज आपकी मदद की जरूरत होगी, लेकिन आपको भले-बुरे का ध्यान रखते हुए कोई कदम उठाना होगा, क्योंकि उसके कई मतलब हो सकते हैं।

13

अनिकेत

तृष ने ध्यान भी नहीं दिया था कि मैं उसके साथ नहीं हंस रहा था। जब वो अपने हंसी के दौरे से उबरी, तो उसने मुझसे पूछा कि मैं क्या खाऊंगा।

‘कुछ नहीं,’ मैंने कहा।

मेरी भूख मर चुकी थी।

‘ओ, अब बच्चों की तरह रुठना छोड़ो। मैं तुम्हारे लिए कुछ ऑर्डर कर देती हूँ,’ उसने कहा और हम दोनों के लिए दो मसाला डोसा और दो फिल्टर कॉफी का ऑर्डर दे दिया।

मैं चुप रहा।

तृष ने मुझे देखा। ऐसी नजरों से जिनमें आधी झुंझलाहट और आधी खोजबीन थी।

मैंने फिर भी कुछ नहीं कहा।

‘छोड़ो भी, अनि। तुम जानते हो कि मैं बस मजाक कर रही थी। और तुम्हारी तोंद भी है, है न? हमने इस पर पहले भी बात की है। मैं नहीं जानती थी कि तुम बुरा मान जाओगे, मैं तो बस ऐसे ही चिढ़ा रही थी।’

आउच। वो तो हालात और बदतर बना रही थी। क्या उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये सिर्फ उसके कमेंट नहीं, बल्कि पूरी सिचुएशन पर उसके नजरिये की वजह से था?

‘तृष—तुम जानती हो कि वो मैंने तुम्हारे लिए बनाई थी?’

मैं अब उसे व्हेल कह भी नहीं पा रहा था। जैसे ‘व्हेल’ कोई बुरा शब्द हो। अब ये मुझे एक बेइज्जती की तरह महसूस हो रहा था।

‘बनाई? क्या मतलब बनाई थी?’ उसने भौंहे चढ़ाते हुए पूछा।

‘तृष, ये मैंने बनाई है। अपने हाथों से। मैंने पॉटरी क्लास जॉइन की है। ये मेरा पहला प्रोजेक्ट है और मैंने सोचा कि ये तुम्हें पसंद आएगा।’

‘ओह,’ उसने सिलवटें हटाते हुए कहा। ‘मुझे ये नहीं पता था। तुम्हें मुझे बताना चाहिए था न। तुमने कुछ बताया क्यों नहीं?’ उसने पूछा।

‘तुमने मुझे मौका ही नहीं दिया, तुम तो हंसने में बिजी थीं।’

‘मुझे कैसे पता चलता? तुम्हें मुझे देने से पहले ही बताना चाहिए था। देखा—सरप्राइज के साथ ऐसा हो जाता है। उनका कुछ और भी मतलब निकल जाता है।’

मुझे तो यकीन ही नहीं आ रहा था! उसे एक बार भी नहीं लगा कि उसे इसके लिए माफी मांगनी चाहिए।

मैंने इंतजार किया। मैं चाह रहा था कि मेरी भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए वो माफी मांगे। क्या वो इतनी बेहरम है? क्या मुझे उसे बताना चाहिए कि मुझे कैसा लग रहा है?

कोई माफी नहीं मांगी गई।

वैटर हमारे डोसे ले आया और उसने व्हेल को मेज पर से हटाकर अपने पास की कुर्सी पर रख दिया।

‘मुझे यहां का डोसा बहुत पसंद है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि यहां कि चटनी कमाल की है? पता है, लेह में मुझे यहां के खाने की बहुत याद आ रही थी,’ उसने डोसा खाते हुए कहा।

‘तुमने वहां क्या खाया?’ मैंने बात करने की कोशिश की।

‘वो कुछ पाबा था। वहां का ट्रेडिशनल फूड, जो मटर और गेहूं से बनता था। फिर मैंने थुकपा भी खाया, जो सब्जियों का बना गाढ़ा सूप था। उनका स्वाद फीका-फीका था। दो ही दिन में मेरा मन भर गया। मेरा मन तो इसके लिए ललचा रहा था,’ वो बताने लगी।

‘हां, मैं कल्पना कर सकता हूं। जब मैं बाहर जाता हूं तो मेरा भी मन घर का खाना खाने का करता है।’

मुझे अपना लहजा सामान्य और निष्पक्ष रखने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ रही थी।

‘पता है। मॉम ने शनिवार को मेरी पसंद का खाना बनाकर खिलाया,’ उसने कहा।

‘शनिवार? तुमने तो कहा था कि तुम्हें रैम्प वॉक के लिए जाना है?’

‘ओह, सच में? वो... उम्म... कैसल हो गया। आखरी टाइम पर।’

‘हम मिल सकते थे, तृष। तुम जानती हो न कि मेरा तुमसे मिलने का मन था।’

‘अनि—मैं थकी हुई थी। मैंने तुम्हें बताया था न? मुझे लेह ट्रिप की थकान उतारनी थी।’

‘मैं नहीं जानता, तृष। कभी-कभी लगता है... कि तुम्हारे लिए हमारा साथ समय गुजारना उतना जरूरी नहीं है।’

‘कम ऑन, अनि। तुम जानते हो ये सच नहीं है। पता है, चलो मैं इसकी भरपाई कर दूंगी। चलो, आज पब चलते हैं, काम के बाद? मुझे कोरमंगला में एक अच्छी जगह पता है—अब-सलूत। नई जगह है, और वो लोग साढ़े ग्यारह की डेडलाइन के बाद भी चालू रखते हैं। मजा आएगा। मैं अनन्या को भी बुला लूंगी। वो भी कह रही थी कि उसे बाहर जाना है। तुम सुब्बु को बुला लेना।’

‘अनन्या कौन?’

‘तुम्हें अनन्या याद नहीं? जब तुम मुझे लेने आए थे, तब उससे मिले थे। वो लद्दाख शूट में मेरे साथ थी। वो एजेंसी की क्रू मेंबर है। प्रोडक्शन कोर्डिनेटर।’

अब मुझे कुछ धुंधला याद आ रहा था। तृष ने चलते हुए उससे मिलवाया था। छोटी सी मीटिंग थी: उसने दूर से हाथ हिलाया था और मैं गाड़ी से नीचे भी नहीं उतरा था।

‘ठीक है, मैं सुब्बु से पूछ लेता हूं। हो सकता है उसका कोई प्लान हो।’

‘उसे फोन करो न। मुझे यकीन है कि वो हां कर देगा। वैसे भी उसकी कौन सी सोशल लाइफ है,’ तृष ने कहा।

इस बात पर मुझे फिर गुस्सा आ गया। तृष को आज हो क्या गया था। या उसके माफी नहीं मांगने पर मैं कुछ ज्यादा ही सेंसिटिव हो रहा था? लेकिन मैं अभी कोई मसला नहीं खड़ा करना चाहता था।

‘पता है, तुम ही उससे पूछ लो,’ मैंने कहा।

उसने तुरंत अपना फोन निकालकर उसका नंबर मिला दिया। उसने सीधे-सीधे पूछ लिया कि अगर वो फ्री है तो शाम को हमारे साथ ड्रिंक के लिए आ सकता है। उसने उसे अनन्या के बारे में भी बताया।

‘हां, आज रात। ठीक है। फिर अब-सलूत में मिलते हैं, आठ बजे,’ कहकर उसने फोन काट दिया।

फिर वो मेरी तरफ मुड़ी।

‘हो गया,’ वो मुस्कुराई।

अपनी बात मनवाकर तृष खुश हो जाती थी और वो हमेशा ही इतने कम समय पर मीटिंग बनाने में सफल हो जाती थी। कोई भी तृष को न नहीं कह पाता था। और उसे पब जाना पसंद था। वहां के धुएं और शोर की वजह से वो मुझे इतने पसंद नहीं थे। और वहां आप कोई बात भी नहीं कर सकते थे। लेकिन वो अब जब पूरी तैयारी कर चुकी थी, तो पीछे हटने का कोई सवाल ही नहीं था। मैं सुब्बु और अनन्या के साथ डबल डेट पर नहीं जाना चाहता था; मुझे उसके कहते ही बता देना चाहिए था। अब मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। वैल, हो सकता है सुब्बु को अनन्या का साथ अच्छा लगे।

वेटर बिल ले आया और मैंने बिल भरने के लिए अपना वॉलट निकाला। हालांकि तृष ने कहा

कि वो बिल भर देगी। जब हम जाने के लिए खड़े हुए, तो मैंने देखा कि तृष ने उस व्हेल को वहीं कुर्सी पर छोड़ दिया था।

मैंने उसे देखा और फिर तृष को, जो अब अपने बाल पीछे झटककर अपने पर्स से सनग्लास निकाल रही थी। मैंने कुछ नहीं कहा और हम दरवाजे की तरफ बढ़ गए। मैं उसे याद भी नहीं दिलाना चाहता था कि वो क्या भूल रही थी। मैंने देखा कि वेटर ने कुर्सी आगे धकेली, और व्हेल जमीन पर गिर गई। उसके तीन टुकड़े हो गए थे। मैंने वेटर को चौंककर आसपास देखते हुए देखा। लेकिन हम तब तक दरवाजे तक पहुंच गए थे, और इससे पहले कि वो हमें आवाज लगा पाता, मैं तृष को रेस्टोरेंट से बाहर ले, बेसमेंट में पार्क अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ रहा था।

तृष बस विश्व और अपने दूसरे दोस्तों की बातें करे जा रही थी कि कैसे वो लोग लद्दाख शूट की सफलता के बाद अब एक बड़ी पार्टी की योजना बना रहे थे। लेकिन मैं उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे पा रहा था।

मेरा ध्यान बस व्हेल के टूटे हुए टुकड़ों पर था, जो शायद हमारे ऑफिस पहुंचने से पहले कूड़ेदान में पहुंच चुकी होगी।

जब मैं ऑफिस पहुंचा, तो सुब्बु को तृष के प्लान पर बहुत उत्साहित पाया।

‘इधर आ यार। क्या तुमने वो लड़की देखी? वो कैसी दिखती है?’

‘कौन सी लड़की?’

‘तुम्हारी तृष की दोस्त। जो आज रात हमारे साथ आने वाली है। प्लीज कह दो कि वो बहुत हॉट है।’

‘तुम तृष से ही क्यों नहीं पूछ लेते? उसने तुमसे खुद बात की न?’

‘ओह—मैं तो बस पूछ रहा था। तुम्हें क्या हुआ?’

‘कुछ नहीं, सुब्बु। मुझे बहुत सा काम करना है।’

‘छोड़ो भी, अनि। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। उसे व्हेल पसंद नहीं आई न?’

‘वो हंसी, और उसका नाम “अनि-व्हेल” रख दिया। और जब तक मैंने नहीं बताया, उसे पता भी नहीं चला कि वो मैंने बनाई थी। फिर वो उसे रेस्टोरेंट में ही भूल गई। और जब हम बाहर आ रहे थे, तो वेटर ने कुर्सी सरकाई और वो गिरकर टूट गई।’

‘ओह, नो, यार। बीएसओडी एरर,’ उसने कहा।

‘हम्म?’

‘ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ। तुम्हें उसे फिक्स करने के लिए रीबूट मोड में जाना होगा।’

‘बस यार। चलो चलते हैं,’ मैंने कहा और अपने क्यूबिकल की ओर बढ़ गया, जबकि सुब्बु अभी मुंह ही बना रहा था। कभी-कभी सुब्बु भी न कमाल करता है।

शाम को सुब्बु कैब लेकर आया और उसके साथ बैठकर हम लड़कियों के आने से पहले अब-सलूट में पहुंच गए। हम बाहर ही खड़े होकर उनका इंतजार करने लगे। मैं सोच रहा था कि क्या निधि बीयर पीने की इजाजत देगी। ऐसा लग रहा था कि मैं उसके साथ धोखा कर रहा था, तो मैंने पहले उससे पूछ लेना बेहतर समझा।

‘हे, तुम क्या कर रही हो? क्या मैं कुछ बीयर ले सकता हूं?’ मैंने टाइप किया।

मैं जानता था कि उसका जवाब क्या होगा और उसने वही कहा जिसकी मुझे उम्मीद थी।

‘एक्चुली, नहीं। इससे सारे किए कराए पर पानी फिर जाएगा। लेकिन अगर फिर भी तुम्हें

लेनी पड़े, तो हमें आगे और मेहनत करनी होगी!’ उसने मैसेज किया।

मैं मुस्कुराया। मेरी इच्छाशक्ति इतनी भी मजबूत नहीं थी कि मैं बार में बैठूं और पीने से बच पाऊं, लेकिन अब निधि की ‘क्लीयरेंस’ मिलने से बेहतर महसूस हो रहा था।

ये जगह बहुत भीड़-भाड़ भरी थी, और यहां फिगर दिखाते छोटे कपड़े और हाई हील पहने बहुत सी लड़कियां आ रही थीं। लड़के ज्यादातर जींस, टीशर्ट या कुछ कैजुअल शर्ट में थे। कितना फर्क था कि ऐसी जगहों पर आने के लिए लड़के और लड़कियां कैसे कपड़े चुनते थे।

तृष की टैक्सी बता रही थी कि वो बस यहां पहुंचने ही वाले थे। जब वो टैक्सी से निकले तो मेरी और सुब्बु की आंखें फटी रह गईं। दोनों ने कातिलाना कपड़े पहने थे। तृष ने वन-शोल्डर सफेद रंग की मिनी ड्रेस पहनी थी, जिसमें उसके बूब्स, पतली कमर और लंबी टांगें उभरकर आ रही थीं। ड्रेस काफी सैक्सी थी। अनन्या ने काली, प्लेटों वाली, स्ट्रेपलैस, शॉर्ट कॉकटेल ड्रेस पहनी हुई थी, और साथ में चार इंच हील। मुझे सुब्बु के मुंह से आह निकलती सुनाई दी।

‘हाय, ये अनन्या है,’ तृष ने पहले सुब्बु से परिचय कराया, जो तुरंत आगे बढ़कर उससे गले मिलने लगा, जैसे वो पूरी जिंदगी से इस लड़की को जानता था, और फिर उसे मुझसे मिलाया। मैंने उससे हाथ मिलाया।

‘अनन्या, तुम बहुत सुंदर लग रही हो,’ सुब्बु ने कहा।

‘थैंक्स, और तुम्हारी शर्ट भी बहुत अच्छी लग रही है,’ उसने सुब्बु से कहा, और उसने दांत दिखा दिए।

जब हम पब में घुसे, तो काफी लोगों ने मुड़कर हमें देखा। बेशक इसका कारण तृष और अनन्या ही थे। यकीनन कोई मुझे और सुब्बु को देखने के लिए तो नहीं ही मुड़ा होगा। वहां का इंटीरियर बहुत रफ था। इंडस्ट्रीरियल थीम पर बना हुआ, जिसमें सब जगह पाइप, शूट और फैन बने हुए थे। वहां बहुत शोर था। लोग तेज आवाज में एक-दूसरे से बात कर रहे थे, ताकि अपनी आवाज सामने वाले तक पहुंचा सकें। बैठने की जगह पहली मंजिल पर थी, बार के पास और स्मोकिंग एरिया में बैठने की जगह थी। बार के पास बहुत शोर था, तो हमने स्मोकिंग एरिया में बैठने का फैसला किया, क्योंकि अनन्या को स्मोकिंग करनी थी।

हमारे बैठते ही उसने सिगरेट सुलगा ली, और मुझे और सुब्बु को भी ऑफर की। हम दोनों ही नॉन-स्मोकर थे और हमने सिर हिलाकर मना कर दिया। उसने सांस छोड़ी, आंखें सिकोड़कर सुब्बु को देखा। ‘तो, मुझे अपनी जॉब के बारे में बताओ,’ उसने कहा।

सुब्बु के बोलने से पहले मैंने जवाब दिया। मैं जानता था कि अगर उसने जवाब दिया तो क्या होगा। वो बहुत सी टेक्नीकल डिटेल्स में फंस जाएगा और ये दोनों सुंदर लड़कियां यहां से भाग जाएंगी।

‘हम प्रॉब्लम सुधारते हैं। हम प्रॉब्लम-फिक्सर हैं। तुम हमें कोई प्रॉब्लम बताओ, और हम तुरंत उसे फिक्स कर देंगे,’ मैंने कहा और वो हंस दी। फिर मैं घोस्टबस्टर्स की धुन पर गाने लगा और वो दोनों हंस दिए।

सुब्बु मुझे ऐसी नजरों से देख रहा था कि ‘मैं उसके सवाल क्यों चुरा रहा था’, और मैंने उसे आंखों ही आंखों में समझाया ‘मुझे संभालने दे, यार; तुम मामला बिगाड़ दोगे’। अच्छे दोस्तों की खासियत ही ये होती है कि वो बिना कुछ बोले भी आपस में बात कर सकते हैं।

वेटर ने मेन्यु लाकर मेज पर रख दिया। वहां रौशनी इतनी कम थी कि मेन्यु पढ़ने के लिए हमें

अपने फोन की टॉर्च जलानी पड़ी। सुब्बु और मैंने बीयर सैम्पलर कर सैट मंगवाया, जिसमें उनकी छह बीयर का सैट था। तृष ने टकीला शॉट मंगवाया और अनन्या ने विस्की वाली कॉकटेल। हमने कुछ स्टार्टर भी ऑर्डर किया।

ड्रिंक आ गए थे, और अनन्या व तृष सच में मजे कर रहे थे, और सुब्बु भी। मुझे यहां के धुएं से चिढ़ हो रही थी, लेकिन शायद सुब्बु को इससे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। काश अनन्या को स्मोकिंग नहीं करनी होती, लेकिन मैं उनकी पार्टी खराब नहीं करना चाहता था, तो बस मैं चुप लगाकर बैठा था। अनन्या लद्दाख शूट की कोई मजेदार कहानी सुना रही थी, जहां तृष को ठंडी पगॉन्ग त्सो लेक में लैडर ड्रेस पहनकर खड़े होना था, और उसके लिए पोज बनाना काफी मुश्किल हो रहा था। सुब्बु बड़े मजे लेकर सुन रहा था।

जब खाना आया, तो सुब्बु ने कहा, 'यार, क्या तुम ये भी अपनी फूड डायरी में लिखने वाले हो? क्या वो तुम्हें ये सब खाने की इजाजत देगी?'

'कौन?' तृष ने पूछा।

'उसकी फिटनेस कोच, निधि। वो जेल की वॉर्डन की तरह इस पर नजर रखती है,' सुब्बु ने कहा।

'ऊह... ऊह। ऐसा लग रहा है जैसे वो तुम्हें पसंद करती है,' अनन्या ने चिढ़ाया।

'ओह, रुको दोस्तों। वो बस एक दोस्त है, ओके? और वो किसी और की मंगेतर भी है,' मैंने कहा।

'ऊह, हम सिर्फ दोस्त हैं। सभी ये कहते हैं,' अनन्या ने कहा। वो और सुब्बु हंस रहे थे, लेकिन तृष कुछ नाराज लग रही थी।

'देखो, ये सच है। वो मेरी वजन कम करने में मदद कर रही है,' मैंने कहा।

उसके बाद बातें नॉर्मल होने लगीं, और गुजरती शाम के साथ लड़कियां खूब दबाकर पीने लगीं।

मैं भी बीयर पी रहा था, लेकिन थोड़ी कम। फिर भी मैं काफी ले चुका था, मैं पहले ही थोड़ी-थोड़ी करके दो बार पी चुका था। ऐसा नहीं था कि मैंने इससे पहले कभी बीयर नहीं पी थी, लेकिन फिर भी मुझे मजा आ रहा था, और मैं देख सकता था कि सुब्बु भी बहुत एंजॉय कर रहा था, फिर भी मैं चाह रहा था कि काश शोर कुछ कम होता, या भीड़ थोड़ी कम होती। ये जगह तो बिना वीकेंड के भी पैक थी।

तभी मेरे फोन पर मैसेज आया और मैंने देखा कि इतनी रात गए मुझे कौन मैसेज कर रहा था। निधि का मैसेज था। वो पूछ रही थी कि मैं कहां हूं; वो बिना गाड़ी के हारालुर पर फंस गई थी और पूछ रही थी कि क्या मैं उसे पिक कर सकता था। उसने बताया कि उसने सारे टैक्सी एप चैक कर लिए लेकिन आसपास कोई टैक्सी नहीं है। वो मुझे होने वाली परेशानी के लिए अफसोस भी कर रही थी।

मैंने तुरंत अपने फोन पर एप चालू किया और देखा कि यहां करीब छह टैक्सियां मौजूद थीं, वो भी महज आठ सौ मीटर के दायरे में। पब वगैरह के पास टैक्सी मिलना आसान होता है, क्योंकि लोग ड्रिंक करने के बाद गाड़ी चलाने का रिस्क नहीं लेना चाहते।

'कोई बात नहीं। मैं वहां पंद्रह मिनट, हद से हद बीस मिनट में पहुंच जाऊंगा। यहां कई टैक्सियां हैं,' मैंने उसे मैसेज किया।

फिर मैंने दूसरे लोगों से कहा, 'हे, सो सॉरी, दोस्तों। एक दोस्त फंस गया है, इमरजेंसी है। मुझे जाना होगा।'

तृष के चेहरे पर अविश्वास की झलक थी। पीने के बाद उसके दिमाग को मेरी बात समझने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था।

'क्या! तुम अभी जा रहे हो? तुम मजाक कर रहे हो? तुम नहीं जा सकते। पार्टी तो अभी शुरू हुई है, है न सुब्बु, अनन्या? इसे बताओ!' उसने कहा।

'देखो, तृष। अगर इमरजेंसी नहीं होती, तो मैं नहीं जाता। मुझे जाना होगा,' मैंने कहा।

'क्यों?' तृष ने पूछा।

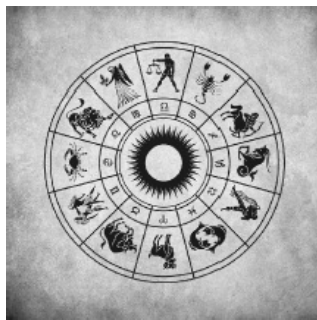
'क्योंकि मैंने निधि से वादा किया है कि मैं जल्दी ही वहां पहुंच जाऊंगा। उसे मुझ पर भरोसा है। वो बिना गाड़ी के हारालुर में फंस गई है।'

'और पूरी दुनिया में उसे तुम ही मिले हो जिसे उसने फोन किया? क्यों?' तृष ने कहा, उसकी आंखें गुस्से से जल रही थीं। 'उससे कहो किसी और को फोन कर लेगी।'

'मैं नहीं कह सकता, तृष। सुब्बु, यार प्लीज इनको घर छोड़ देना। ये मेरे बिल के पैसे,' मैंने कहकर मेज पर दो हजार रुपये रख दिए।

'सॉरी, और बाय! मेरी शाम बेहतरीन रही,' मैं उनसे कहकर निकल लिया, परेशान तृष को छोड़कर।

मैंने निधि से वादा किया था कि मैं वहां आ रहा हूं, और चाहे तृष गुस्सा हो या नहीं, मैं अपना वादा निभाऊंगा। मैंने फोन निकालकर टैक्सी बुलाई।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

कोई नजदीकी रिश्ता दर्द देगा। धनु जातकों की साफगोई सामने वाले को झुलसा सकती है। मुश्किल हालात से निकलने में कोई दोस्त आपकी मदद करेगा और आपका मददगार साबित होगा...

14

निधि

जिंदगी में कभी किसी के आने से मुझे इतनी खुशी नहीं हुई थी। मेरा सिर फट रहा था और अब तक मैं बस बेहोश ही होने वाली थी। अनिकेत मैसेज के बीस मिनट बाद ही आ पहुंचा था।

‘अनि—थैंक्यू,’ मैंने कहा, जब वो टैक्सी से निकलकर मेरे गले लग रहा था।

‘पागल मत बनो, दोस्त होते किसलिए हैं?’ उसने गाड़ी में मुझे बैठाकर दरवाजा बंद किया और खुद दूसरी तरफ से घूमकर आकर, गाड़ी में बैठा।

‘तुम ठीक तो हो न?’ उसने पूछा।

मेरा गला सूख रहा था और मन बहुत खराब था। मेरा हाथ भी दुख रहा था, जहां से मनोज ने उसे मरोड़ा था।

‘प्लीज बुरा मत मानना, लेकिन मैं आंखें बंद कर लूं? मुझे बहुत प्यास लग रही है,’ मैंने कहा।

‘कोई बात नहीं, निधि। मैं तुम्हारे लिए पानी लाऊं? हम रास्ते में से ले लेंगे,’ अनिकेत ने कहा।

‘रात के इस समय, मुझे नहीं लगता कोई स्टोर खुला होगा। कोई बात नहीं। मैं घर पहुंचकर पी लूंगी।’

फिर मैंने सीट पर पीछे पीठ टिकाकर, अपनी आंखें बंद कर लीं। अनिकेत के साथ होने से मैं खुद को सुरक्षित महसूस कर रही थी। उसके संरक्षण में। सहज। मैं जरूर उसके बाद ढह गई थी क्योंकि जो अगली चीज मुझे याद है, वो अनिकेत का नरमाई से मेरा कंधा थपथपाना है।

‘निधि, आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे अपार्टमेंट में छोड़ आता हूं,’ उसने कहा।

मैं चौंककर बैठी। ‘अनि, नहीं ठीक है। मैं खुद चली जाऊंगी,’ मैंने कहा।

‘नहीं, मैं चलूंगा। मैं इतनी दूर आया हूं। मैं चाहता हूं कि तुम्हें सुरक्षित तुम्हारे घर तक पहुंचा दूं।’

अनि मेरे साथ चलने लगा और मैं अपने पर्स में चाबियां ढूंढ़ रही थीं। अब तक मैं पूरी तरह जाग गई थी और वाइन का असर भी खत्म हो गया था। हालांकि मेरा हाथ अभी तक दर्द कर रहा था।

मैं घर में घुसी, लाइट जलाई, और उसे अंदर आने को कहा।

‘नहीं, अब मुझे चलना चाहिए,’ उसने कहा।

‘क्या? फिर तुम यहां दरवाजे तक क्यों आए? अंदर आओ न, मैं तुम्हारे लिए कॉफी बनाती हूं।’

‘ठीक है,’ वह मुस्कुराता हुआ मेरे पीछे अंदर आ गया। ऐसी मुस्कान में वो बिल्कुल बच्चा लगता था। बढ़ता हुआ बच्चा। मैंने रसोई में जाकर, गटगट आधी बोतल पानी अपने मुंह में उड़ेल लिया।

तब मेरी सांस में सांस आई।

अनि मेरे ओपन किचन में, बार स्टूल पर बैठकर घूमते हुए, बड़े मन से मुझे साउथ इंडियन कॉफी बनाते हुए देखने लगा।

‘तो तुम बिना गाड़ी के हारालुर रोड पर फंसी कैसे?’ उसने पूछा।

‘हां, मुझे उम्मीद नहीं थी कि वहां कोई भी कैब नहीं मिलेगी। मैं एक... दोस्त के घर गई थी,’ मैंने कहा।

पता नहीं क्यों मैं अनि को नहीं बताना चाहती थी कि मनोज मुझे कैब तक छोड़ने या घर छोड़ने नहीं आया था। और कि उसने मेरे साथ कितना बदतर सुलूक किया कि मुझे उसकी मदद मांगनी पड़ी।

मैंने परफेक्ट कॉफी बनाई। अब मैं खुश थी। मैंने कॉफी स्टील टम्बलर में डालकर, उसे छोटे से स्टील बाउल में रख दिया, वैसे ही जैसे रेस्टोरेंट में सर्व करते हैं। फिर मैंने वो उसे पकड़ाई।

‘महक तो अच्छी है! तुम तो इसकी स्पेशलिस्ट हो,’ उसने किचन में फैली कॉफी की खुशबू को सूंघते हुए कहा। उसने गहरी सांस ली और मेरे हाथ से टम्बलर ले लिया।

तब उसकी नजर मेरे हाथ पर पड़े हुए नीले निशान पर पड़ी, वही निशान जो मनोज ने मुझे दिया था। अब वो काफी उबर आया था। एक टैटू की तरह, जो खुद ब खुद ध्यान आकर्षित कर लेता है। मैं उम्मीद कर रही थी कि वो कुछ न कहे, लेकिन उसने कहा।

‘ओह—ये तो बहुत खराब है। क्या हुआ था?’ उसने पूछा।

‘कुछ नहीं। मैंने अपना हाथ टकरा लिया था।’ मैं भरसक छिपाने की कोशिश कर रही थी।

‘तुम किससे टकराई थीं? और किसी से भी टकराने पर हाथ पर ऐसा निशान कैसे पड़ सकता है?’

‘मैंने देखा नहीं था। ये जिम में हुआ था,’ मैंने कहा, लेकिन मैं उससे नजरें नहीं मिला पा रही थी।

‘नहीं, ये वहां नहीं हुआ है।’ वह अब सीधे मेरी आंखों में देख रहा था। शायद मेरी आवाज से वह कुछ भांप गया था।

शिट। मेरा झूठ पकड़ा गया था। मैं जानती थी कि वह जान गया था, वो भी जानता था कि मैं जानती हूं वो जान गया था।

‘निधि, तुम जानती हो न ये शारीरिक शोषण है? तुम रात के इस समय हारालुर रोड पर अकेले क्या कर रही थीं? तुम ठीक हो न? हो क्या रहा है?’ वो एक के बाद एक सवाल पूछे जा रहा था।

‘ओह, अनि। आराम से। शारीरिक शोषण बड़ा शब्द है। मेरी बस मनोज से छोटी सी लड़ाई हुई थी। मैं वापस उसके घर जाकर, उससे मदद नहीं मांगना चाहती थी, इसलिए मैंने तुमसे मदद मांगी। उम्मीद है कि मैंने तुम्हारी शाम खराब नहीं की हो?’

‘मैं तृष और दूसरे दोस्तों के साथ था। लेकिन, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा दोस्त सुब्बु उन्हें संभाल लेगा। और भले ही तुम अपने मनोज को बचाने की कोशिश करती रहो, लेकिन उसने जो किया है, वो सही नहीं है,’ अनि अपने होंठ भींचकर सिर हिला रहा था।

मैंने नजरें फेर लीं।

‘वो कोई बुरा इंसान नहीं है।’

‘मैंने ऐसा नहीं किया। लेकिन फिर भी ये सही नहीं है। कपल्स में ऐसे लड़ाई नहीं होती। मेरी भी तृष से कई लड़ाइयां हुई हैं, लेकिन मैं कभी उस पर हाथ उठाने की सोच भी नहीं सकता...’

‘देखो, अनि, इसे छोड़ो। उसने मुझे कभी मारा नहीं है। बस सख्ती से हाथ पकड़ने को मार-पिट्टाई नहीं कह सकते, है न? वह मेरे लिए फूल, वाइन लाया था, उसने मेरे लिए खाना बनाया था, इतनी मेहनत की थी। वो मुझे बहुत प्यार करता है। हां, तुम्हारी बात में पॉइंट है। जब उसने मेरा हाथ मरोड़ा, मुझे बुरा लगा था। लेकिन इसे शारीरिक शोषण कहना नाइंसाफी होगी।’

मैं इस पर एकतरफा हो रही थी। मनोज वास्तव में कई मायनों में परवाह करता था, भले ही पॉटरी के लिए मेरे प्यार या कॉरपोरेट जॉब छोड़ने की वजह समझ नहीं पाता था। उससे बात करना अच्छा लगता था, हम बाहर जाते थे, फिल्में देखते थे और पिछले दो सालों से हम साथ थे।

‘लड़ाई किसलिए हुई थी? या ये निजी मामला है? अगर तुम न चाहो तो मत बताओ।’

मुझे लग रहा था कि मैं सच में इस बारे में बात करना चाहती थी। पता नहीं क्यों मैं अनि को सब बताना चाहती थी। मैं चाहती थी कि वो मेरा नजरिया समझे। और वैसे भी मुझे उसे बताना चाहिए था, आखिर वो अपना सारा काम छोड़कर, अपने दोस्तों को छोड़कर, इतनी दूर मेरे पास आया था।

‘मैं बताना चाहती हूँ। लेकिन ये लंबी कहानी है। तुम पक्का सुनना चाहोगे?’

‘वैल, अब तो हमारे पास कॉफी भी है,’ कहकर वह अपना कप उठाते हुए मुस्कुराया।

‘ठीक है, तो चलो, पहले आराम से बैठते हैं,’ कहकर हम लीविंग रूम में काउच पर आकर बैठ गए।

‘वाह, निधि, तुमने सच में अपने घर को काफी करीने से सजाया है, मैं ये बात दोबारा कहने से खुद को रोक नहीं पा रहा। शायद पिछली बार तुम्हारे घर आने पर भी मैंने यही कहा था। इसके मुकाबले में मेरा घर तो बिल्कुल कबाड़ है। तुम्हें मेरा घर सजाने में मेरी मदद करनी पड़ेगी। ये बहुत ही बढ़िया है,’ अपनी कॉफी लेकर काउच पर बैठते हुए उसने कहा।

मैं उसके सामने बैठ गई, अपने घुटनों को मोड़ते हुए, आराम से, अब मैं अपने घर थी।

‘तो मुझे अपनी कहानी बताओ। हमारे पास पूरी रात पड़ी है,’ उसने कहा।

मैंने अपनी दीवार घड़ी पर नजर डाली। एक बज चुका था।

‘दोस्त हमारे पास पूरी रात नहीं है। सुबह होने में बस कुछ ही घंटे बचे हैं,’ मैंने कहा।

‘तुमने वो फिल्म देखी है?’

‘कौन सी?’

‘बिफोर सनराइज। इथन हॉक, जूली डेलपी। मुझे लगता है वो बहुत बढ़िया फिल्म है। कितने बढ़िया डायलॉग। कितने गहरे विचार, और बहुत रोमांटिक भी।’

‘ओह हां। मैंने देखी है। मुझे भी वो बहुत अच्छी लगी। वो सच में बढ़िया है। सोचो ऐसे फोन पर बात करना। चीजों को किस्मत के सहारे छोड़ देना। बिना फोन नंबर लिए अलग हो जाना और फिर एक साल बाद मिलना, ये जानने के लिए कि क्या वाकई उनका प्यार सच्चा था। तुम्हें क्या लगता है कि ये सच में मुमकिन है?’

‘पता नहीं। शायद हो, जब आप अपने सोल-मेट से मिल लें।’

‘पता है, अनि अभी कल ही मैं इसके बारे में पढ़ रही थी—जीवनसाथी और आत्मीय दोस्त। ये मुझे सच में बहुत दिलचस्प लगा।’

मैंने उसे बताया कि मैंने क्या पढ़ा था। उसने पूरे ध्यान से सुना। फिर मैंने उसे मनोज और मेरे बारे में बताया। मैंने उसे वीर के बारे में भी बताया। कि उस समय सब कितना अच्छा लगता था। लेकिन कैसे हम समय के साथ अपनी जिंदगियों में आगे बढ़ गए। मैंने उसे बताया कि कैसे मनोज मेरी जिंदगी में आया और कैसे हमारा रिश्ता आगे बढ़ा।

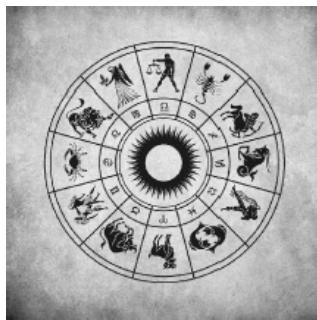
‘पता है आज की लड़ाई हुई ही इसलिए कि वो कुछ भी करके मुझे अपने साथ यूएस ले जाना चाहता है, और चाहता है कि उसके यूएस जाने से पहले हम शादी कर लें।’

‘और मुझे लगता है कि तुम ये नहीं चाहती?’

मैंने हां में सिर हिलाया। ‘ये बात मैंने उसके मुंह पर कह दी। इससे उसे गुस्सा आ गया।’

‘हम्म, समझा। लेकिन फिर भी गुस्सा कोई वजह नहीं है। उसे खुद पर काबू रखना चाहिए। मुझे लगता है ऐसे आदमी... ऐसे आदमी बहुत खराब होते हैं। तुम किसी औरत को ऐसे

तकलीफ नहीं पहुंचा सकते। इससे मुझे बहुत चिढ़ होती है।’
तभी अनि का फोन बजा और हम दोनों ही चौंक गए।
‘तृष,’ उसने फोन उठाकर कहा।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

अनपेक्षित घटनाएं आपका संतुलन हिला देंगी। आपको अपनी प्राथमिकताएं फिर से निर्धारित करनी होंगी। किसी नए दोस्त को मदद की जरूरत होगी और आप वो करने को मजबूर होंगे...

15

अनिकेत

ये अजीब था कि अब-सलूत से यूं बाहर जाने पर मैं जरा भी नाराज नहीं था। आमतौर पर यूं शाम खराब होने पर मैं चिढ़ जाता। लेकिन आज नहीं। वहां का धुआं मुझे बहुत तंग कर रहा था। अनन्या भले ही हॉट थी, लेकिन उसकी चेन-स्मोकिंग की आदत से अब मुझे चिढ़ हो रही थी। स्मोकिंग नहीं करने पर भी मेरे अंदर जाने वाला धुआं और तेज संगीत से मेरा सिर भारी होने लगा था।

जब मैं हारालुर रोड निधि को लेने पहुंचा तो वो जैसे मेरी बांहों में आ गिरी, और गाड़ी में बैठते ही आंख बंद करके शायद सो गई, जबकि मैं अभी ड्राइवर को कोरमंगला का रास्ता समझा ही रहा था। हालांकि ऐसा नहीं लग रहा था कि वो नशे में थी। लेकिन वो बदहाल और थकी हुई लग रही थी। जब हम उसके घर पहुंचे तो उसने जोर दिया कि मैं अंदर आऊं और एक कॉफी पीकर जाऊं। उसके घर जाकर मुझे दोबारा अहसास हुआ कि उसने अपना घर कितने करीने से सजाया हुआ था। वहां की एक-एक चीज मुझे पसंद थी।

जब मैंने उसकी बांह पर नील पड़ा देखा, मुझे बड़ा झटका लगा, और फिर हमारे बीच मनोज और उसके रिश्तों को लेकर लंबी बात हुई। उसकी आवाज में एक ठहराव था, यहां तक कि जब वो मुझे अपने पहले रिश्ते के बारे में बता रही थी, जो ब्रेकअप पर खत्म हुआ था, तब भी उसमें कोई कड़वाहट नहीं थी। उसकी आवाज में एक शांत स्वीकारोक्ति थी। मैं ध्यान से उसकी बात सुन रहा था। वह यकीनन इस आदमी, मनोज से शादी नहीं करना चाहती थी। अगर आप मुझसे पूछो तो वो मुझे बहुत ही कमीना लग रहा था, लेकिन मैंने उससे कुछ नहीं कहा।

मेरे फोन के बजने से हम दोनों चौंक गए। मैंने फोन की स्क्रीन देखी, तो पाया कि तृष का फोन था। मैंने तुरंत फोन उठा लिया।

‘हे, बेब,’ मैंने कहा।

लेकिन दूसरी तरफ से मुझे सिर्फ ट्रैफिक की आवाजें सुनाई दे रही थीं। फिर किसी आदमी और औरत की आवाजें, ‘गाड़ी में बैठो, तृष। तुमने बहुत पी ली है।’

‘अनि, जब मुझे तुम्हारी जरूरत है, तुम कहां चले गए।’ अब दूर से आती हुई तृष की आवाज सुनाई दे रही थी।

फिर कुछ पानी उड़ेलने की आवाज आई।

‘गॉड—तुम्हें उल्टी हो रही है... शिट। तुम ठीक हो न, तृष? प्लीज इसे अंदर बिठाने में मदद करो। क्या बकवास है ये।’

ये सुब्बु की आवाज थी।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा था। हे भगवान। मैंने तुरंत फोन काटकर, सुब्बु का नंबर मिलाया और निधि को माफी का इशारा किया।

सुब्बु ने फोन उठा लिया और मैंने चैन की सांस ली।

‘यार—बुरा हाल है। तृष ने हद से ज्यादा पी ली। उसने सब जगह उल्टी कर दी। मैंने अभी उसे कैब में बिठाया है।’

‘क्या? क्या बकवास है, सुब्बु... मैंने तुमसे कहा था न उनका ध्यान रखना? फिर ये सब क्या। तुम उनके साथ क्यों नहीं गए? उसके साथ कौन है?’

‘यार—वो कह रही थी वो ठीक है। और अनन्या हालांकि नशे में थी, लेकिन फिर भी काफी कंट्रोल दिखाई दे रही थी। उसने कहा कि वो उसे अपने घर ले जाएगी।’

‘सुब्बु—क्या तुम पागल हो? दोनों लड़कियां नशे में थीं। तुम उन्हें यूं ही जाने कैसे दे सकते हो? तुमने मुझे फोन क्यों नहीं किया?’

‘यार, उन्होंने हमें पब से बाहर निकाल दिया... तृष ने यहां काफी तमाशा कर दिया था। वो टेबल पर चढ़ गई थी।’

‘क्या?’

‘तुम्हारे जाते ही चीजें काबू से बाहर होने लगी थीं। कोई उनकी पहचान वाला भी हमारे साथ आकर बैठ गया था। शायद वो उनके साथ काम करता था। उसने कहा कि वो डांस करना चाहती है। उसने कहा कि इंडिया बहुत कंजर्वेटिव है। और वो मजे करने की बात करने लगी। फिर उसने कपड़े उतारना शुरू कर दिया।’

‘गॉड। शिट... क्या बकवास है।’

‘नहीं, नहीं—वो हमने संभाल लिया था। उसने अपने टॉप के बटन खोल लिए थे और सबको अपनी ब्रा दिखा रही थी कि तभी अनन्या और मैंने उसे किसी भी तरह नीचे उतार लिया। लेकिन इस बीच कई लोग अपना फोन निकालकर उसके फोटो खींचने लगे थे। तब बाउंसर्स ने आकर हमसे बाहर निकलने को कहा। तृष उनसे कहती रही कि वो मॉडल है और कि वो उसकी तस्वीर अगले महीने जीक्यू या फिर किसी और मैगजीन के कवर पर देखेंगे। और चिल्लाकर-चिल्लाकर पोज देने लगी कि लो खींचो और खींचो फोटो।’

‘हे भगवान, सुब्बु। मुझे तुम्हें पहले ही बताना चाहिए था।’

नशे में आकर तृष अपना आपा खो देती है। लेकिन जब मैं उसके साथ होता हूं, तो वो मेरी बात सुनती है।

लड़कियों को अकेला भेजने पर सुब्बु से नाराज होकर मैंने फोन काट दिया, और तृष का नंबर मिलाया। उसने मेरे फोन का जवाब नहीं दिया।

‘क्या हुआ, अनि? वो ठीक तो हैं न? तृष ठीक है?’ निधि ने पूछा।

एक पल के लिए तो मैं भूल ही गया था कि वो यहां थी। ‘लड़कियां नशे में थीं और सुब्बु ने उन्हें अकेले टैक्सी में जाने दिया। मुझे बहुत चिंता हो रही है, निधि। मुझे एक मिनट दो, उसे एक फोन कर लूं।’

मैंने फिर से उसका फाने मिलाया, लेकिन उसने फाने नहीं उठाया।

मेरे पास अनन्या का फोन नंबर भी नहीं था।

मेरा दिमाग तेजी से घूम रहा था। फिर मैंने दोबारा सुब्बु को फोन किया।

‘उनके लिए टैक्सी किसने बुलाई थी?’

‘मैंने।’

‘तो तुम्हारे पास ट्रैक जर्नी ऑप्शन भी होगा, राइट? वो मुझे भेज दो।’

‘हां, वो मेरे पास है। ठीक है, मैं तुम्हें भेज देता हूं। लेकिन तुम बेकार में चिंता कर रहे हो। अनन्या पूरे होश में थी।’

‘मुझे उसकी परवाह नहीं है। मुझे वो अभी भेजो।’

‘ठीक है, ठीक है। भेज रहा हूं,’ उसने कहकर फोन काट दिया।

मुझे कुछ ही पल में वो लिंक मिल गया। मैंने उस पर क्लिक किया और अब मैं उनकी कार को ट्रैक कर सकता था।

वो उनकी डेस्टिनेशन इंदिरानगर दिखा रहा था। वहां शायद अनन्या रहती होगी। अब-सलूत से इंदिरानगर की ड्राइव उतनी बुरी नहीं थी।

लेकिन फिर भी, देश में हाल में हुए बलात्कार के केस बार-बार मेरे मन में आ रहे थे। मुझे सच में बहुत चिंता हो रही थी। मुझे बस ये ही ख्याल आ रहा था कि मेरी तृष नशे में है, टैक्सी में अकेली, उसे मेरी जरूरत है। मुझे वहां जाना होगा।

‘निधि—क्या मैं तुम्हारी कार ले जा सकता हूँ? प्लीज?’ मैंने उससे पूछा।

‘बिल्कुल। तुम ले जा सकते हो। लेकिन क्या तुम ड्राइव कर पाओगे?’

‘हां, अब कुछ घंटे हो गए हैं, और मैंने कॉफी भी पी ली है। मैं ठीक हूँ। मुझे तृष की चिंता हो रही है। मैं देखना चाहता हूँ कि वो सेफ है। जो लिंक सुब्बु ने मुझे भेजा, वो दिखा रहा है कि वो अभी भी आउटर रिंग रोड पर हैं। मैं चाहता हूँ कि वो ड्राइवर उन लोगों का नाजायज फायदा न उठाए। मुझे जल्दी निकलना होगा, निधि। तुम मुझे चाबी दोगी?’

‘अनि, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।’

‘पक्का? तुम थकी नहीं हो? मुझे यकीन है कि वो ठीक होंगे, लेकिन मैं खुद चैक करना चाहता हूँ।’

‘हां, मुझे भी यकीन है। और नहीं, मैं बिल्कुल थकी नहीं हूँ,’ उसने भरोसा दिलाया।

उसके पास आई20 थी, हम तेजी से उसके अपार्टमेंट से निकले। मैंने अपना फोन निधि को दे दिया और उससे कहा कि देखती रहे वो कैब कहां जा रही थी, और सबसे जरूरी, वो कहां रुक रही है।

निधि की नजर ट्रैक पर ही थी। वो उनकी लोकेशन चैक कर रही थी और मैं पागलों की तरह आउटर रिंग रोड पर गाड़ी चला रहा था। वैसे भी रात के इस समय हमें कोई ट्रैफिक नहीं मिला और हमारी गाड़ी उस सड़क पर तेजी से भाग रही थी।

हालांकि, हम उन्हें लगभग घर पहुंचने से पहले पकड़ नहीं पाए। निधि मुझे टैक्सी का रूट बताती जा रही थी। हम इंदिरानगर के 100 फुटा रोड पर थे, जब आखिरकार हमारी गाड़ी उनकी कैब के पीछे पहुंची। कैब ने दो तेज मोड़ लिए—पहले दाएं फिर बाएं और फिर धीमा होकर, आखिरकार रुक गई। तो शायद यह अनन्या का घर था। ये जगह डिफेंस कॉलोनी में ही कहीं थी। मैं उनके पीछे था और अनन्या को लड़खड़ाते हुए उतरते देखा। तृष कार के दूसरी तरफ से निकलने की कोशिश कर रही थी। वो मुश्किल से खड़ी हो पा रही थी।

मैंने गाड़ी उनके पीछे पार्क की और बाहर निकला। निधि भी पीछे-पीछे आ रही थी।

तब अनन्या की नजर मुझ पर पड़ी।

‘तुम यहां क्या कर रहे हो?’ उसने पूछा।

मैं देख सकता था कि अनन्या भी नशे में थी।

फिर वो तृष की तरफ मुड़कर बोली, ‘बेब—अनि यहां आ गया है।’

तृष बहुत नशे में थी। मुझे उसे ऐसे देखने से चिढ़ थी। मैंने उससे कई बार कहा था कि कम पिया करे, लेकिन उसने कभी नहीं सुना। मुझे उस पर गुस्सा भी आ रहा था, और उसकी चिंता भी हो रही थी।

उसने अपना हाथ उठाकर कहा, ‘कौन? अनि-व्हेल? पता है मैं ये उसके मुंह पर कहती हूँ? वो व्हेल है, उसे वजन कम करने की जरूरत है।’

इतने नशे में भी वो मेरे बारे में सिर्फ यही कह सकती थी।

‘तृष, बेहतर होगा बाहर निकलो, तुम अब घर आ गई हो,’ मैंने कहा।

‘क्या? अनि? क्या मैं सपना देख रही हूँ?’

‘नहीं। मैंने तुम्हारा पीछा किया। आओ, मैं तुम्हारी मदद कर देता हूँ,’ मैंने उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा।

वह खड़े होने में लड़खड़ा रही थी और मैंने उसे थाम लिया। उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया। फिर उसे निधि दिखी।

‘ये साली कौन है? ये वही है जिससे मिलने तुम भागे थे?’ उसने निधि की तरफ इशारा करते हुए कहा।

‘तृष—ये निधि है। मेरी दोस्त,’ मैंने कहा।

‘बेवकूफ। तुम ही हो न। तुमने मेरी सारी शाम खराब कर दी। अगर तुम फंस गई थीं, तो अपने लिए अपने यार को नहीं बुला सकती थीं? बिच।’

निधि ने दूसरी तरफ मुंह कर लिया। उसने कुछ नहीं कहा।

‘तृष—मुंह बंद करो। कुछ मत कहो,’ मैंने उसे चेतावनी दी।

लेकिन वो हंस दी। ‘अनि, तुमसे मेरा पीछा करने को किसने कहा? तुम मुझे अकेला नहीं छोड़ सकते? तुम्हें क्या लगता है, तुम्हारे बिना मैं खुद को नहीं संभाल सकती? और फिर तुम... इस औरत को अपने साथ लेकर आ गए?’

मैंने निधि को कार में इंतजार करने को कहा, और वो चली गई। तृष की बातों से मेरे कान जल रहे थे। मैंने उससे इतनी घटिया बातों की उम्मीद नहीं की थी। लेकिन फिर, तृष ने कभी मुझे किसी दूसरी महिला के साथ भी तो नहीं देखा था। कभी नहीं। ये पहली बार था।

‘चलो, इसे घर ले चलते हैं,’ मैंने अनन्या से कहा, उसने अपने बैग में चाबियां ढूंढ़नी शुरू कर दी।

तृष झूम रही थी, मैंने उसे थाम लिया।

फिर हम बिल्डिंग की लिफ्ट की तरफ बढ़े। सिव्योरिटी गार्ड ने हमें देखा। उसने खड़े होने की ज़हमत भी नहीं उठाई और अनन्या ने शायद उसकी तरफ सिर हिलाया था। उसने भी बेमन से सिर हिलाया, जैसे कह रहा हो, ‘आजकल के युवा भी। जब देखो यही करते रहते हैं।’

अनन्या का फ्लैट तीसरी मंजिल पर था। वो चाबियों के साथ संघर्ष कर रही थी, मैं दरवाजा खोलने में उसकी मदद की। तृष अभी भी मेरे कंधे पर लटकी हुई थी, और उसका पूरा वजन लगभग मुझ पर ही था।

मैंने जैसे-तैसे दरवाजा खोला और अनन्या ने गेस्ट बेडरूम की तरफ इशारा करके, मुझसे तृष को वहां ले जाने को कहा।

‘पता है, अनि—हमें ट्रिपल सैक्स करना चाहिए। तुम, मैं और अनन्या। वो बेवकूफ औरत नहीं, जिसे तुम अपने साथ लाए हो,’ कहकर उसने मेरे कान को कुतरना शुरू कर दिया।

अनन्या हंस दी। ‘लड़की, तुम बिल्कुल जंगली हो!’ कहकर उसने अपने भौंहें उठाकर मुझे देखा।

‘लेडीज, तुम दोनों बहुत लवली हो। लेकिन बहुत नशे में भी। इसके बारे में कल बात करेंगे,’ मैंने कहा।

तृष अब तक बिस्तर पर ढह गई थी। उसकी ड्रेस इतनी ऊपर चढ़ गई थी कि पैंटी नजर आ रही थी। मैंने ड्रेस को ठीक किया। उसके सैंडल उतारकर, बिस्तर के पास रखे। बिस्तर पर गिरते ही वो सो गई थी।

मेरी सुंदर तृष। वो इतने नशे में भी इतनी अच्छी दिख रही थी। मैंने उसे कंबल उढ़ा दिया।

मैंने जब मुड़कर अनन्या को देखा तो पाया कि वो अपने बेडरूम की तरफ मुड़ गई थी।

‘बाय अनि! हेल्प के लिए शुक्रिया। प्लीज जाते वक्त दरवाजा बंद कर जाना,’ उसने जाते-जाते कहा।

मैं वापस नीचे गाड़ी की तरफ भागा, जहां निधि मेरा इंतजार कर रही थी।

कितना पागलपन भरा दिन रहा ये। मेरा सिर अब घूमने लगा था। पिछले कुछ घंटों का तनाव अब मुझ पर हावी होने लगा था। मैंने आज काफी नशे में धुत्त महिलाओं को संभाल लिया था।

अब बस मैं घर जाकर आराम करना चाहता था।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

...कोई बिन बुलाया मेहमान आ सकता है। गलतफहमी की संभावना है। एक ही मंत्र याद रखना है। अगर आप सीधे खड़े हो, तो अपनी परछाई मुड़ने की क्या चिंता करना...

16

निधि

कार में अनि का इंतजार करते हुए न जाने कितने ख्याल मेरे मन में आ रहे थे। कितना लंबा दिन रहा था ये। मेरे मंगेतर से मेरी लड़ाई हो गई थी और यहां आधी रात को मैं एक ऐसे इंसान के साथ थी, जिससे पहचान हुए अभी दो महीने भी नहीं हुए थे, जो अपनी नशे में धुत्त गर्लफ्रेंड का पीछा करते हुए सिर्फ इसलिए आया था, ताकि देख सके कि वो सेफ है या नहीं। और, इसकी तुलना में, एक मनोज है, जिसने ये जानना भी जरूरी नहीं समझा कि मैं सुरक्षित घर पहुंच गई हूं

या नहीं। जितना ज्यादा मैं इस बारे में सोच रही थी, उतना ही ज्यादा मुझे मनोज पर गुस्सा आ रहा था। वो मुझे ऐसे कैसे छोड़ सकता था और मेरे पीछे तक नहीं आया? इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं उसके घर से निकल आई थी—वो आराम से मेरे पीछे आ सकता था। अगर वह आता, तो शायद मुझे अनिकेत को फोन करना ही नहीं पड़ता।

और हे भगवान—तृष कैसी लड़की है। बेशक वो बहुत सुंदर है। और यकीनन इसीलिए अनिकेत उसके पीछे यूँ पागल है। लेकिन यार—उसने मुझे बिच कहा, और वो भी तब, जब वो मुझे जानती तक नहीं। मैं उसके खिलाफ नहीं सोच रही। उसकी बात भी कुछ हद तक सच थी कि उसके बॉयफ्रेंड को यूँ बुलाकर मैंने उसकी शाम खराब कर दी थी। फिर भी वो काफी बदतमीज थी। मैं भी अपने बीस के दशक को याद कर रही थी। मैं तृष के जैसी बिल्कुल नहीं थी। मैं किसी भी हालत में किसी को बिच नहीं कह सकती थी, कभी भी। न पीठ पीछे, न किसी के मुंह पर। कभी नहीं। मैं हद से हद उन्हें अपने दिमाग से निकालकर, कभी उनके बारे में नहीं सोचती।

अब मैं अपनी घड़ी देख रही थी और सोच रही थी कि ये अनि कर क्या रहा था। उसे गए हुए पंद्रह मिनट से ज्यादा हो गए थे। उसे इतनी दूरे तो नहीं लगनी चाहिए थी। बेचारा अनि—पहले उसने मुझे पिक किया, और अब नशे में धुत्त अपनी गर्लफ्रेंड और उसकी फ्रेंड को संभाल रहा है।

तभी अनि बिल्डिंग से बाहर आता दिखा, और वो काफी थका हुआ दिखाई दे रहा था।

‘उस सबके लिए सो सॉरी, निधि। तृष की तरफ से मैं माफी मांगता हूँ। उसे खुद पर बिल्कुल काबू नहीं था, पीने के बाद उसे किसी बात का होश नहीं रहता। आई एम सॉरी।’

वह बहुत अफसोस में लग रहा था, मेरा मन उसे गले लगाकर सांत्वना देने का हुआ, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया।

‘हे—इसमें तुम्हारी गलती नहीं है। और मैंने उसकी बात को दिल से नहीं लगाया है। उसकी चिंता मत करो। आखिर, उसकी बात में पॉइंट तो था। मैंने उसके साथ तुम्हारी शाम खराब की थी,’ मैंने उसे भरोसा दिलाते हुए उसे बेहतर महसूस कराने की कोशिश की।

‘वैल, वैसे भी मुझे पब के शोर और धुएं से घुटन ही महसूस हो रही थी, और तुम्हारे फोन से मुझे वहां से निकलने का बहाना मिल गया। मैंने वो अपने मतलब से किया, न कि तुम्हारे लिए,’ उसने दांत दिखाए।

‘लेकिन तुमने मुझे बचाया। शायद आज तुम्हारा पूरा दिन नशे में धुत्त महिलाओं को बचाने के नाम रहा। वैसे मैं बता दूँ कि मैं नशे में नहीं थी।’

‘नहीं, नहीं, तुम नशे में नहीं थीं, और तुम सही कह रही हो। कम से कम आज मैं और किसी धुत्त महिला का सामना नहीं कर सकता।’

‘बेचारा! वैसे मैं तुमसे पूछने ही वाली थी कि क्या तुम अभी पब चलना चाहोगे,’ मैंने कहा और उसका लटका चेहरा देखकर हंस दी। वो मुझे ‘तुम-गंभीर-हो’ वाली नजरों से देख रहा था।

‘ओह! एक पल तो मुझे लगा कि तुम सच में गंभीर हो।’ उसकी आवाज में राहत थी।

‘अगर मैं मजाक नहीं कर रही होती तो? अगर मैं सच में जाना चाहूँ तो?’ मैंने पूछा।

उसने कुछ पल सोचा।

‘जाना चाहती हो?’ वह मुस्कुराया।

‘हम्म, क्यों नहीं। लेकिन एक छोटी सी परेशानी है। सुबह के तीन बजने वाले हैं और अब

तक सारे पब बंद हो चुके होंगे।’

‘लेकिन मैं एक ऐसी जगह जानता हूँ, जो पूरी रात खुली रहती है।’

‘वाह। मजाक तो नहीं कर रहे?’

‘नहीं। मैं एक जगह जानता हूँ।’

मेरा मन ललचा गया। लेकिन फिर कुछ सोचते हुए मैंने मन बदल दिया।

‘पता है, अनि—ये हम दोनों के लिए थकाने वाला फैसला होगा। अब इस रात को खत्म करते हैं। हम फिर किसी समय चलेंगे।’

शायद मुझे उसके चेहरे पर निराशा की हल्की सी झलक दिखी, लेकिन मैं यकीन से नहीं कह सकती। वास्तव में ये हम दोनों के लिए काफी थकान भरी रात थी।

आखिरकार, जब तक हम घर पहुंचे, साढ़े तीन बज चुके थे।

मेरी अपार्टमेंट लॉबी में, अनि ने अपना फोन निकालकर कैब चैक की।

‘यहां कोई कैब नहीं है,’ उसने आह भरके दूसरी तरफ देखा।

‘नहीं होगी। टाइम तो देखो, और ये बंगलौर है। तुम क्या उम्मीद कर रहे हो?’

‘ओह नो! अब मैं घर कैसे जाऊंगा?’

‘देखो, मेरा एक सुझाव है। दरअसल, अब यही एक विकल्प है। बाकी की रात मेरे घर पर ही रुक जाओ। यही ठीक होगा। मेरा वो काउच बेड बन जाता है। तुम आराम से सो जाओगे।’

‘पक्का?’

‘बिल्कुल। मुझे कोई डाउट होता, तो मैं तुमसे कहती ही नहीं। कम ऑन, अनि, मैं तुम्हारे लिए इतना तो कर ही सकती हूँ।’

वो मान गया और हम मेरे अपार्टमेंट की तरफ बढ़ गए।

‘तुम सुबह मेरे लिए कॉफी बनाओगी?’ मेरे घर में घुसते ही कॉफी की महक को सूंघकर उसने मुस्कुराते हुए कहा।

‘ये तो इस पर निर्भर करता है कि तुम गुड बॉय साबित होते हो, या बैड,’ मैंने मुस्कुराकर सेंटर टेबल साइड की और पहियों वाले सोफे को आसानी से खींचकर बेड बना दिया। ये काउच अब तक कि मेरी बेस्ट इन्वेस्टमेंट था। यह बड़ा, शानदार और आरामदायक था। ये ऐसा काउच/बेड था जिसमें आप दुनिया-जहान की तकलीफों को भुलाकर आराम से सो सकते हैं। मैं जल्दी से, बेडरूम से तकिया, बेडशीट और एक पतला सा कंबल ले आई।

अनि बड़े मन से देख रहा था। वो बोला, ‘वाह, निधि। तुम कमाल की मेजबान हो। ये तो बहुत बढ़िया है!’

मैं मुस्कुराई और फिर ध्यान दिया कि वो अभी भी जींस में ही था।

‘तुम जींस पहनकर ही सोने वाले हो?’ मैंने पूछा।

‘नहीं। मैं तुम्हारे जाने का इंतजार कर रहा हूँ, ताकि अपने कपड़े उतारकर, बॉक्सर में सो सकूँ। मैं अपनी शर्ट खराब नहीं करना चाहता। और वैसे भी जींस में सोना आरामदायक नहीं होता।’

‘अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें नाइट-ड्रेस दे सकती हूँ,’ मैं हंसी।

‘हां, लड़कियों की नाइटी पहनना तो मेरी सबसे बड़ी ख्वाहिश थी। थैंक्यू, निधि, मेरे उस सपने को साकार करने के लिए,’ उसने कहा और मैं खिलखिला दी।

‘गुडनाइट, अनि,’ मैंने रूम से जाते हुए कहा और जाकर अपने बेडरूम में पसर गई।
‘गुडनाइट, मैं सुबह की कॉफी का इंतजार करूंगा। मैंने आज बहुत से गुड बॉय वाले काम किए हैं,’ उसने पीछे से कहा और मैं फिर से मुस्कुरा दी।

अनि कभी-कभी एकदम बच्चा लगता था। वह यकीनन कॉफी का हकदार था।

यह काफी लंबा दिन रहा था, थकान भरा और मैं बिस्तर में गिरते ही तुरंत सो गई थी। अगली चीज जो मुझे याद है वो सुबह साढ़े सात बजे मेरे फोन में बजता अलार्म है। मैं तब भी नींद में डूबी थी, मैंने उसे बंद करके स्नूज कर दिया।

जब वो दोबारा बजा, तो पिछले दिन के बातें मेरे दिमाग में घूमने लगीं और मैं उठ बैठी। तब मुझे ख्याल आया कि मेरे लीविंग रूम में अनि सो रहा था।

मैंने दांत ब्रश किए, बाल संवारे और नाइटी की जगह शॉर्ट और टीशर्ट पहनकर बाहर आई। अगर मैं अकेले होती, तो ये कभी नहीं करती। आमतौर पर मैं नहाने जाने तक, अपने घर में नाइटी पहने ही घूमा करती थी। लेकिन अनि के सामने मैं यूं, बिना ब्रा के, नाइटी पहने नहीं आ सकती थी। मैंने बाहर आकर उसे देखा। वह पेट के बल सो रहा था, चादर से उसकी आधी नंगी पीठ दिखाई दे रही थी। वह बॉक्सर पहनकर सोया था और उसकी जींस-शर्ट बाजू की कुर्सी पर, करीने से तहाकर रखी हुई थी। उसके सलीके पर मैं मुस्कुरा दी। वह यकीनन गुड बॉय था!

मैंने उसकी कॉफी बनाई और आराम से उसे जगाया।

‘अनि... अनि। उठो और दुनिया पर छा जाओ,’ मैंने उसे हल्के से थपकाते हुए उठाया, और कॉफी सेंटर टेबल पर रख दी।

‘क्या बक...’ कहते हुए वह चौंककर उठ बैठा।

मेरे चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान थी।

‘सो सॉरी, तुम्हें कॉफी चाहिए थी न। मैं तुम्हें यूं चौंकाना नहीं चाहती थी,’ मैंने कहा।

उसे ये याद करने में कुछ पल लगे कि वो बिना कमीज के बैठा था।

‘निधि... तुमने तो मुझे डरा दिया। क्या मैं अपनी शर्ट पहन सकता हूं?’ उसने पूछा।

‘हे ऐसा तो नहीं है कि मैंने पहले तुम्हें ऐसे नहीं देखा, और पता है तुम्हारी बॉडी में छोटे-छोटे बदलाव भी नजर आ रहे हैं। तुम अब फिट होते जा रहे हो। मैं मजाक नहीं कर रही। तुम्हारी फोटो खींचकर दिखाऊं?’

‘दफा हो जाओ यहां से, और मेरी कॉफी मुझे दे दो,’ उसने चादर ऊपर अपनी छाती तक खींचते हुए कहा।

मैं अब अपनी हंसी नहीं रोक पा रही थी।

‘अनि, तुम बहुत शर्मीले हो!’

‘निधि, तुम बहुत बेशर्म हो!’

‘अनि, तुम कितने प्यारे हो।’

‘निधि, तुम कितनी शैतान हो।’

‘अनि, तुम एक गुड बॉय हो, और इस कॉफी के हकदार भी।’

वो खुशी से हंसा। ‘वो तो मैं हूं। मैं दो हॉट लड़कियों के साथ था, जो मेरे साथ ट्रिपल सैक्स चाहती थी लेकिन फिर भी मैंने उस ऑफर का फायदा नहीं उठाया। मैं पूरा पागल हूं।’

‘क्या?’

‘हां—जब मैं उन्हें लैट में छोड़ने गया। तृष ने ऑफर दिया था।’

‘तुम मजाक कर रहे हो!’

‘नहीं! तृष ऐसी ही है; नशे में वो बहुत वाइल्ड हो जाती है। और उसकी दोस्त भी चालू थी।’

‘ओह! हे भगवान। तो तुमने ऑफर लिया क्यों नहीं?’

‘क्योंकि तुम नीचे इंतजार कर रही थीं न, और ट्रिपल में कोई दो-एक घंटे तो लगते न। नहीं तो मैं पक्का ऑफर ले लेता। तुमने मेरे मौके पर पानी फेर दिया,’ उसने कहा और फिर मेरे चेहरे के भाव देखकर हंस दिया।

‘हाहा—पकड़ी गई न? अपना चेहरा तो देखो!’ वो हंसा।

‘इडियट,’ मैंने कहा और उस पर कुशन फेंक मारा, जिससे वो झुककर बचा।

‘कम ऑन, निधि। तुम तो मुझे जानती हो। क्या मैं ऐसा आदमी लगता हूं जो धुत्त महिलाओं का फायदा उठाए? खैर, अब मुझे जाना होगा। क्या तुम... मैं कपड़े पहनना चाहता हूं,’ उसने कहा।

तब मुझे समझ आया वो मेरा कमरे से जाने का इंतजार कर रहा था, ताकि अपने कपड़े पहन सके। और उसे ये कहने में झिझक हो रही थी। कितना शर्मीला था!

‘जरूर,’ मैंने कहा और अपने बेडरूम में चली गई।

‘थैंक्यू,’ उसने कहा और एक मिनट बाद आवाज आई, ‘ओके, अब तुम बाहर आ सकती हो, मैंने कपड़े पहन लिए।’

अनि चादर तह कर रहा था; उसने काउच पीछे करने में मेरी मदद की, और फिर हमने सेंटर टेबल को वहीं लगा दिया, जहां वो पहले थी। मैंने उससे नाश्ते के लिए पूछा, और उसने कहा कि ऑफर तो अच्छा है, लेकिन उसके लिए बेहतर होगा कि वो अपने घर जाकर काम खत्म कर ले। उसे एक प्रेजेंटेशन पर काम करना था, और उसके लिए उसे अपने लैपटॉप की जरूरत थी।

‘ओके—अपनी डाइट, एक्सरसाइज और फूड डायरी मत भूलना, ओके?’

‘यस, मैम। मैं आपको रिपोर्टिंग करता रहूंगा।’

अनि के जाने के बाद, मैं अपनी बालकनी में बैठकर सोच रही थी कि वो कितना अच्छा इंसान है। मेरा फोन बजा, तारा कॉल कर रही थीं।

‘हे तारा, तुम कैसी हो?’ मैंने कहा।

‘हे, सनशाइन। तुम बड़ी खुश सुनाई पड़ रही हो। क्या चल रहा है?’ उन्होंने पूछा।

‘कुछ नहीं।’

‘कम ऑन, निधि। मुझे पता है कुछ पक रहा है। पिछली रात मजेदार रही न? मैं बता सकती हूं,’ उन्होंने गुनगुनाते हुए से कहा।

ये कितना गलत था!

‘दरअसल, पिछली रात मेरी मनोज से लड़ाई हो गई।’

‘ओह नो, क्यों?’

‘वही पुरानी बात। वो शादी करना चाहता है, मैंने मना कर दिया।’

‘ओह नो। देखो—क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारे डैड और मैं उससे बात करें?’

‘और क्या कहोगे? अगर मैं उसे नहीं समझा पा रही हूं, तो आप लोग क्या समझाओगे?’

‘हम दो दिन के लिए बंगलौर आ रहे हैं। मैंने तुम्हें यही बताने के लिए फोन किया था।’

‘ओह! बढ़िया है। मेरे साथ ही रुकना।’

‘तुम्हें तो अपने डैड की आदत पता है न—उन्हें अपना ऐशो-आराम चाहिए। हम ओबरॉय में रुकेंगे। हमारे साथ मंडे को डिनर करना?’

‘ओके, पक्का। मैं खुद को फ्री रखूंगी।’

‘अपना ध्यान रखना, सनशाइन। लव यू, बाय!’

‘बाय तारा, अपना ध्यान रखना।’

तभी इंटरकॉम बजा और सिक्योरिटी गार्ड ने बताया कि कोई डिलीवरी मैन मेरे लिए पार्सल लेकर आया था। मैं हैरान थी कि इतनी सुबह किसने मेरे लिए पार्सल भेजा होगा। मैंने उसे अंदर भेजने को कहा।

दरवाजे की घंटी बजने पर मैंने दरवाजा खोला। बाहर फूलों का गुलदस्ता और एक संदेश लिए एक आदमी खड़ा था। मनोज के मन की बात एक फूलों वाले के हाथ से लिखी होना थोड़ा अजीब था।

‘मुझे माफ़ कर दो, डार्लिंग। ये सब इसलिए हो जाता है, क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। आई एम सॉरी,’ उस पर लिखा था। मैंने आदमी को धन्यवाद कहकर उसकी स्लिप पर साइन कर दिया।

फिर मैंने फूलों को अपनी डाइनिंग टेबल के बीच में रख दिया।

मैंने अपने हाथ का निशान देखा। वो अब बैंगनी हो चला था।

फिर मैंने फूलों को देखा—खूबसूरत ऑर्किड। खास। महंगे। सुंदर।

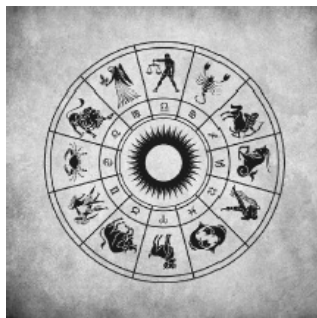
मैंने कुछ देर उन्हें देखा। फिर अपना फोन निकालकर टाइप किया, ‘फूलों के लिए शुक्रिया। उनका रंग मेरी चोट से मैच कर रहा है।’

मैंने बैठकर कुछ देर अपने टाइप किए हुए मैसेज को घूरा। मेरा एक मन उसे तकलीफ पहुंचाना चाहता था। उसे ये समझाना कि दर्द होने पर कैसा लगता है। दूसरा मन कह रहा था जाने दे। वो माफी तो मांग रहा है।

हालांकि मैं अभी भी नाराज थी।

कुछ देर बाद, मैंने दूसरी लाइन डिलीट कर दी।

और फिर सेंड बटन दबा दिया।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

अगर आप अपने काम को योजनाबद्ध तरीकों से नहीं करोगे, तो किसी करीबी रिश्ते में गलतफहमियां पैदा कर लगे। चेतावनी ही बचाव है। सोच समझकर कदम रखो। अचानक छुट्टियों की योजना बन सकती है।

17

अनिकेत

निधि सच में बहुत अच्छी इंसान थी। मुझे अपने घर सोने देकर उसने सच में मेरी बहुत मदद की थी। तृष और अनन्या से मिलने के बाद मैं बस आराम करना चाहता था। निधि का अपने घर सोने देने का सुझाव सच में उस समय बहुत बड़ी नेमत था। इतना कुछ होने के बाद मैं अपने घर आने की परेशानी नहीं उठाना चाहता था। और, सच में, उसकी कॉफी तो कमाल की थी!

मैंने उसके घर से अपने घर की कैब कर ली थी; दिन के समय कैब मिलने में कोई दिक्कत

नहीं हुई थी। रास्ते में मैंने उसे मैसेज किया। 'हे, कॉफी और बेड के लिए थैंक्स। दोनों बहुत अच्छे थे। तुम्हें हॉस्पिटेलिटी बिजनेस में आ जाना चाहिए, तुम यकीनन अपने गेस्ट को स्पेशल फील करवाओगी,' मैंने टाइप किया।

जवाब तुरंत आया: 'सारे गेस्ट नहीं। ये सुविधा कुछ खास के लिए है, जो टैस्ट में पास हो जाएं। मैं इस मामले में बहुत सख्त हूं।'

'जानकर खुशी हुई कि मैं टैस्ट में पास हो गया! आभार। देवी आपको मेरा प्रणाम,' मैंने जवाब दिया, जिसके जवाब में उसने स्माइली भेज दी।

इसके बाद मैंने तृष को मैसेज किया। 'हे, बेब—तुम ठीक तो हो न? आशा हैंगओवर उतना बुरा नहीं रहा हो? खूब पानी पीना और कुछ फ्राइड ऐग खाना। इससे तुम्हें बेहतर महसूस होगा।'

कुछ पल बाद मैंने फिर से मैसेज देखा कि तृष ने अभी तक मैसेज पढ़ा या नहीं। शायद तृष अभी तक सो रही थी। आज हम दोनों को काम पर जाना था, और वह काम पर कभी देर से नहीं पहुंचती थी, तो मैं उम्मीद कर रहा था कि वो जल्दी ही मैसेज देख लेगी।

उसका जवाब तब आया, जब मैं घर में घुस रहा था।

'गॉड, अनि—मेरी हालत बहुत खराब है। और मेरे पास पहनने के लिए भी कुछ नहीं है। पता नहीं मैं क्या करूंगी। पिछली रात बहुत बुरा रहा था क्या?'

बुरा? सिर्फ बुरा कहने से इसे समझाया नहीं जा सकता। उसे तो कुछ याद भी नहीं है। मैं नहीं जानता था कि उसे क्या बताऊं।

तो मैंने उसे फोन कर दिया।

'हे, बेबी,' उसने उनींदी आवाज में, मैं-अभी-बिस्तर-में-ही-हूँ वाले अंदाज में। मुझे उसकी आवाज बहुत सेक्सी लग रही थी।

'हाय, नशीला पांडा,' मैंने लाड़ से कहा।

'मैं पांडा नहीं हूँ,' उसने धीमे से विरोध किया।

'वो तो तुम हो,' मैं मुस्कराया।

'तुम्हारा मतलब मैं मोटी हूँ?'

'हां! तुम और मोटी? तुम प्यारी हो, क्यूट हो और गले लगाने लायक हो।'

'तुम मुझे इतना प्यार क्यों करते हो?'

'तुम सोचती क्यों हो?'

'मैं रात में यहां कैसे पहुंची? तुम मुझे अपने घर क्यों नहीं ले गए? जैसे हम हमेशा करते थे, हम्म? ओह, रुको। तुम तो मुझे छोड़कर भाग गए थे, अनि। तुम मुझे अनन्या और उस बोरिंग सुब्बु के साथ अकेला छोड़ गए थे। तुम्हें कोई फोन आया था—उम्म—हम्म तुम्हारी दोस्त का। तुम मुझे अकेला छोड़कर कैसे जा सकते थे?'

अब वह पूरी तरह जाग गई थी। उसकी आवाज से पता चल रहा था। वह अब तक बिस्तर में बैठ गई होगी। ये उसकी गुस्से वाली आवाज थी।

'तृष, मैं तुम्हारे पीछे घर तक आया था। क्या तुम्हें याद नहीं? मैं चाहता था कि तुम सही-सलामत घर पहुंच जाओ।'

वह कुछ पल खामोश रही।

फिर उसने कहा, 'हां। और तुम्हारी वो दोस्त भी साथ में थी। मुझे याद आया। और उसके

बाद तुमने क्या किया? तुमने उसे उसके घर छोड़ा?’

‘हां, मैंने छोड़ा।’

‘और तुम्हारे लिए उसे घर छोड़ना इतना इम्पोर्टेंट क्यों था? उसका कोई मंगेतर है न?’

‘हां, उसका मंगेतर है। लेकिन मैं नहीं चाहता था कि वो अकेली ड्राइव करके घर जाए। हम उसी की कार में आए थे।’

‘तुम उसकी कार में थे? क्यों?’

‘क्योंकि जब तुम्हारा फोन आया, मैं उसी के घर पर था।’

‘तुम उसके घर में क्या कर रहे थे, अनि? मैंने तुम्हें फोन किया क्योंकि मुझे तुम्हारी जरूरत थी। मैंने सोचा मैं तुम पर डिपेंड कर सकती हूं।’

‘माई बेबी—जैसे ही तुमने फोन किया मैं आया न। पूरे शहर में गाड़ी चलाते हुए मैंने तुम्हारी कार का पीछा किया। मैं तुम्हें सुरक्षित देखना चाहता था। इससे ज्यादा मैं क्या कर सकता था?’

‘कम ऑन, अनि—पहली बात तो तुम्हें उसके घर जाना ही नहीं चाहिए था। क्या बकवास है? तुम मुझे यूँ छोड़कर उसके घर चले गए? फिर तुमने उसकी गाड़ी चलाई? और रुको, उसके बाद वापस उसे घर छोड़ने गए? ये कहानी मुझे इतनी नकली क्यों लग रही है?’

‘नकली कहानी से तुम्हारा क्या मतलब? यही सच है! मैंने तुम्हारी कार का पीछा किया और वो मेरे साथ थी। फिर मैं वापस उसके घर गया।’

‘फिर क्या हुआ?’

‘फिर क्या हुआ से तुम्हारा क्या मतलब?’

‘तुम जानते हो, अनि, मैं क्या पूछ रही हूं। उसके घर जाने के बाद क्या हुआ?’

‘कुछ नहीं! फिर कोई कैब नहीं मिल रही थी, तो मैं उसके अपार्टमेंट में ही रुक गया। मैं अभी अपने घर पहुंचा हूं।’

‘तुमने रात उसके अपार्टमेंट में बिताई?’ उसकी आवाज अब और तीखी हो गई थी। रूखी। नियंत्रित।

‘तृष-हां। मैं ड्रॉइंग रूम में सोया था। और वो बेडरूम में।’

‘क्या बकवास है, अनि? तुम मुझे छोड़कर उसे लेने चले गए, और फिर तुमने रात भी उसके घर में बिताई? और तुम उम्मीद कर रहे हो कि मैं मान लूं कि वहां कुछ नहीं हुआ?’ वह गुस्से से फट पड़ी थी।

‘ऐसा कुछ नहीं है, तृष। तुम्हें मेरा यकीन करना होगा। मैं तुमसे कुछ नहीं छिपा रहा हूं।’

‘भाड़ में जाओ, अनि,’ उसने कहकर फोन काट दिया।

क्या बदतमीजी है। मैंने उसे वापस फोन किया। उसने फोन काट दिया। मैंने फिर से नंबर मिलाया, उसने फिर से काट दिया।

‘बचपना मत करो, फोन उठाओ,’ मैंने उसे मैसेज किया।

‘भाड़ में जाओ... दफा हो जाओ,’ उसका जवाब आया।

वो इतनी बेवकूफ कैसे हो सकती है? वो ऐसे बिना बात के बचपना कैसे कर सकती है? क्या हालात हैं।

‘अआाह,’ मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था, मुंह से एक शब्द तक नहीं निकल पा रहा था। मैंने गुस्से में गंदे कपड़ों की टोकरी पर लात मारी, जिसमें लटकती हुई एक शर्ट को लात लगी। वह

शर्ट दूर पंखे पर जाकर लटक गई।

मैंने पंखा खोल दिया और वो फड़-फड़ घूमने लगी, फिर वो दूर फर्श पर जाकर गिरी। अब तक वो बहुत गंदी हो गई थी।

तृष सच में बहुत बेवकूफ है। और हद तक जलनखोर।

मैंने फोन उठाया और निधि को फोन किया।

‘हे,’ उसने कहा।

‘हे, तुम फ्री हो? पांच मिनट बात कर सकती हो?’

‘हां।’

‘निधि, पता है क्या। तृष मुझ पर भड़क रही है। जो मैंने पिछली रात किया। मतलब, तुम मेरे साथ थी न।’

‘वो इस पर भड़क क्यों रही है?’

‘क्योंकि मैंने तुम्हारे घर पर रात बिताई। उसे लगता है कि हमारे बीच कुछ चल रहा है इसलिए कल रात मैं तुम्हें लेने आया। कितनी गंदी सोच है ये?’

‘उम्म...’ उसने कुछ सोचते हुए कहा।

‘क्या? तुम कुछ नहीं कहने वाली? क्या ये पागलपन नहीं है?’

‘अनि, मुझे लगता है किसी संबंध में जलन का होना उतना असामान्य नहीं होता। प्यार के साथ ही अधिकार की भावना भी आ जाती है, जिसे तुम्हें मानना ही पड़ता है। तुम उसे प्यार करते हो न?’

‘बेशक।’

‘तो उसे उसी की भाषा में ये समझाओ न?’

‘कैसे?’

‘उसकी लिस्ट को याद करो?’

‘वो मैं कैसे भूल सकता हूं?’

‘उसे सरप्राइज देने वाला पॉइंट याद है? तुम उसके लिए कोई वैकेशन क्यों नहीं प्लान करते? वीकेंड पर कहीं बाहर जाने का प्रोग्राम। मुझे यकीन है कि उसे ये पसंद आएगा।’

‘अभी तो मैं उसके साथ कोई प्लान बनाने के मूड में नहीं हूं। लेकिन हां, तुम्हारी बात में पॉइंट है।’

‘शांत हो जाओ, अनि। इसे भूल जाओ। किसी भी लड़की को अच्छा नहीं लगेगा कि उसका बॉयफ्रेंड किसी दूसरी लड़की के घर रात बिताए, जहां वो दोनों अकेले हों। इससे शक तो होता ही है न। तुम्हें प्यार से उसे दूर करना होगा।’

मैं एक पल के लिए चुप रहा। ‘हां, तुम सही कह रही हो,’ मैंने कहा। फिर मुझे याद आया कि उसकी भी तो अपने मंगेतर से लड़ाई हुई थी और मैं हूं कि बस अपनी-अपनी गाए जा रहा हूं।

‘मनोज से बात हुई? क्या उसने माफी मांगी?’ मैंने पूछा।

‘हां बात हुई थी, उसने मेरे लिए फूल भी भिजवाए।’

‘ओह गुड। तुम्हें फूल पसंद आए?’

‘पहले बदतमीजी करो और फिर फूल भेजो, इसका क्या फायदा? पिछली रात वो मुझे

छोड़ने नहीं आया न। क्या उसे मेरी सुरक्षा की चिंता नहीं होनी चाहिए? अगर तुम मुझे लेने नहीं आते, तो मैं क्या करती?’

‘शायद वो भी गुस्से में होगा।’

‘हां, यकीनन वो गुस्सा होगा। फिर भी उसे माफ करने में मुझे समय लगेगा। फूल भेजने से मेरे लिए बात खत्म नहीं होती। वैसे भी ऐसा उसने मेरे साथ दूसरी बार किया है।’

‘मैं बस कल्पना ही कर सकता हूं कि तुम पर क्या गुजर रही होगी। तुम उसे कैसे माफ कर पाओगी?’

‘तुम मुझसे ये सब क्यों पूछ रहे हो, अनि?’

‘मैं बस जानना चाहता हूं! जब लड़के ने सॉरी कह दिया हो। फूल भी भेज दिए हों। तो ऐसे में मैं एक लड़की का नजरिया समझने की कोशिश कर रहा हूं।’

‘मैं चाहती हूं कि वो ये शादी को लेकर मुझ पर दबाव डालना बंद कर दे। शायद अभी मेरे लिए सबसे ज्यादा जरूरी यही है।’

मैं निधि की बात समझ रहा था। उसे उससे नाराज होने का पूरा हक था।

‘ऐसे रिश्तों से तो दोस्ती कहीं ज्यादा बेहतर होती है। रिश्तों में हर बात इतनी मुश्किल क्यों होती है?’

‘हम्म मुश्किलें तो होती हैं। लेकिन उनमें प्यार ही तो छिपा होता है।’

उसकी बातों से पता चल रहा था कि वो खुश नहीं थी। लेकिन मैं इस बात को पकड़ नहीं सकता था। इस पूरे मसले में कुछ तो झोल था। लेकिन मैं इसे सही-सही नहीं उभार सकता था। तो मैंने इसमें ज्यादा नहीं पड़ने का फैसला किया।

उसने मुझसे कहा कि मैं अपनी डाइट पर कायम रहूं और समय-समय पर उसे बताता रहूं। फिर मैंने फोन रख दिया और काम पर चला गया।

जब मैं ऑफिस पहुंचा तो सुब्बु के चेहरे पर अफसोस के भाव थे, और इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता सुब्बु ने अपने हाथ हवा में फेंकते हुए कहा, ‘सॉरी यार, रन टाइम एरर आ गया था!’

‘नहीं, ये लॉजिक एरर था,’ मैंने विरोध किया।

‘तुम्हें मुझे बताना चाहिए था कि तृष और एल्कोहल का मेल सही नहीं था। मैं कैसे जान पाता?’

‘ओके, उन्होंने मेरी उम्मीद से कुछ ज्यादा ही पी ली थी। ये तो है। लेकिन फिर नशे में धुत्त दो लड़कियों को अकेले कैब में भेजने का क्या मतलब था? क्या तुम्हारा दिमाग खराब है?’

‘अनन्या ठीक लग रही थी।’

‘खैर, मैंने उनके घर तक उनका पीछा किया। तो अब सब ठीक है।’

‘क्या? तुम इतनी दूर गए?’

‘हां।’

‘गॉड, इसलिए तो मैं रिश्तों के पचड़े में नहीं पड़ना चाहता। मतलब हद है,’ वह कहकर अपने क्यूबिकल की तरफ बढ़ गया।

मैं मुस्कुराया और ये सोचते हुए बढ़ गया कि अंगूर खट्टे हैं यार। फिर मैं अपने क्यूबिकल में आया और बंगलौर के पास घूमने की कोई बढ़िया सी जगह ढूंढ़ने लगा। दस मिनट में ही मैंने मन

बना लिया। हम पॉन्डिचेरी जाएंगे! मुझे वो रिजॉर्ट बहुत पसंद आया। मैंने जल्दी से रिव्यू पढ़ लिए और वो मेरी उम्मीद से बेहतर ही निकला। वो बीच के पास अनोखा ईको-रिजोर्ट था। उसमें पैतालीस खास तरह से डिजाइन किए हुए कॉटजे थे, जो अलग-अलग पारंपरिक तरीकों से तैयार किए गए थे और पैतीस एकड़ में फैले थे। हर कॉटेज की थीम अलग थी। रिजोर्ट में ऑर्गेनिक फूड और नैचुरल लीविंग को बढ़ावा दिया जाता था। वहां पर एक आर्टिस्ट-इन-रेजिडेंस प्रोग्राम भी होता था, जहां वे दुनियाभर के कलाकारों की मेजबानी करके संस्कृति और कला को प्रोत्साहित करते थे। मैंने उन्हें फोन करके अपना रिजर्वेशन करवा लिया।

मैंने एक सुंदर चेटीनाद-स्टाइल कॉटेज को चुना। वहां के स्टाफ ने मुझे बताया कि वहां मेहमानों के लिए हर वीकेंड पर कोई खास एक्टिविटी भी आयोजित की जाती है। मैंने उनसे पूछा कि इस वीकेंड के लिए क्या योजना है, तो उन्होंने बताया कि ग्लास-ब्लोअर है और एक जाने-माने ज्योतिषी से भी बात करने का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए कोई अतिरिक्त फीस नहीं है, लेकिन अगर मैं जाना चाहता हूं, तो मुझे पहले से अपना नाम रजिस्टर करवाना होगा, जिससे वो बैठने और स्नैक्स आदि का बंदोबस्त कर सकें। मैंने उसमें अपना नाम लिखवा दिया।

फिर मैंने तृष को मैसेज करके पूछा कि क्या वो ऑफिस पहुंच गई थी, और क्या वो साढ़े ग्यारह बजे कॉफी पर मिल पाएंगी या जब भी वो चाहे।

‘ये क्या है? माफी मांगने का आइडिया?’ उसका मैसेज आया।

‘इसका मतलब हां है या ना?’ मैंने टाइप किया। फिर मैंने उसमें एक हार्ट और किस की इमोजी जोड़कर सेंड कर दिया।

‘ठीक है,’ उसने कहा।

मेरी नखरीली तृष। मैं जानता हूं कि वो अभी भी मुझसे गुस्सा होगी। लि कन इस पॉन्डिचेरी के सरप्राइज से उसका मूड बदल जाएगा। वह जाने से खुश होगी। मैं उसे अच्छी तरह जानता था। बताते वक्त उसके चेहरे की खुशी मैं देखना चाहता था।

वह साढ़े ग्यारह बजे मुझे ऑफिस कैटीन में मिली। उसने क्रीम कलर की सिल्क शर्ट, टाइट ब्लैक ट्राउजर और हील पहनी हुई थीं। जब भी मैं उसे देखता मेरे दिल से यही निकलता कि वो कितनी खूबसूरत थी।

‘तृष, तुम कमाल लग रही हो,’ मैंने कहा जब हम दोनों बैठ गए।

‘मैंने घर जाकर कपड़े बदले, और ऑफिस आने में जरा देर हो गई,’ उसने कहा।

‘मेरे पास तुम्हारे लिए एक सरप्राइज है,’ मैंने उसे बताया।

‘क्या?’ उसने पूछा।

‘अगर मैंने बता दिया तो वो सरप्राइज नहीं रहेगा, है न?’

‘कम से कम एक हिंट तो दो,’ उसने कहा, और उसकी आंखें चमक रही थीं। ऐसे मामलों में तृष बिल्कुल बच्ची बन जाती थी।

‘वेकेशन! वीकेंड मस्ती। बस हम दोनों।’

‘नहीं!!’

‘हां!’

‘कहां?’

‘कहीं बीच पर! तो अपने बीच वाले कपड़े तैयार कर लेना।’

‘नाइस, अनि! ये तो बढ़िया है। मुझे तुमसे इतने बड़े सरप्राइज की उम्मीद नहीं थी।’ वह अब मुस्कुरा रही थी। कितनी कातिलाना मुस्कान थी वो।

उसे खुश देखकर मुझे अच्छा लगा। निधि सही कह रही थी। वेकेशन का आइडिया कमाल का था। फिर मुझे याद आया कि मुझे तो पॉटरी क्लास में जाना था। ओ शिट! मुझे वो छोड़नी पड़ेगी। लेकिन मैंने तय किया कि उसके बारे में तृष को कुछ न बताना ही बेहतर होगा। वह अब खुश थी और मैं ऐसा कुछ नहीं कहना चाहता था, जिससे वो परेशान हो जाए। हमने कॉफी पी और उसने अपने काम और किसी इम्पोर्टेंट क्लाइंट से मिलने के बारे में बताया।

जब मैं वापस अपने क्यूबिकल में आया, तो मैंने निधि को मैसेज किया कि वेकेशन का आइडिया कमाल का था।

मुझे पता है। तभी तो मैंने वो सुझाया। याद है न मैं सिर्फ तुम्हारी फिटनेस कोच ही नहीं हूँ? मैं तुम्हारी रिलेशनशिप कोच भी हूँ। अब शायद तुम्हें मेरी फीस देनी चाहिए, उसने मैसेज किया।

तुम्हारे फंसने पर तुम्हें आधी रात को लेने आना क्या काफी नहीं था? मैंने वापस मैसेज किया।

वो तो है, उसने टाइप किया, और फिर दूसरे मैसेज में उसने बताया कि वो मेरी इस मिस होने वाली पॉटरी क्लास के लिए दूसरा बंदोबस्त कर देगी।

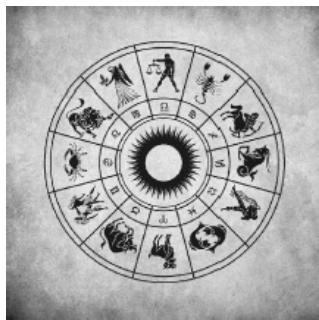
मैं मुस्कुराया और सुबह ऑफिस आते हुए सुने किसी गाने की धुन गुनगुनाने लगा, जिसकी वजह से सुब्बु ने क्यूबिकल के ऊपर से झाँककर कहा, ‘आज कोई बड़ा चहक रहा है। क्या खुशखबरी है? बॉस ने तुम्हारी तारीफ की?’

‘और भी बढ़िया। मैं सुपर बॉस के साथ वेकेशन पर जा रहा हूँ।’

‘क्या?! क्या तुम अमित के साथ वेकेशन पर जा रहे हो?’ वह मुंह दबाकर हंसने लगा।

‘तृष और मैं इस वीकेंड पॉन्डिचेरी जा रहे हैं।’

‘ओह नाइस! क्या मैं भी आ सकता हूँ? तुम चाहो तो हम अनन्या को भी बुला लेंगे,’ उसने कहा और हम दोनों हंस दिए।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

...आपको चुप रहने की सलाह दी जाती है। आपको कुछ कड़वे सचों का सामना करना पड़ सकता है जिसके कारण कुछ दुखद घटनाएं भी झेलनी पड़ेंगी। चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में ही स्वीकार करो नहीं तो आपके मन का सुख-चैन छिन सकता है।

18

निधि

मेरा मैसेज मिलते ही मनोज ने मुझे फोन किया। वो शायद मैसेज में मेरी रूखी टोन भांप गया था।

‘हे, आई एम सॉरी, ओके? मैं सच में शर्मिंदा हूं। तुम मुझसे क्या चाहती हो? और ज्यादा गिड़गिड़ाऊं?’

मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूं। उसकी माफी में भी नाराजगी थी। लेकिन अगर मैंने इसकी तरफ इशारा किया तो एक कभी न खत्म होने वाली जंग छिड़ जाएगी।

‘ठीक है,’ मैंने कहा, हालांकि मैं जानती थी कि अभी बात नहीं संभलने वाली थी। मैं बस अभी के लिए इस पर पर्दा डाल रही थी। मैं उससे पूछना चाहती थी कि वो मेरे पीछे क्यों नहीं आया। मैं इंतजार कर रही थी कि वो मुझसे पूछे कि मैं घर कैसे गई। लेकिन उसने नहीं पूछा।

मैंने उसे डैड और तारा के आने के बारे में बताया और कि उन्होंने मुझे डिनर के लिए बुलाया है। मैंने उसे बताया कि वो भी हमारे साथ आ सकता है। उसने कहा कि वो अभी अपने शेड्यूल में से चैक करके बताएगा। फिर उसने वापस लाइन पर आकर कहा, ‘सॉरी बेबी, मैं आता मगर रात नौ बजे एक जरूरी फोन आना है। वो फोन यूएस के बॉस का है, और मुझे उन्हें रिपोर्ट करना होगा। मैं ये फोन नहीं छोड़ सकता। उम्मीद है तुम मजे करोगी,’ उसने कहा।

‘कोई बात नहीं। मैं हमेशा उन लोगों के साथ मजे करती हूं,’ मैंने कहा।

मनोज ने कहा कि वो मुझसे डिनर पर मिलना चाहता है। उसने कहा कि इस बार वो थाई रेस्टोरेंट में नहीं जाएगा और रेस्टोरेंट मेरी पसंद का होगा। लेकिन मुझे बहुत से काम खत्म करने थे। मुझे लिखना था और एक रियल स्टेट ब्रोकर के लिए नया ब्रोशर भी तैयार करना था। दो दूसरे पीस पर भी काम करना था। तो मैंने मनोज से कह दिया कि मैं नहीं आ पाऊंगी। उसने कहा, ‘कोई बात नहीं, कल का क्या प्रोग्राम है?’

‘मनोज, जब डैड और तारा आएंगे मैं तब बाहर खाऊंगी। मुझे अपनी डाइट पर भी तो नजर रखनी है।’

‘तो कुछ हेल्दी ही मंगवा लेंगे न।’

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितना हेल्दी मंगवा रहे हैं। रेस्टोरेंट में जाने का मतलब ओवर इटिंग हो ही जाती है। देखो, अगले सप्ताह मिलते हैं।’

‘मैं जानता हूं तुम अभी भी मुझसे नाराज हो, निधि। प्लीज... मैंने माफी भी तो मांगी है।’

मनोज सही कह रहा था। वह मेरे न आने की बात समझ गया था। मैं अभी भी उससे नाराज थी। उस लड़ाई के बाद मैं इतनी जल्दी उससे नहीं मिलना चाहती थी। मुझे कुछ समय चाहिए था।

‘मनोज, इसे रहने दो और वीकेंड पर मिलते हैं, ओके?’ मैंने उससे कहा।

आखिरकार वो समझ गया और मुझे शुभकामनाएं देकर फोन काट दिया।

मुझे अभी अपना दिमाग साफ करना था। तो मैं अपने ब्लॉग की तरफ मुड़ गई।

ए पॉट ऑफ क्ले टैट होल्ड्स गोल्ड

जैसा कि मैंने वादा किया था, मैं अपनी नई पोस्ट के साथ वापस आ गई और इस बार दो पोस्ट के बीच गैप भी ज्यादा लंबा नहीं हुआ है। मैं जरा कंटेंट राइटिंग में बिजी थी। इन दिनों में रिश्तों के बारे में भी सोच रही थी, खासकर किसी जोड़े के आपसी विवाद सुलझाने के मसले को। मेरा मतलब, विवाद होना तो वाजिब है। अगर आप काफी समय से किसी के साथ हो, तो एक ऐसा पॉइंट आता है कि आप कुछ ऐसा करना चाहे, जो दूसरे को ना पसंद हो।

तब आप समझौता कैसे करेंगे? आप अपनी इच्छाओं का गला घोटकर कब तक सामने

वाले की ख्वाहिशें पूरी करते रहेंगे?

ये ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब आसानी से नहीं दिए जा सकते। ये हर जोड़े का अपना निर्णय होता है कि वो सामने वाले की खुशी के लिए किस हद तक जाने को तैयार है।

और मैं उनके बीच होने वाली लड़ाई, और फिर उसके समाधान के बारे में भी सोच रही थी। लड़ाई के बाद मनाने का यकीनन हर जोड़े का अपना तरीका होता है। उनमें से एक हमेशा आगे बढ़कर माफी मांग लेता होगा। लेकिन क्या एक ही गलती को बार-बार दोहराने पर भी उस माफी को मान लेना सही है? क्या इसका ये मतलब नहीं है कि सामने वाले के मन में आपकी कोई इज्जत नहीं है?

इस बारे में अपने विचार मुझसे साझा करना। मैं जानना चाहूंगी।

ब्लॉगिंग के बारे में जो एक चीज मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगती है वो है इस पर मिलने वाले कमेंट और आगे होने वाली चर्चा। मेरे अपने कुछ पाठक हैं जो पोस्ट पढ़कर अपनी राय व्यक्त करते हैं। इससे मुझे भिन्न नजरियों को जानने का मौका मिलता है। लेकिन आज से ज्यादा मुझे कमेंट का इंतजार कभी नहीं रहा। मैं रियल एस्टेट ब्रोशर के कमेंट पर काम करते हुए बार-बार अपनी पोस्ट पर कमेंट चैक कर रही थी।

तीसरी बार चैक करने पर मुझे दो कमेंट दिखाई दिए।

उनमें से एक कमेंट कह रहा था कि अगर सामने वाला इंसान दिल से माफी मांग रहा हो, तो आपको अतीत को भूलकर आगे बढ़ जाना चाहिए। दूसरा कमेंट 'स्टारी नाइट्स' का था, जिसे देखकर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई। तारा सच में बहुत प्यारी थीं। वो मेरी पोस्ट पढ़कर अपनी राय व्यक्त करती थीं। उन्होंने लिखा कि अगर कोई गलती दोहराई जा रही हो, तो सॉरी बोलना बेकार है। मैं उनकी बात से सहमत थी। दिन खत्म होने तक और कोई कमेंट नहीं आया था।

संडे रात तारा ने मुझे फोन किया।

'हाय, सनशाइन! हम तुम्हारे शहर में हैं! तुम्हारे डैड और मैंने बस अभी चैक इन किया है। तो हम कल मिल रहे हैं न?'

'हां तारा। मैंने खुद को तुम्हारे लिए फ्री रखा है। और मेरी पोस्ट पर तुम्हारा किया कमेंट भी मुझे बहुत पसंद आया,' मैंने कहा।

फिर मैंने उससे पूछा कि वो कल पूरा दिन क्या करने वाली थीं। मैं उम्मीद कर रही थी कि अगर समय मिले तो हम दोनों थोड़ा टाइम साथ बिताएं। लेकिन वो बिजी रहने वाली थीं, क्योंकि डैड की बिजनेस मीटिंग में उनका होना जरूरी था।

पॉन्डिचेरी वीकेंड के बाद अनिकेत की तरफ से भी कोई मैसेज नहीं आया था। मैं जानना चाह रही थी कि उसका ट्रिप कैसा रहा, और डाइट का क्या हाल था, लेकिन तृष के साथ होते हुए मैं सामने से मैसेज करने से बच रही थी। तो मैंने उसकी तरफ से मैसेज का इंतजार करना बेहतर समझा। वह शायद आज वापसी पर होगा, अगर उन्होंने मंडे की छुट्टी लेकर कुछ और टाइम रिजोर्ट में रहने का मन न बना लिया हो तो।

मैं तारा और डैड के साथ होने वाले डिनर का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। मैं ओवरॉय ड्राइव करके गई, जहां तारा और डैड मुझे लॉबी में मिले।

‘हाय, बेबी,’ डैड ने मुझे गले लगाते हुए कहा। डैड सूट और टाई में शानदार लग रहे थे। तारा ने चमकती हुई, टखनों तक की डिजाइनर ड्रेस पहनी हुई थी। उनकी तुलना में मेरी जींस और फैब इंडिया का टॉप बहुत सिंपल लग रहा था।

‘डैड! आपको मुझे बताना चाहिए था, मैं भी ड्रेसअप होकर आती!’ मैंने शिकायत की।

‘आह—हमने एक बड़ी डील की थी और फिर उसके बाद हमें एक सेलिब्रेटी ड्रिंक पर मिलना था। वो अभी कुछ मिनट पहले ही खत्म हुआ और हमें कपड़े बदलने का मौका भी नहीं मिला। इन पर ध्यान मत दो,’ तारा ने कहा।

‘तो तुम कहां खाना चाहोगी? हम होटल के थाई रेस्टोरेंट जा सकते हैं। या उनके पास उत्तर भारतीय और कुछ दूसरे भी विकल्प हैं। और फिर चाइनीज भी है। बताओ,’ डैड ने पूछा।

‘डैड, थाई के अलावा कुछ भी चलेगा! मैं थाई से पक चुकी हूं,’ मैंने कहा।

तारा ने मुझे सवालिया नजरों से देखा और मैंने बताया कि अभी हाल में कई बार थाई फूड खाना पड़ा था। तो हम मल्टी-कुजीन रेस्टोरेंट में गए।

डैड ने अपनी पसंदीदा शैम्पेन क्रुग मंगवाई। मैंने तारा और डैड से पूछा कि उनका बंगलौर तक का सफर कैसा रहा।

‘ओह, मणि के साथ तो सब मक्खन लगता है। हालांकि होसूर के बाद हमें काफी ट्रैफिक भी मिला,’ डैड ने कहा।

शैम्पेन आ गई और डैड ने अपना गिलास उठाया। ‘खुशी और आंतरिक शांति के नाम, हम सबको वो मिले,’ उन्होंने कहा।

‘डैड, आपने फिर से कुंग फू पांडा देखनी शुरू कर दी?’ मैं मुस्कुराई, और वो भी मुस्कुरा दिए।

उनका इस फिल्म से मुझे क्लिप भेजना और उसे देखने को कहना हमारे बीच की एक खास याद थी। उसके बाद हमने कई बार आंतरिक शांति के अलग-अलग रास्तों के बारे में बात की थी, कि उसे दर्द और तड़प से ही पाया जा सकता था, या कोई और बेहतर रास्ता भी था।

‘तो मनोज और तुम्हारे बीच क्या चल रहा है? अब तक कुछ साफ हुआ?’ डैड ने पूछा।

‘नहीं, डैड, कुछ भी नहीं। मैं अभी भी निश्चित नहीं हूं,’ मैंने कहा।

डैड ने सिर हिलाया और शैम्पेन का घूंट भरा। ‘अच्छी है,’ उन्होंने तारीफ करते हुए कहा।

मैंने उन्हें बताया कि मैं ज्यादा नहीं ले सकती, क्योंकि मुझे ड्राइव करके वापस लौटना था।

‘कोई बात नहीं, हम मणि को तुम्हें छोड़ने को बोल देंगे। और तुम्हारी कार भी वापस भिजवा देंगे। किसी के हाथों में गाड़ी तुम्हारे घर भिजवा दूंगा,’ डैड ने कहा।

वो सच में बहुत अच्छे थे। ‘थैंक्स डैड। ये बढ़िया रहेगा,’ मैंने कहा और शैम्पेन का बड़ा घूंट भरा। वो सही कह रहे थे, शैम्पेन कमाल की थी।

हमने डैड के काम के बारे में बात की और अभी हुई डील के बारे में भी, जो उनकी कंपनी को नैक्स्ट लेवल पर लेकर जाने वाली थी। डैड ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके बिजनेस से जुड़ना चाहूंगी, कि मैं उनकी बिजनेस हेड बन सकती हूं। वे जल्द ही बंगलौर में अपनी नई डिवीजन शुरू करने वाले थे, और डैड ने कहा कि वो मैं संभाल सकती थी।

‘डैड, कॉर्पोरेट से मेरा मन भर गया था इसीलिए तो मैंने अपनी जॉब छोड़कर ये काम करना शुरू किया,’ मैंने समझाने की कोशिश की।

‘मुझे लगा कि तुम कुछ दिन आराम करना चाहती हो। तुमने एमबीए किया है, वो भी देश के प्रतिष्ठित संस्थान से,’ डैड ने कहा। मैं समझ सकती थी कि वो मुझे अपने बिजनस से जोड़ना चाहते थे। लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहती थी। मैं खुद को क्रेन और ऑटोमेशन की डील करते हुए नहीं देख सकती थी, जो मेरे डैड की कंपनी करती थी।

तारा मेरी अनिच्छा समझ गई।

‘तुम्हारे पापा किसी भरोसेमंद इंसान को चार्ज देना चाहते हैं, निधि। इसलिए वो तुम्हारे सामने विकल्प रख रहे हैं। तुम्हारे पास भी तो ऐसे काम का अनुभव है। लेकिन अगर तुम नहीं करना चाहती हो, तो हम समझ सकते हैं,’ तारा ने कहा।

‘हां। ये बस सुझाव था,’ डैड ने सहमति जताई।

मैं सीधे-सीधे मना नहीं करना चाहती थी, तो मैंने उनसे कहा कि मैं सोचकर बताऊंगी। मैंने टॉपिक बदल दिया और उन्हें बताने लगी कि नए बैच को पॉटरी सिखाने में मुझे कितना मजा आ रहा था। मैंने उन्हें बताया कि मेरा एक नया दोस्त भी बना था, जिसकी मदद अब मैं वजन कम करने में भी कर रही थी। तारा ने मुझसे उसके बारे में पूछा, और मैं अनि के बारे में बहुत सारी बातें बताने लगी।

तारा ने हां में सिर हिलाया, उनके चेहरे पर शरारती मुस्कान थी।

‘क्या?’ मैंने पूछा। ‘अनिकेत सिर्फ दोस्त है, तारा,’ मैंने कहा।

‘पता है, पता है,’ उन्होंने कहा और फिर से मुस्कुरा दीं। फिर उन्होंने जोड़ा, ‘पता चल रहा है कि तुम्हें उसका साथ कितना अच्छा लग रहा है। पता है मनोज के बारे में बात करते हुए तुम्हारे चेहरे पर ये चमक नहीं आती।’

‘ये बस इसलिए कि वो मेरे काम में मनोज से ज्यादा दिलचस्पी लेता है और वो मेरी पॉटरी क्लास में भी आ रहा है।’

‘हम्म...’ तारा ने कहा। फिर आगे जोड़ा कि अच्छे दोस्तों का होना बहुत जरूरी होता है। ‘दोस्ती जिंदगी का सबसे अच्छा उपहार है, निधि, और दोस्त हम खुद अपनी मर्जी से चुनते हैं। दोस्त हमारा खुद को दिया तोहफा है,’ उन्होंने कहा और मैंने सिर हिलाया।

अब तक डैड अपना शैम्पेन का पहला गिलास खत्म कर, दूसरा भी आधा पी चुके थे। वो बड़े प्यार से मुझे देख रहे थे। मैं उन नजरों को जानती थी। ‘निधि, तुम बिल्कुल अपनी मां के जैसी दिखती हो। तुम उसकी धुंधली सी परछाई हो।’

मैं जान गई थी अब डैड को नशा हो गया था। वह हमेशा नशे में मेरी मां के बारे में बात करने लगते थे।

‘तुम्हारी मां एक अच्छी महिला थीं,’ उन्होंने कहा।

मैं पहले भी कई बार ये सुन चुकी थी। मैंने बात का टॉपिक बदलने की कोशिश की, लेकिन डैड तो वहीं अटक गए थे।

‘बात ये है, निधि, तुम्हें जिंदगी सिर्फ एक बार मिलती है। और हम सब खुशी के हकदार हैं। हममें से ज्यादातर उस लकीर, रूटीन, एकरसता को तोड़ने से डरते हैं, जिसके हम आदी हो जाते हैं। तुम्हारी मां के साथ मैंने भी यही किया। सत्रह सालों तक मैं एक औसत जिंदगी जीता रहा। मैं बस एडजस्ट और कॉम्प्रोमाइज कर रहा था, और सोच रहा था कि मैं खुश हूं।’

‘डैड, बस,’ मैंने कहा।

‘नहीं, अभी बस नहीं, निधि। तुम्हें सुनना पड़ेगा। क्या तुम्हें वो सारी छुट्टियां याद हैं, जो तुम्हारे बचपन में हमने बिताई थीं? मुझे वो सारी नापसंद थीं। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारी मां भी खुश थीं। लेकिन हम दोनों ही भले के चलते कह नहीं पा रहे थे। काश उसने कभी कहा होता कि वो चाहती क्या थी। जब भी मैं उससे उसकी मर्जी पूछता, उसका जवाब होता, “जिसमें आपकी खुशी हो”। बात ये है, निधि, तुम्हें पता होना चाहिए किस चीज में तुम्हारी खुशी है। फिर तुम्हें वही करना चाहिए। मैंने ये कभी तुम्हारी माँ के साथ नहीं किया। तुम्हें वो घर याद है, जिसमें हम रहते थे?’

मैंने हां में सिर हिलाया।

‘मुझे कभी ऐसा लगा ही नहीं कि वो घर मेरा भी था। वो ऐसा था, जैसे बिना आत्मा का हो। जैसे मैंने कभी उसकी परवाह की ही न हो। इसके बदले, वो घर जो मैंने तारा के साथ बनाया— वो ऐसा घर है, जहां वापसी का मुझे इंतजार रहता है। जैसे जन्नत हो। वहां मुझे शांति महसूस होती है। और मैं वहां की सजावट या आराम की बात नहीं कर रहा।’

मैं उनकी बात पूरी तरह समझ गई थी। और मैं जानती थी कि वो जो कह रहे थे, सच था। मुझे दुख हुआ। अब अतीत के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं था और जब वो मेरी माँ के बारे में ऐसा कहते थे, तो वो मेरे मन में बनी हैप्पी फैमिली की तस्वीर तोड़ देते थे। मुझे भी वो छुट्टियां याद थीं, और मुझे लगता था हम सब बहुत खुश थे। लेकिन यकीनन डैड खुश नहीं थे। और बात ये है कि वो इस सबके बारे में इतने संजीदा थे कि मेरे पास उनकी बात सुनने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

‘इस मनोज से शादी मत करो। वो तुम्हारे दिल को खुश नहीं कर पा रहा। क्या वो ऐसा करता है, निधि?’ डैड ने मुझसे पूछा।

मैंने उससे हुई अपनी आखरी बातचीत को याद किया। उन फूलों के बारे में सोचा जो उसने मुझे भेजे थे। मैंने सोचा कि वो मेरे काम के बारे में कितना कम जानता था। उसने तो मेरा पॉटरी स्टूडियो भी नहीं देखा था।

‘मुझे ऐसा नहीं लगता, डैड। एक समय मुझे लगता था कि हम एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। उस समय हम खुश थे। लेकिन अब चीजें बदल गई हैं। अब, हमारे बीच एक दूरी महसूस होती है। अब वह मेरे दिल को नहीं धड़का पाता,’ मैंने जवाब दिया।

‘एक अच्छा जीवन साथी आपको और बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अगर आप दोनों में ये तालमेल नहीं है, तो शादी करने का कोई मतलब नहीं रह जाता। ऐसा करके तुम न सिर्फ अपनी जिंदगी, बल्कि उसकी जिंदगी भी बर्बाद कर देते हो।’

मैंने तारा को भी हां में सिर हिलाते देखा। ‘मैं पूरी तरह सहमत हूं। ऐसी शादी कोई मायने नहीं रखती। और किस्मत से तुम्हारे डैड और मुझे तुम्हारे बत्तीस साल की उम्र में अविवाहित रहने से कोई दिक्कत भी नहीं है। तो तुम्हें जल्दबाजी में किसी गलत लड़के से शादी नहीं करनी चाहिए। क्या तुमने कभी बच्चे पैदा करने के बारे में सोचा है?’ उन्होंने पूछा।

‘मैंने इस बारे में सोचा है, तारा। मैं भी बच्चे चाहती हूं, लेकिन अभी नहीं। शायद दो-एक साल बाद। और सिर्फ सही लड़के के साथ। नहीं तो मैं बच्चा गोद लेना बेहतर समझूंगी। दूसरी जिंदगी की जिम्मेदारी लेने से पहले मुझे अपना भविष्य सुनिश्चित करना होगा,’ मैंने उन्हें ईमानदारी से जवाब दिया, और वो मेरी बात समझ गई।

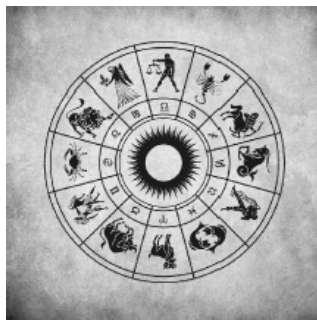
उस रात बाद में, मणि मुझे डैड और तारा की कार में घर छोड़ गया। मैं सोच रही थी कि वो दोनों कितने खुशकिस्मत थे कि उन्हें एक-दूसरे का साथ मिला। मैंने सोचा कि सच्चा प्यार आपकी जिंदगी को कितना बदल सकता है। मैंने सोचा कि प्यार खत्म हो जाने के बाद रिश्ते कितने बोझ बन जाते हैं।

जैसे ही मैं घर में घुसी, तो मनोज का मैसेज देखा। वह भूल गया था कि मैं डैड और तारा के साथ पर डिनर पर जाने वाली थी। या शायद उसे याद था और उसने इस बारे में पूछना जरूरी नहीं समझा। बल्कि उसके लंबे से मैसेज में उसके बॉस के साथ हुई बड़ी सी बातचीत का वर्णन था। मैंने उसे अगले दिन मैसेज करने का फैसला किया। अभी मेरा उससे बात करने का कोई मन नहीं था।

और जब मैं ब्रश कर, कपड़े बदल, सोने के लिए बिस्तर में घुसी, तो मुझे याद आया कि आखिर अनिकेत का कोई मैसेज नहीं आया था। जो परेशानी की बात थी। मैं सोच रही थी कि क्या हुआ होगा।

‘तुम्हारा वीकेंड कैसा रहा? तुमने मजे किए न?’ मैंने टाइप करके उसे भेजा।

जब पंद्रह मिनट बाद भी कोई जवाब नहीं आया, तो आखिर मैं अपने कंबल में लिपटकर, आराम से सो गई।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

आदर्श का स्वरूप बदलने वाला है, इतने धीरे से कि आपको इसका अहसास तक नहीं होगा। नया चांद अनपेक्षित बदलाव लाने वाला है। वो चीजें शायद कुछ समय से सतह के नीचे अपना स्वरूप ले रही थीं। अब उनके सामने आने का समय है। अपने विकल्प होशियारी से चुनना।

19

अनिकेत

तृष ने अपने घरवालों को कह दिया था कि वह वीकेंड पर किसी शूट के लिए पॉन्डिचेरी जा रही थी। मैंने सुबह साढ़े पांच बजे उसे उसके घर के सामने से लिया। मैं गर्मी और ट्रैफिक से बचने के लिए जल्दी निकल जाना चाहता था।

‘तुम मेरी बहुत सी तस्वीरें तो खिंचोगे ही, है न? तो, देखा जाए तो यह शूट ही तो हुआ। बस

थोड़ा दूसरी तरह का शूट,' उसने मेरे गले लगकर, मुस्कुराते हुए कहा और मैंने उसका बैग कार की डिग्गी में रख दिया।

'तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूं, मेरी जान,' मैंने कहा।

वह कार में बैठ गई, और जैसे ही हम वहां से चल दिए, मैं खुद को दुनिया का सबसे खुशकिस्मत इंसान समझ रहा था, कि मेरे पास इतनी हसीन लड़की थी। मुझे यकीन था कि तृष को वो जगह बहुत पसंद आएगी।

मैंने एक फास्ट बीट वाला तमिल सॉन्ग चलाया, एक पॉपुलर रोड सॉन्ग, और तृष ने मुंह बनाया।

'ये क्या चला रखा है?' उसने पूछा।

मैंने खुशी में उसकी रुखाई पर ध्यान नहीं दिया।

'यह अच्छा गाना है! हॉस्टल में मेरा एक रूममेट तमिल था, वो अक्सर ये गाना बजाता था। मुझे ये गाना बहुत पसंद है,' मैंने कहा, और उसने 'जैसी तुम्हारी मर्जी' वाला मुंह बनाया।

जैसे ही गाना खत्म हुआ, उसने कहा कि अब वो अपनी पसंद का गाना चलाना चाहती है, और उसने मेजर लेजर का पावरफुल चलाया। मुझे भी वो गाना पसंद था, तो मैं आराम से बैठकर सड़क पर नजरें रखते हुए गाड़ी चलाने लगा।

थोड़ी ही देर में तृष सो गई और मैं किसी प्यार में डूबे टीनेजर की तरह बार-बार उसे देखता रहा। उसके आकर्षक नैन-नक्श, उभरे हुए गाल, बेदाग त्वचा—सब मिलाकर वह किसी खूबसूरत गुड़िया से कम नहीं लग रही थी। भले ही मैं उसे कितनी बार क्यों न देख लूं, लेकिन उससे मेरा मन नहीं भरता था।

रास्ते में एक जगह हम चाय पीने के लिए रुके। तृष कार से नहीं उतरी। मैं उसके लिए चाय लेकर आया, उसने एक घूंट भरा और फिर उसे गाढ़ी और मीठी कहकर पीने से मना कर दिया। मुझे उसकी चाय भी खत्म करनी पड़ी।

'तुम नीचे नहीं उतरोगी? कम से कम थोड़ी टांगें सीधी हो जाएंगी?' मैंने पूछा।

तृष ने आसपास देखा। ये हाइवे पर बनी छोटी सी चाय की दुकान थी, जिस पर हम रुके थे। इसे चलाने वाला आदमी जरूर किसान होगा, जो दुकान के पीछे बने खेत का मालिक होगा। हाइवे पर दूसरी गाड़ियां तेजी से भागते हुए आगे बढ़ रही थीं।

'नहीं—मैं सही हूं,' उसने कहा।

तभी एक आवारा कुत्ता हमारी गाड़ी के पास आ गया और अपनी पूंछ हिलाने लगा। उसे देख तुरंत ही तृष गाड़ी से उतर आई और उसे सहलाने लगी।

'तृष, तुम्हें डर नहीं लगता? वो तुम्हें काट ले तो?'

उसने हंसकर अपना सिर हिला दिया।

वो बिल्कुल नहीं डरती थी। मैं ऐसे लावारिस कुत्तों से डरता था। लेकिन मैं जानता था कि वो उन्हें कितना चाहती थी। उसने एक बार जानवरों के लिए बने शरणस्थल पर वॉलंटियर काम भी किया था। उसकी ये बात मुझे बहुत पसंद थी।

गाड़ी चलते ही तृष एक बार फिर से सो गई। हम लगभग छह घंटों में रिजोर्ट पहुंच गए। वहां का माहौल बहुत ग्रामीणता लिए था। रिसोप्शन पर बैठे व्यक्ति ने हमें वहां का कॉन्सेप्ट समझाया। उसने बताया कि कमरे में कोई एयर-कंडीशनर, फोन और टीवी नहीं होगा। उसने बताया कि

वहां एक प्राइवेट बीच है, जिसका हम इस्तेमाल कर सकते हैं। तृष की आंखें इससे चमक उठीं। फिर उसने हमें बताया कि हर कॉटेज के साथ दो साइकिलें दी गई हैं, जिनसे हम रिजोर्ट में इधर-उधर आ जा सकते हैं। उसने बताया कि आज एक पेंटिंग क्लास भी है, जिसे वहां रहने वाला कोई आर्टिस्ट संचालित करेगा, और हम चाहें तो वहां जा सकते हैं। हर दिन हमें कमरे में एक शेड्यूल शीट मिलेगी, जिसमें यहां होने वाली एक्टिविटी के बारे में बताया जाएगा। फिर उसने हमें कोई पेजर जैसी चीज पकड़ाई और बताया कि कुछ भी जरूरत पड़ने पर हम ये बटन दबा सकते थे; वो हमारा संपर्क रिसेप्शन से करा देगा। वहां कोई रूम सर्विस नहीं थी, क्योंकि वो प्रोपर्टी बहुत बड़ी थी। उसने बताया कि वो मेहमानों को रेस्टोरेंट में आकर ही कुछ खाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

फिर वो हमें बैटरी से चलने वाली बग्गी में बैठाकर हमारे कॉटेज में ले गए। मुझे ये जगह पहली ही नजर में भा गई। वहां ऊंची छत, नक्काशीदार स्तंभ और मेन डोर के बाहर बैठने की खूबसूरत जगह थी। स्तंभ टीक के बने थे, जिन पर ऊपर तक खूबसूरत नक्काशी और पॉलिश फिनिशिंग की गई थी। जो आदमी हमें वहां लेकर आया उसने अठानकुडी टाइल्स के बारे में बताया। हालांकि वहां एयरकंडीशनर नहीं था, लेकिन वहां की सजावट में प्राकृतिक ठंडक थी। वहां एक बड़ा सा चार खंभों वाला बिस्तर लगा था, जिस पर चढ़ने के लिए हमें एक छोटी सी सीढ़ी का इस्तेमाल करना था।

‘तो आप आज हमारे साथ पेंटिंग क्लास में आएंगे?’ उस आदमी ने पूछा और मैंने उससे कहा कि हम थोड़ी में तय करके बता देंगे। मैंने उसे टिप दी और वो हमें शुक्रिया कहकर वहां से चला गया।

‘ये जगह तुम्हें कैसे मिली, अनि?’ तृष ने पूछा।

‘रिसर्च करके, बेबी। मुझे खुशी है कि तुम्हें ये पसंद आई,’ मैंने कहा।

‘वैल—पता नहीं कि पसंद आई कि नहीं। ये... कुछ अलग है।’

‘कम ऑन तृष। ये हमारे हमेशा के फाइव स्टार होटल से अलग है न?’

‘मुझे टेलीविजन, रूम सर्विस और लग्जरी पसंद है। ये मेरी पसंद से थोड़ा ज्यादा साधारण है। यहां तो टी या कॉफी मेकर तक नहीं है,’ उसने अपनी नाक सिकोड़ी।

क्या वो थोड़ी देर के लिए दिखावा भी नहीं कर सकती थी? क्या वो मेरी मेहनत को नहीं समझ सकती थी?

मैंने उसे गले लगाने की कोशिश की लेकिन उसने मुझे परे धकेल दिया। ‘मैं थक गई हूं, अनि, पहले मुझे नहाकर फ्रेश होने दो,’ उसने कहा।

‘थक गई हो? थकना तो मुझे चाहिए। मैं पूरा रास्ते गाड़ी चलाकर लाया हूं। तुम तो पूरा समय सोती हुई आई हो।’

‘ओह, मैं जानती हूं। तुम तो हो ही इतने प्यारे। आई एम सॉरी, मैंने इस सबकी जरा भी तारीफ नहीं की। मेरा मूड जरा खराब था। ये... दरअसल... ये उम्मीद के जैसा नहीं था।’

हद है। और मैं सोच रहा था कि ये ग्रेट आइडिया होगा। तो छुट्टियों की शुरुआत नॉट-सो-नाइस नोट से हो गई थी।

तृष के नहाने के बाद हम बीच पर घूमने गए और इससे उसका मूड कुछ बेहतर हुआ। वहां बहुत सारे लावारिस कुत्ते थे।

बीच पर एक झोंपड़ी भी थी, जहां अंडे, ब्रेड, फ्राइड फिश और गर्म चाय बिक रही थी। मैंने तृष से पूछा कि क्या वो कॉफी या चाय लेना चाहेगी। उसने मना कर दिया, लेकिन उसने वहां से कुछ बन खरीदे और कुत्तों को खिला दिए। अब उन सबने उसे घेर लिया था। मैंने उसकी बहुत सी तस्वीरें लीं, लेकिन तृष का ध्यान यकीनन कैमरे पर नहीं था। वह धीमी आवाज में कुत्तों से बात कर रही थी, जिसे सुन वो थोड़ा शांत भी हो गए थे।

जब हम वापस कमरे में गए तो मैंने थोड़ा स्लो म्यूजिक चला दिया।

‘यहां आओ, जानेमन,’ मैंने कहा, और उसने मेरे होंठों को चूम लिया। मैंने उसके नितंब पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया और हम बिस्तर पर चढ़ गए और आधे कपड़े पहने ही सैक्स करने लगे। मुझे तृष को किस करना बहुत पसंद था। उसने मेरे हाथ अपनी टीशर्ट में डाल दिए और मैं उसकी ब्रेस्ट को पकड़कर झूम उठा। उसने अपने शॉर्ट के बटन खोलकर उन्हें उतार दिया। मैंने अपने शॉर्ट और बॉक्सर उतार दिए। मैं अंदर जाने को तैयार था, और वो मुझे लेने को।

‘फोर प्ले भूल जाओ, अनि, बस सीधा कर डालो,’ वो फुसफुसाई।

ये वो संगीत था, जिसे सुनने के लिए मेरे कान हमेशा बेताब रहते थे।

मेहनत के बाद हम दोनों ही ढह गए, और फिर वो खिलखिलाकर हंसने लगी।

‘क्या?’ मैंने पूछा।

‘तुम इंतजार नहीं कर सकते थे न?’ वो मुस्कराई।

‘नहीं, तुम्हारे साथ तो बिल्कुल नहीं कर सकता। तुम्हें देखकर काबू ही नहीं रहता, तृष,’ मैंने उसे गले लगाते हुए कहा। उसे गले लगाने में बड़ा सुकून मिलता था।

कुछ देर बाद हमने तैयार होकर, पेंटिंग क्लास में जाने का फैसला किया, जो रेस्टोरेंट के सामने के एरिया में ही थी। हम वहां तक साइकिल से गए। वो एक बड़ा सा हॉल था, जहां लाल रंग की टाइल लगी थी, और वहां की सजावट में ग्रामीणता का पुट था। इससे मुझे निधि का पॉटरी स्टूडियो याद आया, लेकिन मैंने ये बात तृष के सामने नहीं कहने का फैसला किया।

वहां पहले से ही कोई आठ लोग मौजूद थे। आर्टिस्ट-इन-रेजिडेंस कोई जर्मनी का निवासी था, जिसका नाम हैस किर्चनर था। उसकी बनाई हुई कई पेंटिंग डिसप्ले पर लगी थीं।

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे पेंट करते हो, महत्वपूर्ण है भाव,’ उसने हाथों से अपनी बात पर जोर डालते हुए कहा।

अधिकांश मेहमान शुरू करने के लिए बेताब थे, वो पहले से ही अपने कैनवास और पेंट लेकर बैठे हुए थे। वहां सिर्फ एक ही महिला थी, जो उसमें भाग नहीं ले रही थी। उसके बालों में सफेद बाल, काले बालों से ज्यादा थे। उसने सफेद कॉटन साड़ी और बड़ा सा पेंडेंट पहना हुआ था। मैंने ध्यान दिया कि उसने लगभग हर उंगली में अंगूठियां पहनी हुई थीं। वह मुझे ही देख रही थी। कुछ देर बाद, उसके देखने से मैं असहज महसूस करने लगा।

‘चलो यहां से चलते हैं,’ मैंने तृष के कान में फुसफुसाया और उसकी बांह पकड़कर उसे बाहर लेकर निकलने लगा। मैंने मुड़कर देखा तो पाया कि वो महिला भी मेरे पीछे-पीछे बाहर आ रही थी। मैं तेज-तेज कदमों से चलने लगा तो तृष मुझे सवालिया नजरों से देखने लगी।

अब हम बिल्डिंग से बाहर आ गए थे।

‘एक्सक्यूज मी,’ मैंने पीछे से उसकी आवाज सुनी। तृष और मैं पीछे देखने के लिए मुड़े,

और उसी महिला को तेजी अपनी तरफ आते देखा।

गॉड। वो चाहती क्या थी?

‘अनिकेत? क्या तुम बंगलौर वाले अनिकेत हो?’ उसने पूछा।

हे भगवान। वो कौन थी? वो मुझे कैसे जानती थी?

‘हां... लेकिन... सॉरी, मैं आपको नहीं जानता,’ मैंने कहा।

‘हा! मैं जानती थी! मैं चेहरों को अच्छी तरह से याद रख पाती हूं। मैंने तुम्हारी तस्वीर देखी थी। प्रियंका? तुम्हें याद है? मैं दर्शिता सेन हूं। उसके हस्बैंड की आंठ। मतलब, होने वाले हस्बैंड की आंठ। उनकी शादी अगले महीने होने वाली है। भविष्यवाणी के बदले स्ट्रिप डांस करने का तुम्हारा वादा। हाहाहा,’ उसने कहा।

मैं हैरान था। तृष मुझे अविश्वास से देख रही थी।

हे भगवान। क्या पागलपन वाली चीजें हो रही थीं। कौन जानता था कि मैं उसे यूं यहां मिल जाऊंगा। और उसे वास्तव में मेरा चेहरा याद भी आ जाएगा। मैं बहुत शर्मिंदा था, मैं चाहता था कि ये धरती फट जाए और मैं उसमें समा जाऊं।

‘अरर... वेल, आपको पता है, मेरा वो मतलब नहीं था,’ मैंने कहा।

‘हम्म, मुझे भी ऐसा लगा था। लेकिन तुम भविष्यवाणी सुनना चाहते थे, है न? प्रियंका ने मुझे इस बारे में बताया था। उसने मुझे तुम्हारी तस्वीर भी दिखाई थी। शोमो, वो और मैं तुम्हारे ऑफर पर खूब हंसे थे।’

‘वो पूरा पागलपन था,’ मैंने खुद को संभालते हुए जल्दी में कहा।

तृष अभी भी मुझे सवालिया नजरों से देख रही थी। मैंने उसे आंखों में ही समझाया कि मैं बाद में उसे सब बता दूंगा।

‘तो आपका पॉन्डिचेरी कैसे आना हुआ?’ मैंने पूछा।

‘कल यहां मेरा एक लैक्चर है। दरअसल, मैं चेन्नई प्रियंका और शोमो की सगाई के लिए ही आई थी। जब भी मैं चेन्नई आती हूं, यहां ऑरबिंदो आश्रम में जरूर आती हूं। मैं मदर की बहुत बड़ी भक्त हूं। प्रियंका ने मुझे इस रिजॉर्ट के बारे में बताया था। वो यहां की बहुत तारीफ कर रही थी, तो मैंने सोचा कि चलकर देखा जाए। वो यहां मेरे रहने-सहने का बंदोबस्त कर रहे हैं, जिसके बदले कल मुझे ज्योतिषशास्त्र पर लैक्चर देना है। मुझे तो यहां बड़ा मजा आ रहा है।’

‘ये तो बढ़िया है। मुझे कहना होगा, मैम, आपको तो चेहरे बहुत अच्छी तरह याद रहते हैं, और तो और आपको मेरा नाम भी याद था।’

‘वेल, मैं फेस रीडिंग भी करती हूं, और ज्योतिष भी हूं। मैं चेहरे या नाम कभी नहीं भूलती।’

‘वाह! फेस रीडिंग? क्या ये सही होता है? मेरा मतलब क्या आप सच में किसी का चेहरा देखकर उसके बारे में बता सकती हैं?’ तृष ने पूछा।

‘एक खुली किताब की तरह। ये एक विज्ञान है, इसे सीखने में कई सालों के अभ्यास की जरूरत होती है। मैंने कई सालों तक ऋषिकेश के एक गुरु से ये सीखा था।’

‘ये तो बहुत दिलचस्प है, मैं इस बारे में और जानना चाहूंगी,’ तृष ने कहा।

दर्शिता सेन ने उसे करीब से देखा। और उन्होंने एक शब्द नहीं कहा। वो सीधा तृष की आंखों में देख रही थीं। घूर रही थीं। अचानक ऐसा लगा कि वो कोई और इंसान बन गई थीं। उनके हाव-भाव बदल गए। तृष भी इसे महसूस कर सकती थी। मैं देख सकता था कि अब तृष असहज

होने लगी थी। मुझे भी दर्शिता सेन को देखकर घबराहट हो रही थी।

‘तुम्हारी जन्मतिथि क्या है?’ उन्होंने अचानक तृष से पूछा।

तृष ने उन्हें तारीख बताई।

‘समय?’ उन्होंने पूछा, अपनी नजरें तृष के चेहरे पर गढ़ाए हुए ही।

तृष अब घबरा गई थी।

‘सुबह साढ़े आठ बजे,’ उसने कहा।

दर्शिता ने अपनी आंखें बंद कर लीं। फिर उन्होंने मुझसे कहा, ‘क्या मैं तुमसे कुछ बात कर सकती हूँ?’

‘जरूर,’ मैंने कहा।

‘मेरा मतलब, सिर्फ तुमसे, कुछ प्राइवेट बात करनी है।’

मैंने तृष को देखा। मुझे समझ नहीं आ रहा था क्या करूं। मैं देख सकता था कि तृष बहुत घबराई हुई थी।

दर्शिता ने मेरे जवाब का इंतजार नहीं किया। उन्होंने मुझे एक तरफ खींच लिया और बोलीं, ‘इस रिश्ते को तोड़ दो। ये तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है। ये सिर्फ तबाही पर खत्म होगा। उसके साथ रिश्ता खत्म कर लो।’ और इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, वो वहां से चली गई।

मैं वापस तृष के पास आया।

‘हे भगवान, कितना अजीब था। वो औरत पागल थी,’ मैं बुदबुदाया।

‘उसने क्या कहा, अनि?’ तृष ने पूछा।

‘भूल जाओ, तृष। कुछ बकवास कर रही थी। वो पागल है,’ मैंने कहा।

‘मुझे बताओ, प्लीज,’ तृष ने जोर दिया।

मैं उसे सच नहीं बता सकता था, तो मैंने कहा कि वो औरत कह रही थी कि मैं जल्द ही विदेश जाने वाला हूँ। मैंने ये भी कहा कि सारे ज्योतिषी यही बताते हैं, सब बकवास होता है।

‘तो उसने ये बात तुम्हें अकेले में ले जाकर क्यों कही?’ तृष ने पूछा।

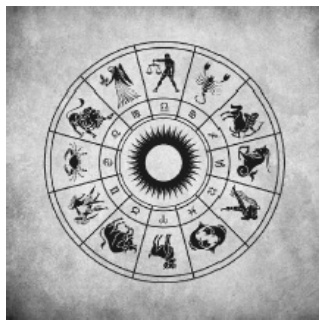
‘मुझे नहीं पता, बेबी। वो, वो... अजीब थी,’ मैंने कहा। मैं उम्मीद कर रहा था कि तृष मेरी घबराहट को भांप न ले।

तृष और मैं बीच पर चलने लगे, और चलते-चलते उसी झोपड़ी पर पहुंच गए, जहां हम पहले भी आए थे। हमने ब्रेड और एग-पोरिमास लिया, जिसे वो अंडे की भुर्जी कहते थे। मैंने उसे प्रियंका से हुई अपनी मुलाकात के बारे में बताया—कि कैसे मेरे घरवालों ने दबाव डाला था और क्या हुआ था। तृष बीच-बीच में गर्दन हिलाती जा रही थी।

हमारी बाकी शाम पर दर्शिता सेन की परछाई हावी रही और हम दोनों ही उससे बाहर नहीं आ पा रहे थे। मैंने इस बारे में तृष से मजाक करने की भी कोशिश की, लेकिन वो हंसी नहीं।

हालांकि हमारी बुकिंग संडे शाम तक की थी, लेकिन हमने सुबह ही वहां से निकल जाने का फैसला किया।

हम दोनों में से कोई भी उससे दोबारा नहीं मिलना चाहता था।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

बुध के पीछे हटने के कारण बड़े बदलाव होने वाले हैं। बुध बातचीत में भूमिका निभाता है, इसलिए गलतफहमी की गुंजाइश बन रही है। निजी स्तर पर कुछ काले बादलों को हटाना बहुत जरूरी है...

20

निधि

जब तक मेरी आंख खुली, साढ़े आठ बज चुके थे। मैं चौंककर बैठी मैं कभी भी इतनी देर तक नहीं सोती। ये जरूर शैम्पेन का असर होगा—वो मैं अक्सर नहीं पीती थी, इसलिए उसकी आदत भी नहीं थी।

मैंने अपना फोन चैक किया और उसमें तारा का मैसेज था कि वो वापसी पर थे और जल्द ही चेन्नई पहुंचने वाले थे। उन्हें उम्मीद थी कि मैं ठीक से सोई हूंगी और वो वहां पहुंचने के बाद

मुझसे बात करेंगी।

मुझे थोड़ी कमजोरी महसूस हो रही थी। टूटा हुआ सा। मेरा गला सूख रहा था और सिर में दर्द हो रहा था। भारी हैंगओवर मेरी जान ले रहा था। मैंने ब्रेकफास्ट बनाया। कहते तो हैं कि हैंगओवर में अंडे की भुर्जी, जूस और बहुत सारा तरल पदार्थ खाना चाहिए। और ज्यादातर लोग ऐसे में कैफीन लेने की सलाह नहीं देते, लेकिन आज मुझे कॉफी पीने की तेज तलब हो रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे मेरे ऊपर से कोई ट्रक गुजर गया हो। कंप्यूटर तक पहुंचने की मेरी सारी इच्छाशक्ति इसने मुझसे छीन ली थी। आज के मेरे दो राइटिंग असाइनमेंट थे और, चाहे हैंगओवर हो या नहीं, मैं आज की डैडलाइन मिस नहीं कर सकती थी।

मैं ये सोचकर भी परेशान थी कि अनिकेत की तरफ से कोई कॉल या मैसेज क्यों नहीं आया था। उसे क्या हुआ होगा? क्या तृष ने उसे मुझसे बात करने से मना कर दिया होगा? एक मिनट तो मुझे लगा कि शायद वो मुझसे कटने की कोशिश कर रहा था। मैंने सोचा कि अगर ऐसा हुआ तो शायद वो पहले मुझे बताएगा तो। मुझे नहीं लगता कि वो ऐसा करेगा। लेकिन उसकी ये खामोशी मुझे परेशान कर रही थी। मैंने उसका लास्ट सीन स्टेटस देखा, जो संडे शाम का बता रहा था। क्या वह अभी भी पॉन्डिचेरी में था? मैं सोच रही थी कि उसे दोबारा मैसेज करूं या नहीं, लेकिन फिर से ख्याल छोड़ दिया। मैंने सोचा कि जब उसे सही लगेगा वो खुद संपर्क कर लेगा। मैं हैरान थी कि मुझे उसके मैसेज की इतनी चिंता क्यों हो रही थी। अब उससे एक रिश्ता सा बन गया था, और पता नहीं क्यों उसकी डाइट और वजन की जिम्मेदारी को मैं अपना मानने लगी थी।

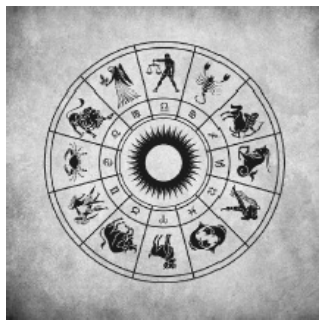
ब्रेकफास्ट खत्म करके मैंने अपने लिए स्ट्रॉंग फिल्टर कॉफी बनाई और अखबार खोलकर बैठ गई। कॉफी पीते हुए अखबार पढ़ना मुझे बहुत पसंद था। मुझे भी उम्मीद थी कि एक दिन मैं अखबार के लिए लिखूंगी। लेकिन उसके लिए पहले मुझे ऑनलाइन पर अच्छा काम करके रिकॉर्ड बनाना होगा, जिससे जब मैं बात करने जाऊं, मेरे पास दिखाने के लिए अच्छा काम हो।

अखबार खत्म करके मैंने अपने लैपटॉप पर न्यूज साइट्स देखीं, उनमें एक साइट्स लोकल न्यूज की भी थी। जैसे ही मैंने वो साइट खोली, एक हेडलाइन दिखाई दी। मोटे-मोटे अक्षरों में एक हेडलाइन स्क्रीन पर दिखाई दी। आप उसे अनदेखा कर ही नहीं सकते थे। मैंने उसे एक बार पढ़कर, दोबारा फिर से पढ़ा। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था। हर शब्द के साथ मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था।

ये नहीं हो सकता। नहीं हो सकता।

ये संभव हो ही नहीं सकता?

मैं जम गई थी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

अनपेक्षित घटनाएं आपका संतुलन बिगाड़ देंगी। कई ग्रह अपनी दिशा बदल रहे हैं और संवाद आपकी आशा से परे हो जाएंगे। कुछ भी नया शुरू करने के लिए ये शुभ समय नहीं है। खुद को थामो, और अपनी मजबूती ग्रहण करो। जो लोग रिश्ते में हैं वो कई उतार-चढ़ावों का सामना करेंगे। धैर्य रखो, ये समय भी बीत जाएगा।

21

अनिकेत

जब तक हम बंगलौर वापस पहुंचे, तृष का मूड पूरी तरह खराब हो चुका था।

मैंने उसे घर छोड़ा और उसने उतरते हुए मुझे बाय तक नहीं कहा। भाड़ में जाओ। अब मुझे ये पूरा ट्रिप ही खराब लग रहा था।

सोमवार को तृष हमेशा की तरह ऑफिस आई। लेकिन हम मिले नहीं। मैंने उसे देखा तक

नहीं।

कॉफी? मैंने उसे मैसेज किया।

मूड नहीं है, अनि। मुझे अभी अपने काम पर फोकस करना है, उसने मैसेज भेजा।

उसके परेशान होने से मुझे चिढ़ थी। काश कि मैं उसे खुश करने के लिए कुछ कर पाता। मैंने पूछा कि क्या वो शाम को बाहर चलना चाहेगी। शायद इससे उसे कुछ बेहतर महसूस हो।

नहीं जा सकती। मैं विश्व और दूसरे दोस्तों से मिल रही हूँ। वो लेह शूट की खुशी में पार्टी दे रहा है, उसने मैसेज भेजा।

मेरा एक मन चाहता था कि वो अपने दोस्तों के साथ खुश रहे। दूसरा मन जल रहा था कि ऐसी पार्टियों में कभी मुझे नहीं बुलाया जाता था। मैं जानता था कि तृष चाहती तो मुझे लेकर जा सकती थी। लेकिन उसने कभी नहीं पूछा था और न ही मैंने कभी सामने से कहा था। मैं जानता था कि मैं उसके मॉडलिंग वाले दोस्तों में फिट नहीं बैठता था। वो सब मुझसे बहुत अलग थे।

मैं निधि को बताना चाहता था कि पॉन्डिचेरी में क्या हुआ था, लेकिन एक के बाद एक, कई कामों में फंस गया और उसे फोन करने का मौका ही नहीं मिला। दर्शिता सेन से वो अजीब मुलाकात फोन पर ही बताई जा सकती थी। उसे किसी मैसेज से नहीं समझाया जा सकता था। मैंने तय किया कि कल उससे बात करूँगा। और मेरी डाइट की भी धज्जी उड़ी हुई थी, तो मेरे पास उसे बताने को कुछ नहीं था। अगले दिन से मैं वापस अपने रूटीन और डाइट पर आने वाला था। तो मैं उसे मैसेज भी नहीं भेज पाया।

मैंने अपना फोन खोला और उसके डिसप्ले पर तृष की तस्वीर देखी। वो उसके किसी मॉडलिंग शूट की थी, और उसमें वो कमाल की हसीन लग रही थी। मैं किसी जलनखोर बॉयफ्रेंड की तरह बर्ताव क्यों कर रहा था? उसने कई बार कहा भी था कि उसे ये बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसकी लिस्ट में पॉइंट नंबर थ्री ये ही था कि जब भी अपने दोस्तों के साथ बाहर जाए, मैं उसकी चिंता न करूँ। मुझे ये भी लग रहा था कि उस अजीब महिला से मिलने के बाद, यकीनन तृष उसे भूलने के लिए अपना समय दोस्तों के साथ बिताना ही पसंद करेगी। मुझे उससे दूर ही रहना होगा। उसे कुछ समय अकेले रहने दो। मजे करने के बाद वो खुद ही मेरे पास लौट आएगी।

मजे करना, बेब। ज्यादा मत पीना और अगर मुझे तुम्हें लेने आना हो, तो फोन कर देना, मैंने मैसेज किया।

चिंता मत करो। अनन्या और मैं साथ में आएंगे। उसने कहा है कि वो मुझे छोड़ देगी, उसका जवाब आया।

मैंने अपनी आंखें घुमाईं। जैसे अनन्या को बड़ा खुद पर काबू रहता था। अनन्या कोई बेस्ट ड्रिंकिंग पार्टनर तो थी नहीं। काश ऐसी पार्टियों से तृष मुझे मैसेज करके ये तो बता दिया करे कि वो ठीक थी।

उस रात मैं बिस्तर में जगा हुआ ही पड़ा था, बार-बार फोन चैक करते हुए कि कहीं तृष का कोई मैसेज न आ जाए। कोई मैसेज नहीं आया था। मुझे अहसास था कि बार-बार फोन चैक करने से मुझे निराशा ही हाथ लगेगी। ऐसी पार्टियों से उसने कभी मुझे फोन या मैसेज नहीं किया था। फिर भी जैसे उसने मेरे दिमाग पर पूरा कब्जा किया हुआ था। मैं उम्मीद कर रहा था कि अगले दिन उसका कोई मैसेज आएगा।

मेरी तृष। अगर उसे ऐसी पार्टियों में ही मजा मिलता है, भले ही मेरे बिना, तो उसे खुश रहने दो। ऐसी बातों पर लड़ने से कहीं ज्यादा मैं उसे प्यार करता था। मैं बस उम्मीद कर रहा था कि उसे ज्यादा देर न हो जाए—मैं जानता था कि अगले दिन उसकी क्लाइंट से मीटिंग थी। आखिरकार, मैं उसे मैसेज करने से खुद को रोक नहीं पाया। मैंने फोन उठाकर उसे मैसेज कर दिया, उसे क्लाइंट मीटिंग याद दिलाने के लिए।

लेकिन जब तक मैं सोया, उसने वो मैसेज देखा भी नहीं था। यकीनन वो अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने में बिजी होगी।

मैं आह भरके किताब पढ़ने लगा और फिर बिस्तर में सो गया।

फोन की लगातार बजती घंटी से मेरी नींद खुली। मैं इतनी गहरी नींद में था कि कुछ पल बाद मुझे अहसास हुआ कि ये आवाज मेरे फोन की थी। जब तक मैं साइड में रखी टेबल से फोन उठा पाता, वो कट गया। फोन किसी अनजान नंबर से था। मैंने टाइम देखा, साढ़े चार बजे थे। क्या बकवास थी? सुबह के साढ़े चार बजे कौन मुझे फोन कर रहा था? मैं सोच ही रहा था कि उसी नंबर से दोबारा फोन आया।

‘हेल्लो?’ मैंने कहा।

‘अनिकेत? अनिकेत प्रभु?’ किसी आदमी ने पूछा।

‘हां,’ मैंने आवाज पहचानने की कोशिश करते हुए कहा।

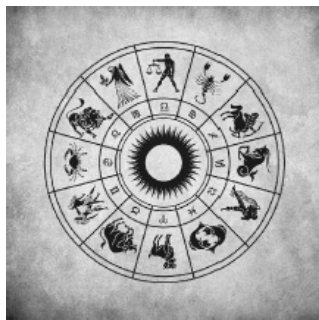
‘मैं जयनगर पुलिस स्टेशन से बोल रहा हूं। क्या तुम किसी तृषा को जानते हो? तृषा बरोट?’

मैं सीधा उठकर बैठ गया। ओह नहीं। मेरी तृषा मुसीबत में थी। मुझे रात को उसे अकेले पार्टी में जाने ही नहीं देना चाहिए था।

‘हां, वो मेरी दोस्त है। क्या हुआ?’ मैंने पूछा।

जो मैंने उसके बाद सुना उसके लिए दुनिया में कोई चीज मुझे तैयार नहीं कर सकती थी।

‘एक एक्सीडेंट हुआ... और... वो अब हमारे बीच नहीं रहीं,’ उसने कहा।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

...बहुत नाटक, परेशानी, तनाव और किसी बुरी खबर की संभावना है। धैर्य से काम लें। जो मन में आए वो न बोलें। सावधानी से हालात का सामना करें...

22

निधि

मैं हर शब्द धड़कते दिल से पढ़ रही थी। ओह माई गॉड। मैं इस पर यकीन नहीं कर सकती थी। ये झूठ था। यकीन से परे। ये नहीं हो सकता।

दसवें माले से गिरने पर एक मॉडल की मौत

एक युवा, उभरती हुई, बंगलौर में रहने वाली मॉडल—जो कनेक्ट टैक्नोलॉजी में नौकरी करती थी—की मंगलवार सुबह, जयनगर में एक बिल्डिंग की दसवीं मंजिल से गिरकर मृत्यु हो गई।

बताया जा रहा है कि चौबीस वर्षीय तृषा बरोट नशे में थीं, जब वो फ्लैट की दो बालकनियों में से एक की रेलिंग पर चढ़ गई। पार्टी में मौजूद प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार वो एक बालकनी से दूसरी बालकनी में जाने की कोशिश कर रही थीं। दोनों बालकनियों के बीच तीन फीट की दूरी थी, जिनके बीच दोनों को जोड़ते हुए एक मुंडेर बनी थी। बरोट रेलिंग पर चढ़कर मुंडेर पर जाने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उनका संतुलन बिगड़ गया और वो नीचे गिर गई, प्रत्यक्षदर्शी ने बताया। गिरते ही उनकी मौत हो गई।

बरोट उस अपार्टमेंट में पार्टी के लिए गई थीं और अब पार्टी में मौजूद हर शख्स से पूछताछ की जा रही है। पुलिस मामले की जांच-पड़ताल आत्महत्या के नजरिये से भी कर रही है, इसके लिए मॉडल के परिवारवालों और दोस्तों से बात की जा रही है। किसी सुराग के लिए उनके फोन की भी पड़ताल की जा रही है।

तृषा अपने मां-बाप की इकलौती संतान थीं। उनका पोस्टमार्टम विनाया अस्पताल में किया जा रहा है। आज ही उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया जाएगा।

एक पल तो मुझे लगा कि ये कोई और तृषा भी हो सकती है, लेकिन फिर अगले ही पल इसे खारिज कर दिया। इसमें कोई गलती नहीं हो सकती, ये सच में अनि की ही तृषा थी। हे भगवान—ये क्या हो गया था। और जब ये हुआ, तब अनि कहां था? ये सब सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे।

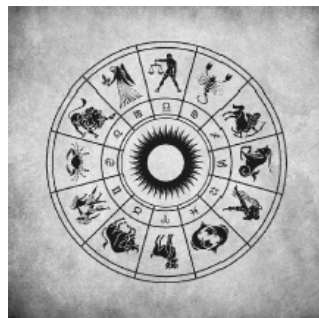
मैंने तुरंत फोन उठाकर अनि को फोन मिलाया। उसने फोन का जवाब नहीं दिया।

फिर मैंने टेलीविजन चलाया। किसी भी नेशनल चैनल पर ये खबर नहीं थी, लेकिन एक स्थानीय चैनल ने अपनी टीवी वैन उसी बिल्डिंग के सामने खड़ी कर रखी थी, जहां वो पार्टी चल रही थी। रिपोर्टर कन्नड़ में बात कर रहा था, और वो उस घर की तरफ इशारा करते हुए वही जानकारी दे रहा था, जो ऑनलाइन भी थी, लेकिन उसके बोलने में थोड़ा ज्यादा मेलोड्रामा था।

मैं कुछ भी करके अनि तक पहुंचना चाहती थी। मुझे चिंता हो रही थी कि वो सही भी था या नहीं। मेरा दिमाग बेचैनी से भटक रहा था। मैंने कनेक्ट टैक्नोलॉजी को गूगल किया, फोन नंबर ढूंढे, और बोर्ड लाइन पर फोन किया। मैंने उन्हें अपना नाम बताकर अनिकेत के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे होल्ड पर रहने का बोलकर बताया कि वो कॉल ट्रांसफर कर रहे थे। कुछ देर बाद रिसेप्शनिस्ट ने बताया कि वो आज काम पर नहीं आया था।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि और क्या करूं। ये बहुत बड़ा सदमा था। मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसा कुछ हुआ था।

मैंने अनि को इंस्टेंट मैसेंजर पर मैसेज किया और उसे तुरंत फोन करने को कहा। फिर मैंने एक और बार उसका नंबर मिलाया। फोन बज रहा था, लेकिन वो कोई जवाब नहीं दे रहा था।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

एक तुफान घुमड़ रहा है। इससे सावधानी से बचना। किसी नुकसान की संभावना है। पुराने रिश्ते, जो तुफान में थे, खत्म हो जाएंगे। 'ये भी बीत जाएगा' मंत्र के साथ हालात का सामना करो...

23

अनिकेत

उसकी कही बात समझने में मुझे कुछ पल लगे।

'क्या?' मैंने पूछा।

'सर, तृषा बरोट की मृत्यु हो गई है। उनका फोन हमारे पास है और हम आपको सूचित कर रहे हैं, क्योंकि उनके फोन पर आखरी मैसेज आपका ही था। इसकी पड़ताल बाद में की जाएगी।'

'क्या? क्या हुआ?'

उसने अपनी बात रटे-रटाए शब्दों में दोहरा दी। और साथ में ये भी जोड़ दिया कि ये हमारी जांच का हिस्सा है।

मेरे हाथ ठंडे पड़ गए थे, और कांप रहे थे। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। हालांकि मेरा एक हिस्सा पूरी तरह नियंत्रित था। मैं सदमे में था, लेकिन शांत भी। ऐसा लग रहा था जैसे तूफानी हवा मुझ पर प्रहार कर रही थी, लेकिन मैं किसी चमत्कार से सीधा खड़ा था। ऐसा लग रहा था जैसे ये सब कोई सपना था।

मैंने जल्दी से अपना मुंह धोया, जींस, टीशर्ट पहनी और अपनी कार की तरफ भागा। मानो कोई मशीन मुझे चला रही थी।

मैं विश्व का घर जानता था। मैं दो बार पहले भी वहां तृष को लेने जा चुका था।

मेरा एक मन कह रहा था कि जरूर कोई बड़ी गलती हुई थी। जब मैं वहां पहुंचूंगा, मेरी तृष वहां सही-सलामत होगी। मेरा दूसरा मन मुझे चुप करा रहा था। सब कुछ सपना लग रहा था। मानो मैं दो भागों में बंट चुका था। एक मर गया था और बिस्तर पर पड़ा था, इस सबको कतई सच मानने को तैयार नहीं था, और दूसरा शांति से मुझसे ये सब करवा रहा था।

मैं अपार्टमेंट कॉम्पलेक्स पहुंचा, बाहर गाड़ी पार्क करते हुए गहरी सांस ली। वो वास्तविक नहीं लग रहा था। वहां बहुत से लोग खड़े हुए थे और उनमें से कुछ लोग बालकनी की तरफ इशारा करते हुए ऊपर देख रहे थे। मैं अपार्टमेंट कॉम्पलेक्स के गेट की तरफ बढ़ा, और पुलिसवाले को खुद को तृष का दोस्त बताया, जिसे उन्होंने फोन किया था। वह मुझे अंदर ले गया। उसने एक तरफ इशारा करके बताया कि 'वो यहां गिरी थी। हम उसकी बॉडी को अंदर ले गए हैं।'

मैंने वो जगह देखी, जहां उसने इशारा किया था। उसे देखते ही मेरी धड़कन रुक गई। वहां खून था। ढेर सारा खून।

इससे मुझे उबकाई आ गई। मैं साइड में गया, जहां कुछ लॉन जैसा था, और उल्टी कर दी।

'सर, आप ठीक हो न?' पुलिसवाले ने मुझे पानी की बोतल देते हुए पूछा।

मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था। मैंने माथे पर आया पसीना पोंछा।

और फिर वो मुझे लॉबी में ले गया।

मुझे अगले दिन ही पता चलने वाला था कि मेरे दाएं हाथ के नाखून बाएं हाथ की खाल में कितनी बुरी तरह गढ़ रहे थे। मेरे नाखूनों में खुरचने से खून तक आ गया था।

मेरी नजर सबसे पहले कोने में खड़े, मुरझाए हुए उसके पेरेंट्स पर पड़ी। उसकी दिखाई हुई फोटो से मैंने उन्हें पहचान लिया था। वास्तव में आज मैं उन्हें पहली बार देख रहा था। उसकी माँम, उसके डैड से टिककर रो रही थीं। और उसके डैड गहरे सदमे में दिखाई दे रहे थे। मेरा मन अभी भी वो सब मानने को तैयार नहीं था।

फिर मैंने उसे देखा। गलत। उसकी बॉडी को देखा। मुझे फिर से उबकाई आई। ऐसा लग रहा था, जैसे उसका आधा सिर ही बचा था। चेहरे के एक तरफ बड़ा सा गड्ढा हो गया था, उधर की आंख बिल्कुल बाहर ही निकल आई थी। उसके चेहरे के दूसरे भाग से ही मैं उसे पहचान पाया था, वो हिस्सा अनछुआ था। वो सफेद चादर में लिपटी हुई थी।

'हे भगवान,' मेरे मुंह से निकला।

'उसके फोन में आखरी मैसेज तुम्हारा ही था। हमें तुम्हारा बयान दर्ज करना होगा,'

पुलिसवाले ने कहा।

मैं उसे मारना चाहता था।

मुझसे क्या बयान चाहिए तुम्हें, सालों। वो मर चुकी है। उसके बेवकूफ लोग ऐसा होने से रोक सकते थे। और मैं उसके पास था भी नहीं।

मैंने खुद को संभालकर कहा, 'हां, ठीक है।'

फिर मुझे अपने सीने में तेज दर्द महसूस हुआ, जो दिल से उठते हुए सिर में पहुंच गया था। मैं फिर से पसीने-पसीने हो गया। अब मेरा दम घुट रहा था। मुझे हवा की जरूरत थी। मुझे बैठने की जरूरत थी।

मैंने मुंह फेर लिया।

'तुम ठीक हो न?' पुलिसवाले ने फिर से पूछा।

अगर उसने एक और बार यही सवाल किया, तो कसम से मैं उसे पीट डालूंगा।

मैं लॉबी में एक तरफ गया और गार्ड की मेज का सहारा लेकर खड़ा हो गया।

तब मैंने वहां मौजूद दूसरे लोगों को देखा। विश्व और अनन्या।

विश्व मेरे पास आया और बोला, 'आई एम सॉरी, यार, हमने उसे रोकने की बहुत कोशिश की थी। उसने हमारी बात नहीं सुनी,' और उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया।

मैं उस साले को भी मार देना चाहता था।

अनन्या मेरे पास आई और मेरा हाथ पकड़ा। मैंने उसे मना किया और पीछे हट गया।

'कैसी दोस्त हो तुम, बेवकूफ बिच?' मैंने कहा, और मुझे अपनी ही आवाज पहचान नहीं आ रही थी। वो मुझे सदमे से देख रही थी। मेरी आंखें जल रही थीं।

मैं चिल्लाना चाहता था।

मैं उन सबको गोली से उड़ा देना चाहता था।

मैं वहां से भाग निकलना चाहता था।

लेकिन उससे बढ़कर मैं अपनी तृष को वापस पाना चाहता था।

लेकिन बुरा समय अभी खत्म नहीं हुआ था।

उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे पूछताछ के लिए पूरा दिन हाजिर रहना होगा, क्योंकि अभी बहुत सी फॉरमैलिटी बाकी थी। मैंने सुब्बु को फोन करके उसे सब बताया। उसे भी इसका यकीन नहीं आया।

'ओह शिट, यार। मैं अभी तुम्हारे पास आ रहा हूं,' उसने कहा।

मैंने उसे मना कर दिया। मैं अकेला रहना चाहता था। ये सब मुझ पर हावी होता जा रहा था।

उसने मुझसे पूछा पक्का? और मैंने कहा बिल्कुल।

थोड़ी देर बाद पुलिसवाले मेरे घर आए। उन्होंने तृष के बारे में मुझसे तरह-तरह के सवाल किए। उन्होंने बताया कि ये जरूरी था और कि वो उसके दूसरे दोस्तों से पूछताछ कर रहे थे। मैंने उन्हें पूरे सन्न से जवाब दिया। हालांकि एक-दो बार मैं चिल्ला भी दिया था।

क्या तुम्हें ये भी पूछना है मैंने उसके साथ कितनी बार सेक्स किया था?

मैं जानता था कि वो सिर्फ अपना काम कर रहे थे, लेकिन फिर भी जवाब देते हुए मैं खुद पर काबू खो दे रहा था। मैं अकेले रहना चाहता था। फिर मैंने खुद से कहा कि जितनी जल्दी मैं उनके सवालों का जवाब दे दूंगा, उतनी ही जल्दी मैं इससे बाहर आ जाऊंगा। मैंने उन्हें पॉन्डिचेरी

ट्रिप के बारे में बताया, क्योंकि वो पूछ रहे थे कि आखरी बार मैंने उसे कब देखा था। लेकिन मैंने उन्हें दर्शिता सेन या उसकी भविष्यवाणी के बारे में कुछ नहीं बताया। इससे वो मुझे बेवकूफ भी समझ सकते थे। मुझे खुद भी यकीन नहीं हो रहा था कि मैं उस बारे में सोच रहा था।

पुलिसवालों के जाने के बाद, मैं काफी देर तक सिर हाथों में पकड़े बैठा रहा। मैं बालकनी में अपनी तृष को देख रहा था। उन पागलों ने उसे क्यों नहीं रोका? मैंने उसकी बात क्यों सुनी?/मैं उसके साथ क्यों नहीं था?/मैंने उसे पार्टी में अकेले जाने ही क्यों दिया? और वो बेवकूफ अनन्या—उसने मेरी तृष को इतना पीने ही क्यों दिया? वो जानती थी कि तृष को पीने के बाद क्या हो जाता था। क्यों, क्यों, क्यों? मेरे सिर में सवाल घूमते जा रहे थे। हर सवाल मुझे सता रहा था, मुझे चिढ़ा रहा था, मुझ पर चोट कर रहा था। तृष ने मुझे फोन क्यों नहीं किया? पिछली बार पीने पर भी तो उसने मुझे फोन किया था। वो इस बार भी तो ऐसा कर सकती थी। उसने ऐसा क्यों किया? क्या शराब में कोई ड्रग मिला हुआ था? क्या तृष ने कुछ और नशा किया था? क्या वो बेहोश थी? जहां तक मैं उसे जानता हूं, वो ऐसा कुछ नहीं करती। लेकिन जरूर उन लोगों ने उस पर दबाव डाला होगा।

मैं फिर रोने लगा। एक दबी सी चीख मेरे मुंह से निकलने लगी। ऐसी आवाज जिसे मैं पहचानता नहीं था। मैं रोया। सुबका। तकिये में मुंह दबाकर रोने लगा, जिससे मैं अपनी आवाज भी नहीं सुन पाऊं। फिर मैंने तकिये को लात मारकर फेंक दिया। और फिर जब मैं रोते-रोते थक गया, तो अपना मुंह धोने चला गया।

मैंने फोन पर निधि का मैसेज और मिस कॉल देखी। पता नहीं उसने वो खबर सुनी थी या नहीं। अभी मैं उससे बात करने की हालत में नहीं था।

मैं तृष के पेरेंट्स से बात करना चाहता था। अगर किसी का दुख मेरे दुख जितना बड़ा था, तो वो उनका ही था। मेरे पास उसका लैंडलाइन नंबर था, जो मैंने सेव कर रखा था, लेकिन कभी उस पर बात नहीं की थी। मैंने उन्हें फोन किया और उसके डैड ने फोन उठाया। जब मैंने उन्हें अपने बारे में बताया, तो वो एक पल खामोश रह गए। फिर मुझे उनके रोने की आवाज आई। उनके रोने की आवाज से मेरा दिल भर आया। मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं उनकी कोई मदद कर सकता था, जो उन्होंने मुझसे कहा उससे मैं एक बार फिर से मर गया।

उन्होंने कहा कि क्या मैं बॉडी ले जाने के लिए अस्पताल आ सकता था।

मैंने कहा कि मैं आ रहा हूँ।

जब मैं अस्पताल पहुंचा तो उसके डैड ने मेरे पास आकर मेरी बांह पकड़ ली। मैंने उन्हें गले लगा लिया।

मौत कैसे लोगों को एक कर देती थी। अगर तृष जिंदा होती, तो शायद उसके डैड मुझे देखकर मेरी खाल खींच लेते। और अब एक-दूसरे से यूं गले मिल रहे थे, जैसे कबके बिछड़े दोस्त हों। मैं हैरान था कि इस हालात में भी ये सब बातें सोच पा रहा था, शांति से, डॉट से डॉट मिलाकर। ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी फिल्म में कोई किरदार की भूमिका निभा रहा था।

तृष के पेरेंट्स को अब सारे कागजात पढ़कर उन पर साइन करने थे। डिस्चार्ज फॉर्म में सारे तथ्य भरने होते हैं।

अब सब कागजी कार्यवाही थी।

मेरी तृष अब महज एक बॉडी थी, जिसे एक नंबर दिया जा चुका था।

‘क्या आपने ये सब पढ़ लिया? सारी जानकारी सही है न?’ अटेंडेंट ने पूछा।
तृष के डैड की आंखें फिर से भर आई थीं और उन्होंने वो पेपर मुझे थमा दिया। वो पढ़ने की हालत में नहीं थे।

मैंने वो कागजात पढ़े।

हर लाइन मेरे शरीर में दर्द की एक नई लहर पैदा कर रही थी।

उसमें बहुत सी जानकरियां थीं जिन्हें ध्यान से पढ़कर भरना था।

मृतक का नाम, लिंग, आयु:

मौत की तिथि और समय:

मृतक का कोई पहचान चिन्ह:

नजदीकी संबंधी की जानकारी:

नाम, संबंध, पता और फोन नंबर:

ऑटोप्सी की तिथि और समय:

ऑटोप्सी सर्जन का नाम:

शव को कोल्ड स्टोरेज में रखने की तिथि और समय:

शव की लंबाई और कंधों की चौड़ाई:

कीमती समान की सूची, जो शव से उतारा नहीं गया है, जैसे अंगूठियां, चूड़ियां या अन्य:

शवगृह तकनीशियन के हस्ताक्षर:

शव ले जाने की तिथि और समय:

शव ले जाने वाले संबंधी या पुलिस का नाम:

शव लेने वाले संबंधी के हस्ताक्षर:

‘क्या उन्होंने आपको उसकी सोने की चैन और अंगूठी दे दी?’ मैंने उसके डैड से पूछा।

उसकी मां ने बताया कि हां वो उनके पास हैं।

‘सारी जानकारी सही है,’ मैंने कहते हुए पेपर वापस तकनीशियन को दे दिए।

फिर हम एंबुलेंस में शव को श्मशान घाट ले गए। श्रद्धांजलि देने के लिए वहां पहले से ही लोग जमा हो गए थे। मैं कभी पहले श्मशान घाट में नहीं गया था। वहां सफेद दीवारों वाला बड़ा सा हॉल था, दीवारों में बीच में अंतराल दिए गए थे, जिसे हवा और रौशनी अंदर आ सके। तृष के डैड ने बताया कि उन्होंने पहले से ही पंडित की व्यवस्था कर ली थी। मुझे नहीं पता था कि इसके लिए भी रस्में होती हैं। वहां बहुत से हिंदू रिवाजों से विधि और मंत्रोच्चारण किए गए।

मुझे वहां उसके सारे दोस्त दिखाई दिए। फिर मुझे सुब्बु भी दिखा। मैं नहीं जानता कि उन्हें कैसे पता चला। मुझे ये भी नहीं पता कि यहां का पता उन्हें किसने दिया।

मुझे अंदाजा नहीं था कि मैं वहां कितनी देर खड़ा रहा। हवा खुशक थी। मेरा सिर दुख रहा था। मैं बात करने की हालत में नहीं था। थोड़ी देर बाद रस्में और मंत्र बंद हो गए। फिर उन्होंने तृष की बाँडी को एक लंबी सी रॉड वाली ट्रॉली पर रख दिया। दो आदमियों ने एक सुरंग सी में धकेल दिया, जिसमें आग जल रही थी। बाँडी आग में चली गई थी। फिर वो सुरंग बंद हो गई और तृष हमेशा के लिए चली गई।

बस इतना ही। मेरी तृष अब इस दुनिया में नहीं थी। मैं अब उसे दोबारा नहीं देख पाऊंगा। मैं दोबारा कभी उसे छू नहीं पाऊंगा। वो कभी अब मुझसे नाराज होकर अपना मुंह नहीं बनाएगी।

अब ये दर्द मुझसे और सहा नहीं जा रहा था।

ऐसा लग रहा था कि मैं भी उसी आग में जल रहा था। मैं बहुत लाचारगी महसूस कर रहा था। मैं अपनी चीख दबा रहा था। मैं कहना चाहता था कि ये आग बंद कर दो।

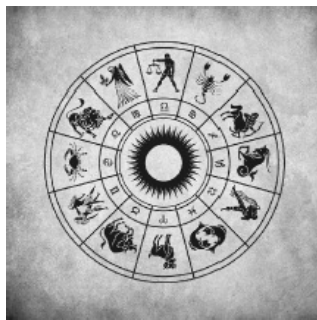
मैं पिछले चौबीस घंटे की घटनाओं को अनडू करना चाहता था।

मैं किसी चीज पर फोकस नहीं कर पा रहा था। मेरे गले में एक उबकाई महसूस हो रही थी।

मैंने देखा कि अब उसके पेरेंट्स और दूसरे लोग श्मशान घाट से बाहर निकलने लगे थे।

एक बेहोशी में ही मैं अपनी कार की तरफ बढ़ा।

तब मुझे निधि दिखाई दी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

...आपकी बनाई सारी योजनाएं शायद अचानक भरभराकर गिर पड़ेंगी। चीजें आपकी मनचाही दिशा में नहीं बढ़ेंगी और दिन हलचल भरा रहेगा। ये अस्थायी हलचल है, तो बस समय के प्रवाह में खुद को खुला छोड़ दीजिए और इस अस्थिरता से परेशान न हों।

24

अनिकेत

निधि मुझे देख रही थी और उसकी आंखों में आंसू थे।

‘मुझे बहुत अफसोस है, अनि,’ उसने कहा और अब वो सुबककर रोने लगी। मैंने अपनी नजरें फेर लीं। मैं उसे ऐसे नहीं देख सकता था। और उसे सांत्वना देने के लिए मेरे पास कोई शब्द भी नहीं थे।

‘तुम यहां कैसे आई?’ मैंने उससे पूछा। मैंने अपनी आवाज सामान्य रखने की भरसक कोशिश की, लेकिन फिर भी वो भर्राई हुई ही थी।

‘मुझे इस एरिया के बारे में कुछ नहीं पता था, तो मैंने कैब ले ली,’ निधि ने कहा। फिर मैंने उसे मेरे पीछे कहीं देखते हुए देखा और मैं पीछे मुड़ा।

मैंने देखा कि सुब्बु हमारी तरफ ही आ रहा था।

‘निधि, ये सुब्बु है। सुब्बु ये निधि,’ मैंने कहा और उन दोनों ने एक-दूसरे की तरफ सिर हिलाया।

‘यार, मैं तुम्हारी गाड़ी चला लूं क्या? मैं कैब से यहां आया था और अब हम सबको वापस ड्राइव करके ले जाऊंगा,’ उसने कहा।

मैंने उसके ऑफर पर एक पल सोचा। लेकिन नहीं। मैं ड्राइव करना चाहता था। ड्राइविंग से मेरा फोकस दूसरी तरफ हो, बॉडी के रोम-रोम में हो रहे दर्द से ध्यान हट पाता।

‘मैं ठीक हूं। मैं ड्राइव करूंगा। निधि, मैं तुम्हें ड्रॉप कर दूं?’ मैं उससे पूछा।

‘तुम मुझे अपने रास्ते में ही कहीं उतार देना, डेयरी सर्कल के आसपास, वहां से मैं कैब ले लूंगी। तो तुम्हें कोरमंगला तक ड्राइव करके नहीं जाना पड़ेगा,’ उसने कहा।

‘ठीक है,’ मैंने कहा। मुझमें बहस करने या सोचने की शक्ति नहीं बची थी।

विन्सन गार्डन के श्मशान घाट से निकलते हुए हम खामोशी में ड्राइव कर रहे थे। सुब्बु आगे की सीट पर बैठा था और निधि पीछे बैठ गई थी।

कार में सिर्फ जीपीआरएस की दिशा बताने की आवाज आ रही थी।

आखिरकार, निधि ने बात शुरू की।

‘तो, ये कैसे हो गया, अनि? क्या तुम उसके साथ नहीं थे? और, प्लीज तुम अभी नहीं बताना चाहो, तो कोई बात नहीं, मैं समझ सकती हूं,’ उसने कहा।

मैं बात नहीं करना चाहता था। मैं अभी पुलिस की पूछताछ और अंतिम संस्कार की क्रियाओं से गुजरा था। लेकिन मैं निधि के साथ क्रूर नहीं हो सकता था। निधि ने हमेशा मुझसे अच्छा बर्ताव किया था। तो मैंने जवाब देने की कोशिश की।

‘वो उस पार्टी में जाना चाहती थी और मुझे उसमें बुलाया नहीं गया था। इसलिए ये सब हो गया। अगर मैं वहां होता, तो मैं उसका ध्यान रख लेता। उसके साले, हरामी दोस्त। बकवास।’

मैं गाली देने से खुद को रोक नहीं पाया। दुख के साथ-साथ गुस्सा भी बढ़ रहा था।

निधि ने हां में सिर हिलाया। फिर उसने बिल्कुल ही अनपेक्षित बात की। उसने आगे आकर अपना सीधा हाथ, मेरे उल्टे हाथ पर रख दिया। मेरा हाथ गियर पर था।

उसने उसे हल्के से दबाया और आगे देखने लगी, उसकी आंखें भर आई थीं।

‘मुझे बहुत अफसोस है, अनि,’ उसने कहा और अपने आंसू पोंछे, ‘सॉरी, मैं रोना नहीं चाहती थी।’

उसके यूं हाथ पकड़ने से मुझे राहत महसूस हुई।

सुब्बु के पास शायद पहली बार कोई शब्द नहीं थे। उसके पास समस्या सुलझाने के लिए कोई कोड नहीं था।

‘तो तुम दोनों को इस बारे में कैसे पता चला और श्मशान घाट का पता किसने बताया?’ मैंने उनसे पूछा।

‘अनि, ये सारी खबर इंटरनेट पर है। तुम्हें किसने फोन किया? तुम्हें कैसे पता चला?’ निधि ने पूछा।

‘आह—तभी इतने लोग यहां आ गए थे। मुझे पुलिस का फोन आया था। फिर मैं उसके पैरेंट्स के साथ बॉ—लेने गया। और फिर हम श्मशान घाट आ गए,’ मैंने कहा। मैं अभी तृष को बॉडी नहीं कह पा रहा था।

जब हम डेयरी सर्कल पहुंचे तो सुब्बु ने मुझसे पूछा कि मैं ठीक हूं न और मैंने उन्हें बताया कि मैं सही हूं।

निधि ने लिफ्ट के लिए मुझे थैंक्स कहा और कहा कि वो कैब बुला लेगी। उसने सुब्बु से पूछा कि क्या वो उसे कहीं छोड़ सकती है। उसका घर निधि के रास्ते में ही था, और वो दोनों चले गए।

बाकी के रास्ते में, मैं दिनभर में हुई घटनाओं के बारे में ही सोचता आ रहा था। मैं अपने फ्लैट में आया और लाइट तक नहीं जलाई। मैं खामोशी से अपने लीविंग रूम में बैठा था, और पूरे घर में सन्नाटा था। बस फ्रिज की आवाज ही वहां आ रही थी। कुछ आवाजें ऊपर वाले फ्लैट से भी आ रही थीं और फिर वो भी आनी बंद हो गई।

मैं गंदा और थका हुआ महसूस कर रहा था, तो मैंने नहाने का फैसला किया। मैंने अपनी अलमारी खोली और वहां उसकी टीशर्ट देखी। मैंने उसे छुआ और फिर सूंघा। तृष की खुशबू। उसके खास परफ्यूम की। दर्द की एक नई लहर मेरे शरीर में दौड़ गई, मेरे पेट में एक बल सा पड़ा। कल शाम तक तो सब ठीक था। वो साली पार्टी। उसे वहां क्यों जाना था?

मुझे बेहोशी महसूस हुई और अगली चीज जो मुझे याद थी वो अंधेरा था। जब मुझे होश आया मैं मुंह के बल अपनी अलमारी के पास, जमीन पर गिरा पड़ा था। मुझे कुछ याद नहीं कि उस हालत में मैं कब तक रहा। मेरी कनपटियों पर दर्द हो रहा था। माथा भी दुख रहा था। मैं रसोई में गया और थोड़ा पानी पिया, और फिर बाथरूम में गया। मैंने शीशे में देखा। माथे पर एक बड़ा सा गोला बन गया था। सूजन का। मैंने उसे छुआ तो वो दुख रहा था। ऐसा मेरे साथ कभी पहले नहीं हुआ था। मैं कभी ऐसे बेहोश नहीं हुआ था। मैं सोच रहा था कि ऐसा क्यों हुआ होगा।

फिर मुझे ख्याल आया।

सुबह उठने के बाद से मैंने कुछ नहीं खाया था। मैंने रसोई में जाकर फ्रिज खोला। वहां थोड़ा डोसा बेटर और ब्रेड रखी थी। मैंने ब्रेड निकाली, दो स्लाइस को टोस्ट किया और उन पर बटर लगाया। एक कौर निगला, और बाकी का नहीं खा पाया। मुझे उबकाई आ रही थी।

गले में उठती खट्टी डकार के साथ मैं भागकर बाथरूम में गया और उल्टी कर दी। बाहर आने के लिए पेट में कुछ था ही नहीं, सिवाय पानी के।

मुझे बहुत बुरा लग रहा था।

माथे पर पसीने की बूंदें झलक आई थीं और मैं कांप रहा था। मैंने स्वेटशर्ट पहन ली, और बिस्तर में दुबक गया। थोड़ी देर में मेरी आंख लग गई।

जब मैं उठा तो फोन में टाइम देखा, सुबह के साढ़े पांच बजे थे। फोन में कम से कम बारह बिना पढ़े हुए मैसेज थे। मैं अभी उन्हें नहीं पढ़ सकता था। पिछले दिन की सारी घटनाएं मुझे याद आ गई थीं। ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे जोर का तमाचा मार दिया हो। मैं वापस बिस्तर में घुसकर सो जाना चाहता था, कभी नहीं उठने के लिए। मैं काम पर नहीं जाना चाहता था। तृष चली गई थी, और यही सच था जिसका मुझे सामना करना था। इससे मुझे घुटन का अहसास हो

रहा था। अंत इतना अचानक कैसे आ सकता है? जिंदगी इतनी भुरभरी कैसे हो सकती थी? एक दिन पहले वो यहीं थी, और अब एक दिन बाद उसका कोई नामोनिशान नहीं था। मैं अपने फ्लैट की बालकनी पर गया और नीचे देखा। गॉड—मेरी तृष तो इससे भी ज्यादा ऊंचाई से गिरी थी।

बेबी, दर्द हुआ होगा न? चोट लगी होगी न? मेरी एंजल, कह दो कि तुम अच्छी जगह हो? तुम मुझे ऐसे क्यों छोड़ गईं?

मुझे तृष और मेरा पॉन्डिचेरी बीच पर बिताया समय याद आ रहा था। मुझे उसकी मुस्कुराहट याद आ रही थी। मुझे बीच पर हमारा घूमना और उसका कुत्तों के साथ खेलना याद आ रहा था। रूम सर्विस न मिलने पर उसकी नाराजगी। फिर मुझे वो अजीब औरत, दर्शिता सेन याद आई। वो क्या बकवास थी? उसने मुझे उससे ब्रेकअप करने को क्यों कहा था? क्या उसने इस आती हुई मौत को देख लिया था? उस भविष्यवाणी से उसका क्या मतलब था? मैं सोच रहा था कि तृष के पेरेंट्स इससे कैसे उबरेंगे। मैंने अपने फोन में तृष और अपनी बीच पर खींची हुई तस्वीरें देखीं। आखरी तस्वीर में तृष मुस्कुराते हुए कैमरे को देख रही थी, और मेरा हाथ उसकी कमर में था। मैं इसे किसी के साथ साझा करना चाहता था। कोई ऐसा जो मुझे समझ सके। मुझे सिर्फ उसके पेरेंट्स का ख्याल आया। मैंने अपना फोन उठाकर उसके घर का नंबर मिलाया, फिर याद आया कि अभी तो सुबह के छह भी नहीं बजे थे। तो मैंने फोन काट दिया।

मिनट भर में मेरा फोन बजा। उसके डैड का फोन था।

‘हां, कौन बोल रहा है? हमें इस नंबर से मिस कॉल आई थी,’ उसके डैड ने कहा।

‘मैं, अनिकेत। तृष का दोस्त। आई एम सो सॉरी, मैं भूल गया था कि अभी दिन भी नहीं निकला है,’ मैंने कहा।

‘कोई बात नहीं, बेटा। हम वैसे भी सो नहीं पा रहे थे। हम बस यही सोच रहे थे कि वो वापस आ जाएगी। ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी ट्रिप पर गई हो,’ उन्होंने कहा।

मैं उनका मतलब समझ सकता था। मेरा भी एक मन कह रहा था कि वो वापस आ जाएगी।

‘मैंने पॉन्डिचेरी ट्रिप पर उसकी कुछ तस्वीरें खींची थीं। आप वो देखना चाहेंगे?’ मैंने उनसे पूछा।

उन्होंने कहा कि वो मेरा बहुत अहसान मानेंगे अगर मैं उन्हें वो तस्वीरें दे दूं।

इससे मेरे गले में कुछ फंसा। मैं कुछ कह नहीं पाया। मैं फिर से रोना नहीं चाहता था।

‘हैल्लो—तुम सुन रहे हो न?’ उन्होंने पूछा, और मैंने कहा कि मुझे इंस्टेंट मैसेंजर पर मैसेज करें, जिससे मैं उस पर तस्वीरें भेज दूं।

जैसे ही मैंने फोन काटा, मुझे उनका मैसेज मिला, और मैंने पॉन्डिचेरी की तस्वीरें उन्हें भेज दीं। हर तस्वीर। यहां तक कि जो उसे पसंद भी नहीं आई थीं। सिवाय बेड पर ली हुई सेल्फी, वो मैंने अलग फोल्डर में डालकर प्राइवेट मोड में डाल ली थीं।

उसके बाद मैंने अपने मैसेज पढ़ने का फैसला किया।

ऑफिस के बहुत से लोगों ने सांत्वना भरे मैसेज भेजे थे। मुझे पता भी नहीं था कि वो मेरे और तृष के बारे में जानते थे। हमने सोचा था कि हमने ये बात सबसे छिपा रखी थी। मैंने हरेक को शुक्रिया कहा और चैट बंद कर दी। मेरे लिए कुछ मायने रखता था, तो वो बस सुब्बु और निधि के मैसेज थे।

सुब्बु ने बताया कि उसने अमित से बात कर ली थी, और वो मुझे एक सप्ताह की छुट्टी देने

को तैयार था। निधि का एक मैसेज इस घटना से पहले का था, जिसमें उसने पॉन्डिचेरी ट्रिप के बारे में पूछा था। दूसरे मैसेज में उसने पूछा था कि क्या मैं उसके साथ बाहर जाना चाहूंगा।

‘नो थैंक्स, निधि। मैं सही हूं,’ मैंने टाइप कर भेज दिया। मैं किसी के साथ घूमना नहीं चाहता था।

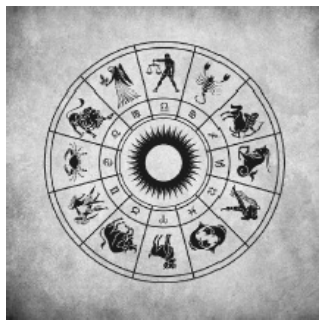
उसने तुरंत ही जवाब भेजा।

‘बाहर निकलो, और थोड़ा खुली हवा में सांस लो, अनि। साइकिल चलाने जाओ?’ उसने भेजा।

‘उम्म...’ मैंने टाइप किया और फोन बंद कर, बिस्तर में घुस गया।

मुझे सिर्फ तृष चाहिए थी।

और दुनिया में कोई चीज उसे मेरे पास वापस नहीं ला सकती थी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

...एक दोस्त को आपकी मदद की दरकार होगी और आप बहुत अच्छे से उसकी मदद करेंगे। लेकिन खुद का ध्यान रखना न भूलें। रोमांस या रिश्तों के लिए शुभ समय नहीं है।

25

निधि

सुब्बु और मैं बहुत ही अजीब हालात में मिले थे। अब हम दोनों कैब में अकेले थे। मुझे लगा कि उससे कुछ बातें करके ही इस अटपटेपन को दूर किया जा सकता था।

‘तो तुम बंगलौर में काफी समय से हो?’ मैंने पूछा।

‘हां—मैं कॉलेज छोड़ने के बाद से यहीं पर हूं,’ उसने कहा।

‘रहने के लिए अच्छा शहर है, है न?’

‘बिल्कुल,’ उसने कहा।

हम दोनों ही हालात के अटपटेपन और इन बातों की असहजता को समझ रहे थे। हम ऐसे जता रहे थे, मानो ये आम रोजमर्रा की बातें हों। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या बातें की जा सकती हैं। वो भी चुपचाप बैठा था।

‘कितना बुरा हुआ न,’ कुछ देर बाद वो बोला।

मैंने सिर हिलाया। ‘मैं तो सुबह ये खबर पढ़कर एकदम हैरान रह गई,’ मैंने कहा।

‘मैं पिछले सप्ताह उसी के साथ था, जब उसने ज्यादा पी ली थी और तुम्हारा मैसेज आया था,’ उसने कहा।

‘हम्म, जानती हूं,’ मैंने उसे बताया।

और फिर मुझे कहने के लिए कुछ और नहीं सूझा।

हमने बाकी का सफर खामोशी में पूरा किया, और उसका घर आने पर वो उतर गया।

अगली सुबह मैंने टीवी चलाया, लोकल चैनल पर अभी भी वही खबर आ रही थी।

फिर विश्व टीवी पर आया और जब उसने खुद को तृषा का बॉयफ्रेंड बताया तो मैं अपनी जगह जम गई। मैं हैरान थी। फिर मैंने न्यूज एंकर को कहते सुना कि कैसी अनहोनी हुई और ये एक्सीडेंट हो गया। उसने कहा कि अब वो तृषा के मंगेतर, विश्व से बात करेगी। क्या बकवास है? वो ऐसा क्यों कह रहे हैं? मुझे लगा कि उनसे जरूर कोई गलती हुई थी। अब विश्व इंटरव्यू दे रहा था और बता रहा था कि वो कितना टूटा हुआ था। उसने बताया कि वो और तृषा छह महीने में शादी करने वाले थे।

क्या? ये कैसे हो सकता है?

मुझे अपने कानों पर भरोसा नहीं हो रहा था। वो ऐसी बात कैसे कह सकता था?

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मैं फोन करके ये खबर अनिकेत को नहीं सुनाना चाहती थी। लेकिन मुझे इस बारे में किसी और से बात करनी थी। मुझे सिर्फ सुब्बु का ही ख्याल आया। लेकिन मैं उस तक कैसे पहुंच सकती थी?

मैंने फेसबुक खोला और अनिकेत की फ्रेंड लिस्ट में सुब्बु को ढूंढ़ा। मैंने उसे तुरंत ही फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी। फिर इंतजार करने लगी। इंतजार करते हुए मैंने एक ब्लॉग पोस्ट लिखा।

ए पॉट ऑफ क्ले दैट होल्ड्स गोल्ड

मौत ऐसा अंतिम सच है, जिससे हम में से कोई भी नहीं बच सकता। फिर भी, हम उसके अस्तित्व को नकारते हुए जीते हैं। हम ऐसा बर्ताव करते हैं मानो हम मृत्युंजय हो, जबकि आज हम में से किसी के लिए भी आखरी दिन हो सकता है। हम सुबह उठते हैं, और अपने रोजमर्रा के कामों में लग जाते हैं, ये भी नहीं जानते कि आगे हमारे लिए क्या लिखा गया है।

आप सोच रहे होंगे कि मैं इतने अशुभ विषय पर क्यों लिख रही हूं, मैं अभी एक श्मशान घाट से लौटी हूं। मैं सदमे में हूं, दुखी और बहुत परेशान। आप में से जो बंगलौर में हैं उन्होंने जरूर एक मॉडल के छत से गिरकर मरने की खबर पढ़ी होगी। उसका दोस्त मेरा स्टूडेंट था। इससे मुझे बहुत तकलीफ पहुंची, हालांकि मैं उस लड़की से कभी ठीक से मिली भी नहीं थी।

अगर आज आप, आपके प्रिय सही-सलामत हैं तो इसके लिए उस ऊपर वाले का शुक्रिया

अदा कीजिए। अच्छी यादों का उत्सव मनाइए। और अपनों को खुशियां दीजिए।

अपनी जिंदगी ऐसे जियो कि अगर आपको आज जाना भी पड़ जाए, तो कोई अफसोस मन में बाकी न रह जाए।

इस दुखद पोस्ट के लिए क्षमा, लेकिन ये कहना जरूरी था।

अपना ध्यान रखना, और मुस्कुराते रहना।

मैंने किसी गलती के लिए पोस्ट को दोबारा पढ़ा और पब्लिश कर दिया। मैंने सोचा कि कैसे मैं चेन्नई में अनिकेत से मिली थी, ओर कैसे उसकी मदद करने के लिए तैयार हो गई थी, इसी शर्त पर कि मैं उनकी कहानी, बिना उनका नाम दिए, लिखूंगी। अब वो बहुत पहले की बात लग रही थी। उसके बाद चीजें काफी बदल गई थीं, और अब तो वो आइडिया, नॉवल या ब्लॉग लिखना, बहुत ही बचकाना लग रहा था।

मैंने फिर से फेसबुक चैक किया और ये देखकर उछल गई कि सुब्बु ने मेरी फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली थी। मैंने तुरंत उसे मैसेज करके फोन करने को लिखा। मैंने अपना फोन नंबर भी दिया और इसे अर्जेंट बताया। उसने जवाब दिया कि क्या वो पंद्रह मिनट में फोन कर सकता था। मैंने कहा, हां।

मेरा मन काम में नहीं लग रहा था, तो मैं टीवी खोलकर टू एंड ए हाफ मैन का एपिसोड देखने लगी, हालांकि ये मुझे रिपीट एपिसोड लग रहा था। आखिरकार फोन बजा और मैंने तुरंत फोन उठा लिया।

‘हाय निधि, सुब्बु बोल रहा हूं,’ उसने कहा।

‘हाय सुब्बु, मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी थी।’

‘हां, बताओ,’ उसने कहा।

‘तुम्हें वो विश्व याद है?’

‘कौन?’

‘वो लंबा सा लड़का। वो वहां श्मशान घाट में भी था। तृषा का दोस्त। शायद वो उसके साथ काम करता था।’

‘हम्म...’ वो कुछ पल खामोश रहा। फिर बोला, ‘हां, उसका क्या?’

‘वो टीवी पर इंटरव्यू दे रहा था और कह रहा था कि वो और तृषा छह महीने में शादी करने वाले थे।’

‘क्या? क्या बकवास है? तृषा और अनि साथ थे। अनि तो... उसे पागलों की तरह चाहता था।’

‘जानती हूं। तभी तो ये सुनकर मुझे सदमा लगा। और उसकी बात भी सच लग रही थी।’

‘ये तो बहुत अजीब बात है। जब तक कि... पता है...’ सुब्बु की आवाज लड़खड़ा गई।

मैं जानती थी कि वो क्या सोच रहा था। यही ख्याल मेरे दिमाग में भी आया था।

‘तुम्हें क्या लगता है, वो अनि को धोखा दे रही थी?’ मैंने सुब्बु से पूछा।

मुझे ये कहना ही पड़ा।

वो कुछ पल चुप रहा। और जब आखिरकार वो बोला, उसकी आवाज धीमी थी। ‘मुझे लगता है, ये हो सकता है। मुझे हमेशा लगता था कि वो इसका इस्तेमाल कर रही थी, लेकिन मैंने कभी ये कहा नहीं। वो तो... तुम जानती हो... उसे कितना चाहता था।’

‘काश, ये बात मुझे पता नहीं चली होती,’ मैंने कहा।
‘हम महज अंदाजा ही लगा रहे हैं न? क्यों न हम विश्व से पूछ लें?’ सुब्बु ने सलाह दी।
‘और क्या? वो शायद वही कहेगा जो उसने टीवी पर कहा था,’ मैंने जवाब दिया।
‘उसकी बात भी तो सुननी चाहिए। तुम जानती हो उस तक कैसे पहुंचा जा सकता है?’ सुब्बु ने पूछा।
‘नहीं, मुझे नहीं पता,’ मैंने कहा।
‘ओके, ये मुझ पर छोड़ दो। मैं उसका नंबर लेता हूं,’ सुब्बु ने कहा।
उसने एक घंटे बाद मुझे फोन किया।
‘निधि, मैंने उससे बात की। मैंने कहा कि हम अनि के दोस्त हैं और उससे मिलना चाहते हैं और कि ये जरूरी है।’
‘और वो मान गया?’
‘वो हैरान था, लेकिन जब मैंने कहा कि बात तृषा से जुड़ी है तो मान गया।’
‘ओह!’
इससे मुझे हैरानी हुई। मुझे उम्मीद नहीं थी कि सुब्बु उसके साथ मीटिंग ही फिक्स कर देगा।
‘क्या तुम 18 मेन, जयनगर, कैफे कॉफी डे आ सकती हो? वो उसके घर के पास है। और वो वहीं मिलने को तैयार हुआ है।’
मैंने मन में जल्दी से हिसाब लगाया। होसुर रोड से वहां पहुंचने में मुझे कोई पच्चीस मिनट लगेंगे। और वहां का रास्ता ऐसा कोई बुरा भी नहीं है।
‘हां, मैं आ सकती हूं। कब?’ मैंने उससे पूछा।
‘आज। मैं साढ़े चार बजे निकलूंगा—उसने साढ़े पांच का टाइम दिया है। उसने कहा है कि वो सिर्फ दस मिनट के लिए आ सकता है, तो हमारे पास देर की गुंजाइश नहीं है। वो तो नहीं आना चाहता था, लेकिन मैंने कहा कि अर्जेंट है। तो उसने कहा कि वो आज ही मिल सकता है, तो फिर मैं मना नहीं कर सकता था।’
‘हां। मैं पहुंच जाऊंगी, सुब्बु,’ मैंने कहा।
जब मैं वहां पहुंची तो मैंने कैब से उतरते हुए सुब्बु को देखा। मैंने कार का शीशा नीचे उतारकर उसकी तरफ हाथ हिलाया, ‘सुब्बु!’
वो मुड़ा, मुझे देखा और हाथ हिलाया।
रोड के साइड में ही बड़ी सी पार्किंग बनी थी, और मुझे आराम से गाड़ी करने की जगह मिल गई।
फिर सुब्बु और मैं अंदर गए।
‘तुम्हें विश्व का नंबर कैसे मिला?’ मैंने सुब्बु से पूछा।
‘मेरे पास उस लड़की अनन्या का नंबर था। वो विश्व के साथ काम करती है। मैंने उससे नंबर लिया। अनन्या तृष की दोस्त है।’
‘हां, मुझे याद है,’ मैंने कहा।
हमने विश्व को कैफे में अंदर आते हुए देखा। उसकी एक बांह पर ड्रैगन का टैटू था और दूसरी बांह पर किसी देवी का। वो एकदम फिट था, बड़े-बड़े बाइसेप, मजबूत एब्स और जरा लंबे बाल। उसने काला चश्मा और माथे पर रूमाल बांधा हुआ था। छोटी दाढ़ी और बिना बांह

की काली टीशर्ट, फेडेड जींस में वो आकर्षक लग रहा था।

उसने आसपास देखा और मैंने उसकी तरफ हाथ हिलाया। उसने हमें देखा और हमारी तरफ आया।

उसने अपना चश्मा उतारा, उसकी आंखें लाल थीं। उसे सच में दुख था।

‘हाय, मैं निधि हूं और ये सुब्बु, जिसने तुमसे बात की थी,’ मैंने कहा।

‘हाय,’ उसने कहा और फिर, ‘तो, क्या अजर्टें था?’ उसकी आवाज रूखी थी।

मैंने सीधे बात करने का फैसला किया।

‘विश्व, मैंने तुम्हारा टीवी में इंटरव्यू देखा था।’

‘और...?’

‘क्या वो सही था? कि तुम और तृष छह महीने में शादी करने वाले थे?’

‘ये थी तुम्हारी अजर्टें बात? तुम मुझे मिलकर ये पूछना चाहते थे कि वो सही था? तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है, यार?’ उसने पूछा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या जवाब दूं। सुब्बु ने बात संभाली।

‘देखो, विश्व, तृष इसी वीकेंड अनि के साथ पॉन्डिचेरी गई थी। तुम जानते हो न वो उसके साथ रिलेशनशिप में थी?’

‘क्या? ऐसा नहीं हो सकता।’

‘हां। मैं अनि का करीबी दोस्त हूं। मैं जानता हूं कि वो कितना समय साथ बिताते थे।’

‘लेकिन... उसने तो मुझे बताया था कि अनि सिर्फ दोस्त था। सिर्फ दोस्त। कम ऑन। वो मुझे प्यार करती थी।’

फिर उसने अपना फोन निकालकर हमें तस्वीरें दिखाईं। बहुत सी तस्वीरें। फोटो से पता चल रहा था कि वो कपल हैं। कपल थे।

मुझे यकीन नहीं आ रहा था। तृषा सच में अनि को धोखा दे रही थी। वो अपनी शादी की बात अनि को कब बताने वाली थी?

मैंने सुब्बु को देखा और उसने मुझे।

विश्व हम दोनों को देख रहा था।

‘क्या?’ उसने पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

‘वो तुम्हें धोखा दे रही थी। वो अनिकेत के साथ भी रिलेशनशिप में थी,’ मैंने आखिरकार कहा।

‘हो ही नहीं सकता। तुम दोनों का दिमाग खराब हो गया है। तृष ऐसा कभी नहीं करती। मेरा मतलब... देखो, तुमने तस्वीरें देखी न। शायद... शायद वो एकतरफा आकर्षण हो। तुम्हारा दोस्त अनिकेत उसे प्यार करता होगा। बहुत से लड़के उसके लिए जान देने को तैयार थे, पता है? लेकिन वो मुझे प्यार करती थी; और वो मेरी दुनिया थी। और अगर ऐसा है भी तो अब तुम मुझे बताने क्यों आए हो, दफा हो जाओ यहां से,’ उसने कहा और खड़ा हो गया।

‘रुको, विश्व। प्लीज बैठ जाओ। तुम्हारी ये तस्वीरें फेसबुक पर क्यों नहीं हैं? तुम्हारी और तृष की एक भी तस्वीर साथ में नहीं है। मैंने तुम्हारी प्रोफाइल देखी है, और तुम्हारे सारे फोटो भी पब्लिक हैं। तुम्हें अपने प्रोफाइल की प्राइवेसी सेटिंग चैक करनी चाहिए,’ सुब्बु ने कहा।

‘वो ऐसा चाहती थी। वो नहीं चाहती थी कि हमारी कोई भी तस्वीर सोशल मीडिया पर आए,’ विश्व ने कहा।

‘अब तुम्हें समझ आया, क्यों। वो तुम्हें अनि के बारे में नहीं बताना चाहती थी। न ही अनि को तुम्हारे बारे में,’ सुब्बु ने कहा।

मैंने देखा कि विश्व का ध्यान इस ओर गया था। वह धीरे-धीरे वापस बैठ गया।

‘और क्या तुम उसके पेरेंट्स से मिले थे?’ मैंने पूछा।

‘नहीं, मैं नहीं मिला था। मैंने उससे कहा था, और उसने कहा कि वो मुझे खुद मिलवा देगी, लेकिन अभी उसे कुछ समय चाहिए था,’ ये कहते हुए उसका गला भर आया था। मैं उसकी तकलीफ समझ सकती थी।

लेकिन मुझे लग रहा था कि मुझे अनि की तरफ से बोलना चाहिए। जैसे मैं उसे साबित करना चाहती थी कि अनि और तृषा कपल थे। पता नहीं क्यों मुझे ये जरूरी लग रहा था। शायद इसलिए कि मैं उससे करीब से जुड़ी थी और उसकी रिलेशनशिप कोच भी थी।

‘विश्व, अगर वो सच में तुमसे छह महीने में शादी करने वाली थी, तो उसे यकीनन तुम्हें अपने पेरेंट्स से मिलवाना चाहिए था,’ मैंने कहा।

‘देखो, यार, अब वैसे भी सब खत्म हो गया है। इससे क्या फर्क पड़ता है? मैं उसे दिल से चाहता था,’ विश्व ने जवाब दिया। उसकी आवाज में हार थी।

‘और अनि भी,’ सुब्बु ने शांति से कहा।

विश्व खड़ा हो गया और कहा कि उसे जाना होगा। सुब्बु और मैं उसे कैफे से बाहर निकलकर उसकी एसयूवी की तरफ जाता देखते रहे।

‘वाह। तो विश्व झूठ नहीं बोल रहा था,’ मैंने कहा।

‘हां,’ सुब्बु ने कहा, और जोड़ा, ‘पता है, अनि उसके लिए जान तक दे सकता था।’

‘जानती हूं। वो उसे बहुत प्यार करता था।’

‘तो हम उसे आज बताएं, या कुछ दिन इंतजार करें?’ सुब्बु ने पूछा।

‘किसे क्या बताना है?’

‘अनिकेत। उसे जानने का हक है।’

मैंने इस बारे में सोचा भी नहीं था। मैं अभी भी विश्व की तस्वीरों को लेकर सकते में थी।

‘मुझे भी लगता है उसे जानना चाहिए। चलो उसके घर चलकर देखते हैं,’ मैंने कहा।

‘क्या उसने तुम्हारे फोन का जवाब दिया?’ सुब्बु ने पूछा। ‘मैंने उसे कई मैसेज भेजे लेकिन कोई जवाब नहीं आया। पता चल रहा है कि उसने मैसेज पढ़ लिए थे।’

‘उसने मुझे एक जवाब दिया था जब मैंने उसे कहीं बाहर घूमने की सलाह दी थी। वो सामान्य नहीं लग रहा था।’

‘मुझे लगता है वो कुछ समय अकेले बिताना चाहता है। उससे दो-एक दिन में मिलते हैं और फिर उसे बता देंगे?’ सुब्बु मुझे सवालिया नजरों से देख रहा था।

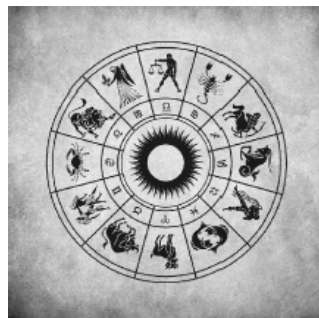
मैंने हां में सिर हिलाया। मैंने उससे कहा कि परसों शाम को वहां चलते हैं, तब तक मैं भी अपने कुछ जरूरी काम निबटा लूंगी।

सुब्बु ने कहा कि ये सही रहेगा। ‘मुझे लगता है वो अकेला रहना चाहता होगा। उसे कुछ समय दे देते हैं,’ उसने कहा और मैं मान गई।

चूंकि मैं नहीं जानती थी कि अनि कहां रहता था, तो सुब्बु ने कहा कि वो मुझे बंगलौर सेंट्रल पर मिलेगा और फिर वहां से हम दोनों अनि के घर चलेंगे।

‘शायद तब तक उसकी दिमागी हालत भी स्थिर हो चुकी होगी,’ मैंने कहा।

मुझे ये करना अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन सच भले ही कितना कड़वा हो, अनि को उसे जानना चाहिए। और उसके दोस्त होने के नाते हमें ये करना ही होगा।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

आपके दोस्त और प्रियजन आपके स्वास्थ्य की वजह से परेशान होंगे। आपकी डाइट भी चिंता का विषय बनेगी। आपको व्यवसायिक जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे लेकिन स्वास्थ्य की वजह से आप इसका लाभ नहीं ले पाएंगे। आराम करो और तनाव मत लो।

26

अनिकेत

तृष यही हैं। वह मरी नहीं है। वो सब कोई बड़ी गलती थी, उसने कहा। मैं तुमसे मजाक कर रही थी, उसने कहा, और अब मासूमियत से मुस्कुरा रही थी।

‘तुमने ऐसा क्यों किया, मेरी जान? मैं बहुत परेशान हो गया था,’ मैंने उसका चेहरा अपने हाथों में थामते हुए कहा।

और वह हंसी। फिर उसने मुझे गले लगा लिया। गॉड, इससे अच्छा कुछ नहीं था। हम दोनों मेरे सोफे पर बैठे थे। उसने मुझे लिटा दिया, मेरा सिर उसकी गोद में और वह मेरा माथा सहला रही थी।

‘प्लीज ये दोबारा मत करना, ओके? तुमने मुझे बहुत डरा दिया था,’ मैंने कहा और उसने हां में सिर हिलाकर, नीचे झुककर मेरा माथा चूम लिया।

उसकी गोद में लेटे हुए ही मुझे नींद आ गई। ये दुनिया का सबसे खूबसूरत अहसास था। मैं जानता था कि वो सब कोई गलती ही थी। मैं बहुत लंबे समय बाद खुद को सहज और खुश महसूस कर रहा था।

अचानक फोन बजने से मेरी आंख खुली।

‘दरवाजा खोलो, अनि,’ तृष ने मेरे बाल सहलाते हुए कहा।

‘उम्म... नहीं, ऐसे ही अच्छा लग रहा है। मुझे थोड़ी देर और लेटने दो।’

‘प्लीज दरवाजा खोलो। हम बहुत देर से घंटी बजा रहे हैं,’ किसी की आवाज आई, ये तृष की आवाज नहीं थी।

ये आवाज कहां से आ रही थी?

‘दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो।’ अब वो आवाज गूंज रही थी। मेरा सिर दुख रहा था।

‘जाओ, मेरी जान, दरवाजा खोलो,’ तृष ने कहा।

जब मैं खड़ा हुआ, तो आसपास सब घूम रहा था। मैं लड़खड़ाते हुए दरवाजे तक पहुंचा। तृष चाहती थी कि मैं दरवाजा खोल दूं। मैंने हैंडल घुमाया और बाहर की तेज रोशनी ने मुझ पर वार किया। मैं आंखें बंद कर पीछे हट गया।

अगली चीज मुझे याद है कि मैं सोफे पर पड़ा था और मेरे चेहरे पर पानी छिड़का जा रहा था।

जब मैंने आंखें खोलीं तो सुब्बु और निधि को वहां देखा।

‘तृष कहां है?’ मैंने पूछा।

वो अजीब नजरों से एक-दूसरे को देख रहे थे।

‘यार हमें तुम्हें डॉक्टर के ले जाना होगा। तुम बेहोश हो गए थे। और तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है,’ सुब्बु ने कहा।

‘मैं सही हूं, तृष कहां चली गई?’ मैंने पूछा।

‘देखो, चलो डॉक्टर के यहां चलते हैं, ओके, अनि? तुम्हारे सिर पर ये निशान भी बहुत बड़ा है,’ निधि ने कहा।

निधि किस बारे में बात कर रही थी? मुझे थोड़ी कमजोरी महसूस हो रही थी लेकिन वैसे मैं ठीक था।

‘मैं ठीक हूं, मुझे किसी डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं है,’ मैंने कहा।

‘अनि—मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूं। तुम बहुत बुरी हालत में हो। तुम पिछली बार नहाए कब थे?’ निधि ने पूछा।

‘मैं नहीं जानता कि तुम मुझसे ये सवाल क्यों पूछ रही हो। मुझे सोने दो, मुझे तृष से बात करनी है,’ मैंने फिर से सोफे पर लेटते हुए कहा।

‘यार, चल न, फिर सो जाना, ओके? प्लीज एक बार मेरी बात मान ले,’ सुब्बु ने विनती की।

मैंने उसे देखा।

‘प्लीज यार, बस खड़ा हो जा?’ उसने कहा और मैंने उसकी बात मान ली। उसने उठने में मेरी मदद की।

निधि ने मुझे गिलास में थोड़ा पानी दिया और मैं प्यासों की तरह उसे गटगट पी गया।

वो मुझे होली एंजल अस्पताल में ले गए। निधि गाड़ी चला रही थी। मैं सुब्बु के साथ पिछली सीट पर बैठा था। सुब्बु आगे क्यों नहीं बैठा था? कुछ गड़बड़ थी। लेकिन मुझसे कुछ सोचा नहीं जा रहा था। मेरा दिमाग कुछ काम नहीं कर पा रहा था। मुझे सोना था। पता नहीं वो लोग डॉक्टर के पास क्यों ले जा रहे थे। लेकिन मुझमें बहस करने की ताकत नहीं थी। बस वो मुझे सोने दें, तो मैं ठीक हो जाऊंगा। मैंने उन्हें बताने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने सुना नहीं।

डॉक्टर ने तुरंत ही मुझे देखा। सुब्बु और निधि दोनों मेरे साथ डॉक्टर के केबिन में आए।

‘कुछ दिन पहले इसकी गर्लफ्रेंड की डेथ हो गई थी। अब हमें ये इस हालत में मिला है। ये बार-बार बेहोश हो रहा है। मुझे लगता है इसे भ्रम हो रहा है,’ निधि ने कहा।

डॉक्टर ने मेरा बीपी चैक किया और फिर स्टैथस्कोप से जांचा।

‘तुमने पिछली बार खाना कब खाया था?’ डॉक्टर ने पूछा।

मैंने सिर दबाकर सोचने की कोशिश की। फिर सब याद आने लगा। तृष का अंतिम संस्कार। सुरंग में जाती उसकी बॉडी। आग। मेरी तृष। वो अब मर गई थी। वो अब वापस नहीं आएगी। कभी नहीं। मैं उसे दोबारा नहीं देख पाऊंगा। मैंने उसका चेहरा याद करने की कोशिश की, और फिर कुछ घबराहट के बाद सब अंधेरा छा गया।

मुझे ये भी नहीं पता कि मैंने कब सुबकना शुरू कर दिया। मुझे अपने रोने का तब पता चला, जब मेरी पीठ पर कोई हाथ महसूस हुआ। निधि मेरे पीछे थे, वो मेरी पीठ सहला रही थी।

‘सब ठीक है, अनि, सब ठीक है,’ उसने कहा और मेरी सुबकी कुछ थमी।

अब डॉक्टर सुब्बु और निधि से बात कर रहे थे। ‘इनका ब्लड शुगर बहुत लो है। इन्हें इलेक्ट्रोलाइट इंबेलेस हो गया है, और इसी लिए भ्रम हो रहे हैं। इन्हें आईवी फ्लूइड लगानी होगी, क्या इन्हें उल्टी भी हो रही है?’

उन्होंने जवाब के लिए मुझे देखा। मैं बोलने की हालत में नहीं था। मेरा दिमाग एक बार फिर से शून्य में था।

‘क्या तुम्हें उल्टी हो रही है?’ डॉक्टर ने पूछा।

‘हां,’ मैं कह पाया। ‘इसलिए मैं कुछ खा नहीं पा रहा।’

‘और ये डाइटिंग भी कर रहा था, डॉक्टर। पिछले कुछ दिनों से भारी एक्सरसाइज और स्ट्रिक्ट डाइट भी फोलो कर रहा था,’ निधि ने कहा।

‘आह। अब समझ आया। इन्हें भारी एसिडीटी भी है। इन्हें हॉस्पिटल में एडमिट करके आईवी लगानी ही होगी। आप चाहें तो इन्हें किसी दूसरे अस्पताल में ले जाएं, या चाहें तो यहीं दाखिल करा दें। लेकिन मैं कहूंगा कि निर्णय जल्द से जल्द लें। ऐसी हालत में ये खाना नहीं खा पाएंगे।’

निधि और सुब्बु ने मुझे यहीं दाखिल कराने का फैसला लिया। सुब्बु फॉर्म भरने चला गया और निधि और मैं वहीं इंतजार करने लगे।

एक अटेंडेंट मेरे लिए व्हील चेयर ले आया।

‘देखो, मैं चल सकता हूँ,’ मैंने कहा, लेकिन मैंने जब खड़े होने की कोशिश की तो वापस गिर गया। ऐसे लग रहा था जैसे मेरे पैरों में कोई जान नहीं बची थी।

‘सर, ये हॉस्पिटल के नियम हैं। पेशेंट को व्हील चेयर पर ही लेकर जाना होगा,’ पुरुष नर्स ने कहा और मेरी बैठने में मदद की। व्हील चेयर चलने पर मैं एक बार फिर बेहोश हो गया था।

जब मुझे होश आया तो मेरे बाएं हाथ में आईवी फ्लूड की सूई लगी हुई थी। कमरा काफी आरामदायक था: बड़ा, सफेद दीवारें और अस्पताल में आने वाली वही फिनायल, दवाई की सी महक। वहां मेरे बेड के पास ही साथ रुकने वाले के लिए एक पलंग, मेज और एक कुर्सी भी थी। मेरे बेड के सामने एक छोटा सा टीवी भी लगा था।

मैंने निधि और सुब्बु को देखा, दोनों बहुत परेशान नजर आ रहे थे।

‘हे दोस्त, मैं अभी मरने नहीं वाला हूँ, ओके?’ मैंने धीमे से मजाक करने की कोशिश की। लेकिन दोनों में से कोई नहीं हंसा।

‘यार, हो सकता है तुम्हें यहां कुछ दिन रहना पड़े। सब तुम्हारी बॉडी पर डिपेंड करता है। उन्होंने अब आईवी लगा दी है, और वो कुछ टेस्ट भी करने वाले हैं। मुझे अपने पेरेंट्स का नंबर दो। हमें उन्हें बताना होगा,’ सुब्बु ने कहा।

‘उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं सही हूँ। मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता,’ मैंने कहा।

‘अनि, मुझे लगता है तुम्हारे पेरेंट्स को बताना जरूरी है। जरा अपनी हालत तो देखो। डॉक्टर कह रहे हैं कि हालत बहुत बुरी है, और हम तुम्हें बिल्कुल सही समय पर ले आए हैं। क्या तुम जानते हो, जबसे वो गई है, तुमने एक दाना तक नहीं खाया है? तुम्हारे शरीर में पानी की भी काफी कमी हो गई है। कई बार बेहोश हुए हो, तुम्हारे चेहरे पर कितने निशान लगे हैं। भगवान ही जानता है कि न जाने कितनी बार तुम बेहोश हुए होंगे। और तुम कह रहे हो कि तुम्हारे पेरेंट्स को कुछ न बताएं? तुम्हें हो क्या गया है, अनि?’ निधि ने कहा। उसका चेहरा लाल हो गया था और वो अपनी आवाज नीची रखने की भरसक कोशिश कर रही थी।

‘ओके, जो ठीक समझो,’ मैंने कहा।

‘नहीं कुछ ठीक नहीं, मुझे उनका नंबर दो। अभी,’ निधि ने आदेश दिया, और मैंने धीमी आवाज में अपने डैड का फोन नंबर दे दिया।

उसने नंबर मिलाया।

कोई जवाब नहीं मिला।

‘तुम्हारी मॉम का क्या नंबर है?’ उसने पूछा।

‘मुझे वो याद नहीं। वो मेरे फोन में है। मेरा फोन कहां है?’ मैंने पूछा।

‘यार, हम वो लेकर नहीं आए। वो जरूर तुम्हारे घर पर पड़ा होगा। इससे याद आया, तुम्हारे घर की चाबी कौन सी है?’ उसने चाबियों का गुच्छा दिखाते हुए पूछा।

‘हां, वो वाली,’ मैंने बताया।

‘मैंने बाहर आते हुए ये उठा ली थी। ये तुम्हारे ड्रॉइंग रूम में साइड टेबल पर पड़ी थी। मुझे पक्का नहीं पता था कि इसमें तुम्हारे घर की चाबी थी या नहीं। अगर इसमें चाबी नहीं होती तो वापस जाने के लिए तुम्हारा ताला तोड़ना पड़ता,’ सुब्बु ने कहा।

मैंने सिर हिलाया। सिर अब दर्द से फट रहा था। मुझे थोड़ी देर शांति की जरूरत थी।

‘सुब्बु, तुम इसका रेजर, टूथब्रश, बदलने के कपड़े भी लेते आना। मैं इसके साथ यहीं

इंतजार करूंगी। और इसका सेलफोन भी ले आना। जब तुम आ जाओगे, तब मैं घर जाऊंगी, और अपना कुछ सामान वगैरह ले आऊंगी। मैं आज रात यहीं रुक जाऊंगी,' निधि ने कहा। उसने हालात की पूरी जिम्मेदारी संभाल ली थी और किसी कमांडो की तरह ऑर्डर दे रही थी।

मैं चाह रहा था कि सुब्बु खड़े होकर उसे सेल्युट करे।

'ठीक है। पक्का तुम रुक जाओगी? मैं भी रुक सकता हूं,' उसने कहा।

'आज रात मैं रुक जाऊंगी, कल तुम रुक जाना?' निधि ने कहा, और वो मान गया।

'आता हूं, दोस्त,' उसने हल्के से मेरा हाथ छूते हुए कहा, और फिर वहां से चला गया।

मैं सोच रहा था कि क्या सोने पर मैं दोबारा तृष को देख पाऊंगा। मैं आंखें बंद करके लेट गया। मुझे उसका कोई विजन नहीं दिखाई दिया। बस मैं उसका बिगड़ा हुआ चेहरा ही देख पा रहा था, और अपार्टमेंट में घुसते ही जो खून दिखा था वो। मुझे उबकाई आई और मैंने आंखें खोलकर निधि को इशारा किया। वो जल्दी से बाथरूम में से पेन उठा लाई और मैंने उसमें उल्टी कर दी। कुछ छींटें उसके हाथ पर भी गई थीं।

शिट। क्या हो गया था। उसने नाक तक नहीं सिकोड़ी थी। वो बाथरूम में गई, पेन को लश में खाली किया और अपने हाथ और बांह धोई। फिर उसने नर्स को बुलाया।

आई ड्रिप की वजह से मैं बहुत बेबसी महसूस कर रहा था। मैं हिल भी नहीं पा रहा था। मेरा हाथ भी अब दुखने लगा था।

निधि बाथरूम से टिश्यु लाई और कहा कि मेरा चेहरा गंदा हो गया था।

मैंने उससे टिश्यु मांगा आईवी ड्रिप मेरे बाएं हाथ में थी, लेकिन मैं दाएं हाथ से मुंह साफ कर सकता था। लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी, और वो मेरा मुंह साफ करने लगी।

'तुम देख नहीं पाओगे कि कहां साफ करना है, और है, इसमें कोई बात नहीं,' उसने कहा। उसकी आवाज में प्यार और चिंता थी।

फिर नर्स आई और निधि ने उसे बताया कि मैंने उल्टी की थी, और उसने बाथरूम में रखे पेन की तरफ इशारा किया।

नर्स ने पेन साफ कर दिया। उसने पूछा कि क्या मैंने चादर पर भी उल्टी की थी, अगर हां तो वो चादर बदल देगी।

मैंने नहीं की थी।

फिर उसने मुझे गिलास में पानी डालकर दिया और कहा कि इससे मुंह साफ कर लूं। मैंने वही किया।

वो फिर से पेन ले आई और मैंने कुल्ला करके पानी उसमें निकाल दिया।

आईवी ड्रिप के साथ मैं खुद को अपाहिज सा महसूस कर रहा था।

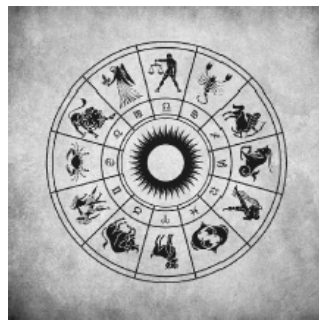
'सिस्टर, ये आईवी ड्रिप कब खत्म होगा?' मैंने पूछा।

'क्या, अभी से थक गए? यह तो पहली बोतल है। डॉक्टर ने अभी और आठ बोतल चढ़ाने को कहा है, और उसके बाद वो देखेंगे,' उसने कहा।

'क्या! एक बोतल में कितनी देर लगेगी?' मैंने पूछा।

'हमें फ्लो एडजस्ट करना होगा। हम ज्यादा तेज भी नहीं चला सकते। ये चार से पांच घंटे में खत्म हो जानी चाहिए। जब ये खत्म होगी, मैं बोतल बदल दूंगी। आपको कुछ भी चाहिए होगा, तो घंटी बजा देना,' उसने मलयालम टोन में कहा।

फिर वो निधि की तरफ मुड़ी। 'क्या आप पेशेंट के साथ अटेंडेंट हो?' उसने पूछा।
'हां, मैं हूं,' निधि ने कहा।
'बीवी, हम्म?' नर्स ने पूछा।
'एक्सक्यूज मी?' निधि ने कहा।
'क्या तुम इनकी वाइफ हो?' उसने पूछा।
'नहीं, बीवी नहीं, बस दोस्त हूं,' निधि ने जवाब दिया।
'ओह ओके। अगर ये दोबारा उल्टी करे, तो मुझे बुला लेना। मैं आठ बजे तक ड्यूटी पर हूं, फिर मेरी कुलीग यहां आएगी। हमें इसका नोट बनाना होगा,' उसने कहा।
'मैं बुला लूंगी,' निधि ने कहा।
उसके जाने के बाद मैं निधि की तरफ मुड़ा। 'थैंक्स, निधि। आई एम सो सॉरी। तुम्हें ये सब नहीं करना पड़ेगा। मैं संभाल लूंगा,' मैंने कहा।
'मैं जानती हूं, मुझे नहीं करना पड़ेगा, लेकिन मैं करना चाहती हूं,' उसने कहा।
तब मेरा मन उसे गले लगाने का हुआ।
'यहां आओ,' मैंने कहा और वो पास आ गई।
मैंने दाहिने हाथ से उसे हल्के से गले लगाया।
उसने दोनों हाथों से मुझे गले लगा लिया।
हम कुछ पल ऐसे ही रहे। फिर वह दूर हो गई और मैं उसकी आंखों में आंसू देख सकता था।
उसका फोन बजा। उसने मुझे देखा और कहा, 'तुम बात करना चाहोगे? तुम्हारे घर से फोन है।'



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आपको कोई नापसंद काम करना पड़ सकता है। धनु होने के नाते स्पष्टता आपकी विशेषता है। सच को कड़वे की तरह निगलना ही होगा, ईमानदारी श्रेष्ठ है। एक दोस्त मदद के लिए आप पर निर्भर होगा।

27

निधि

हे भगवान—अनि ने अपनी क्या हालत बना रखी थी। हमें उससे पहले ही मिलने आना चाहिए था(उसे स्पेस देने के लिए दो दिन का इंतजार करना ही नहीं चाहिए था। हमने उसे अस्पताल ले जाकर ठीक किया और उसे सुरक्षित हाथों में देखकर बड़ी राहत मिली।

मैं अनि की तरफ रक्षात्मक महसूस कर रही थी। मैं उसे ठीक करना चाहती थी, उसे बेहतर महसूस कराना चाहती थी। उसे ऐसे देखना बहुत मुश्किल था। और अब उसने उल्टी कर दी थी।

मैं खुश थी कि मैं उसके लिए समय पर पैन ले आई थी, नहीं तो वह बिस्तर पर ही उल्टी कर देता। मैं जानती हूँ वो इस पर शर्मिंदा था और झेंप रहा था, लेकिन ये हालात ही ऐसे थे। मैंने उसे गले लगाकर कुछ पल सहारा दिया। मेरे अंदर कुछ हो रहा था। ये ऐसी भावना थी, जिसे व्यक्त करना मुश्किल था। जैसे मैं उसका ध्यान रखना चाहती थी। और वो जब ऐसी नाजुक हालत में था, तो मैं हर चीज अपने हाथ में लेते हुए, उसके लिए सब ठीक कर देना चाहती थी।

मैं खुश थी कि मैंने जोर दिया कि हमें ये बात उसके पैरेंट्स को बता देनी चाहिए।

अब मेरा फोन बज रहा था। उसके डैड के मोबाइल से फोन आया था।

‘तुम बात करना चाहोगे?’ मैंने अनि से पूछा।

अनि ने सिर हिलाकर इशारा किया कि वो बात नहीं करना चाहता। फिर वो आंखें बंद करके तकिये में नीचे होकर सो गया। अब मेरे पास उनसे खुद बात करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

‘हैल्लो?’ मैंने कहा।

‘हैल्लो... हां, कौन बोल रहा है?’ अनि के डैड ने कहा।

‘हैल्लो, मिस्टर प्रभु? मेरा नाम निधि है, मैं अनिकेत की दोस्त हूँ,’ मैंने कहा।

‘हां?’ उनकी आवाज में सवाल था। वो फोन पर बहुत मिलनसार नहीं लग रहे थे। काश उसकी मां से बात हो पाती। पता नहीं क्यों मुझे लग रहा था कि उनसे बात कर पाना आसान होता।

‘अनिकेत हॉस्पिटल में एडमिट है। घबराने की कोई बात नहीं है, उसकी हालत में सुधार है। लेकिन फिर भी मुझे लगा कि इस बारे में आपको बता देना चाहिए।’ मेरे शब्द जल्दी में लड़खड़ा रहे थे।

‘क्या? क्या हुआ? क्या उसका एक्सीडेंट हुआ था?’ उन्होंने पूछा। उनकी आवाज में चिंता को सुनकर तकलीफ हो रही थी।

‘नहीं, एक्सीडेंट नहीं हुआ है। वो बेहोश हो गया था, और उसका दोस्त सुब्बु और मैं उसे यहां डॉक्टर को दिखाने के लिए ले आए। डॉक्टर ने जांच के लिए हमसे उसे एडमिट करने को कहा,’ मैंने जल्दी से साफ किया।

‘कैसी जांच?’ उसके डैड ने पूछा।

मैं उन्हें कैसे बता सकती थी कि उसकी गर्लफ्रेंड के मर जाने से वो बहुत दुखी था? मैं ये भी जानती थी कि अनि ने उन लोगों को तृषा के बारे में नहीं बताया था।

‘मुझे लगता है इस बारे में आपको डॉक्टर से ही बात करनी चाहिए, मिस्टर प्रभु।’

‘मेरी बात अनि से करवाओ,’ उन्होंने कहा।

मैंने उसे देखा और वो सो चुका था।

‘वो अभी सो रहा है।’

‘डॉक्टर को फोन देना,’ उन्होंने कहा।

‘डॉक्टर अभी यहां नहीं हैं।’

‘प्लीज मुझे बताओ कि हॉस्पिटल कौन सा है, और डॉक्टर का क्या नाम है?’

‘हमने उसे होली एंजल हॉस्पिटल में एडमिट कराया है और डॉ. हैं कृष्णामूर्ति,’ मैंने कहा।

दूसरी तरफ थोड़ी खामोशी थी और मैं सुन सकती थी कि उसके डैड, उसकी माँ को सारी

बात बता रहे थे। अब उसकी मॉम फोन पर बोल रही थीं।

‘हैल्लो, मैं अनिकेत की मां हूं। वो ठीक तो है न? क्या हुआ था उसे? वो बेहोश क्यों हो गया था?’ उन्होंने पूछा।

‘मिसेज प्रभु, वो ठीक से खाना नहीं खा पा रहा था। अभी उसे आईवी फ्लूड लगाई गई है। चिंता की कोई बात नहीं है, मैं यहां रुक रही हूं और उसका ध्यान रखूंगी,’ मैंने कहा।

यकीनन उसके डैड की बजाय मां से बात करना ज्यादा आसान था। मेरा अनुमान सही था। वो ज्यादा मिलनसार मालूम पड़ रही थीं।

‘हम अभी हैदराबाद में हैं। किसी रिश्तेदार के बेटे की शादी में आए थे। हमने यहां कुछ दिन बिताने का प्लान बनाया था, लेकिन हम वो कैसल कर सकते हैं,’ उसकी मां ने कहा।

‘ओह नहीं, प्लीज वो कैसल मत कीजिए। उसका दोस्त सुब्बु और मैं उसका ध्यान रख लेंगे। डॉक्टर कुछ टेस्ट कर रहे हैं और वो जल्दी ही ठीक हो जाएगा। मैं तो कहूंगी कि आप अपने प्लान के मुताबिक ही चलें। मैं आपको यहां की अपडेट देती रहूंगी,’ मैंने उन्हें भरोसा दिलाया।

‘थैंक्यू सो मच। मैं अनिकेत के डैड से बात करके तुम्हें बताती हूं। वैसे, तुम्हारा नाम क्या है?’

‘मेरा नाम निधि है, मिसेज प्रभु।’

‘ओह प्लीज मुझे मिसेज प्रभु मत कहो। ऐसा लगता है मैं कोई स्कूल टीचर हूं। तुम मुझे आंटी कह सकती हो। तुम अनिकेत को कैसे जानती हो?’

मुझे उसकी मॉम पहले ही पसंद आ गई थी। वो बहुत मिलनसार मालूम पड़ रही थी।

‘अनिकेत मेरे पास पॉटरी कोर्स कर रहा है। लेकिन मैं पहले उससे चेन्नई आते वक्त ट्रेन में मिली थी, मेरे पेरेंट्स वहीं रहते हैं,’ मैंने कहा।

फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि वो चेन्नई में कहां रहते हैं, तो मैंने बताया बोट क्लब रोड, तो वो कुछ पल खामोश रहीं। फिर उन्होंने अनिकेत का ध्यान रखने के लिए मुझे शुक्रिया कहा और पूछा कि क्या वो मुझे फोन करके उसका हाल जान सकती थीं।

‘कोई प्रॉब्लम नहीं है, आंटी। वैसे भी मैं आपको मैसेज करती रहूंगी। चिंता मत कीजिए,’ मैंने उन्हें भरोसा दिलाया।

जब उन्होंने फोन काटा, तो मैं बैठकर अनि को देखने लगी। सोता हुआ वो बहुत सहज लग रहा था। फिर सुब्बु मेरा बताया सारा सामान लेकर आ गया। फिर मैं अपने घर गई और जल्दी से बदलने के कपड़े रख लिए और फिर मैंने कुछ सोचते हुए थोड़ी सी फिल्टर कॉफी बनाकर थर्मस लास्क में भर ली। जब मैं हॉस्पिटल पहुंची तो सुब्बु ने मुझसे पूछा कि क्या मैं डिनर करने चलूंगी। मुझे सच में भूख लग रही थी, तो मैंने कहा बिल्कुल चलूंगी। सुब्बु ने नर्स से पूछा कि क्या हम थोड़ी देर के लिए अनि को अकेला छोड़ सकते हैं, या हम में से एक को उसके साथ रुक जाना चाहिए?

‘नो प्रॉब्लम। आप जा सकते हैं। उनकी सुरक्षा देखना हमारी जिम्मेदारी है,’ उसने कहा।

अस्पताल परिसर का कैफेटेरिया बहुत ही भीड़ भरा था, और वहां मिलने वाला खाना स्वादिष्ट।

मैंने सुब्बु को अनि के पेरेंट्स से हुई बातचीत के बारे में बताया।

‘देखो, हमें उन्हें आने के लिए कह देना चाहिए। उसे शायद चार-पांच दिन यहां रहना पड़ें मैं

जाते हुए डॉक्टर से पछूकर जाऊंगा। और अभी उसे बुखार भी हो गया है, वो जांच रहे हैं कि इसका क्या कारण हो सकता है।’

मुझे सुब्बु का पॉइंट समझ आया, लेकिन तय नहीं कर पा रही थी कि क्या करना चाहिए, क्योंकि अनि तो अपने पेरेंट्स से बात भी नहीं करना चाहता था। सुब्बु चला गया था, और मैं अभी भी उसी बारे में सोच रही थी, तभी अनिकेत की मॉम का फोन आया। उन्होंने बताया कि उन्होंने उसके डैड से बात की और उन्होंने हैदराबाद ट्रिप को कम करके अगले दिन ही बंगलौर आने का फैसला किया है। उन्होंने बताया कि वो सीधा हॉस्पिटल आएंगे। उन्होंने मुझसे कहा कि ये बात अनिकेत का न बताऊं। ‘वो यही कहेगा कि हमारे आने की कोई जरूरत नहीं है,’ उन्होंने कहा।

‘ओके, आंटी। मैं उसे नहीं बताऊंगी। आप कहां ठहरोगे, आंटी? आप मेरे साथ रुकना चाहोगे?’ मैंने पूछा।

‘ये तुम्हारा भलापन है, बेटा, लेकिन हम अनिकेत के घर रह जाएंगे, है न?’ उसकी मॉम ने कहा।

‘हां, हां। चाबियां मेरे पास ही हैं, और जब आप आएंगे, मैं आपको दे दूंगी,’ मैंने कहा।

जब मैं कमरे में वापस आई तो अनिकेत सो ही रहा था। मैं अटेंडेंट के बेड पर चढ़कर लेटने की तैयारी करने लगी। हॉस्पिटल के अंधेरे कमरे में लेटी ही थी कि मेरे फोन पर कोई मैसेज आया। मैंने फोन देखा तो पाया कि मनोज का मैसेज था।

‘सारी बेब—थोड़ा बिजी था। अभी फ्री हुआ हूं। डिनर पर चलोगी मेरे साथ?’ मैसेज में लिखा था।

तब मुझे ख्याल आया कि तृषा की मौत के बाद से मैंने उससे बात ही नहीं की थी। उसे याद करना तो दूर, मुझे उसके बारे में एक बार ख्याल भी नहीं आया था। इतनी सारी घटनाएं एक साथ हुई थीं कि मुझे कुछ सोचने का समय ही नहीं मिला था।

मैं दबे पांव हॉस्पिटल के कमरे से निकली, क्योंकि मैं अनि को जगाना नहीं चाहती थी, और बाहर आकर मनोज को फोन किया।

‘हाय, मनोज,’ मैंने कहा।

‘हाय, बेब—चलो बाहर चलते हैं! मैंने अभी वो प्रेजेंटेशन खत्म की है, जिस पर काम कर रहा था। क्या मैं आकर तुम्हें पिक कर सकता हूं?’

‘नहीं, मैं बाहर नहीं आ सकती।’

‘क्यों नहीं, और तुम ऐसे फुसफुसाकर क्यों बोल रही हो?’ उसने पूछा।

‘मैं हॉस्पिटल में हूं। मेरा दोस्त यहां एडमिट है। उसकी हालत बहुत खराब है और उसका परिवार यहां नहीं रहता।’

‘कौन सा दोस्त?’ उसकी टोन अचानक बदल गई।

‘मैंने तुम्हें उसके बारे में बताया था। अनिकेत।’

‘वही लड़का जिसने तुम्हें मैसेज किया था? वो जिसकी तुम कोच बन रही थीं?’ कोच शब्द उसने ताना मारने के अंदाज में कहा था।

‘हां, वही लड़का।’

‘क्या बकवास है? उसकी गर्लफ्रेंड कहां है? क्या दुनिया में तुम ही उसके पास रुकने के लिए

रह गई हो?’

‘वो मर गई है। और, यहां रुकना मेरी मजबूरी नहीं है। मैं यहां रुकना चाहती हूं,’ मैंने कहा। दूसरी तरफ कुछ देर खामोशी रही। वो शायद मेरे शब्दों को समझने की कोशिश कर रहा था।

फिर उसने कहा, “‘मर गई है’ से तुम्हारा क्या मतलब?’

मैं उसे पूरी बात बताने के मूड में नहीं थी। वो सब बहुत तकलीफदेह था और मैं दोबारा से वो सब नहीं सोचना चाहती थी।

‘मनोज, वो सारी खबर मीडिया में है। देखो, मैं अभी बिजी हूं। मैं तुमसे कल बात करूंगी, ठीक है?’

‘रुको, कौन सा हॉस्पिटल बताया?’

‘होली एंजल। अब गुडनाइट,’ मैंने कहकर फोन काट दिया।

हॉस्पिटल के तंग बिस्तर पर सोना उतना भी तकलीफदेह नहीं था, जितना लग रहा था, और हैरानी थी कि मुझे अच्छी नींद आई थी।

जब मैं सुबह उठी, तो अनिकेत पहले से ही जाग गया था। वो यकीनन आज पहले से बेहतर लग रहा था। वह अब बैठ गया था और मुझे देखकर मुस्कुरा रहा था। एक फीकी मुस्कान।

‘क्या तुम मुझे सोता हुए देख रहे थे?’ मैंने पूछा।

उसकी नजरों में खालीपन था। दर्द, शून्य और कुछ खोने का अहसास।

‘निधि, तुम बहुत अच्छी हो। जो कुछ तुमने किया उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया,’ उसने कहा।

‘कोई बात नहीं, अनि। मैं कम से कम ये तो कर ही सकती थी न। और हां, मेरे पास तुम्हारे लिए एक सरप्राइज है,’ मैंने कहा और वो उत्सुकता से देखने लगा।

मैंने थर्मस लास्क से फिल्टर कॉफी कप में डाली।

‘ये तो सच में बहुत अच्छा सरप्राइज है। थैंक्स,’ उसने बैठकर कॉफी का घूंट भरते हुए कहा। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और सुब्बु अंदर आया।

‘हे, यार, तुम्हारी तो बड़ी खातिरदारी हो रही है। फिल्टर कॉफी की महक मुझे भी आ रही है,’ उसने सूंघते हुए कहा।

‘हां, ये दुनिया की बेस्ट फिल्टर कॉफी बनाती है,’ उसने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा।

‘अब चलो काम पर लग जाओ। इतना आराम काफी है,’ सुब्बु ने अनिकेत से कहा।

फिर सुब्बु ने मुझे देखा। मैं जानती थी कि उसके दिमाग में क्या चल रहा था। मैं भी वही सोच रही थी। कि ये अनि को सच बताने का सही समय था। कि उसकी वो एंजल इतनी भी भली नहीं थी। हालांकि मेरे एक मन को उसके लिए बुरा लग रहा था, दूसरा हिस्सा, प्रैक्टिकल मन कह रहा था कि उसकी मदद के लिए उसे सच बताना ही होगा। सच पता चलने के बाद वो उसकी पूजा करना बंद कर देगा और दो लड़कों को धोखा देने के उसके स्वार्थ को समझेगा। मैंने उसे सच बताने का फैसला किया।

‘अनि, हमें कुछ पता चला है,’ मैंने कहा और सुब्बु को देखा।

सुब्बु मेरा इशारा समझ गया।

‘यार, देखो, मुझे अफसोस है कि वो अब इस दुनिया में नहीं है। मुझे तुम्हारे लिए तकलीफ

हो रही है। लेकिन तृषा... वो तुम्हें धोखा दे रही थी,' उसने कहा।

मैंने तेज सांस ली।

हां। उसने कह दिया था। शब्द अभी भी हवा में अटके हुए थे।

अनि के चेहरे का रंग उतर गया था। वह शांत था।

'तुम्हारा क्या मतलब है?' उसने धीमे से पूछा।

'हमें भी इसका यकीन नहीं हो रहा था, अनि, लेकिन ये सच है। हम... हमने तस्वीरें देखी हैं,' मैंने कहा।

वो कुछ पल खामोश रहा। और जब वो बोला, उसकी आवाज एक फुसफुसाहट भर थी।

'कौन है?' उसने पूछा।

'विश्व,' सुब्बु ने कहा। 'हम उससे जाकर मिले, यार। निधि और मैंने उससे बात की। हमने उससे पूछा और उसने जो तस्वीरें दिखाईं, उन्हें देखने के बाद कोई शक नहीं रह गया। वो सच में साथ थे। और वो सब जगह इंटरव्यू दे रहा है। और वो लोग तो छह महीने में शादी भी करने वाले थे।'

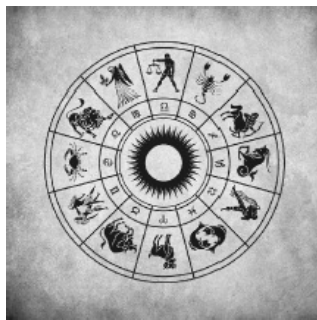
अनि कुछ पल खामोश रहा। अब कहने को कुछ नहीं बचा था। ऐसा लग रहा था मानो कच्चे घाव से पट्टी को खींचकर, एक झटके में निकाल दिया गया हो। अब घाव बहुत भद्दा था, नंगा।

मुझे अब बुरा महसूस हो रहा था। अनि टूटा हुआ दिखाई दे रहा था।

लेकिन हमें उसे बताना पड़ा। उसे जानने का हक था।

आखिरकार, मानो एक युग गुजरने के बाद, अनि बोला। उसकी बात सुनने के लिए हमें ध्यान देना पड़ा।

'तुम जानते हो,' उसने कहा, 'मुझे हमेशा से इस बात का शक था।'



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेना

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

मदद के लिए दूसरों के पास जाने से न झिझकें। आप खुद अपनी मदद नहीं कर सकते। चीजों को छोड़ना सीखो। आप हर चीज नियंत्रित नहीं कर सकते। जिस चीज से आप घबराते आए थे, उसी से सामना हो सकता है...

28

अनिकेत

जिंदगी में ऐसा भी समय आता है, जब आपके सामने सच को स्वीकारने के अलावा और कोई रास्ता नहीं होता। सच में वो शक्ति होती है, जो आपको अपाहिज बना सकती है, घायल कर सकती है, यहां तक कि मार भी सकती है। सुब्बु और निधि ने बस वही कहा था, जिसका मुझे हमेशा से शक था। लेकिन इसे सच के रूप में सुनना तकलीफदेह था। ये ऐसा दर्द था, जिसे मैंने कभी अनुभव नहीं किया था। तब भी नहीं, जब वो मरी थी। ऐसा लग रहा था, जैसे किसी ने छुरा

घोंप दिया था, ऐसा दर्द जो दिल से शुरू होकर पूरे बदन में फैल गया था। किसी बात पर शक करना एक बात है। लेकिन उसका सामना करना दूसरी। निधि ने कहा था कि उन्होंने फोटो देखे थे। मैं बस कल्पना ही कर सकता था कि वो कैसे फोटो होंगे।

वो ऐसा कैसे कर सकती थी? क्यों?

ऐसा नहीं था कि मैं बिल्कुल बेखबर था। इसके निशान मौजूद थे। कुछ ठोस भी। लेकिन बात ये थी कि मैंने उन्हें हमेशा दरकिनार कर दिया, उस ख्याल को कभी अपने में आने ही नहीं दिया। जब भी मैं इस पर बात करता, तृष मुझे जलन करने को मना कर देती, और कहती कि वो उसका सिर्फ दोस्त है। और मैं हमेशा उसका भरोसा कर लेता।

क्योंकि मैं उसे प्यार करता था।

और मैं इसे सच मानना चाहता था।

मैं कितना अंधा था। कितना मूर्ख था। मुझे वो समय याद आ रहा था, जब मैं उसे लेने भागकर एयरपोर्ट जाता था। मुझे वो समय याद आ रहा था, जो मैंने बस यूँ ही उसका इंतजार करते हुए बिताया था, वो वीकेंड जब मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था, क्योंकि वो 'बिजी' थी। मैं अब उसे मारना चाहता था। भले ही वो मर गई थी। और वो विश्व... वो हरामी। वो ऐसा कैसे कर सकता था?

हालांकि, वो भी शायद मेरे बारे में यही सोच रहा था। मैं विश्व को दोष नहीं दे सकता था। धोखा तो तृष ने दिया था। वो कितना आराम से झूठ बोल सकती थी। मैंने उसका विश्वास कैसे कर लिया। मैं बस उसके आगे-पीछे कुत्ते की तरह दुम हिलाता रहता था, और वो जब-तब मेरे सामने अपने प्यार के कुछ टुकड़े फेंक देती थी। अब मुझे खुद से नफरत हो रही थी।

मैं बहुत सारे ख्यालों में खोया था। हर ख्याल तकलीफ दे रहा था। हर ख्याल दर्द का कोई नया तार छेड़ जाता था। हर ख्याल कच्चे उतरे नाखून की तरह सता रहा था। या सिर पर पड़ते हथौड़े की तरह। या दिल पर चलते छुरे की तरह।

दर्द बहुत तेज था।

मैं बेबस था। हर पल मैं इन ख्यालों की बमबारी में दफन होता जा रहा था।

मैं बस मर जाना चाहता था। इस सबको खत्म कर देना चाहता था। इतनी लड़कियों में वो ही मुझे प्यार करने को क्यों मिली थी? उसकी खूबसूरती में मैं इतना अंधा क्यों हो गया था?

अचानक मुझे अहसास हुआ कि निधि और सुब्बु यहीं थे। वो परेशान दिखाई दे रहे थे। घबराए हुए।

मेरे पास उनसे कहने के लिए कुछ नहीं था। मैं अकेला रहना चाहता था।

'दोस्तों, क्या तुम दोनों थोड़ी देर के लिए जा सकते हो? मैं रूड नहीं होना चाहता, लेकिन मुझे कुछ देर अकेला रहना है,' मैंने कहा।

निधि और सुब्बु ने एक-दूसरे को देखा।

'यार, मुझे अफसोस है। हमें लगा कि तुम्हें बताना सही होगा। तुम ठीक तो हो न?'

हां। क्या सवाल था।

क्या तुम ठीक होंगे, जब तुम्हें पता चले कि तुम्हारी गर्लफ्रेंड जिसे तुम दिलोजान से चाहते थे, तुम्हें धोखा दे रही थी?

'मैं सही हूं। मुझे कुछ समय चाहिए, ठीक है?'

‘जरूर, अनि, मैं जा ही रही थी। मुझे भी कुछ काम खत्म करने थे। जब भी तुम्हें मेरी जरूरत हो, फोन कर देना। मैं यहां से भी अपना काम कर सकती हूं,’ निधि ने कहा।

‘थैंक्स,’ मैंने कहा और वापस बिस्तर में लुढ़क गया।

‘तुम्हें लगता है वो सही होगा?’ मैंने बाहर जाते हुए निधि को सुब्बु से कहते सुना।

‘मुझे उम्मीद है। उसे बताना सच में बहुत तकलीफदेह था,’ उसने कहा।

मैं निधि का जवाब नहीं सुन पाया, क्योंकि तब तक वो दूर जा चुके थे।

उनके जाने के बाद, डॉक्टर के साथ नर्स, और हॉस्पिटल के न्यूट्रिशनिस्ट आए।

‘अनिकेत, आज कैसा महसूस हो रहा है?’ डॉ. कृष्णामूर्ति ने पूछा।

जैसे कोई ट्रक मेरे ऊपर से गुजर गया हो।

मरा हुआ।

हताश।

तकलीफ में।

लुटा हुआ।

बेवकूफ।

‘आज बेहतर लग रहा है।’

‘बढ़िया है। हम तुम्हें सेमी-सॉलिड फूड देना शुरू करेंगे, और देखेंगे कि तुम उसे पचा पाते हो या नहीं। अगर तुम एकदम से सॉलिड खाना शुरू कर दोगे, तो उल्टी आ जाएगी। तुम्हारी बॉडी धीरे-धीरे सामान्य की तरफ लौटेगी,’ उन्होंने कहा।

फिर न्यूट्रिशनिस्ट ने पूछा कि क्या मैं कुछ स्पेशल खाना चाहता हूं, किसी चीज का मन हो तो वो दिला देगी।

हां, बिल्कुल। मेरा मन उस समय को ललचा रहा है, जब सबकुछ सही था। जब मुझे इस सवाल से नहीं जूझना था, जो मुझे अब खाए जा रहा था।

तुम वो वापस ला सकती हो? मेरे लिए वो ला दो? ठीक है?

‘थैंक्स। कुछ भी चलेगा। मैं कुछ भी खा लूंगा। आप देख लीजिएगा,’ मैंने कहा।

उनके जाने के बाद मैंने आंखें बंद कर लीं और हजारों यादें मुझ पर हावी हो गईं। तृष मुस्कुरा रही थी। तृष बीच पर घूम रही थी। तृष मेरे साथ सो रही थी। मेरे बालों को सहला रही थी। उसकी आवाज। उसकी खुशबू। उसकी हंसी। उसका नाराज होना। उसका बचपना करना। उसका मेरी टीशर्ट पहनना।

क्या ये सब करते हुए वो उसके बारे में सोच रही थी?

बढ़िया तृष—तुम ये सब मुझे कब बताने वाली थीं? अगर तुम उससे शादी करना चाहती थीं, तो मेरे साथ पॉन्डिचेरी क्यों गई थीं? तुमने हम में से किसी एक के साथ अपना रिश्ता खत्म क्यों नहीं किया? तुम ही एक थीं जो मुझे सबसे ज्यादा जानती थीं। तुम मुझे अपना बेबी कहती थीं। तृष, तुम मुझे प्यार करती थीं—और मैं तुम्हें। क्या वो सब दिखावा था? इसमें से कितना सच था?

नर्स आई और उसने पूछा कि अगर मैं बाथरूम जाना चाहता हूं, तो जा सकता हूं, वो थोड़ी देर के लिए आईवी ड्रिप निकाल देगी। जब मैं निबट जाऊंगा, वो वापस चालू कर देंगे। उसने कहा कि वो सूई को लगा ही छोड़ देगी।

‘क्या तुम सूई भी नहीं हटा सकते?’ मैंने पूछा।

‘नहीं, उसका लगे रहना ही सही है, नहीं तो हमें दोबारा लगानी पड़ेगी। यह आसान रहेगा,’ उसने कहा। ‘क्या तुम्हें चक्कर महसूस हो रहे हैं? प्लीज खड़े होकर देखो?’ उसने कहा।

मुझे बहुत कमजोरी महसूस हो रही थी, लेकिन मैं बाथरूम तक चल सकता था। मेरे पैर रबड़ जैसे महसूस हो रहे थे लेकिन मैंने उससे कहा कि मैं चल लूंगा।

‘प्लीज दरवाजा अंदर से बंद नहीं करना, अगर किसी चीज की जरूरत हो तो बाथरूम में भी घंटी लगी है,’ उसने बताया।

मैंने दांतों को ब्रश किया। फिर खुद को आइने में देखा, तो सकते में आ गया। मेरी आंखें खोखली लग रही थीं, सूजी हुई। बाल बिखरे हुए थे। और शेविंग से बढ़कर दाढ़ी आ चुकी थी। और तोंद तो लग रहा था, जैसे शरीर में ही कहीं पिघल गई हो। यकीनन मेरा वजन कम हो गया था—ऐसे हालत में तो वैसे भी हो ही जाना था। मुझमें दाढ़ी बनाने की ताकत नहीं थी। और हाथ में लगी इस आईवी सूई के साथ नहाना भी मुमकिन नहीं लग रहा था।

मैं वापस बिस्तर पर आया, और वहां गर्मागर्म नाश्ता मेरा इंतजार कर रहा था। ये सब्जियों का कोई गाढ़ा सा सूप था। मैंने आधा तो खा लिया, लेकिन फिर उबकाई आने लगी, तो मैं बाकी बचा छोड़कर, लेट गया।

अब मैं सोना भी नहीं चाहता था। मैं फिर से सोकर, सपने में तृष के बारे में सोचना नहीं चाहता था। तो मैंने टीवी चला दिया और कुछ स्पोर्ट्स चैनल बदल-बदलकर देखने लगा, उनमें से एक पर मेरी नजर टिक गई। उस पर फीजी में आयोजित सर्फिंग कर्पीटिशन दिखाया जा रहा था। सर्फ करने वाला आदमी कमाल का प्रदर्शन कर रहा था। लहरों पर चलते हुए मैं उसे हैरानी से देख रहा था।

कुछ देर बाद, नर्स आई और पूछा कि क्या मैंने अपना सूप खत्म कर दिया था, मैंने कहा कि थोड़ा तो पी लिया, लेकिन फिर उबकाई जैसा महसूस होने लगा।

‘कोई बात नहीं, खाने के साथ जबरदस्ती नहीं करो,’ उसने कहा। फिर उसने आईवी ड्रिप लगाई और चली गई।

अब मैं अपने ख्यालों और टीवी पर दिखाई देते उस सर्फर के साथ अकेला था। मुझे दर्शिता सेन का ख्याल आया। वो मुझे क्या चेतावनी देने की कोशिश कर रही थीं? क्या उन्होंने तृष का ऐसा अंत देख लिया था? उन्होंने उससे रिश्ता तोड़ लेने को क्यों कहा था? क्या वो सच में चेहरे पढ़ सकती थीं?

मेरा फोन बेड के पास ही रखा था, और मैंने उन्हें ऑनलाइन ढूंढने की कोशिश की। उनकी कोई वेबसाइट नहीं थी, लेकिन उनके बारे में कई आर्टिकल थे, उनमें से एक में उन्होंने बताया कि वो कैसे चेहरे पढ़ने और टैरो कार्ड से जुड़ी थीं। जब वो बहुत छोटी थीं, तो उनकी मां ने आत्महत्या कर ली थी। दर्शिता को पता ही नहीं था कि उनकी मां डिप्रेस थीं, और इसी दुख ने उन्हें चेहरे के छोटे-छोटे भावों को पढ़ने की ओर प्रेरित किया। उसके बाद वो टैरो और फिर ज्योतिष की तरफ आकर्षित हुई, और उन्होंने कई गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की। अपने इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि वो लोगों को जीवन और उनकी कठिनाई का सच बताकर उनकी मदद करना चाहती हैं।

अचानक मुझे उनसे बात करने की बहुत जरूरत महसूस हुई। मैं उनसे कुछ बातें पूछना

चाहता था। मैं सोच रहा था कि क्या वो मुझसे बात करेंगी।

मैंने उन तक पहुंचने के बारे में सोचा और मुझे प्रियंका का ख्याल आया। वो और मैं फेसबुक फ्रेंड थे।

मैंने उसे मैसेज लिखा:

हाय प्रियंका,

याद है? वो लड़का जो तुम्हारे बॉयफ्रेंड की आंटी से भविष्य जानने के लिए स्ट्रिप शो करने को तैयार हो गया था? वेल, पता है—उन्होंने बिना स्ट्रिप शो के ही मेरे लिए एक भविष्यवाणी की थी। मैं हाल ही में उनसे पॉन्डिचेरी में मिला था और उन्होंने मुझे कुछ बताया था। मैं उनसे बात करना चाहता था।

अभी मैं हॉस्पिटल में हूं, और मेरे पास टाइम ही टाइम है। (मैं ठीक हूं—मेरी हालत में सुधार है।)

प्लीज, प्लीज मेरी एक मदद कर दो और मुझे उनका फोन नंबर दे दो।

अनिकेत

फिर, कुछ सोचते हुए, मैंने उसमें अपना फोन नं. भी लिख दिया। मैंने उस मैसेज को दो बार पढ़ा। मतलब वो ठीक तो लग रहा था न। नॉर्मल—गिड़गिड़ाता हुआ तो नहीं, जैसी की अभी मेरी हालत थी।

मैं बार-बार जवाब के लिए फोन चैक कर रहा था और आखिरकार दो घंटे बाद, उसका जवाब मिला।

हाय अनिकेत!

हां! तुम मुझे याद हो।

जल्दी ही मेरी शादी होने वाली है। शायद तुम्हें पहले से पता होगा, शोमो की आंट ने जरूर बताया होगा। मैंने उनसे बात की, और उन्होंने बताया कि वो साढ़े तीन बजे तुम्हें फोन करेंगी। मैंने उन्हें तुम्हारा फोन नंबर दे दिया है।

आराम करो! आशा है तुम जल्दी ठीक हो जाओगे।

प्रियंका

नोट: उस स्ट्रिप शो के बारे में सोचकर अभी भी मुझे हंसी आ जाती है।

‘बहुत-बहुत शुक्रिया, तुम्हारा अहसान रहेगा मुझ पर,’ मैंने टाइप करके भेज दिया।

फिर ख्याल आया और टाइप किया, ‘शादी के लिए बहुत सी शुभकामनाएं!’

दर्शिता सेन का फोन ठीक साढ़े तीन बजे आया। फोन बजते ही मैं लगभग उछल पड़ा।

‘हैल्लो, अनिकेत,’ उन्होंने कहा।

उनकी आवाज गहरी थी। शांत। और उसमें एक ठहराव भी था। वो मेरी आत्मा पर किसी दवाई की तरह उतर रही थी। जैसे मैं किसी पुराने दोस्त से बात कर रहा हूं। ऐसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

‘हैल्लो, मैम। फोन करने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया,’ मैंने कहा।

‘मुझे करना ही था। उस दिन मैंने बहुत बड़ी अनहोनी देखी थी। मैंने तुम्हें चेतावनी देने की कोशिश भी की थी। वो तबाही बहुत बड़े पैमाने पर थी। वो या तो बर्बाद कर सकती थी, या कोई जान तक ले सकती थी,’ उन्होंने कहा।

ओह। हे भगवान। वो जानती थीं।

‘मैं हैरान हूं, मैम। एकदम हैरान। मुझे अभी भी उस पर यकीन नहीं हो रहा, जो हुआ था। तृष... वो अब इस दुनिया में नहीं रही।’

‘ये होना ही था। सब सितारों का खेल है,’ उन्होंने कहा।

‘मैं अभी उस घटना से उबर नहीं पाया हूं।’

‘प्रियंका ने मुझे बताया कि तुम हॉस्पिटल में हो। क्या हुआ? तुम ठीक तो हो न?’ उन्होंने पूछा।

‘पहले से बेहतर हूं। उसकी मौत का मुझ पर गहरा सदमा हुआ। वो पार्टी में गई थी और वहां से गिरकर मर गई। मुझे अभी भी लग रहा है कि अगर मैं उसके साथ होता, तो उसे बचा लेता। लेकिन...’ मेरी आवाज लड़खड़ा गई।

मैं उन्हें ये नहीं बता पा रहा था कि तृष मुझे धोखा दे रही थी, और कि ये सच उसकी मौत से भी ज्यादा डरावना था, हालांकि इसका शक मुझे हमेशा से था।

‘तुम्हें इस पर इतना अफसोस नहीं करना चाहिए। ये तुम्हारे लिए मुक्ति है। अब तुम्हारी जिंदगी बेहतर मोड़ लेगी। वो तुम्हारे लिए सही नहीं थी। तुम्हारी आत्मा को उससे एक सबक सीखना था। कर्म का वो चक्र अब पूरा हुआ और वो आगे बढ़ गई है। उस दिन जब मैंने उसका चेहरा देखा था, तब मुझे उसमें एक दूसरे पुरुष की ऊर्जा दिखाई दे रही थी। बहुत ही प्रबल। और वो तुम्हारी ऊर्जा नहीं थी। वो उसे घेरे हुए थी। वो लड़की पूरी तरह उसमें डूबी थी। मैंने मौत और तबाही भी देखी थी। अगर तुम उसके साथ होते, तो तुम उसकी जगह मर जाते। तुम्हारे कर्मों ने तुम्हें बचाया है।’

ये सुनकर मेरी रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। मैं बुरी तरह से हिल गया। उनकी बात सुनकर मैं चौंक गया था। वो सब मुझे अवास्तविक लग रहा था।

‘मैम, मैं हैरान हूं कि आप इतना कुछ देख पाईं।’

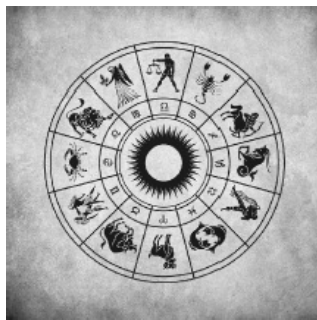
‘मैं नहीं देखती हूं, अनि। मैं बस ऊर्जाओं को महसूस करती हूं। तुम्हारी ऊर्जा—बहुत शुद्ध है। तुम उसे दिल से चाहते थे। तुम उसके तेज पर आकर्षित थे। और तुम्हारी आत्मा उससे तभी मुक्त हो सकती थी, जब वो खुद सारे बंधन तोड़ लेती। और उसकी मौत—वो उसने खुद ही बुलाई थी। अनिकेत, ये चीजें हमारे नियंत्रण में नहीं होती हैं। तुमने अपना श्रेष्ठ किया। अब आराम करो। खुद को हील करो। तुम्हारी बॉडी को इसकी जरूरत है,’ उन्होंने कहा।

उनके शब्दों ने मुझे राहत पहुंचाई। वो दवाई की तरह थे। जैसे तपते हुए माथे पर किसी ने बर्फ की पट्टी रख दी हो। मैं नहीं जानता कि उन्होंने जो कहा वो सच था या नहीं, लेकिन उससे मुझे बहुत सुकून महसूस हुआ। तबसे मुझे आज पहली बार शांति महसूस हो रही थी।

‘बहुत बहुत शुक्रिया, मैम। आपको अंदाजा भी नहीं होगा कि आपके शब्दों ने मुझे कितनी राहत पहुंचाई थी। आपको कुछ पेमेंट देने में मुझे खुशी होगी—आपके समय और सलाह के लिए,’ मैंने कहा। मैं सच में उनका बहुत आभारी था।

वो हंसी। ‘तुम मेरी फीस नहीं दे सकते, अनिकेत। मैं बहुत ज्यादा चार्ज करती हूं। मेरे क्लाइंट सेलीब्रेटी होते हैं। लेकिन हां, बदले में एक स्ट्रिप-शो कैसा रहेगा?’ उन्होंने कहा और हंस दी।

और तृष के मरने के बाद, पहली बार मेरे चेहरे पर सच्ची मुस्कान आई थी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

आप जिन हालात को स्वीकारने में संघर्ष महसूस कर रहे थे, उनमें कुछ स्पष्टता हासिल होगी। कर्म के संबंध को नकारा नहीं जा सकता। आप जो भी महसूस कर रहे हैं, उसमें सहज रहें। उससे लड़ने की कोशिश न करें।

29

निधि

ए पॉट ऑफ क्ले दैट होल्ड्स गोल्ड

क्या उस पल को नियंत्रित किया जा सकता है, जिस पल में आप जान पाते हैं कि आपको किसी से प्यार हो गया? इसे बयान करना मुश्किल है। लेकिन आप जान जाते हो। आप दोस्ती से शुरुआत करते हैं, और कहीं बीच सफर में, एक कप कॉफी पीते हुए, किसी मैसेज से, उनके हंसने के अंदाज से, उनकी नाक के आकार से, उनके कुछ कहने से—आप जानजाते हैं कि

आपको उनसे प्यार हो गया। और एक बार जब ये हो जाता है, तो दोस्त, ये आपको अपनी गिरफ्त में ले लेता है!

सबकुछ साफ समझ आने लगता है। रौशन। बेहतर। उनकी आवाज सुनकर आपका दिल गाने लगता है, न सुनने पर डूबने। आप उनके हर शब्द को संभालकर रखते हो।

जब वो अपनी भावनाओं को अपने शब्दों में बयां करते हैं, तो एक निश्चितता आप दोनों को समाहित कर लेती है। आप खुशी से झूम उठते हो, सुख से भर जाते हो, रोमांचित हो जाते हो।

प्यार में ऐसी ताकत होती है, जो आप दोनों को ऐसी दुनिया में पहुंचा देती है, जहां आपके लिए एक-दूसरे से बढ़कर कुछ मायने नहीं रखता।

यही तो प्यार का जादू है।

वो पल कौन सा था जब आपको सच में इस प्यार का अहसास हुआ?

ज्वैलरी में डील करने वाले एक वेब पोर्टल के लिए मुझे प्यार की कुछ सच्ची कहानियां लिखनी हैं। अगर आपके पास भी ऐसी कोई कहानी है, जिसे आप मुझसे साझा करना चाहते हैं, तो मुझे भेजिए। आपके गुडीज जीतने का भी मौका है। मेरा ईमेल-एड्रेस पेज की राइट-हैंड कॉर्नर पर दिया गया है।

अगली बार तक के लिए—अलविदा और अपने दिल को प्यार से बागबान रखिए।

ये पोस्ट ऐसी थी जो मैंने सच में दिल से लिखी थी। उसमें लिखे हर शब्द को मैं महसूस कर सकती थी। तृषा के मरने के दिन से ही, मैं लगातार अनि के बारे में सोच रही थी। जितना ज्यादा मैं उसके बारे में सोचती, उतनी मेरी राय मजबूत होती जाती। मैं नहीं जानती कि ये कैसे हुआ, लेकिन ये हो गया था। मुझे सच में उससे प्यार हो गया था। मैं इसे एक फैक्ट की तरह देख रही थी। जहां ये बात मुझे रोमांचित कर रही थी, वहीं डरा भी रही थी। जो लोग किसी के साथ रिलेशनशिप में होते हैं, वो अपने साथी के अलावा किसी दूसरे के लिए ऐसी फीलिंग्स नहीं रख सकते (उनका समय और नजरें सिर्फ उन्हीं के लिए होनी चाहिए)।

मैं ऐसे कैसे किसी दूसरे से प्यार कर सकती थी? ये ऐसे नहीं होना चाहिए था। मनोज और मैं एक-दूसरे से शादी करके हंसी-खुशी रहने वाले थे। मैं मनोज के प्यार से कब बाहर आ गई। वो बुरा इंसान नहीं था। फिर भी, मैं उसके साथ वैसा नहीं महसूस करती, जो अनि के साथ होने पर करती हूं। मैं मनोज के लिए जरा भी रक्षात्मक नहीं होती। मैं उसे पकड़कर उसकी परवाह नहीं करना चाहती। ये जो मुझे अब महसूस हो रहा था, ये सच में प्यार ही था। इसमें कोई गलती नहीं थी।

मुझे किसी से इस बारे में बात करनी होगी। ऑटोमेटिकली मेरी उंगलियां कॉन्टेक्ट लिस्ट में नंबर टटोलने के बाद, तारा के नंबर पर आकर ठहर गईं। मैंने उसका नंबर मिलाया और उसने मैसेज के साथ मेरा फोन काट दिया।

‘कुछ अर्जेंट है? क्लाइंट के साथ हूं,’ उसमें लिखा था।

‘नहीं... हम बाद में बात कर लेंगे,’ मैंने जवाब दिया।

एक बार फिर मैं अपनी कॉन्टेक्ट लिस्ट स्कॉल कर रही थी।

मुझे अपनी लड़कियों के गैंग से बात करे हुए भी काफी समय हो गया था। मैंने इंस्टेंट मैनेजर

पर चैक किया और देखा कि मैरी उस पर नहीं थी। सुजाता ऑनलाइन थी, और उसका 'लास्ट सीन' दस मिनट पहले का था। प्रिया ने आखरी बार मैसेंजर दो दिन पहले देखा था। तो मैं सुजाता से बात कर सकती थी। मैंने उसे मैसेज किया।

'हाय? कैसी हो तुम?' मैंने पूछा।

'मैं बढ़िया हूँ। तुम कैसी हो? काफी टाइम हो गया! तुम तो गायब ही हो गई थीं। तुम दोबारा चेन्नई कब आ रही हो?'

मैं मुस्कुराई। ये सुजाता की खासियत थी। वो आपको जवाब देने का समय दिए बिना ही सवालों की बौछार कर देती थी। फिर उसने मुझे फोन किया और हमने एक-दूसरे से पूछा कि और जिंदगी में क्या चल रहा था। वो घर, दो बच्चों ओर अपने कैरियर के बीच संतुलन बनाने में बिजी थी। उसने मुझे अपने नए प्रोजेक्ट की डिटेल् दी, जिस पर वो काम कर रही थी, और बताया कि घर और कैरियर साथ में संभालना दिनोदिन मुश्किल होता जा रहा था।

फिर उसने मेरे बारे में पूछा।

मैं एक मिनट रुकी, ये सोचते हुए कि मुझे उसे कितना बताना चाहिए। आखिरकार मैंने उसे कुछ भी नहीं बताने का फैसला किया। तो मैंने उसे यूँ ही पूछा लिया।

'हे—तुम्हारे लिए एक सवाल है। जिस आदमी से तुम्हारी शादी होने वाली हो, तभी तुम्हें अहसास हो कि तुम उससे प्यार नहीं करते। ऐसे में तुम क्या करोगी?' मैंने पूछा।

उसने तुरंत मेरी बात पकड़ ली।

'हां! पिछली बार तुमसे बात करने पर ही मैंने ये भांप लिया था। लेकिन तब मैंने इस पर सवाल नहीं उठाया, लेकिन तुम अपनी शादी की तारीख पर बात करने से बहुत झिझक रही थीं। आमतौर पर लोग शादी की बात से बहुत उत्साहित हो जाते हैं। लेकिन तुममें, वो खुशी, वो चमक दिखाई नहीं दे रही थी,' उसने कहा।

'अब मैं क्या करूँ? मैं अब उसे प्यार नहीं करती। मैं सोचती थी कि करती हूँ। एक समय शायद वो प्यार था। लेकिन अब ऐसा कुछ महसूस नहीं होता।'

'क्या वो अच्छा कमाता है?'

'हां, लेकिन मेरे लिए कमाई कभी मायने नहीं रखती। एक समय, मैं भी अच्छा कमा रही थी।'

'वो तुमसे अच्छा बर्ताव करता है, या नहीं करता?'

'हां, हां। मैंने बताया न कि वो बुरा इंसान नहीं है। वो तो शादी के लिए बहुत जोर दे रहा है। दरअसल, वो चाहता है कि हम जल्दी से शादी करके यूएस में ही सैटल हो जाएं।'

'निधि, क्या तुम्हें सच्ची सलाह चाहिए?'

'हां! नहीं तो मैं तुमसे बात ही क्यों करती?'

'देखो, ये प्यार-व्यार—इसकी एक उम्र होती है। इतने सालों की शादी के बाद ये समझना मुश्किल नहीं रह जाता। ये बदल जाता है। बच्चों के आने से सब बदल जाता है। फिर तुम इस बारे में प्रैक्टिकल होकर सोचने लगते हो। एक-दूसरे के लिए शुरुआती सारी ललक मानो कहीं छू हो जाती है। लेकिन और दूसरी चीजें महत्वपूर्ण हो जाती हैं। जैसे बच्चों को पालने के लिए स्थिर माहौल, साथ मिलकर कमाए गए पैसों से भविष्य की सुरक्षा, साथ ही एक टीम का अहसास होना, जो हमेशा आपके साथ खड़ी रहती है।'

‘तो तुम्हारा मतलब है कि किसी से शादी करने के लिए उससे प्यार करने की जरूरत नहीं होती?’

‘निधि, मैच्योर हो जाओ! ये सब सिर्फ रोमानी भाव हैं, जिन्हें तुम पकड़कर बैठी हो। अगर वो तुमसे अच्छा बर्ताव करता है, बढ़िया कमाता है और तुमसे शादी करना चाहता है, तो वो शादी के लिए बिल्कुल परफेक्ट बंदा है। उसे पकड़ लो और घर बसा लो। प्यार की उम्र बहुत लंबी नहीं होती। लेकिन तुम दोनों के नाम वाली प्रोपर्टी—यार, वो बहुत मायने रखती है!’

सुजाता की इस स्पष्टता से मैं थोड़ा सकते में थी। मैंने उससे कहा कि मैं इस बारे में सोचूंगी और उसकी ईमानदारी के लिए शुक्रिया कहा। मैंने उसे कहा कि ये सचाई मुझे अच्छी लगी।

फिर मैंने अपने लिए आइस टी बनाई और टीवी चलाकर बैठ गई। मैं सुजाता की बातों को सोच रही थी। क्या शादी सिर्फ समझौता है? प्यार की कैसे इसमें कोई महत्ता नहीं है?

तभी तारा का फोन आया।

‘हाय, ब्यूटीफुल सनशाइन। और आज क्या हो रहा है?’ उन्होंने पूछा।

वो सच में बहुत प्यारी थीं। बहुत भरोसेमंद। हमेशा मेरे लिए तैयार।

मैंने उन्हें तृषा की मौत, सुब्बु और मेरे श्मशान घाट जाने, और हॉस्पिटल में रहकर अनिकेत की देखभाल करने के बारे में बताया।

‘ओह नो—ये सुनकर बहुत अफसोस हुआ। दरअसल, मैंने अखबार में इस बारे में पढ़ा था। लेकिन नहीं जानती थी कि तुम उसे पर्सनली जानती होंगी। तुम कितना परेशानी रही होंगी। प्लीज मेरी संवेदना अपने दोस्त अनिकेत को देना,’ उन्होंने कहा।

‘जरूर। और तारा... उम्म... एक और चीज के बारे में मैं तुमसे बात करना चाहती थी। तुम्हारे पास टाइम है? तुम्हें वापस किसी मीटिंग में तो नहीं जाना न?’

‘तुम्हारे लिए मेरे पास टाइम ही टाइम है, मेरी सनशाइन। बताओ,’ उन्होंने कहा।

‘मैं... मुझे लगता है मैं अनिकेत को प्यार करने लगी हूं। नहीं। मैं सच में अनिकेत को प्यार करती हूं।’

दूसरी तरफ कुछ पल खामोशी रही, फिर वह बोलीं ‘ओह... ओके... और?’

‘तारा, तुम्हें क्या लगता है, मुझे क्या करना चाहिए?’

‘क्या इसलिए तुम मनोज से शादी नहीं करना चाहती थीं?’

‘नहीं—शादी के नाम से मुझे बहुत असहज लगने लगा था। लेकिन अभी तक मैं उसके लिए कोई कारण नहीं दे पा रही थी। आज सुबह, जब मैं हॉस्पिटल से वापस आई, तब मैं अपनी भावनाओं को समझ पाई, मैं बहुत बुरी तरह अनि को याद कर रही थी। उसके साथ मैं खुश और अपनापन महसूस करती हूं। मनोज के साथ, मैं बेजान हो जाती हूं... देखो, तारा, पता नहीं कि मेरी बातों का कुछ मतलब भी निकल पा रहा होगा या नहीं। बस मैं कुछ-कुछ बोले जा रही हूं।’

‘नहीं, नहीं, सनशाइन। तुम बिल्कुल सही कह रही हो। मैं तुम्हें समझ सकती हूं। मैंने तुम्हारी बात सुनी। और मुझे लगता है कि प्यार को पाना दुनिया की सबसे बड़ी नेमत है। लोग पूरी जिंदगी प्यार ढूंढते रहते हैं, लेकिन कुछ कम ही लोग इसे हासिल कर पाते हैं।’

‘हां। लेकिन क्या मैं यहां प्रेक्टिकल हूं? मैंने अपनी दोस्त सुजाता से बात की। तुम उसे जानती हो न? वो स्कूल में मेरे साथ थी?’

‘हां। मैं उसे जानती हूं। जहां तक मुझे याद है, वो चेन्नई में ही रहती है न? ये वही है न

जिससे तुम पिछली बार आने पर मिली थीं?’

‘हां, हां, वही। मैंने उससे बात की और उसने कहा कि शादी के बाद प्यार के कोई मायने नहीं बचते। उसने मुझे प्रेक्टिकल रहते हुए मनोज से शादी करने की सलाह दी।’

‘हा! वह जानती ही क्या है? और तुमने उससे बात ही क्यों की, सनशाइन? क्या तुम मुझे और अपने डैड को नहीं देखती हो? हम बहुत खुश हैं। उनसे शादी के समय मेरी उम्र लगभग तुम्हारे जितनी ही थी। मैं हर सुबह खुद को खुशानसीब समझते हुए उठती हूं कि वो मेरी जिंदगी में हैं। उनके साथ समय बिताना मुझे बहुत पसंद है। और तुम जानती हो कि वो भी ऐसा ही महसूस करते हैं। ऐसे लोगों कि मत सुनो जो तुम्हें प्रेक्टिकल होकर अपने मुताबिक बेस्ट ऑप्शन के साथ “सैटल” होने की सलाह दे रहे हों। खुद से पूछो कि तुम क्या महसूस करती हो। अपने दिल की सुनो, और तुम्हें जवाब मिल जाएगा।’

‘थैंक्स, तारा! पता है तुमसे बात करके मुझे हमेशा अच्छा लगता है?’

‘ये तो आपसी समझ है। अब तक तो तुम ये समझ ही गई होंगी। वैसे—तुमने अनिकेत को अपनी फीलिंग्स के बारे में बता दिया?’

‘नहीं, तारा! उसकी गर्लफ्रेंड अभी कुछ ही दिन पहले मरी है। पता है, वो उसे कितना प्यार करता था।’

‘हां। उसे टाइम दो। उसे पहले ठीक होने दो। और अगर तुम अपनी फीलिंग्स को लेकर निश्चित हो तो मनोज को बता दो। जितना जल्दी बताओगी, उतना ही बेहतर रहेगा। उसे क्यों झूठी उम्मीद में लटकाकर रखना?’

‘हां, मैं उसे बता दूंगी। तुम लोग बंगलौर कब आ रहे हो?’ मैंने पूछा।

‘देखते हैं। शायद जल्दी ही कुछ काम निकले। अपना ध्यान रखना, डार्लिंग,’ उन्होंने कहा।

लाइन काटते ही मैंने सुब्बु को फोन मिलाया। मैं अनि से मिलने को बेताब थी। और मैं जानती थी कि सुब्बु भी उससे मिलने जाना चाहता था।

‘हे, मैं दिन में अनि से मिलने का प्लान बना रही थी। क्या तुम चलना चाहोगे?’

‘मैं चलूंगा। क्या तुम मुझे पिक कर सकती हो? मैं इंटेल के बाहर मिल जाऊंगा,’ उसने कहा।

‘हां, कर लूंगी। जो तुम मझसे सारी फ्री राइड ले रहे होन—इसके चार्ज लगेंगे।’

‘मैं तुम्हारा ब्लॉग रिडिजाइन कर सकता हूं। बढ़िया सा हेडर, और तुम्हारी खुद की वेबसाइट।’

‘ओह! मैं तो मजाक कर रही थी। लेकिन ये ऑफर तो कमाल का है!’ मैंने उसे बताया, और उसने वादा किया कि वो मेरी मदद करेगा।

‘सुब्बु, क्या तुम भगवान पर भरोसा करते हो?’ मैंने पूछा।

‘क्यों? अचानक ये सवाल क्यों?’

‘मैं मंदिर जाना चाहती हूं। दिलचस्प बात ये है कि मैं कभी पहले मंदिर नहीं गई हूं। लेकिन अब, पता नहीं क्यों, मैं अनि के लिए प्रार्थना करना चाहती हूं। हॉस्पिटल के रास्ते में एक मंदिर पड़ता है। तो अगर मैं तुम्हें पिक करूंगी तो या तो तुम्हें गाड़ी में इंतजार करना पड़ेगा, या तुम मेरे साथ मंदिर में भी आ सकते हो।’

‘मैं तुम्हारे साथ मंदिर में चलूंगा। मेरी परवरिश बहुत धार्मिक माहौल में हुई है। तुम अंदाजा लगा सकती हो कि अगर मेरे पेरेंट्स ने मेरा नाम सुब्बु रखा है, तो उनकी सोच कैसी रही होगी,’

वह हंसा।

‘ग्रेट, जल्दी मिलते हैं,’ मैंने कहा।

जैसे ही मैंने फोन काटा, मैं जानती थी कि मुझे क्या करना था। मुझे मनोज को बताना था। इसमें यकीनन और देर नहीं करनी चाहिए थी।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

...आपका परिवार आपकी मदद करेगा और दर्द से बाहर निकालने की कोशिश करेगा लेकिन आप अकेला रहना चाहोगे। उनके प्रयासों की थोड़ी सराहना करो। हालांकि, कुछ समय अपने लिए भी निकालो।

30

अनिकेत

दरवाजे पर दस्तक हुई और मैंने उधर देखा तो नर्स को मेरी तरफ मुस्कुराते हुए देखा।

‘अनिकेत? आपसे मिलने कोई आया है। देखो तो कौन आया है।’ उसकी मुस्कान और बड़ी हो गई थी।

मैं सोच रहा था कि कौन आया होगा। तब मैंने अपने मॉम और डैड को देखा। शिट, नहीं। ये तो मैं कभी नहीं चाहता था। मैं उन्हें यहां बुलाना नहीं चाहता था। मुझे निधि को अपने पेरेंट्स का

नंबर ही नहीं देना चाहिए था।

‘कन्ना, तू कैसा है?’ मॉम ने अंदर आते हुए पूछा। उनकी आंखों में आंसू भरे थे।

मुझे इससे चिढ़ थी। मैं सही हूं। मैं अपनी मां को यूं रुलाना नहीं चाहता था। उन्हें रोता देखने से मुझे बुरा लगता था।

‘मां, कुछ नहीं हुआ है, मैं ठीक हूं,’ मैंने कहा और उन्होंने अपनी बांह मेरे कंधों पर रख दी।

डैड मेरी तरफ सिर हिला रहे थे, और फिर अटेंडेंट के बेड पर बैठ गए।

‘खुद को देखा, तुम कितने कमजोर हो गए हो। और तुमने शेव भी नहीं किया,’ मॉम ने कहा।

‘और बालों का क्या? क्या तुम इन्हें बढ़ा रहे हो? किसी बकरे की तरह लग रहे हो,’ डैड ने टिप्पणी की।

मजे की बात थी कि उनका ऐसा कहना अच्छा लगा। वो बिल्कुल हमेशा की तरह बात कर रहे थे। कोई मेलोड्रामा नहीं, कोई रोना-धोना नहीं। वो मेरे बारे में परेशान भी थे, तो उसे दिखा नहीं रहे थे।

‘मुझे बाल कटवाने थे, लेकिन शायद हॉस्पिटल वालों के पास नाई नहीं होता न,’ मैंने विरोध किया, लेकिन डैड व्यंग्य समझ नहीं पाए।

‘तो हुआ क्या था?’ मॉम ने पूछा।

‘लंबी कहानी है, मां,’ मैंने कहा।

‘वो लड़की कौन थी जिसने फोन किया था?’ डैड ने पूछा।

‘उसका नाम निधि है। मैं उससे पॉटरी सीख रहा था,’ मैंने कहा।

‘हम्म।’ उन्होंने सिर हिलाया लेकिन कुछ कहा नहीं।

‘तो तुम लोगों ने यहां आने का फैसला कैसे किया? आप तो कहीं हैदराबाद जाने वाले थे न?’

‘हां, हम शादी में गए थे। उशाक्का का बेटा शादी कर रहा है। तुम्हें याद है न वो?’

‘मुझे वो कैसे याद होगा, मां। पता नहीं कितने साल पहले मैं उन लोगों से मिला था?’

‘शायद तुम तब पांच साल के थे। तुम सारा समय एक साथ खेलते रहते थे। फिर वो अमेरिका चला गया।’

‘पांच साल की उम्र में किसी से मिलकर मैं कैसे उसे याद रख सकता हूं?’

‘वो तुम्हारी ही उम्र का है, अनि, उसने एक प्यारी सी लड़की ढूंढ़ ली है। वो दोनों कितने प्यारे लग रहे थे,’ मां ने कहा।

‘मां—शादी के लिए क्या बस यही चाहिए होता है? लड़का अच्छा दिख रहा हो, लड़की अच्छी दिख रही हो और क्या इसी से वो अच्छा जोड़ा बन जाते हैं?’

‘नहीं, नहीं, वो दो-तीन बार मिले थे। उनके घरवाले बहुत खुले दिमाग के हैं,’ उन्होंने कहा।

‘मां—यही तो मेरा पॉइंट है। किसी से दो-तीन बार मिलकर ही आप कैसे शादी का फैसला कर सकते हैं। सच कहूं तो मुझे लगता है, उसके लिए आपको पहले किसी इंसान को अच्छी तरह से जानना चाहिए।’

जब मैंने ये कहा तो डैड ने गुस्से से मुझे घूरा।

‘तो इसका ये मतलब है? तुम्हारी वो दोस्त, जिसने हमें फोन किया था? क्या तुम... हम्म...

उसे जानने की कोशिश कर रहे हो?’ उन्होंने पूछा।

‘डैड—प्लीज, वो एक दोस्त है।’

‘तुम लोग किस तरह की दोस्ती रखते हो, ये मुझे कुछ समझ नहीं आता। या तो तुम उसे पसंद करते हो, या नहीं। वो कितने साल की है?’ डैड ने पूछा।

‘देखो, डैड, आप नहीं समझोगे। उसकी उम्र से क्या फर्क पड़ता है?’ मैंने पूछा।

‘नहीं कन्ना, प्लीज अपने डैड के सवाल का जवाब दो। अगर वो तुम्हारी दोस्त है तो उसके बारे में और जानने का हमें हक है।’

‘मां, ये बातें मत करो, ओके?’

‘क्यों? परेशानी क्या है?’ डैड ने पूछा।

‘कोई परेशानी नहीं है, डैड, इसलिए तो मैं कह रहा हूँ इस टॉपिक को रहने दो।’

‘अब तुम्हें अपनी शादी का फैसला करना ही होगा, अनिकेत। अगर कोई तुम्हारे दिमाग में है तो प्लीज हमें बता दो। तुम्हारे डैड और मैं जाकर उसके पेरेंट्स से बात कर लेंगे,’ माँ ने कहा। जब वो मुझे अनि की जगह अनिकेत कहती थीं, तो मैं समझ सकता था कि वो सीरियस थीं।

प्लीज मां—अभी नहीं, मैं गुजारिश करना चाहता था। मैं उन्हें बताना चाहता था कि पहले मुझे तृष की यादों से बाहर आना था। लेकिन मैं ये बात अपने पिता के सामने नहीं कह सकता था।

‘मां, देखो, अभी इस पल मेरे मन में कोई नहीं है, ओके? और क्या हम इस बारे में बाद में बातें कर सकते हैं,’ मैंने कहकर एक नजर अपने डैड पर डाली।

मां समझ गईं।

डैड और माँ कुछ पल बैठे रहे। मैं देख सकता था कि डैड छटपटा रहे थे।

फिर वो बोले, ‘हमारा सारा सामान कार में ही रखा है। अगर तुम मुझे अपने घर की चाबी और पता दे दो, तो मैं सूटकेस वहां रखकर आ सकता हूँ।’

जब मैंने शुरू में अपार्टमेंट किराए पर लिया था, तब अपने पेरेंट्स को बुलाने की योजना बनाई थी। मैंने सोचा था कि वो यहां आकर अच्छा समय बिता पाएं। मैंने सोचा था कि मैं कैसे उन्हें अपने रेजिडेंशियल अपार्टमेंट में घुमाऊंगा, जिसमें पूल, सोना, जिम, टेनिस कोर्ट, बास्केट बॉल कोर्ट और सारी आधुनिक सुविधाएं थीं। मेरे पेरेंट्स हमेशा से अपने घर में रहते आए थे, और ये सब उनके लिए नया होता।

अब वो पहली बार यहां आए थे, और वो सब करके मुझे बड़ा अच्छा लगता।

लेकिन अब मैं ऐसे पड़ा था, हॉस्पिटल के बेड पर।

‘डैड, मैं आपको अपना अपार्टमेंट कॉम्पलेक्स दिखाना चाहता था,’ मैंने कहा।

‘हां, लेकिन मुझे लगता है कि अब हमें खुद ही रास्ता ढूंढ़ना होगा। हमारे पास दूसरा कोई विकल्प भी तो नहीं है। चिंता मत करो, यहां से डिस्चार्ज होने पर तुम हमें वहां घुमा लेना,’ डैड ने कहा।

चाबियां साइड टेबल पर पड़ी थीं, जहां सुब्बु छोड़ गया था। मैंने डैड को वो दिखाई और घर का रास्ता बताया।

उनके जाने के बाद, माँ और मैं वहां अकेले रह गए।

‘अब मुझे बताओ, कन्ना। ये सब कैसे हुआ?’ उन्होंने प्यार से मेरा माथा सहलाते हुए कहा।

इतना प्यार नहीं, मां। अभी नहीं। मैं अभी संभाल नहीं पाऊंगा।
मैंने पलक झपककर उन आंसुओं को रोका, जो निकलने को तैयार थे। मेरे गले में कुछ फंस सा गया था।

‘कुछ नहीं, मां। वो मर गई,’ मैंने कहा।

मां ने कुछ पल मुझे देखा। फिर वो मेरी बात समझीं।

‘ओह, नहीं,’ उन्होंने कहा।

‘इससे भी बुरा ये कि वो मुझे धोखा दे रही थी,’ मैंने कहा। ये कहते हुए मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। मुझे नहीं लगता था कि मेरी बेचारी मां आज के रिश्तों की परतें समझ पाएंगी।

‘धोखा? मतलब क्या?’ उन्होंने पूछा। वो सच में परेशान थीं।

‘मां, मुझे नहीं लगता कि वो मुझे प्यार करती थी। वो किसी दूसरे लड़के के साथ शादी की प्लानिंग कर रही थी,’ मैंने कहा।

दर्द फिर से उठने लगा था। मैंने सोचा था कि मैं इसे संभाल लूंगा, इसे दबा लूंगा। अब ये किसी राक्षस की तरह उठने लगा था और मानो कसकर मेरा गला पकड़ रहा था। मैं वापस तकिये पर लेट गया और अब आंसू नहीं रोक पाया। मां बेबसी से मुझे सुबकते हुए देख रही थीं। शायद उन्होंने पिछली बार मुझे तब रोते हुए देखा होगा, जब मैं सात-आठ साल का रहा हूंगा।

‘कन्ना ...’ मां ने मुझे गले लगाते हुए कहा, उन्होंने मेरा सिर अपने सीने में छिपा लिया। उन्होंने मुझे माथे पर चूमा और तब तक मुझे थामे रखा, जब तक मेरी सुबकियां नहीं थम गईं। फिर उन्होंने मेरे आंसू पोछे।

‘अनि, मतलब वो कभी होना ही नहीं था। उसे जाने दो,’ उन्होंने कहा।

‘जानता हूं, मां, जानता हूं। लेकिन फिर भी तकलीफ तो होती है,’ मैंने कहा।

‘तकलीफ तो लंबे समय तक रहेगी, अनि। लेकिन याद रखो, हर जाते दिन के साथ, दर्द अपना सबक सीखेगा। हर दिन के साथ ये कम तकलीफ देगा। पता है मेरी मां ने मुझे मौत के बारे में क्या बताया था?’ उन्होंने पूछा।

‘क्या?’

‘कोंकणी में एक कहावत है—आजी मेलेरी फाई दोनी। मतलब, अगर तुम आज मरे हो तो, कल दूसरी मौत होगी, परसों तीसरी, और उसके बाद चौथी। मतलब जिंदगी तो चलती रहती है। वो किसी का इंतजार नहीं करती, अनि। हमें उसे पकड़ना होगा और चलना होगा।’

मैंने उनकी बात पर सोचा। वो सही कह रही थीं। मैं अपनी मां के इस दार्शनिक पहलु को कभी नहीं जानता था।

‘तुम अभी दुखी हो। लेकिन ये दौर भी गुजर जाएगा। एक दिन तुम खुश होंगे, और मैं ये तुम्हें खुश करने के लिए नहीं कह रही हूं। तुम जानते हो, तुम्हारे जन्म के समय मैं कितने साल की थी?’ उन्होंने पूछा।

मैंने कभी अपने पैदा होने से पहले अपनी मां के जीवन के बारे में नहीं सोचा था। मैंने अपना सिर हिलाया।

‘मैं उन्नीस साल की थी। उन्होंने अठारह साल की उम्र में मेरी शादी तुम्हारे पिता से करा दी थी। मैं आगे पढ़ना चाहती थी,’ उन्होंने कहा।

‘तुमने हां क्यों कही?’ मैंने पूछा।

‘तुम तो जानते हो, अनि। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। और मैं उस समय किसी से प्यार भी करती थी। तुम्हारे डैड से नहीं। कोई और था। और पता है—वो भी मुझे प्यार करता था। वो मेरी क्लास में था।’

‘आपने ये बात अपने पेरेंट्स को क्यों नहीं बताई?’

‘वो ईसाई था। उसका नाम बिजु ठारकन था। दिखने में अच्छा और रहमदिल।’ उनकी आंखों में पुराने दिनों की चमक थी। ‘मेरी शादी के एक साल बाद ही वो बाइक एक्सीडेंट में मर गया। मुझे वो समय याद आया कि कितनी ही बार मैं उसकी बाइक पर बैठी थी... मैं उसके अंतिम संस्कार पर भी नहीं जा पाई थी। वो केरला में था, और तब तुम्हारे डैड और मैं बड़ौदा में। मैं तुम्हें सुलाकर, बाथरूम में जाकर रोती थी। फिर, तुम्हारे पिता के सामने, ऐसे दिखाती थी, जैसे सब ठीक था। लेकिन, आज मैं सोचती हूँ कि अगर मेरी शादी उससे हो जाती, तो क्या होता। मैं नहीं जानती। अनि, ये चीजें नियति में लिखी होती हैं। आप उनसे नहीं लड़ सकते। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या कर रहे हो, तुम्हारी नियति खुद चीजों को तुम्हारे सामने ले आती है।’

मैंने हां में सिर हिलाया। दूसरी बार मैंने ये बात सुनी थी। पहली बार, दर्शिता सेन के मुंह से और अब अपनी माँ के मुंह से। शायद कुछ ऐसा है जो हमारे बस में नहीं है। चीजें शायद हमारे मनमुताबिक नहीं चलती हैं। लेकिन जरूरी ये है कि हम सामने आ रहे हालात का कैसे सामना करते हैं।

डैड ने मेरे घर से फोन किया कि वो थक गए हैं और कुछ देर आराम करने के बाद आएंगे। उन्होंने माँ से पूछा कि इसमें उन्हें कोई दिक्कत तो नहीं है, और उन्होंने कहा कि वो आराम कर लें, यहां का वो मैनेज कर लेंगी।

माँ और मैंने काफी देर तक बातें कीं। उन्होंने अपने बचपन की बहुत सी कहानियां मुझे सुनाईं। उन्होंने मुझे हंसाया, और मुझे सोचने पर मजबूर किया कि मुझे खुद को बेचारा समझने की जरूरत नहीं है। मैं अपनी माँ से बहुत प्यार करता हूँ। वो सच में बेहतरीन इंसान हैं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि जिंदगी के किसी मोड़ पर मां ने भी मेरे डैड के सिवाय किसी और से प्यार किया होगा।

शाम को सुब्बु और निधि भी पहुंच गए।

‘हाय, दोस्त, हम तुम्हें देखने आए थे,’ सुब्बु ने कहा और फिर उसने माँ को देखा।

‘ओह, नमस्ते, आंटी! मैं सुब्बु हूँ,’ उसने कहा।

‘नमस्ते, आंटी, मैं निधि,’ निधि ने कहा और मां ने उसे गले लगा लिया और सुब्बु का कंधा थपथपाया।

‘अनिकते का इतना ख्याल रखने के लिए मैं तुम दानों को शुक्रिया कहना चाहती हूँ। तुम दोनों का बहुत आभार,’ उन्होंने कहा।

‘इसकी कोई जरूरत नहीं है आंटी। वो हमारा दोस्त है,’ निधि ने कहा।

मैं देख सकता था कि निधि माँ को पहली ही नजर में पसंद आ गई थी। उनकी नजरों से ही मैं ये बता सकता था। निधि ने सलवार-कमीज पहनी थी, मैंने कभी पहले निधि को सलवार-कमीज में नहीं देखा था। उसने कानों में सुंदर बालियां पहनी थीं, और बिंदी भी लगाई थी। उसने शायद आंखों पर भी कुछ मेकअप लगाया था। उसकी आंखें बड़ी लग रही थीं। और वो बहुत

सुंदर दिख रही थी।

‘तुम दोनों प्लान बनाकर यहां आए हो क्या? ऐसा कैसे कि दोनों एक ही साथ पहुंच गए?’ मैंने पूछा।

‘हां, मैंने आते हुए इसे पिक कर लिया। ये इंटेल जंक्शन पर मेरा इंतजार कर रहा था,’ निधि ने कहा।

‘तुम सुंदर लग रही हो, निधि,’ मैंने कहा।

उसने मुस्कुराकर नजरें फेर लीं। ‘थैंक्यू, पता है हम रास्ते में वेंकटेश्वर मंदिर भी गए थे,’ उसने कहा।

‘ओह! मैं नहीं जानता था कि तुम मंदिर जाती हो।’

‘वैल, मुझे उन बौद्ध मंदिरों की याद आ रही थी, जिनमें मैं श्रीलंका रहने के दौरान जाती थी, तो आज मैंने यहां मंदिर में जाने का फैसला किया। मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की, अनि। मैंने तुम्हारी मन की शांति के लिए प्रार्थना की।’

‘थैंक्यू, निधि। मुझे लगता है तुम्हारी प्रार्थनाओं ने रंग दिखाया। मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूँ,’ मैंने जवाब दिया।

शाम को राउंड पर आने पर डॉ. कृष्णमूर्ति ने मेरी जांच की और कहा कि कल शाम तक मुझे छुट्टी मिल सकती है, अगर मैं खाने को पचा पाया तो। उन्होंने कहा कि आज रात को मुझे खाने में ठोस आहार दिया जाएगा। अगर मुझे उल्टी हुई तो कल नाश्ते में भी ठोस आहार मिलेगा। और फिर लंच। सब ठीक रहेगा, तो कल छुट्टी मिल जाएगी।

उन्होंने बताया कि टेस्ट का रिजल्ट आ गया है, और सब नॉर्मल हैं। ये सुनकर मॉम ने चैन की सांस ली, और सुब्बु और निधि ने भी।

अब मॉम और निधि आपस में बातें कर रही थीं और एक-दूसरे को जानने की कोशिश भी। मॉम ने निधि से बहुत से सवाल पूछे, और निधि के कुछ सवालों पर तो मैं भी हैरान था कि मुझे भी ये बातें पता नहीं थीं। अब मुझे थोड़ी जलन भी होने लगी थी।

सुब्बु ने बताया कि टीम के लोग मुझे याद कर रहे थे और वो आज मुझसे मिलने आने वाले थे, लेकिन आज यूके से कोई आ रहा था, तो अमित ने उन्हें काम पर लगा दिया। इसके बाद हमारे पास बात करने को कुछ खास नहीं था, तो हम चुपचाप बैठकर निधि और मॉम की बातें सुनने लगे।

देर शाम को मेरे डैड भी आ गए, जब सुब्बु और निधि वहां से निकलने ही वाले थे।

‘डैड, ये निधि और सुब्बु हैं,’ मैंने कहा।

डैड मॉम की तरह उनसे मिलनसार नहीं थे।

‘नमस्ते,’ निधि ने कहा। ‘हम बस निकल ही रहे थे। हम कल आएंगे और अनि के डिस्चार्ज में हेल्प कर देंगे। शायद उसे कल ही छुट्टी मिल जाए।’

‘ठीक है, थैंक्यू,’ डैड ने कहा। और उनके जाने के बाद, वो मुझ पर झपट पड़े। ‘ओह, तो ये निधि है। बताओ मुझे—उसकी उम्र क्या है?’

मैंने आह भरी। वो इस बात को छोड़ने वाले नहीं थे।

‘डैड, वो बतीस साल की है,’ मैंने कहा।

‘अनिकेत। तुमने इस बारे में सोचा है कि वो तुमसे बड़ी है?’

मैंने बेबसी से मॉम को देखा। उन्होंने बीच-बचाव करने की कोशिश की।

‘देखिए, उनके बीच में ऐसा कुछ नहीं है,’ उन्होंने कहा, लेकिन डैड ने उन्हें बोलने ही नहीं दिया।

‘अनिकेत, अब तुम्हें इस बारे में सोचना चाहिए। देखो, मेरे पास तुम्हारे लिए चार शादी के रिश्ते हैं। मेरे पास उनके फोटो और बायोडाटा भी हैं। सारे अच्छे परिवार से हैं। मुझे लगता है, तुम्हें अब लड़कियों से मिलना तो शुरू कर देना चाहिए। और ये लड़की जो अभी यहां से गई है, उसे भूल जाओ। तुम्हारे लिए चौबीस-पच्चीस साल की लड़की से शादी करना बेहतर होगा। वो तुम्हारे लिए परफेक्ट मैच होगी।’

‘और मेरे लिए परफेक्ट मैच ढूंढने का हक आपको किसने दिया?’ मैंने शांति से कहा।

लेकिन अब मुझे उन पर गुस्सा आ रहा था। डैड ऐसे कैसे यहां आकर ये फैसला कर सकते थे कि निधि मेरे लिए सही नहीं थी कि क्योंकि वो बत्तीस साल की थी। पहली बात तो, मैंने अभी उससे शादी या किसी और चीज के बारे में सोचा ही नहीं था। दूसरी, अपनी शादी का फैसला आखिरकार मुझे ही करना चाहिए। न कि मेरे डैड या मॉम को।

लेकिन अब तक डैड ने अपनी तरफ से बड़ी सी सफाई पेश कर दी।

‘अनि, अगर लड़की पच्चीस साल की होगी, तो वो कोई अठाइस साल की उम्र तक बच्चे पैदा कर लेगी। तुम्हें एक-दूसरे को जानने का मौका मिल जाएगा। तब तक तुम भी तीस के हो जाओगे। परिवार शुरू करने के लिए एकदम सही उम्र। देखो, तुम्हारे रिटायरमेंट तक तुम्हारा बेटा या बेटी अठाइस साल के हो जाएंगे, मतलब वो अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे। बहुत से लोग अपना रिटायरमेंट या बच्चों की प्लानिंग पहले से नहीं कर पाते हैं।’

‘और डैड आप कैसे जान सकते हैं कि कल क्या होने वाला है। अगर हममें से कोई मर गया तो? कल किसने देखा है? आप जानते हैं कि ऐसा किसी के भी साथ हो सकता है।’

‘अनि, हम ये मानकर चलते हैं कि ऐसा कुछ नहीं होने वाला। वैसे भी ऐसा कुछ होने के अवसर कम होते हैं, है कि नहीं? देखो, प्लीज कम से कम इन लड़कियों से मिल तो लो। तुम्हारी मां और मुझे बहुत खुशी होगी। इनसे एक बार मिलोगे न? और प्लीज निधि से मिलना-जुलना बंद कर दो। शादी का रिश्ता जोड़ने से पहले ऐसी दोस्तियां तोड़ लेने में ही समझदारी है। हमें बाद में कोई कॉम्प्लिकेशन नहीं चाहिए।’

मैं अपने डैड से क्या कह सकता था? मैं किसी लड़की से मिलना नहीं चाहता था। और मैं निधि से क्या कहता? ‘चली जाओ। अब मैं शादी करना चाहता हूं, तो तुमसे नहीं मिल सकता?’ हो ही नहीं सकता। मुझे निधि पसंद थी। कोई भी मुझे उससे मिलने से नहीं रोक सकता था। लेकिन अभी मुझमें डैड को ये समझाने की ताकत नहीं थी कि मैं उन लड़कियों से क्यों नहीं मिलना चाहता था। अभी नहीं। कभी नहीं। अगर मैं कभी किसी से शादी करूंगा, तो सिर्फ उसी से जिससे मैं जुड़ा हुआ महसूस करूं। जो दिल से मेरी परवाह करती हो। मैं एक बार प्यार में धोखा खा चुका था। मुझमें दोबारा उस दर्द से गुजरने की हिम्मत नहीं थी।

मैं तृष को भूलना चाहता था। मैं इस सबको पीछे छोड़ देना चाहता था। प्यार बहुत तकलीफदेह था। ये जहां खुशी देता है, वहीं जान भी ले लेता है। और अगर आप इसके बाद भी बच जाओ, तो हर पल दर्द में तड़पते रहते हो। मैं एक नई शुरुआत करना चाहता हूं। और मैं निश्चित तौर पर डैड की फिक्स की हुई लड़कियों से मिलकर अपनी जिंदगी में नए बखड़े नहीं

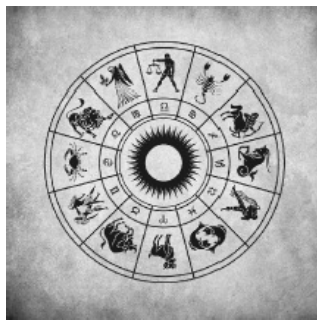
खड़ा करना चाहता।

लेकिन मैं जानता था कि अभी डैड हार मानने के मूड में नहीं थे।

तो मैंने कहा, 'ठीक है, डैड, पहले मुझे यहां से डिस्चार्ज होने दो और तबियत तो सुधरने दो।
प्लीज क्या आप मुझे थोड़ा समय दे सकते हैं?'

'ओके, अनि,' मेरे डैड ने कहा और फिर उन्होंने कुछ ऐसा किया, जो वो सिर्फ मेरे बचपन में ही करते थे।

उन्होंने मुस्कुराकर मेरे बालों में हाथ फेरा।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

अनचाहे हालातों का सामना करना पड़ सकता है। जब तक आप अपने लिए खड़े नहीं होंगे, तब तक आपको अपनी इच्छा के खिलाफ काम करने होंगे। जरूरत पड़े तो अपना सफर अकेले तय करो, और अपने संकल्प पर डटे रहो।

31

निधि

‘अनि के पेरेंट्स से मिलकर अच्छा लगा न?’ मैंने हॉस्पिटल से बाहर निकलते हुए सुब्बु से कहा।

‘उसकी मॉम स्वीट हैं लेकिन डैड तो एकदम खड़ूस हैं,’ सुब्बु ने कहा।

‘हा हा—हां। किस्मत से अनि अपनी मॉम जैसा है,’ मैंने कहा।

सुब्बु मुस्कुरा दिया।

घर पहुंचकर, मैंने अपने लिए कॉफी बनाई और कुछ काम किया। लेकिन मैं काम पर

फोकस नहीं कर पा रही थी। मैं जानती थी कि समय बर्बाद कर रही थी। आखिरकार मैंने खुद से कहा कि कह देना ही बेहतर है। मैं मनोज से बातचीत को अब ज्यादा देर टाल नहीं सकती थी।

मैंने उसका नंबर मिलाया।

‘हाय, क्या तुम मुझसे मिल सकते हो? मुझे तुमसे कुछ बात करनी थी,’ मैंने कहा।

‘सॉरी बेब, मेरी आज रात इम्पोर्टेंट कॉन्फ्रेंस कॉल है। नहीं मिल सकते,’ उसने कहा।

‘कुछ अर्जेंट है, मनोज।’

‘ओके, फिर बताओ क्या हुआ?’

‘देखो, मैं तुम्हें सामने मिलकर बताना चाहती हूँ। तुम जल्दी से जल्दी कब मिल सकते हो?’

‘उम्म... देखता हूँ, मेरी कल दोपहर को प्रेजेंटेशन है। वो चार बजे तक खत्म हो जानी चाहिए। क्या हम उसके बाद मिल सकते हैं?’ उसने पूछा।

मैं इस मीटिंग को टालना नहीं चाहती थी तो मैंने कहा कि मैं उसके ऑफिस के सामने वाले कैफे कॉफी डे में आ जाऊंगी।

‘इस तरह तुम्हें मिलने आने के लिए ड्राइव नहीं करना पड़ेगा,’ मैंने कहा।

‘ये तो बढ़िया रहेगा। और, हे, ये सच में अच्छा सरप्राइज है!’ उसकी आवाज में खुशी और राहत झलक रही थी।

काश वो जान पाता कि मैं उसे क्या कहने वाली थी।

अगली सुबह मैंने अनिकेत की माँम को उसकी तबियत जानने के लिए फोन किया।

‘पता है, उसने दो इडली खाईं। और उल्टी भी नहीं की। तो ये तो अच्छा साइन है न। बस भगवान करे, सब सही हो जाए। लंच के बाद शायद आईवी ड्रिप भी हट सकती है,’ उन्होंने बताया।

मैं मुस्कुराई। तभी ये ख्याल आया। जब आपको किसी इंसान के खाने, उसके उल्टी नहीं करने की जानकारी खुशी देने लगे, तो जान जाओ कि आपको प्यार हो गया है।

‘ओह, ये तो बहुत अच्छा है, आंटी। फिर तो उसे आज डिस्चार्ज कर देंगे?’

‘लगता तो है। उसके लिए उसे लंच भी पचाना होगा। क्या तुम और सुब्बु आज आओगे?’

‘हां, आंटी। हम आएंगे और डिस्चार्ज की फॉर्मैलिटी में आपको हेल्प कर देंगे। मैं वहां साढ़े पांच तक पहुंच जाऊंगी। पहले मुझे किसी दोस्त से मिलना है।’

‘अगर तुम बिजी हो तो कोई बात नहीं। अंकल और मैं सब संभाल लेंगे,’ उसकी माँम ने कहा।

मुझे ये समझने में दो सैकंड लगे कि ‘अंकल’ से उनका मतलब अनि के डैड से था।

‘दोस्त के लिए कोई बिजी नहीं होता, आंटी। और अनिकेत अच्छा दोस्त है। हम पक्का वहां पहुंच जाएंगे,’ ये कहकर मैंने फोन काट दिया।

काम पर ध्यान दे पाने का मन मेरा बिल्कुल नहीं था। मैं बार-बार घड़ी देखते हुए, समय के जल्दी भागने की प्रार्थना कर रही थी। मैंने अपना ब्लॉग चैक किया और अपनी पोस्ट पर सत्रह कमेंट देखकर खुश हो गई। सत्रह! उन सबने अपनी लव स्टोरी साझा करते हुए उस पल के बारे में बताया था, जब उन्होंने अपने जीवनसाथी को पहचान लिया था। हर कहानी खास थी। एक ने सैलून के दिनों में इंटरनशिप के दौरान किसी का हेयरकट खराब कर दिया था, और वो गड़बड़ प्यार में बदल गई। दूसरे ने बताया कि कैसे वो बार की सीढ़ियां उतरते हुए ठीक उसकी बांहों में

जा गिरी थी और उन्हें अपने बीच इस उत्तेजना का अहसास हुआ। एक ने बताया कि कैसे गर्लफ्रेंड के भाई को ट्यूशन पढ़ाने के दौरान, उसके बार-बार बहाने बनाकर पास आने से उनके बीच प्यार की शुरुआत हुई। हर कहानी खूबसूरत थी। इस ज्वेलरी कंपनी की मार्केटिंग के लिए जिसने भी ये आइडिया दिया था, उसने सही नब्ज पकड़ी थी।

जब आखिरकार मैंने कंप्यूटर से नजर हटाई, तो देखा कि जाने का समय लगभग हो ही गया था। मैं कहानियों में इतना खो गई थी कि लंच भी करना भूल गई थी। अब खाने का समय नहीं था। मैं नहीं चाहती थी कि मनोज देरी का बहाना बनाकर भाग जाए। मैंने आसपास देखा कि क्या पहनूं, फिर कल वाली बिना बांह की, पीली सलवार-कमीज को ही पहन लिया। जल्दी से आंखों पर मेकअप लगाया, बाल कंधी किए, हल्की लिपस्टिक लगाई और पांच मिनट में निकल ली।

मैं तेजी से ड्राइव करते, बंगलौर के ट्रैफिक से जिग-जैग कर निकलते हुए कैफे कॉफी डे पहुंची। वहां पहुंचकर खुद को टाइम पर पा मैंने चैन की सांस ली। मैंने गाड़ी पार्क की और अंदर गई। मनोज वहां दिखाई नहीं दिया। मैंने उसे मैसेज करने के लिए अपना फोन निकाला, तभी वो सामने से आता दिखाई दिया। उसने हल्की क्रीम शर्ट, ग्रे पेंट और गहरी लाल टाई लगाई हुई थी।

‘हे बेब, तुमसे मिलकर अच्छा लगा,’ कहते हुए, मेरे गाल पर किस कर वह बैठ गया।

मैं तुरंत ही अपनी जगह जम गई।

शिट। ये जितना सोचा था, उससे ज्यादा मुश्किल होने वाला था।

एक वेट्रेस ने आकर हमारा ऑर्डर लिया। मनोज ने अपने लिए वाटरमेलन कूलर मंगवाया और मुझसे पूछा कि मैं क्या लूंगी।

‘एक आइस्ट एस्किमो प्लीज,’ मैंने कहा।

‘गुड चॉइस,’ वह कहकर, मुस्कुराया।

मुझे पेट में बल पड़ता महसूस हुआ।

‘तो, आपके आने का शुक्रिया मैं कैसे अदा कर सकता हूं? निधि, तुमने तो सच में मुझे सरप्राइज कर दिया! और तुमने सलवार कमीज पहनी है। अच्छी लग रही हो!’ उसने कहा।

‘मैं कल मंदिर गई थी, तो आज भी वही कपड़े पहन लिए। मुझे दूसरे कपड़े निकालने का मन ही नहीं किया,’ मैंने कहा।

उसे बताओ। अपने कपड़ों की बातें बंद करो। बताओ उसे। बताओ उसे। बताओ उसे। सीधे पॉइंट पर आओ।

‘तुमने मंदिर जाना कबसे शुरू कर दिया? जबसे मैं तुमसे मिला हूं, मैंने तुम्हें कभी मंदिर जाते नहीं देखा! पर कहना होगा, इंडियन लुक में तुम और सुंदर लग रही हो।’

‘थैंक्स।’

बताओ उसे। बहुत टाल लिया। तूफान का सामना करो। कुछ तो हिम्मत दिखाओ।

मैंने गहरी सांस ली।

‘मनोज।’

‘हां, बेब।’

‘मुझे तुमसे कुछ कहना है। ऐसा कुछ जो मैं तुम्हें बताना चाहती हूं।’

‘क्या? तुम मेरे साथ यूएस आ रही हो न? मैं जानता था। मैं जानता था कि तुम मन बदल

लोगी।’

‘नहीं, मनोज, मैं नहीं आ रही।’

‘ओह,’ उसने कहा। वह एक पल रुका और फिर बोला, ‘फिर सरप्राइज क्या है?’

मैं कैसे ये कहूं? कितना खराब लग रहा है। लेकिन अब कोई चॉइस नहीं है। मुझे उसे बताना ही होगा।

बताओ उसे। अभी।

‘मैं... वैल... मनोज, आई एम सॉरी, लेकिन मैं तुम्हें प्यार नहीं करती।’

‘क्या?’

‘आई एम सॉरी, मनोज। मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती। हमारी सगाई... टूट गई... मैं ये नहीं कर सकती।’

‘क्या?’

वो इसे समझने की कोशिश करने लगा। उसका चेहरा उतर गया।

उसके भाव धीरे-धीरे बदलने लगे। उसका चेहरा स्याह हो गया। तयोरियां चढ़ गईं और माथे पर शिकन उभर आई।

‘कह दो कि तुम मजाक कर रही हो। तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकतीं?’

मैं उससे नजरें नहीं मिला पा रही थी।

‘मैं मजबूर हूं... आई एम सॉरी। मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती। ये सगाई... टूट गई,’ मैंने दोहराया।

‘कोई और है न? कौन?’

‘देखो—ऐसी कोई बात नहीं है।’

‘तो क्या बात है? क्या तुम मुझे समझा सकती हो कि ये क्या चल रहा है?’

‘मैं... मैं नहीं समझा सकती, मनोज। मैं बस तुमसे शादी नहीं कर सकती।’

वह आगे झुका और अब उसने मेरी बांह पकड़ ली। वो उसे दबाते हुए मरोड़ने लगा।

‘तुमने मुझे धोखा दिया न? तुम उस रात हॉस्पिटल में नहीं थी। तुम... तुम... उसके साथ थीं, थीं कि नहीं?’

‘मनोज, प्लीज हाथ छोड़ दो। ये दुख रहा है,’ मैंने कहा।

उसने पकड़ और मजबूत कर ली।

‘तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकतीं। दो साल। तुमने मुझे दो सालों तक घुमाया।’

मैं अपने चेहरे पर उसकी सांसों को महसूस कर सकती थी। उसकी पकड़ और मजबूत हो गई थी। और मेरे बांह बुरी तरह से दुख रही थी।

‘छोड़ दो,’ मैंने कहा। ‘प्लीज छोड़ दो।’

उसने नहीं छोड़ा। मैं अब डर रही थी। मैंने जल्दी से आसपास देखा। टेबल पर एक ऐशट्रे रखी थी, जो मैं अपने बाएं हाथ से उठाकर उसे मार सकती थी।

‘तुम मुझे नहीं छोड़ सकतीं,’ उसने कहा।

‘मनोज, अगर तुमने मेरा हाथ नहीं छोड़ा, तो मैं...’

‘तो तुम क्या करोगी, हम्म? क्या?’ उसका मुंह ऐंठ रहा था। जबड़े भिंच रहे थे। उसके चेहरे के भाव जड़ हो चुके थे। मुझे अब डर लगने लगा था।

मैं घबरा रही थी।

‘छोड़ दो... नहीं तो, मैं मदद के लिए चिल्लाऊंगी और यहां सीन बन जाएगा,’ मैंने कहा।

‘साली,’ वो फुफकारा और हाथ छोड़ दिया।

मैं पूरी तरह से हिल गई थी। डरी हुई थी। वेट्रेस हमारा ऑर्डर लेकर आ गई थी।

भाग जाओ। भाग जाओ। भाग जाओ। वो अपने काबू में नहीं है। उससे दूर रहो। जाओ। भागो।

वो शांति से अपना ड्रिंक पीने लगा। मैंने अपना ले लिया। मैं इतनी बुरी तरह हिल गई थी कि गाड़ी चलाने से पहले मुझे खुद को शांत करने की जरूरत थी।

मैंने आंखें बंद करके गहरी सांस ली।

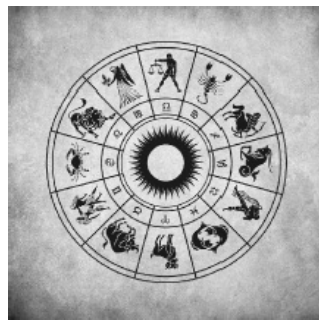
‘कौन है वो? वही हरामी जिसने उस दिन तुम्हें मैसेज किया था, वही है न?’ उसने पूछा।

मेरा दिल ड्रम के जैसे बज रहा था। बूम। बूम। बूम। हथेलियां ठंडी पड़ गई थीं। माथे पर पसीने की हल्की सी परत उभर आई थी।

मैंने पूरी हिम्मत जुटाकर उसकी आंखों में देखा।

‘इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है,’ बिना पलकें झपकें मैंने कहा।

फिर मैं पीछे देखे बिना, वहां से निकल गई।



सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

सिंह (23 जुलाई से 22 अगस्त)

अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संतुलन बैठाना मुश्किल होगा। वर्तमान में जीन की सलाह दी जाती है, लेकिन अतीत की परछाइयां घेरेंगी। उनसे बाहर निकलो। कोई विवाद हो सकता है। अपने मन की सुनो। रचनात्मक विचारों, अतीत की प्रतिभा से सफलता आएगी। युवा जोश के साथ जिंदगी जिओ—और प्रियजनों के साथ सहेजो।

32

अनिकेत

मॉम ने बताया कि उन्हें अटेंडेंट के बेड पर बड़े आराम से नींद आ गई थी।

‘पता है, मॉम, निधि ने भी यही बात कही थी। ये बेड जरूर आरामदायक होगा।’

‘ओह, क्या वो यहां रुकी थी?’

‘हां। उन दोनों ने मेरा बहुत ध्यान रखा। दरअसल, पिछली रात सुब्बु यहां सोने वाला था,

लेकिन आप और डैड आ गए।’

‘तुम्हारे दोस्त बहुत अच्छे हैं, अनि। तुम खुशकिस्मत हो कि तुम्हें ऐसे दोस्त मिले। और निधि—वो अच्छी लड़की है। क्या उसने तुम्हें बताया कि जब वो पंद्रह साल की थी, उसकी मां चल बसी? बेचारी बच्ची। और जब वो बाइस साल की थी, उसके पिता ने दूसरी शादी की।’

‘हां, उसने बताया था। मैं उसकी दूसरी मां से मिला हूं। दरअसल मिला नहीं हूं, मैंने उन्हें दूर से देखा है। उनका रिश्ता बहुत अच्छा है।’

‘ओह, सच में? तुमने उसकी मां कब देखी?’

‘जब पिछली बार मैं उसके साथ चेन्नई आया था।’

‘ओह, अब समझी। वो अच्छी लड़की है,’ मॉम ने कहा।

नाश्ते के बाद, डॉक्टर राउंड पर आए थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कैसा महसूस कर रहा था। मुझे थोड़ी कमजोरी महसूस हो रही थी, लेकिन वैसे मैं ठीक था। अच्छी बात थी कि अब मुझे उबकाई नहीं आ रही थी। डॉक्टर ने कहा कि वो लंच के बाद फिर आएंगे और अगर सब सही रहा तो वो नर्स को आईवी हटाने के लिए बोल देंगे, और डिस्चार्ज की प्रक्रिया शुरू कर देंगे।

डॉक्टर के जाने के बाद, मैं तकिये पर लेटकर डैड से हुई बातों के बारे में सोचने लगा।

पेरेंट्स को तसल्ली दिलाना कितना आसान है। सिर्फ वही करो, जो वो आपसे चाहते हैं। उनकी कही हर बात सुनो। अपनी आशाएं, आकांक्षाएं, निजता एक तरफ रख दो, तो वो खुश हो जाएंगे।

जब आप छोटे होते हो, तो वो आपको तारीफों और सजाओं से नियंत्रित करते हैं। ‘अपना दूध खत्म करो, नहीं तो तुम बुरे बच्चे बन जाओगे।’ ‘इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा की तैयारी करो, नहीं तो जिंदगी में कभी सफल नहीं हो पाओगे।’ ‘मजे भूल जाओ, मजे के लिए तो पूरी जिंदगी पड़ी है।’ ‘जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो पांच मील चलकर स्कूल जाता था।’ ‘जिंदगी में कुछ आसानी से नहीं मिलता।’

जब आप बड़े हो जाते हो, तब भी वो आपको नियंत्रित करते हैं, लेकिन इमोशनल ब्लैकमेल के जरिए। ‘इन लड़कियों से मिल तो लो। हमारी उम्र होती जा रही है, हम तुम्हें सैटल देखना चाहते हैं। तुम उनमें से अपनी पसंद की लड़की से ही शादी करना। जो तुम्हारे जैसी हो। तुम खुश रहोगे। हमें भी सुकून मिल जाएगा।’

पेरेंट्स सोचते हैं कि शादी करने भर से सारी समस्याएं दूर हो जाएंगी। या कम से कम मेरे पेरेंट्स तो ऐसा ही सोचते हैं। सुब्बु के पेरेंट्स भी अब उस पर ‘सैटल होने’ का दबाव बनाने लगे हैं। मैं जानता हूं कि निधि के पेरेंट्स खुली सोच के हैं, लेकिन फिर, उसके पिता वैसे पारंपरिक सोच वाले नहीं हैं, और उसका अपनी सौतेली-मां से अच्छा रिश्ता है।

काश मैं अपने पिता को समझा पाता। दिल टूटने से कितनी तकलीफ होती है। दो-दो बार धोखा खाने से—एक धोखा उसकी मौत से, और दूसरा जो उसने मेरे साथ किया। काश कि मैं उन्हें बता पाता कि क्यों मैं किसी लड़की को बिना जाने उससे शादी नहीं कर सकता। डैड की नजरों में ‘गुड गर्ल’ की दो ही योग्यताएं थीं। पहली: उसके परिवार का अच्छा होना; और दूसरी: उसकी उम्र लगभग पच्चीस साल होना।

कम से कम मेरी मॉम मुझे समझती हैं। वो जानती हैं कि प्यार में होने का क्या मतलब होता है। मुझे नहीं लगता कि डैड ने कभी किसी से प्यार किया होगा। कभी भी।

इसलिए अभी चुप रहना ही बेहतर था। एक बार यहां से निकलने के बाद मैं कुछ समय अपने लिए मांग लूंगा। फिर कुछ बहाने। उन लड़कियों से मिलने से बचने के लिए मैं कुछ भी करूंगा।

डैड लंच के बाद आए, और जब डॉक्टर राउंड पर आए, तो

डैड ने उनसे बहुत से सवाल किए। मैंने दोपहर का खाना भी पचा लिया था। उन्होंने खाने में कोई खिचड़ी और अचार दिया था, जो स्वादिष्ट भी था। अब मेरी भूख भी बढ़ रही थी। डॉक्टर ने कुछ दिनों तक मुझे आराम करने की सलाह दी। फिर माँ से कहा, 'उसे खूब सारा टीएलसी और घर का बना बढ़िया खाना दो।'

माँ हैरान थीं।

'ये टीएलसी क्या है डॉक्टर? कोई दवाई है क्या?'

'ये बेस्ट दवाई है, लेकिन आप इसे खरीद नहीं सकते। ये टेंडर लिविंग केयर (प्यार भरी परवाह) है,' वह मुस्कुराए।

फिर डॉक्टर ने डिस्चार्ज स्लिप साइन कर दी और हमसे कहा कि छुट्टी के पेपर तैयार करवा लें।

'इसके दोस्तों के आने का इंतजार करते हैं। निधि ने सुबह बोला था। वो सुब्बु के साथ आएगी और सारी फॉर्मेलिटीज पूरा कर देगी,' माँ ने कहा।

'मैं जाकर सब कर लूंगा,' डैड बोले।

'लाइनें बहुत लंबी होंगी और आपको टेस्ट रिपोर्ट लेने के लिए अलग-अलग डिपार्टमेंट में जाना होगा, डैड। वो दोनों आपस में मिलकर निबटा लेंगे,' मैंने कहा।

'ठीक है, फिर,' डैड ने गुर्राते हुए कहा, और वो अपना फाइनिशियल क्रोनिकल खोलकर उसे पढ़ने बैठ गए।

नर्स आई और उसने आईवी ड्रिप निकाल दिया। अपने हाथ को फ्री देखकर आखिर कुछ राहत महसूस हुई। उसने बताया कि वो सूई अभी उसी में लगी रहने देगी, क्योंकि अभी एक और दवाई इंजेक्शन के जरिए दी जानी है। 'एक बार वो हो जाए, तो मैं सूई भी निकाल लूंगी,' उसने कहा।

मैंने आह भरी।

'कोई बात नहीं कन्ना, कुछ ही घंटों की बात है, और फिर हम घर चलेंगे,' माँ ने कहा।

सुब्बु और निधि, दोनों एक ही साथ पहुंचे, जैसे कल आए थे।

'यार, तो आज की सॉटवेयर डवलपमेंट प्रोग्रेस क्या है?' उसने मुझसे हाथ मिलाते हुए पूछा। मैं मुस्कुराया। पुराना सुब्बु वापस आ गया था।

'दो लेवल क्लीयर हो गए हैं। ब्रेकफास्ट, लंच, टिक टिक,' मैंने जवाब दिया।

निधि हैरानी से मुझे देख रही थी।

'ये हमारी कोडिंग की सॉटवेयर लेंग्वेज है। मतलब आप छोटे-छोटे पार्ट के साथ धीरे-धीरे एक एक स्टेप आगे बढ़ाए। एक बड़ी एप्लीकेशन डिलीवर करने से बेहतर है ये। इन कदमों से आखिर हम पूरे प्रोडक्ट की तरफ बढ़ते हैं,' मैंने समझाया।

'दिलचस्प है,' वह मुस्कुराई। 'ओह, आईवी ड्रिप हट गई?'

'सूई अभी भी यहीं है,' मैंने उदासी से कहा।

‘क्यों?’

‘वो इसे जल्दी ही निकाल लेंगे। एक और दवाई इजेक्शन के जरिए दी जानी है। उसके बाद मैं एक आजाद इंसान हूंगा।’

‘वेल्कम बेक, ब्रो!’ सुब्बु ने कहा।

फिर उन्होंने माँम और डैड को नमस्ते कहा।

‘नमस्ते आंटी, आप कैसी हैं?’ निधि ने पूछा। फिर वो डैड की तरफ मुड़ी। ‘हैल्लो, मिस्टर प्रभु,’ वो बोली।

डैड ने हल्का सा जवाब दिया लेकिन माँम ने तो तुरंत बात करना शुरू कर दिया।

माँम ने निधि की सिल्वर चूड़ियों की तारीफ की और पूछा कि ये उसने कितने की और कहाँ से ली थीं।

‘मां! प्लीज मुझे शर्मिंदा मत करो। आप ऐसी चीजें नहीं पूछ सकती हो!’ मैंने कहा।

‘अरे, कोई बात नहीं। मुझे इन्हें बताने में कोई दिक्कत नहीं है,’ निधि ने कहा। ‘आंटी, अगर आपको सिल्वर ज्वेलरी पसंद है, तो मैं आपको बंगलौर में शॉपिंग के लिए ले जाऊंगी। कमर्शियल स्ट्रीट के उनके ज्वेलरी स्टोर में बेहद खूबसूरत डिजाइन रखे हैं। मैं अपनी ज्वेलरी वहीं से खरीदती हूँ। ये मुझे लगभग साढ़े तीन हजार में पड़ी थीं। सही हैं न?’

माँम ने कहा इसकी कारीगरी के हिसाब से बिल्कुल सही है।

तभी किसी के कदमों की आवाज आई और ग्रे पेंट और लाल टाई लगाए हुए एक क्लीन शेव आदमी अंदर घुसता नजर आया। उसने मुझे देखा और फिर उसकी नजर निधि पर पड़ी।

मैंने निधि के चेहरे का रंग उतरते देखा।

‘तुम यहां क्या कर रहे हो, मनोज?’ उसने पूछा।

उसने जवाब नहीं दिया।

उस पल में मैंने उसकी नजरें खुद पर आते देखीं।

‘यही वो हरामी है न? साला,’ उसने कहा।

मुझे ये समझने में एक पल लगा कि ये बदतमीज आदमी कौन है। मनोज। उसका मंगेतर। वो इंसान जो उसकी चोट का जिम्मेदार है। वो कमीना जो औरतों पर हाथ उठाता है।

‘अपनी शक्ल देख, साले। तूने उस पर हाथ उठाया,’ मैंने कहा।

‘तू साला होता कौन है मुझे ये बताने वाला कि मैं क्या करूँ, क्या नहीं। वो मेरी मंगेतर है,’ उसने कहा।

‘नहीं, मैं नहीं हूँ। मैंने तुम्हें साफ बता दिया था कि मैं मंगनी तोड़ रही हूँ?’ निधि ने कहा और उसका हाथ अपने आप ही अपनी बांह पकड़ने के लिए उठ गया। मैंने उसे देखा और मुझे एक नीला सा निशान नजर आया। उसकी बांह सूजी हुई थी।

मैं समझ गया कि क्या हुआ होगा।

मुझे निधि के घर में उससे हुई बातचीत याद हो आई और इससे मुझे गुस्सा आ गया। मुझे सामने खड़े इस बदजात पर बहुत गुस्सा आया।

‘तुमने उसकी बात सुन ली न। अब दफा हो जाओ यहां से,’ मैंने कहा।

वो अपनी मुट्ठी तानकर मेरी तरफ बढ़ा। लेकिन इससे पहले कि वो कुछ कर पाता, मैंने अपने सीधे हाथ से उसके जबड़े पर मारा। उसकी आंखें छत की तरफ उठीं और वो लड़खड़ाकर

फर्श पर गिर गया। मुझे सब सिर्फ लाल ही दिख रहा था। मैं गुस्से से अंधा हो गया था। इस आदमी को मार डालना चाहता था। बेड से मेरे कूदने पर, बेड जरा साइड में सरक गया। आईवी ड्रिप भी नीचे गिर गया। लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी। मैंने उसके चेहरे पर एक जोरदार लात मारी। तड़क की आवाज आई। जैसे किसी ने दीवार पर लात मारी हो। मैं उसे मार देना चाहता था।

‘रुक जाओ, अनि। रुक जाओ,’ मॉम चिल्लाई और नर्सें शोरगुल सुनकर कमरे में दौड़ी आईं। मनोज जमीन पर दोहरा पड़ा था, उसके मुंह से खून निकल रहा था।

‘फर्स्ट एड किट लाओ,’ नर्स उसे उठाने के लिए नीचे झुकते हुए चिल्लाई।

‘अनि, कोई बात नहीं। उसे जाने दो। सब खत्म हो गया है—मैंने उससे अपना रिश्ता तोड़ लिया है,’ निधि ने कहा।

मैं मुश्किल से सांस ले पा रहा था और पीछे बिस्तर पर बैठ गया।

दूसरी नर्स ने आईवी ड्रिप सीधी की।

‘सर, आप ठीक तो हैं न?’ उसने पूछा।

‘हां,’ मैंने जवाब दिया।

मेरे पेरेंट्स ये सब देख सकते में थे। नर्सें अब मनोज की मदद कर रही थीं।

वो खड़ा हुआ, उसका हाथ उसकी नाक पर था।

मेरे डैड उसके पास गए। ‘देखो, बेटा, मैं नहीं जानता कि तुम्हारा इस लड़की से क्या संबंध रहा। लेकिन जब वो कह रही है कि अब तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती, तो मेरा यही सुझाव है कि उसे अकेला छोड़ दो। आप किसी को जबरन अपना नहीं बना सकते,’ उन्होंने कहा।

नर्सें मनोज को कमरे से बाहर ले गईं।

फिर उन्होंने निधि को देखकर कहा, ‘मैं नहीं जानता कि तुम्हारे और मेरे बेटे के बीच में क्या चल रहा है, लेकिन मैं जानता हूं कि वो तुम्हारी परवाह करता है। बहुत ज्यादा। और ये अच्छी बात है। इसे एक अच्छी शुरुआत माना जा सकता है,’ उन्होंने कहा।

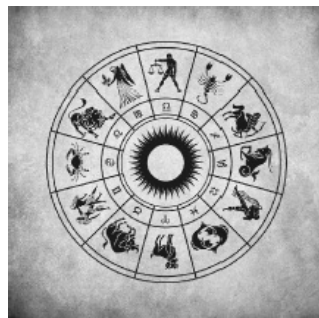
उन्होंने मुड़कर मुझसे कहा, ‘बेटा, मुझे तुम पर गर्व है।’

डैड ने पिछली बार ये बात तब कही थी जब मैं नौवीं क्लास में सौ मीटर की दौड़ में फर्स्ट आया था।

मैंने वापस बिस्तर पर लेटकर कमरे में मौजूद सारे लोगों को देखा—मेरे डैड, मेरी मॉम, निधि, सुब्बु—और खुद को बहुत खुशकिस्मत समझ रहा था कि मैं इतने चाहने वालों में घिरा था।

बचपन की एक याद—जिसमें हम सब साथ में दीवाली मनाते थे, पटाखे छुड़ाते थे—मेरे जहन में ताजा हो आई। मुझे आसमान में चमकते लाखों पटाखे याद आ रहे थे, जो आसमान में जाकर चमकते, फटते और फिर दूर कहीं जा गिरते। उन्हें देखकर हम खुशी से झूम उठते थे। मैं तब अपने परिवार के साथ होता था।

वैसा ही अब मुझे महसूस हो रहा था।



आठ महीने बाद

सब सितारों का खेल है—आपका दैनिक राशिफल: दर्शिता सेन

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)

अपनी हसरतों के प्रति आप निश्चित होंगे। पिछले कुछ महीने से चल रही घटनाएं अब चरम पर पहुंच जाएंगी। हालात की स्पष्टता आपको शिखर पर ले जाएगी। अच्छे संबंध का इशारा है।

33

निधि

ए पॉट ऑफ क्ले दैट होल्ड्स गोल्ड

वो साइबर-बीबर याद है? उसने मुझे फिर से किडनैप कर लिया है। दरअसल, मैं अभी भी उसी की पकड़ में हूँ। लेकिन ओह, ये अहसास कमाल का है! उसका साथ मुझे भाने लगा है। शायद

प्यार आपके साथ यही करता है। जब आप प्यार में होते हो, तो कोई भी राह मुश्किल नहीं होती, कोई भी रास्ता लंबा नहीं होता और कोई भी अड़चन बड़ी नहीं लगती।

आप उनके ख्यालों के साथ जागते हैं। बिस्तर पर भी उन्हीं के ख्यालों के साथ जाते हैं। और पूरा दिन, जाने कितनी ही छोटी-छोटी चीजों से उन्हें याद करते रहते हैं। आसमान ज्यादा नीला लगने लगता है, और हर चीज खूबसूरत। एक मुस्कान हमेशा आपके चेहरे पर रहती है। उनका ख्याल ही आपको राहत पहुंचाता है।

अगर आप मेरी बात समझ पा रहे हैं, तो यकीनन आप पर प्यार का जादू चल चुका है।

प्रोफेशनल फ्रंट पर, पॉटरी का नया बैच जल्दी ही शुरू होने वाला है। पिछले बैच ने बहुत ही बढ़िया प्रदर्शन किया। उसमें हरेक ने कम से कम बारह प्रोजेक्ट बनाए, और वो सब बेहद ही खूबसूरत थे। उनकी तस्वीर आप यहां देख सकते हैं।

क्या आप एक डेमो क्लास लेना चाहते हैं, तो साइन इन करने के लिए प्लीज यहां राइट-हैंड साइड पर दिए लिंक पर क्लिक कीजिए।

मैंने पब्लिश का बटन दबा दिया, और कुछ ही मिनट बाद, अनि ये कहता हुआ बाहर आया। 'हे! तुम मुझे साइबर-बीबर क्यों कह रही हो? मैंने कभी तुम्हें किडनैप नहीं किया!'

'ओह, तुमने ऐसा किया। तुमने मेरा दिल चुराया।'

'वो तुमने मुझे ट्रे में सजाकर दिया। तुम्हें इसके लिए मुझसे मेहनत करवानी चाहिए थी!'

'तुमने पहले ही सारी मेहनत कर ली थी, अनि। बस तुम्हें पता नहीं चला।'

'मैंने की थी? कैसे?' उसने मेरी तरफ आते हुए पूछा। फिर उसने प्यार से मुझे अपनी तरफ खींचकर मेरे होंठों को चूमा। वह रुका और फिर किस किया। और फिर, फिर।

मैं ख्वाहिश से झूम उठी।

'रुको मत, अनि, रुको मत,' मैंने उसके और नजदीक जाते हुए कहा।

उसके हाथों ने मेरी कमर को घेर लिया।

'अनि, आई लव यू,' मैं फुसफुसाई और उसने एक और किस से मेरा मुंह बंद कर दिया।

'एक मिनट,' उसने कहा और मैं हैरान थी कि वो कर क्या रहा था, उसने मेरी सेंटर टेबल को साइड हटाया।

फिर उसने सोफा-बेड खोला और उस पर लेटकर बोला, 'यहां आओ, तुम्हें देखकर रुका नहीं जाता।'

मैं बेड पर चढ़ गई, उसकी बांहों में।

उसने प्यार से मेरे बालों को पीछे किया और मेरे माथे और पलकों को चूमा। उसकी आंखें गहरी थीं, और मैंने उनमें खुद को खो जाने दिया। वह अपनी नजरें नहीं फेर रहा था।

हमने खूब प्यार किया। प्यार से। धीरे-धीरे। बिना किसी जल्दी के।

ये दुनिया की सबसे अच्छी फीलिंग है।

कर चुकने के बाद, उसने कहा, 'पता है, मुझे एक कंफेशन करना है।'

'क्या?' मैंने पूछा।

'तुम्हें याद है, जब मैं पहली बार यहां रुकने आया था? उस रात को?'

‘हां।’

‘तुम उस दिन बहुत सुंदर लग रही थीं, और मैं तुम्हें देख रहा था। मैं तुम्हें ये बताना चाहता था। लेकिन शर्म से मैं कह नहीं पाया।’

‘हां! और अब देखो अपनी शर्म!’

‘उस दिन एक पल के लिए मुझे लगा, सिर्फ एक पल के लिए, कि तुमसे प्यार करने में कितना मजा आएगा। लेकिन मैंने तुरंत इस ख्याल को झटक दिया। मैं किसी भी तरह उसे धोखा नहीं दे सकता था।’

उसके चेहरे पर यादों की परछाई दिखी।

मैंने उसे किस करके कहा, ‘जाने दो, अनि। जो कभी था ही नहीं, तुम उसे नहीं पकड़ सकते।’

‘हां,’ उसने कहा। ‘वो अलग समय था। और अब मैं भी यकीन करने लगा हूं कि वो हमारे हाथों में था ही नहीं। दर्शिता सेन ने सही कहा था। ये सब सितारों का खेल है।’

‘हां। यही किस्मत है। लेकिन हमें खुलकर जीना चाहिए। हम आने वाले तूफान का सामना कैसे करते हैं। उससे लड़कर हम और मजबूत होकर उभर सकते हैं। या फिर हार मानकर उसके सामने घुटने टेक सकते हैं।’

‘यही समझदारी है,’ वह मुस्कुराया।

‘कॉफी पिओगे?’ मैंने पूछा।

‘मैंने कभी तुम्हारी कॉफी को न कहा है? निधि, तुम बेस्ट हो!’

‘वो तो मैं हूं,’ मैंने कहा और कॉफी बनाने किचन में चली गई।

हम सोफा-बेड पर बैठे थे, कॉफी के घूंट भरते हुए, हमारी बांहें एक दूसरे में गुंथी थीं, और उसने मेरे गालों को चूमा।

‘आई लव यू,’ उसने कहा और मैंने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया।

एक-दूसरे से अलग होने के लिए हमें बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। लेकिन उसका जाना जरूरी था, उसके पेरेंट्स और सिस्टर आज बंगलौर आ रहे थे। उसके जाने के बाद, मैं थोड़ी देर सोफा-बेड पर ही लेटी रही, संतुष्ट, खुश और सुखी। कोई कैसे किसी इंसान को इतना याद कर सकता था?

पिछले आठ महीनों से, हम लगातार एक-दूसरे से बात कर रहे थे। मेल, चैट, फोन-कॉल्स। ऐसा लग रहा था, जैसे हमारी बातें कभी खत्म ही नहीं होंगी। मैं जानती थी कि वो अभी भी अपने हालात से उबर रहा था। उसके दर्द से वो अभी भी पूरी तरह बाहर नहीं आ पाया था। लेकिन मुझे जल्दी नहीं थी। मैं इंतजार करूंगी।

कुछ देर बाद, मैंने अपना लैपटॉप निकाला और, हालांकि मुझे दो पीस सब्मिट करने थे, लेकिन मैं उसे मेल लिखने से खुद को नहीं रोक पाई।

मेरा प्यार, मेरा डार्लिंग, मेरी जान, मेरी जिंदगी, मेरा अनि, प्यार के लिए कोई भी उपनाम काफी नहीं है। तुम्हारे लिए प्यार की उपमा ढूंढना ऐसा ही है, जैसे कोई इंसान इस समस्त ब्रह्मांड, हजारों आकाशगंगाओं, कई सौ करोड़ तारों में खड़ा हो, जहां वो खुद एक

कण के बराबर भी नहीं है, अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश कर रहा हो।

तुम्हारा साथ अब मैं हमेशा अपने दिल में महसूस करती हूँ। ये मुझे एक परत की तरह घेरे रखती है, और मैं जो भी देख रही हूँ इसी परत से देख रही हूँ। इसने मेरे शरीर के रोम-रोम को भिगो दिया है। कोई भी ऐसा पल नहीं जाता, जब तुम्हारा ख्याल मेरे मन में न आया हो। और अगर सोते हुए, सपनों पर मेरा बस चल पाता, तो मैं तुम्हारे ही सपने देखना पसंद करती।

तुम्हारी तस्वीर मैं हमेशा देखती रहती हूँ, छोटी-छोटी चीज याद करती हूँ, तुम्हारे चेहरे का हर उभार, हर लाइन। मैं तुम्हें अपनी आंखों में उतारकर वहीं कैद कर लेना चाहती हूँ। मैं घंटों तुम्हारी तस्वीर देख सकती हूँ, और फिर भी बिना थके मेरी नजरें उससे नहीं हटतीं।

मैं खुद को तुममें खो देती हूँ। और फिर तुममें ही पा लेती हूँ।

अगर खुशी को नापने का कोई इलेक्ट्रिक करंट होता, तो फोन पर तुम्हारी आवाज सुनने की खुशी, या तुम्हें देखने का रोमांच आराम से एक मिलियन वाट को पार कर जाता। अगर निराशा को नाप सकते, तो फोन काटने की मजबूरी, या तुमसे अलग होने का दर्द बड़े आराम से 4,00,000 वॉट स्पीकरों को पार कर जाता। यहां फर्क सिर्फ ये है कि खामोशी की आवाज है। स्थिरता की। तुम्हारे साथ रहने का एक पल और तुमसे जुदा होने का दूसरा पल बहुत ही जुदा होते हैं। बिछड़ना हमेशा तकलीफ देता है।

मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ, तुम्हारी खुशबू को खुद में उतार लेना चाहती हूँ, तुम्हारे कानों को कुतरना, तुम्हारे बालों में हाथ फिराना, और तुम्हारे सिर को अपनी गोद में रखना। मैं तुम्हें अपनी बांहों में थामने के लिए मचलती हूँ, अपना सिर तुम्हारे सीने पर रखने के लिए, मैं तुम्हें इतना कसकर गले लगाना चाहती हूँ कि तुम्हारे शरीर और मुझसे लिपटी तुम्हारी बांहों को महसूस कर सकूँ। अगर पूरी जिंदगी मुझे इस तरह ही बितानी पड़े तो मुझे खुशी होगी।

हमारे बात करने का समय यूँ ही पंख लगाकर उड़ जाता है, भले ही वो कितने ही घंटों की बातें क्यों न हों। वो कभी खत्म ही नहीं होतीं। जिस पल हम बात करना बंद करते हैं, मैं फिर से तुमसे बात करना चाहती हूँ, बार-बार।

तुम्हारी वजह से मेरे शरीर का हर कण एक परफेक्ट ताल पर झूमने लगता है। तुम मुझमें एक नई जान फूंक देते हो।

तुम्हारे बिना अब कोई दिन-रात नहीं होता। वो पल बस अगले मिलन के दर्द में ही गुजरते हैं। सब उसी से जुड़े हैं।

मेरी जिंदगी एक जिगसॉ पहेली की तरह थी, जिसका एक टुकड़ा मिसिंग था। मैंने कई सालों तक उस टुकड़े को ढूँढ़ने की कोशिश की। कुछ भी टुकड़ा उसमें फिट नहीं हुआ। और अब जब तुम मुझे मिल गए हो, मैं खुद को पूर्ण महसूस करती हूँ। संपूर्ण। प्यार में डूबी। खिली-खिली। कीमती। बहुमूल्य। मेरी जिंदगी का खालीपन—जिगसॉ का वो मिसिंग टुकड़ा—तुम्हारे शरीर, आत्मा, भाव के आकार का ही था।

हम उसमें फिट हो गए।

और मैं जीती हूँ—तुम्हारे लिए।

क्या तुम मेरे साथ चलोगे?
पूरी जिंदगी,
तुम्हारी।

मैं उसके जवाब का इंतजार कर रही थी। वो कुछ मिनटों बाद आया, मेल में ही।
सिर्फ एक शब्द, लेकिन वो हमेशा के लिए हमारी जिंदगी बदलने में काफी था: हां।

आभार

कुछ लेखक आभार में उन सब लोगों के नाम दे देते हैं, जिन्हें वो जानते हैं। कुछ उन सबका ही नाम नहीं देते। और कुछ ऐसे होते हैं, जो आभार में 'दिल की बात' कह देते हैं, ये उनके लिए सबसे बड़ा 'गर्व' होता है, जो वो अपनों से बांट सकते हैं, और सालों बाद भी इसे पढ़ने पर हर शख्स से जुड़ी याद को जीवित महसूस करते हैं। मैं आपको नहीं बताऊंगी कि मैं किस श्रेणी से हूँ, क्योंकि अब तक आप खुद ही जान गए होंगे।

तो मेरा हार्दिक आभार है:

मेरे डैड, के.वी.जे कामथ, मेरी मॉम प्रिया जे. कामथ को। मैं जानती हूँ आपको मुझ पर गर्व है।

मेरे पाठकों को—मुझे इतना प्यार, इतना मान देने के लिए और मेरी हर किताब का बेसब्री से इंतजार करने के लिए। मैं हमेशा आपकी आभारी रहूंगी।

पूर्वी शेनॉय, मेरी शुरुआती पाठक, आलोचक, इंस्टाग्राम और स्नेपचैट मैनेजर, और मेरी नंबर वन फैशन कंसल्टेंट।

अतुल शेनॉय, उन तारीफों के लिए, जो उनसे निकाल पाना बहुत मुश्किल था, मेरे शुरुआती पाठक और फिटनेस एडवाइस देने के लिए।

सतीश शेनॉय और लॉस्ट्रिस। अगर यहां ऑस्कर अवार्ड दिए जा सकते, तो वो यकीनन बेस्ट सपोर्टिंग रोल के विजेता होते।

अनुकूल शेनॉय, सारे सहयोग और सवालों के लिए।

नवीन वेदक्कन, नम्र शब्दों, तुरंत जवाबों, बिना शर्त सहयोग, हर हंसी और दोस्ती के लिए।

मयंक मित्तल और सुरेश संन्यासी, हमेशा मेरा साथ देने के लिए। मेरे हमेशा भरोसेमंद और मजबूत साथी।

सूरज बड़जात्या और राजकुमार बड़जात्या, मेरी कहानी में यकीन करने के लिए।

दीप्ति तलवार, मेरी लाजवाब, बेमिसाल संपादक, जिनके साथ काम करने में हमेशा मजा आता है।

सौरभ ठकराल, मेरे हर सवाल का सब्र से जवाब देने के लिए।

मेरी प्यारी गर्लफ्रेंड्स, जो मेरे गायब हो जाने को समझती हैं, और कोई सवाल नहीं करतीं—रतिप्रिया, शबिना भट्टी, जयश्री चिन्ने, वाणी महेश, शिनी एंटोनी, माधुरी बनर्जी, दीपा पदमाकुमार, सोमा भट्ट, वीनू जॉन, निशु माथुर, प्रतिभा राजेश, शालिनी राघवन।

डॉ. ओलिवर रोड्रिग्स को, उनके मेडिकल इनपुट्स के लिए।

लेखन जगत के मेरे दोस्त—निकिता सिंह, किरन मनराल, सचिन गर्ग, दुर्जाय दत्ता, मेघना पंत, नंदिता बोस और मिलन वोहरा।

वेस्टलैंड की बेहतरीन टीम—गौतम पद्मनाभन, कृष्णकुमार, सतीश सुंदरम, सरिता प्रसाद, प्रीति कुमार, गुरुराज, सत्य श्रीधर, नेहा और दूसरे लोग, जिनके साथ काम करना हमेशा मजेदार रहा; काम में परफेक्ट जयंती; और बेहतरीन कवर के लिए सेमी हैतेन्लो।

शानदार इंडीब्लोगर टीम—विनीत, रेनी और अनूप।

मेरी क्षमताएं पहचानने के लिए जे.के. बोस और अरुण बोस।

मेरी बेहतरीन तस्वीर उतारने के लिए नरसिम्हा मूर्ति का बहुत-बहुत शुक्रिया।

वेबसाइट के लिए प्रणव शाह का शुक्रिया।

और स्टेज के पीछे सब संभालने के लिए मंजुला वेंकेटस्वामी का आभार।

लेखक परिचय

प्रीति शेनॉय का नाम जहां भारत के पांच सबसे कामयाब लेखकों में लिया जाता है, वहीं फोर्ब्स की लिस्ट में भी आपको भारत की सबसे मशहूर हस्तियों में शामिल किया गया है। इंडिया टूडे आपको कामयाब लेखकों की श्रेणी में इकलौती महिला के तौर पर शामिल करती है।

नई दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ने आपको बिजनेस एक्सीलेंस का अकादमिक अवार्ड भी प्रदान किया है, जो इस क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए दिया जाता है। आपने कई शैक्षिक संस्थानों, जैसे आईआईटी और आईआईएम, कॉरपोरेट संगठनों, इंफोसिस और एक्सेंचर इत्यादि में व्याख्यान भी दिए हैं।

प्रीति चित्रण कला में भी माहिर हैं। आपका एक लोकप्रिय ब्लॉग भी है, और फाइनेंशियल क्रोनिकल में साप्ताहिक स्तंभ भी लिखती हैं। आपके ऑनलाइन पर बहुत से फॉलोअर हैं, और आप सोशल मीडिया पर भी एक्टिव रहती हैं। आपके दूसरे शौक हैं घूमना, फोटोग्राफी और अस्थाना योग।